

अध्याय – 07 || Chapter - 07

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उदय || Rise of Indian National Movement



Chapter - 07

Rise of Indian National Movement



NOTE

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन

राष्ट्रवाद का उदय व
कांग्रेस की स्थापना

क्रांतिकारी आन्दोलन

वामपंथी आंदोलन

प्रमुख व्यक्तित्व

चरण

उदारवादी
(1885-1905)

उग्रवादी राष्ट्रवाद
(1905-1919)

गांधीवादी युग
(1919-1942)

भारतीय स्वतंत्रता
(1942-1947)

NOTE

Indian National Movement

**Rise of nationalism
and establishment of
congress**

**Revolutionary
movement**

**Leftist
movement**

**Prominent
personality**

Phase

**Moderate
nationalism
(1885-1905)**

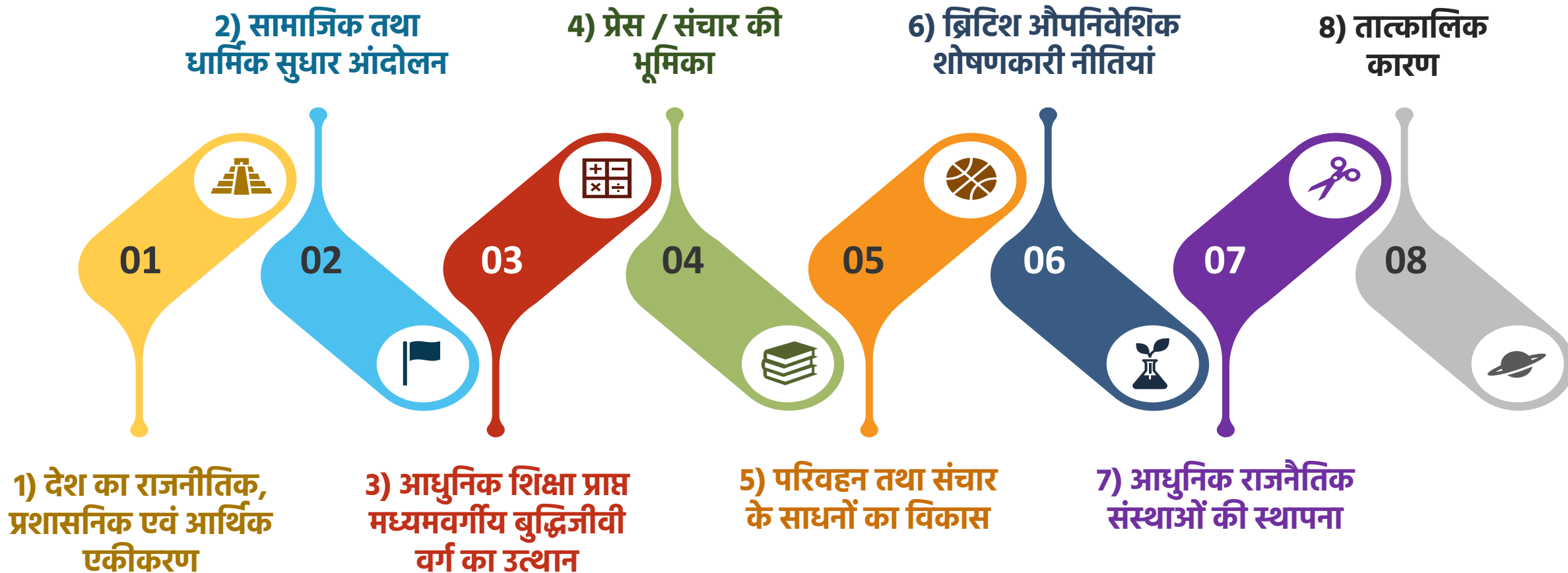
**Extremist
nationalism
(1905-1919)**

**Gandhian era
(1919-1942)**

**Indian
Independence
(1942-1947)**

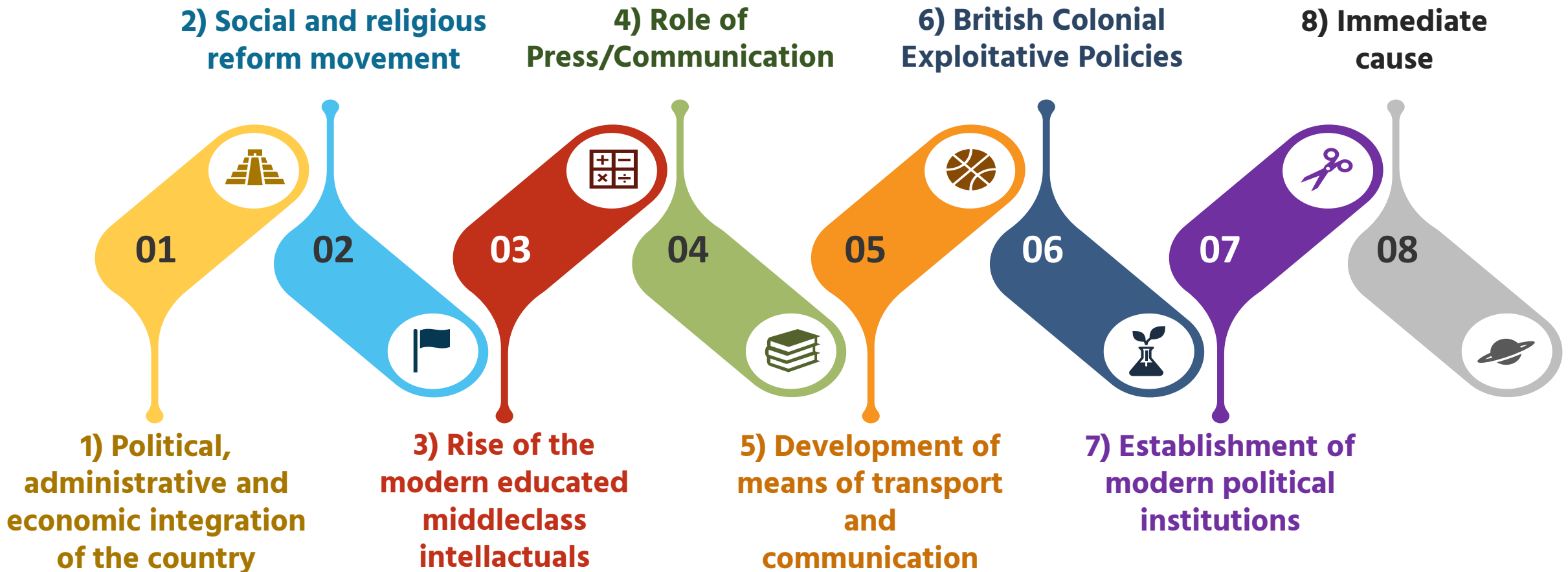
7.1) भारत में राष्ट्रवाद के उदय के कारण

एक भौगोलिक इकाई के विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के मध्य आत्मिक जुड़ाव तथा राष्ट्र के प्रति समर्पण को राष्ट्रवाद कहते हैं। भारत में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीय राजनीतिक चेतना निम्नलिखित कारणों से विकसित हुई जिसने राष्ट्रीय आंदोलन का आधार रखा :-



7.1) Reasons for the rise of nationalism in India

Nationalism is the spiritual connection and devotion to the nation between the people living in different areas of a geographical unit. The national political consciousness developed in India in the second half of the 19th century due to the following reasons which laid the basis of the national movement:-



1) देश का राजनीतिक, प्रशासनिक एवं आर्थिक एकीकरण :-

- ℥ ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियों जैसे युद्ध, हड़प नीति आदि के द्वारा राजनीतिक एकीकरण
- ℥ पूरे भारत में एक समान कानूनों व नियमों द्वारा प्रशासनिक एकीकरण
- ℥ रेलवे तथा पक्की सड़कों के विकास से भारतीय बाजारों का एकीकरण

2) सामाजिक तथा धार्मिक सुधार आंदोलन :-

- ℥ राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद आदि ने भारतीय सभ्यता व संस्कृति के गौरव को पुनर्स्थापित करके श्रेतों के अधिभार सिद्धान्त का खंडन किया तथा भारतीयों में आत्मविश्वास पैदा किया
- ℥ भारतीय समाज में तार्किकता तथा प्रगतिशील मूल्यों यथा स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व आदि का प्रसार
- ℥ स्वामी दयानंद सरस्वती :- भारत, भारतीयों के लिए है

3) आधुनिक शिक्षा प्राप्त मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी वर्ग का उत्थान :-

- ℥ पश्चिमी देशों के पुनर्जागरण मूल्यों, (राष्ट्रवाद, स्वतंत्रता आदि) मिल्टन, बेंथन, रूसो जैसे दार्शनिकों के विचारों तथा फ्रांसीसी क्रांति जैसी घटनाओं से भारतीय शिक्षित वर्ग का परिचय
- ℥ इसी नवीन शिक्षित मध्यमवर्ग द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व व प्रसार किया गया
- ℥ **पी. स्पीयर** – “यह नवीन मध्यम वर्ग एक संगठित अखिल भारतीय वर्ग था”

4) प्रेस की भूमिका :-

- ℥ हिन्दू पैट्रियाट, मराठा, केसरी, द इंडियन मिरर, सोम प्रकाश जैसे अखबारों द्वारा जनमानस में राष्ट्रीयता का प्रसार
- ℥ आनन्दमठ, भारत दुर्दशा, नील दर्पण जैसे साहित्यों द्वारा ब्रिटिश शासन के वास्तविक स्वरूपों की जानकारी

1) **Political, administrative and economic integration of the country :-**

- ℒ Political integration through British imperialist policies like war, doctrine of lapse policy etc.
- ℒ Administrative integration through uniform laws and regulations throughout India
- ℒ Integration of Indian markets through development of railways and paved roads

2) **Social and religious reform movement :-**

- ℒ Raja Rammohun Roy, Dayanand Saraswati, Swami Vivekananda, etc., by restoring the pride of Indian civilization and culture, refuted the theory of white man burden theory and instilled confidence in Indians.
- ℒ Spread of rational and progressive values like liberty, equality, fraternity etc. in Indian society
- ℒ Swami Dayanand Saraswati :- India is for Indians

3) **Rise of the modern educated middleclass intellectuals :-**

- ℒ Introduction of Indian educated class to the Renaissance values of western countries, (nationalism, independence etc.) ideas of philosophers like Milton, Bentham, Rousseau and events like French Revolution
- ℒ The national movement was led and spread by this newly educated middle class.
- ℒ **P. Spear** – “This new middle class was an organized all India class”

4) **Role of press :-**

- ℒ Spread of nationalism among the masses through newspapers like Hindu Patriot, Maratha, Kesari, The Indian Mirror, Som Prakash
- ℒ Information about the real forms of British rule through literature like Anandamath, India's plight, Neel Darpan

4) परिवहन तथा संचार के साधनों का विकास :-

- ℥ रेल, तार, डाक द्वारा समस्त भारत का एकीकरण
- ℥ भौगोलिक दूरी कम करके सांस्कृतिक सम्मिश्रण तथा विचारों के आदान प्रदान को बढ़ावा दिया
- ℥ **एडिसन** - भारत के लिए रेलवे वह कार्य करेगी, जो बड़े बड़े राजवेशों ने पहले कभी नहीं किया

5) ब्रिटिश औपनिवेशिक शोषणकारी नीतियां :-

- ℥ प्रजातीय विभेद की नीति
- ℥ ब्रिटिश भू राजस्व व विऔद्योगिकरण नीति के परिणामस्वरूप अकाल, भुखमरी
- ℥ धन का निष्कासन

7) आधुनिक राजनैतिक संस्थाओं की स्थापना :-

- ℥ काँग्रेस पूर्व संस्थाओं जैसे इंडियन एसोसिएशन, लैण्ड होल्डर्स सोसायटी आदि के द्वारा जन जागृति
- ℥ संवैधानिक तरीकों से अंग्रेजी संसद से अपील

7) तात्कालिक कारण :-

लॉर्ड लिटन की नीति - लॉर्ड के प्रतिक्रियावादी कार्यों, जैसे अकाल के समय दिल्ली दरबार का आयोजन, वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट द्वारा प्रेस पर प्रतिबंध, आर्म्स एक्ट द्वारा अस्त्र-शस्त्र रखने की मनाही, ICS परीक्षा की आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष करना आदि

इल्बर्ट बिल विवाद - लॉर्ड रिपन (Lord Ripon) की परिषद के विधि सदस्य इल्बर्ट (ilbert) ने इस अन्याय को दूर करने के आशय का एक विधेयक 2 फरवरी 1883 को प्रस्तुत किया कि भारतीय न्यायाधीशों को भी यूरोपियन अपराधियों के मुकदमे सुनने का अधिकार हो।, किन्तु यूरोपीय लोगों की प्रतिक्रियास्वरूप इस बिल को रद्द करना पड़ा।

इस राष्ट्रवाद की सर्वोच्च अभिव्यक्ति कांग्रेस की स्थापना एवं राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन के रूप में हुई। आगे कांग्रेस के नेतृत्व में चलाए गए राष्ट्रीय आंदोलन के परिणाम स्वरूप भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

4) **Development of means of transport and communication**

:-

- ℒ Integration of all India by rail, telegram, post
- ℒ Promoted cultural assimilation and exchange of ideas by reducing geographical distance
- ℒ **Edison** - Railways will do for India what big revenues have never done before

5) **British Colonial Exploitative Policies :-**

- ℒ Policy of racial discrimination
- ℒ Famine, starvation as a result of British land revenue and industrialization policy
- ℒ Withdrawal of funds

7) **Establishment of modern political institutions :-**

- ℒ Public awareness through pre-Congress organizations like Indian Association, Land Holders Society etc.
- ℒ Appeal to the English Parliament by constitutional means

7) **Immediate cause :-**

Lord Lytton's policy - Lord's reactionary actions, such as holding the Delhi Durbar in times of famine, ban on press by Vernacular Press Act, prohibition of keeping of arms by Arms Act, reducing the age of ICS examination from 21 years to 19 years etc.

Ilbert Bill controversy - Ilbert, a law member of Lord Ripon's council, introduced a bill on February 2, 1883, intended to remove this injustice, that Indian judges should also have the right to hear the cases of European criminals. But this bill had to be canceled in response to the reaction of the Europeans.

The highest expression of this nationalism came in the form of the establishment of Congress and the national freedom struggle movement. Further, India got independence as a result of the national movement led by the Congress.

7.2) कांग्रेस पूर्व स्थापित राजनैतिक संस्थाएं

A) परिचय

B) बंगाल



- 1) बंगभंग प्रकाशक सभा (1836)
- 2) लैंड होल्डर्स सोसायटी (1838)
- 3) बंगाल ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन (1843)
- 4) ब्रिटिश इंडिया एसोसिएशन (1851)
- 5) इंडियन लीग (1875)
- 6) कलकत्ता स्टूडेंट्स एसोसिएशन (1875)

C) बम्बई



- 1) बॉम्बे एसोसिएशन (1852)
- 2) पूना सार्वजनिक सभा (1870)
- 3) बॉम्बे प्रेसिडेंसी एसोसिएशन (1885)

D) मद्रास



- 1) मद्रास नेटिव एसोसिएशन (1852)
- 2) मद्रास महाजन सभा (1884)

E) विदेशी



- 1) लंदन इंडियन कमेटी (1862)
- 2) लंदन इंडिया सोसायटी (1865)
- 3) ईस्ट इंडिया एसोसिएशन (1866)

F) योगदान

7.2) Political Institutions Established Before Congress

A) introduction

B) Bengal



- 1) Bangbhang Prakashak Sabha (1836)
- 2) Land Holders Society(1838)
- 3) Bengal British India Association (1843)
- 4) British India Association (1851)
- 5) Indian League (1875)
- 6) Calcutta Students Association (1875)

C) Bombay



- 1) Bombay Association (1852)
- 2) Poona Sarvajanik Sabha(1870)
- 3) Bombay Presidency Association (1885)

D) Madras



- 1) Madras Native Association (1852)
- 2) Madras Mahajan Sabha (1884)

E) Foreign



- 1) London Indian Committee (1862)
- 2) London India Society (1865)
- 3) East India Association (1866)

F) Contribution

A) परिचय : स्वरूप व कार्यप्रणाली

19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय राष्ट्रीय चेतना के उदय में कांग्रेस की स्थापना से पूर्व अनेक राजनीतिक संगठनों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यद्यपि इन संस्थाओं का **आधार क्षेत्रीय व दृष्टिकोण अभिजात्य-वर्गीय** था और ये संकीर्ण हितों का प्रतिनिधित्व करती थी, तथापि इन्होंने **जनता एवं स्वयं के हितों के लिये सरकार के सम्मुख आवाज़** उठाया। इन्होंने अपनी मांगों को ब्रिटिश संसद और भारत सरकार के समक्ष पत्रिकाओं, याचिकाओं एवं प्रार्थना-पत्रों के माध्यम से रखा, जो निम्नलिखित हैं :-

- ℒ प्रशासन में भारतीयों की भागीदारी को बढ़ाया जाए।
- ℒ कम्पनी के अधीन सेवाओं, जैसे- नागरिक सेवा आदि का भारतीयकरण।
- ℒ प्रशासनिक व्ययों में कमी।
- ℒ भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार।

A) Introduction: Format and Functioning

Several political organizations played an important role in the rise of Indian national consciousness in the latter half of the 19th century before the formation of the Congress. Although the basis of these institutions was regional and elitist in outlook and they represented narrow interests, yet they raised their voice before the government for the interests of the people and themselves. They put their demands before the British Parliament and the Government of India through magazines, petitions and applications, which are as follows :-

- ℒ The participation of Indians in administration should be increased.
- ℒ Indianization of services under the company, such as civil services, etc.
- ℒ Reduction in administrative expenses.
- ℒ The spread of modern education in India.

B) बंगाल की प्रमुख संस्थाएं

संस्था	स्थापना	संस्थापक	उद्देश्य	विशेषताएं
1) बंग भंग प्रकाशक सभा	1836	गौरीशंकर तरकाबागीश	प्रशासनिक गतिविधियों की समीक्षा व देशवासियों को राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक करना	<ul style="list-style-type: none"> यह बंगाल में स्थापित प्रथम राजनीतिक संगठन
2) लैंड होल्डर्स सोसाइटी	1838 कलकत्ता	द्वारिका नाथ टैगोर	संवैधानिक प्रतिरोध द्वारा जमींदारों के हितों का संरक्षण	<ul style="list-style-type: none"> इसके भारतीय सचिव प्रसन्न कुमार ठाकुर थे। जबकि अंग्रेज सचिव विलियम काब्री थे इस संस्था को 'बंगाल जमींदार सभा' की भी संज्ञा प्राप्त थी।
3) बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी	1843	जार्ज थामसन	अंग्रेज शासन के अधीन भारतीयों विशेषकर कृषकों की वास्तविक दशा का अध्ययन करना उससे सबको अवगत कराना और यथासम्भव उनके सुधार का प्रयत्न करना था।	<ul style="list-style-type: none"> सचिव : प्यारी चन्द्र मित्र ब्रिटिश शासन में भारतीयों की वास्तविक अवस्था के विषय में जानकारी प्राप्त करना, उनका प्रचार-प्रसार करना और जनता की उन्नति के लिये शांतिमय और कानूनी साधनों का प्रयोग करना था।

B) Major Institutions of Bengal

Institution	Year	Founder	Purpose	Characteristics
1) Bang Bhang prakashak Sabha	1836	Gaurishan kar Tarkabagish	Reviewing administrative activities and making citizens aware of political rights	<ul style="list-style-type: none"> First political organization established in Bengal.
2) Land Holders Society	1838 Calcutta	Dwarkanath Tagore	Protection of the interests of landlords by constitutional resistance	<ul style="list-style-type: none"> Indian secretary was Prasanna Kumar Thakur. While the British secretary was William Cabri Also known as 'Bengal Zamindar Sabha'.
3) Bengal British India Society	1843	George Thomson	To study the real condition of the Indians especially the farmers under the British rule, to make everyone aware of it and try to improve them as much as possible.	<ul style="list-style-type: none"> Secretary : Dear Chandra Mitra To obtain information about the real condition of Indians under British rule, to disseminate them and to use peaceful and legal means for the advancement of the people.

4) इंडियन लीग	1875 कलकत्ता	शिशिर कुमार घोष (अमृत बाजार पत्रिका के सम्पादक एवं स्वामी)	जनमानस में राष्ट्रवाद की अनुप्रेरणा एवं राजनीतिक शिक्षा प्रदान करना ।	<ul style="list-style-type: none"> इस संस्था का विलय वर्ष भर बाद इण्डियन एसोसिएशन में कर दिया गया था। मुख्य नेतृत्वकर्ता : सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस
5) ब्रिटिश इण्डियन एसोसिएशन	31 अक्टूबर, 1851 कलकत्ता	राजा राधाकान्त देव (अध्यक्ष)	भारत के जमींदारों के राजनैतिक संरक्षण के साथ जनमानस के हितों की मांग करना	<ul style="list-style-type: none"> इस संस्था का निर्माण लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी एवं बंगाल ब्रिटिश इण्डिया सोसाइटी को मिलाकर किया गया। इसे 'भारतवर्षीय सभा' की संज्ञा दी गई। 1860 ई. में अकाल पीड़ितों की सहायता और आयकर बढ़ाने का विरोध हिन्दू पैट्रियाट' इस संस्था का मुख्य पत्र था। उपाध्यक्ष : राजा कालीकृष्णादेव अन्य सदस्य : हरिश्चन्द्र मुकर्जी, रामगोपाल घोष, राजेन्द्र लाल मिश्र, देवेन्द्रनाथ टैगोर (सचिव) तथा दिगम्बर मित्र (उप सचिव)

4) Indian league	1875 Calcutta	Shishir Kumar Ghosh (Editor and owner of Amrit Bazar Patrika)	Inspiration of nationalism and imparting political education to the masses.	<ul style="list-style-type: none"> ℳ This organization was merged with Indian Association after a year. ℳ Key Leaders :- Surendra Nath Banerjee and Anand Mohan Bose
5) British Indian Association	31 october , 1851 Calcutta	Raja Radhakanta Dev (President)	To demand the interests of the public along with the political protection of the landlords of India	<ul style="list-style-type: none"> ℳ Organization was formed by merging Land Holders Society and Bengal British India Society. Which named as 'Bharatvarsha Sabha'. ℳ Opposition for increasing income tax and helping famine victims in 1860 AD ℳ Hindu Patriot was main paper of organization. ℳ Vice President : Raja Kalikrishnadev ℳ Other members : Harishchandra Mukherjee, Ram Gopal Ghosh, Rajendra Lal Mishra, Devendranath Tagore (Secretary) and Digambar Mitra (Deputy Secretary)

6) कलकत्ता स्टूडेंट्स एसोसिएशन	1875 कलकत्ता	आनन्द मोहन बोस	छात्रों के हित सम्बर्द्धन हेतु संघर्ष करना।	℥ कालान्तर में इस संगठन से सुरेन्द्र नाथ बनर्जी भी जुड़ गये।
7) इंडियन एसोसिएशन	26 जुलाई 1876	सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं आनन्द मोहन बोस	<ul style="list-style-type: none"> ○ भारत में प्रबल जनमत तैयार करना ○ हिन्दू-मुस्लीम जनसम्पर्क की स्थापना करना ○ सार्वजनिक कार्यक्रम के आधार पर लोगों को संगठित करना ○ सिविल सेवा के भारतीयकरण के पक्ष में मत तैयार करना 	<ul style="list-style-type: none"> ℥ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पूर्वगामी ℥ शिशिर कुमार द्वारा स्थापित इंडियन लीग का इंडियन एसोसिएशन में 1 वर्ष बाद विलय कर दिया गया ℥ इन संस्था के सचिव आनन्द मोहन बोस बनाये गए जबकि अध्यक्ष मनमोहन घोष को चुना गया

6) Calcutta Students Association	1875 Calcutta	Anand Mohan Bose	To fight for the welfare of the students.	ℒ Later Surendra Nath Banerjee also joined this organization.
7) Indian Association	26 July 1876	Surendranath Banerjee and Anand Mohan Bose	<ul style="list-style-type: none">○ Build strong public opinion in India○ Establishment of Hindu-Muslim public relations○ Organize people on the basis of a public program○ Voting in favor of Indianisation of Civil Services	<ul style="list-style-type: none">ℒ Predecessor of the indian national congressℒ Indian league founded by shishir kumar merged with indian association after 1 yearℒ Anand mohan bose was made the secretary of these institutions while manmohan ghosh was elected as the president.

C) बम्बई की प्रमुख संस्थाएँ

संस्था	स्थापना	संस्थापक	उद्देश्य	विशेषताएं
1) बाम्बे एसोसिएशन	26 अगस्त 1852	दादाभाई नौरोजी	राजनैतिक मांगों व प्रशासनिक सुधारों हेतु सरकार को ज्ञापन देना	<ul style="list-style-type: none"> ॥ 'ब्रिटिश इण्डिया एसोसिएशन' के कार्यों से प्रभावित ॥ यह बम्बई की प्रथम राजनीतिक संस्था थी।
2) बाम्बे प्रेसीडेंसी एसोसियेशन	31 जनवरी 1885	बदरुद्दीन तैय्यबजी,	लोगों में राजनीतिक विचारों का प्रचार-प्रसार करना	<ul style="list-style-type: none"> ॥ इस संस्था ने वित्त एवं कृषि, प्रशासनिक जैसी कई उपसमितियों की स्थापना की ॥ के.टी. तैलंग, फिरोजशाह मेहता और काशीनाथ त्रयम्बक
3) पूना सार्वजनिक सभा	2 अप्रैल, 1870 ई.	एम.जी. रानाडे, जी.वी. जोशी तथा एस.एच. चिपलूणकर	जनता को सरकार की वास्तविकता के बारे में परिचित कराना और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति सचेत करना था।	<ul style="list-style-type: none"> ॥ यह संस्था मुख्यतः जमींदारों तथा व्यापारियों के हितों का प्रतिनिधित्व करती थी ॥ इस संस्था की एक त्रैमासिक पत्रिका 'क्वार्टली जर्नल' थी।

C) Major Institutions of Mumbai

Institution	Establishment	Founded by	Purpose	Properties
1) Bombay Association	26 august 1852	Dadabhai Naoroji	To submit a memorandum to the government for political demands and administrative reforms	<ul style="list-style-type: none"> ℒ Influenced by the works of 'British India Association' ℒ It was the first political organization of Bombay.
2) Bombay Presidency Association	31 January 1885	Badruddin Tyabji,	Propagating political ideas among the people	<ul style="list-style-type: none"> ℒ This institution established many subcommittees like finance and agriculture, administrative ℒ KT Tailang, Ferozeshah Mehta and Kashinath Triambak
3) Poona sarvajanik sabha	2 april, 1870 ई.	MG Ranade, G.V. Joshi and S.H. chiplunkar	To make the public aware of the reality of the government and to make them aware of their rights.	<ul style="list-style-type: none"> ℒ This organization mainly represented the interests of landlords and traders. ℒ A quarterly journal of this institution was 'Quartly Journal'.

D) मद्रास की प्रमुख संस्थाएं

संस्था	स्थापना	संस्थापक	उद्देश्य	विशेषताएं
1) मद्रास नेटिव एसोसिएशन	26 फरवरी 1852	गुजलू लक्ष्मी नरसुचेट्टी	कानूनी और सरकारी नियमों के साथ जनता की समस्याओं की वकालत करना	<ul style="list-style-type: none"> ℳ इस संस्था ने 1857 के विद्रोह की भर्त्सना की थी। ℳ इसके अध्यक्ष सी.वाई. मुदलियार और सचिव वी. रामानुजाचारी चुने गए। ℳ 13 जुलाई, 1852 ई. को इस संस्था ने अपना नाम बदलकर 'मद्रास नेटिव एसोसोसिएशन' रख दिया और इसने लन्दन में अपना प्रतिनिधि माल्कम लेविन को नियुक्त किया।
2) मद्रास महाजन सभा	16 मई, 1884 ई.	सुब्रह्मण्यम अय्यर, आनन्द चालू, एम.वी. राघवाचारी	स्थानीय संगठनों के कार्यों को समन्वित करना एवं महाजनों तथा किसानों के बीच संघर्ष को रोकना था।	<ul style="list-style-type: none"> ℳ इस संस्था के अध्यक्ष वी. राघवाचारी तथा सचिव आनन्द चालू चुने गए। ℳ इसका प्रथम सम्मेलन 29 दिसम्बर, 1884 से 2 जनवरी, 1885 तक मद्रास में हुआ था। इस सम्मेलन में विधान परिषदों के सुधार, कार्यपालिका से न्यायपालिका के अलगाव तथा खेतिहर वर्गों की हालत पर विचार किया गया।

D) Major Institutions of Madras

Institution	Establishment	Founded by	Purpose	Properties
1) Madras Native Association	26 February 1852	Gazulu Lakshminarasu Chetty	Advocating for the public's problems with legal and government regulations	<ul style="list-style-type: none"> ℒ This organization condemned the revolt of 1857. ℒ C.Y. Mudaliar and Secretary V. Ramanujachari were elected as president ℒ On July 13, 1852, this organization changed its name to 'Madras Native Association' and it appointed Malcolm Levin as its representative in London.
2) Madras Mahajan Sabha	16 May, 1884 E.	Subrahmanyam Iyer, Anand Chalu, M.V. Raghavachari	To coordinate the work of local organizations and to prevent conflict between moneylenders and peasants.	<ul style="list-style-type: none"> ℒ V. Raghavachari and secretary Anand Chalu were elected as the president of this institution. ℒ Its first conference was held in Madras from 29 December 1884 to 2 January 1885. The reforms of the Legislative Councils, the separation of the judiciary from the executive and the condition of the agricultural classes were discussed in this conference.

E) विदेशी प्रमुख संस्थाएं

संस्था	स्थापना	संस्थापक	उद्देश्य	विशेषताएं
1) लंदन इंडियन कमेटी	1862, लंदन में	पुरुषोत्तम मुदालियर	लंदन में भारतीयों को संगठित कर राष्ट्रहित में आवाज को बुलंद करना	
2) लंदन इंडिया सोसायटी	24 मार्च 1865	दादा भाई नौरोजी तथा डब्ल्यू सी बनर्जी	दादाभाई नौरोजी ने इस संस्था के माध्यम से भारतीयों की दुर्दशा का ज्ञान ब्रिटिश सरकार को कराया था।	
3) ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन	1 दिसम्बर 1866 ई., लंदन में	दादाभाई नौरोजी	भारतीय जनता की समस्याओं पर विचार-विमर्श करना और इससे ब्रिटेन की जनता का मत प्रभावित करना था	<ul style="list-style-type: none"> ॥ इस संगठन को प्रत्यक्ष रूप से 'बाम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन' का सहयोग मिला था ॥ 22 मई, 1869 ई. को बम्बई में इसकी शाखा स्थापित हुई। इसके अध्यक्ष जमशेदजी जीजीभाई और सचिव फिरोजशाह मेहता एवं एच.वी.एम. वागले बने।

E) Foreign major entities

Institution	Establishment	Founded by	Purpose	Properties
1) London Indian Committee	1862, in London	Purushottam Mudaliar	To raise voice in national interest by organizing Indians in London	
2) London India Society	24 March 1865	Dadabhai Noroji and W.C. Banerjee	Dadabhai Noroji had made the British government aware of the plight of Indians through this institution.	
3) East India Association	1 December 1866 E., in London	Dadabhai Noroji	To discuss the problems of the Indian people and thereby influence the opinion of the British people	<ul style="list-style-type: none"> ℳ This organization was directly supported by the 'Bombay Presidency Association'. ℳ On May 22, 1869, its branch was established in Bombay. Its president is Jamsetji Jiji bhai and its secretaries are Ferozeshah Mehta and H.V.M. Wagle.

F) योगदान

- 1) 1875 ई. में कपास पर आयात शुल्क आरोपित करने का विरोध
- 2) सिविल सेवाओं के भारतीयकरण हेतु (1878-79 ई.) :- भारतीय सिविल सेवा में प्रवेश की न्यूनतम आयु कम किये जाने के विरोध में इंडियन एसोसिएशन द्वारा अखिल भारतीय प्रदर्शन किया गया।
- 3) लॉर्ड लिटन की अफगान नीति के अंतर्गत अत्यधिक धन एवं जन की बर्बादी के विरोध में।
- 4) शस्त्र अधिनियम (1878 ई.) के विरोध में।
- 5) भारतीय भाषा समाचार-पत्र अधिनियम (1878 ई.) के विरोध में।
- 6) **'इंग्लैंड इमिग्रेशन एक्ट'** के विरोध में।
- 7) इल्बर्ट बिल के समर्थन में।
- 8) ब्रिटेन में भारत का समर्थन करने वाले दल के लिये मतों (वोट) हेतु अभियान।

इस प्रकार कांग्रेस से पूर्व स्थापित राजनीतिक संगठनों ने विभिन्न माध्यमों यथा- राजनीतिक सभा/ सम्मेलन, विज्ञापनों तथा समाचार-पत्रों द्वारा सरकारी नीतियों के राजनीतिक प्रतिरोध का आरम्भ किया गया और देश में एक अखिल भारतीय संस्था के गठन का आधार तैयार किया गया।

F) Contribution

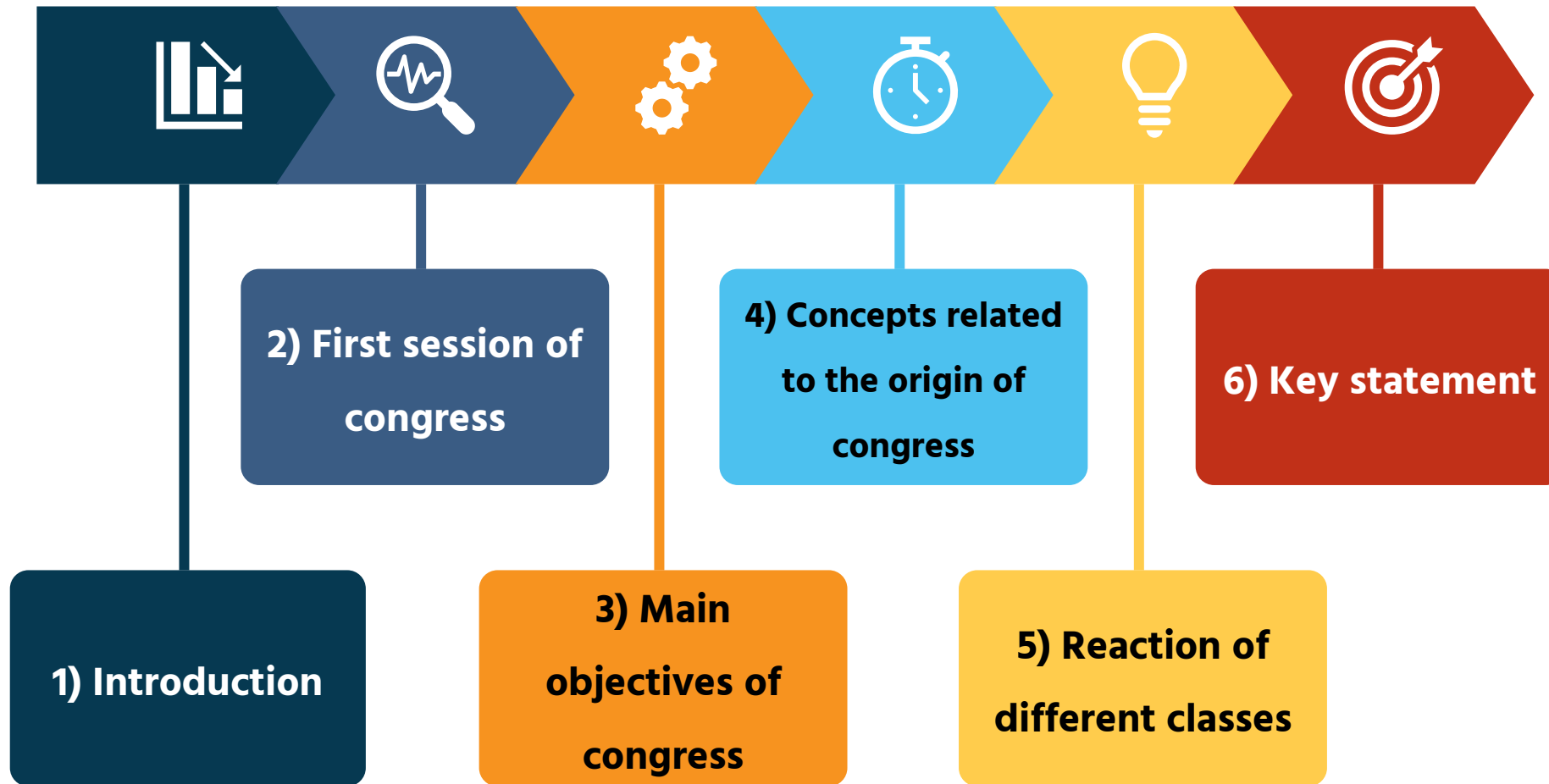
- 1) Opposition to the imposition of import duty on cotton in 1875 AD
- 2) For Indianization of Civil Services (1878-79 AD): - All India demonstration was organized by the Indian Association against the reduction of the minimum age for entry into the Indian Civil Services.
- 3) Against the wastage of excessive money and people under the Afghan policy of Lord Lytton.
- 4) Against the Arms Act (1878 AD).
- 5) Against the Indian Language Newspapers Act (1878 AD).
- 6) Against the '**England Immigration Act**'.
- 7) In support of Ilbert Bill.
- 8) Campaign for votes for the party supporting India in Britain

In this way, political organizations established before the Congress started political resistance to government policies through various means such as political meetings/conferences, advertisements and newspapers and the basis for the formation of an all-India institution in the country was prepared.

7.3) कांग्रेस की स्थापना



7.3) Establishment of Congress



A) परिचय

कांग्रेस शब्द की उत्पत्ति उत्तरी अमेरिका से हुई है, जिसका अर्थ
“व्यक्तियों का समूह” होता है

- 1) **संस्थापक व प्रथम सचिव :-** सेवानिवृत्त अंग्रेज अधिकारी एलन ऑक्टोवियन ह्यूम
- 2) **आरम्भिक नाम :-** भारतीय राष्ट्रीय संघ (दादा भाई नौरोजी की सिफारिश पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस)
- 3) **प्रथम सम्मेलन :-** गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज ज़ बम्बई 28 दिसम्बर 1885 (हैजा के कारण पूना के स्थान पर बम्बई)
- 4) **प्रथम अध्यक्ष :-** व्योमेश चन्द्र बनर्जी
- 5) **सदस्य :-** 72
- 6) **मुख्य सदस्य :-** दादा भाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, दिनशावाचा, K. T. तैलंग, B. राघवाचारी, S. सुब्रह्मण्यम आदि

- 7) कांग्रेस स्थापना की खबर मद्रास के समाचार पत्र **हिन्दू** में छपी कांग्रेस को ह्यूम ने भारत का विस्तृत दौरा करने के बाद गठित किया, इस प्रकार यह आकस्मिक घटना न होकर 19वीं सदी की राजनीतिक गतिविधियों की परिणति थी जिसने राजनीतिक मांगों व सुधार हेतु अखिल भारतीय मंच तैयार किया



A) Introduction

The word Congress is derived from North America, which means "group of persons".

1) Founder and First Secretary :- Retired English officer
Allan Octavian Hume

2) Initial name :- Indian National Association (Indian National Congress on the recommendation of dadabhai Noroji)

3) First conference :- Gokuldas Tejpal Sanskrit College
Bombay 28 December 1885 (Bombay in place of Poona due to cholera)

4) First president :- Vyomesh Chandra Banerjee

5) Member :- 72

6) Core member :- Dadabhai Naoroji, Firozshah Mehta, Dinshawacha, K. T. Tailang, B. Raghavachari, S. Subrahmanyam etc.

7) The news of the establishment of the Congress appeared in the Hindu newspaper of Madras.

The Congress was formed by Hume after an extensive tour of India, thus it was not an accident but a culmination of the political activities of the 19th century, which created an all-India platform for political demands and reforms.

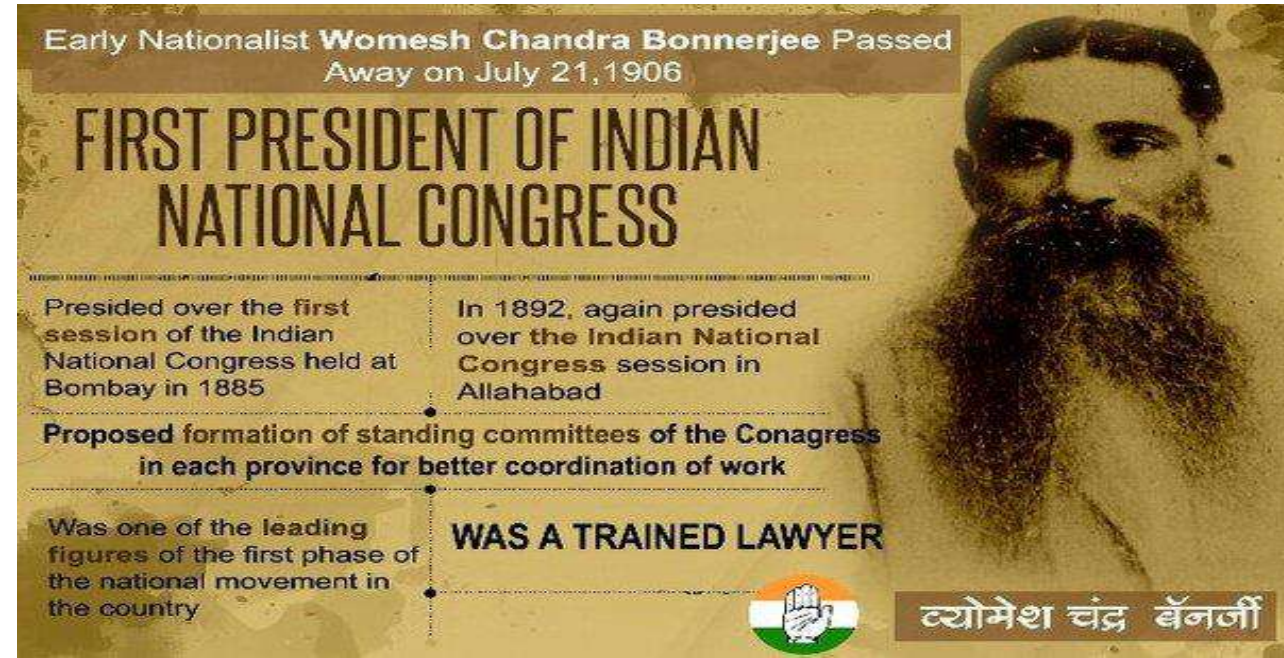


B) कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन

- ❑ **अध्यक्ष :-** व्योमेश चन्द्र बनर्जी
- ❑ **सचिव :-** एलन ऑक्टोवियन ह्यूम
- ❑ **कांग्रेस ने प्रथम अधिवेशन में निम्नलिखित 9 प्रस्तावों को पेश किया :-**

- 1) शाही कमीशन के अनुसार प्रशासन में भारतीयों को प्रतिनिधित्व प्रदान करना
- 2) इंडिया कौंसिल को भंग किया जाए
- 3) केंद्रीय तथा प्रांतीय लेजिसलेटिव कौंसिलों का विस्तार तथा भारतीयों को वार्षिक बजट पर विचार करने तथा प्रश्न पूछने का अधिकार दिया जाए
- 4) इंडियन सिविल सर्विस की परीक्षा इंग्लैंड और भारत में एक साथ कराई जाए और अधिकतम उम्र 19 वर्ष से बढ़ाकर 23 वर्ष की जाए

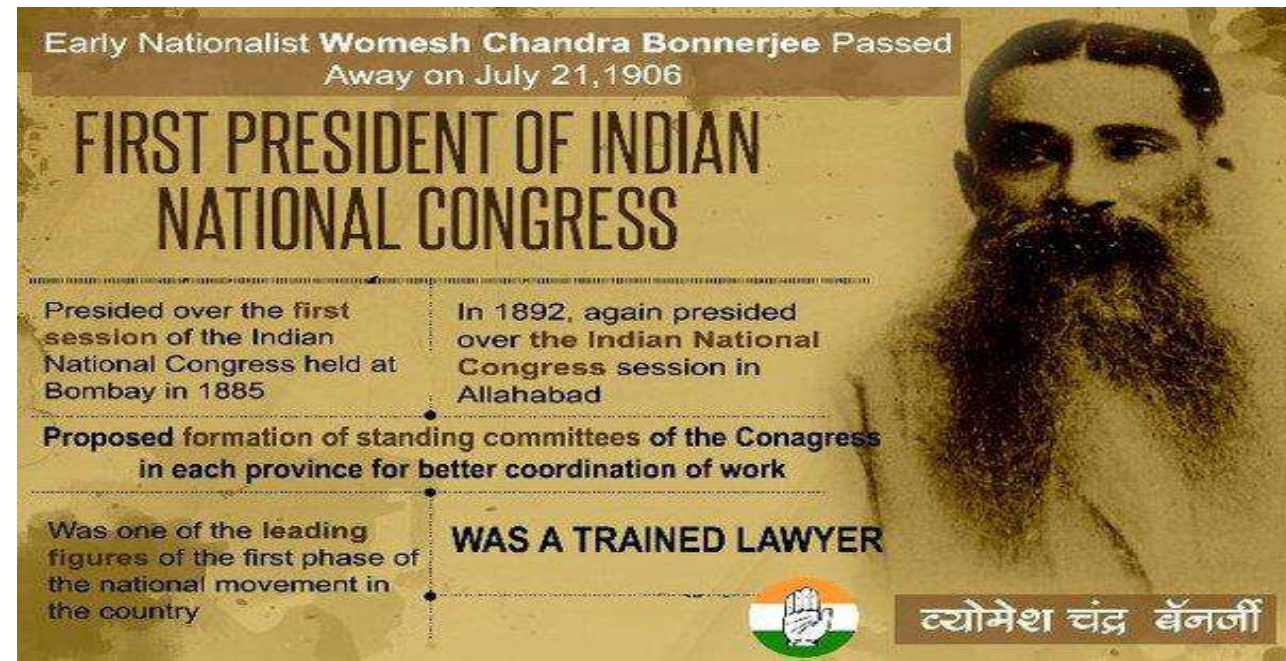
- 5) सेना पर खर्च घटाया जाए
- 6) चुंगी कर फिर से लगाई जाए
- 7) बर्मा को, जिस पर अधिकार कर लेने की निंदा की गई अलग कर दिया जाए
- 8) उक्त प्रस्तावों को सभी प्रांतों की सभी राजनीतिक संस्थाओं को भेजा जाए ताकि वे उसके क्रियान्वयन की मांग कर सकें
- 9) अगले वर्ष कलकत्ता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन फिर से बुलाया जाए



B) First session of congress

- ❑ **President :-** Vyomesh Chandra Banerjee
- ❑ **Secretary :-** Alan Octavian Hume
- ❑ **Congress introduced the following 9 resolutions in the first session :-**
 - 1) To provide representation to Indians in administration as per royal commission
 - 2) India council should be dissolved
 - 3) Expansion of Central and Provincial Legislative Councils and empowering Indians to consider and ask questions on the annual budget
 - 4) Indian Civil Service examination should be conducted in England and India simultaneously and the maximum age should be increased from 19 years to 23 years

- 5) Military expanses should be reduced
- 6) Burma, condemned to be occupied
- 7) The above proposals should be sent to all the political institutions of all the provinces so that they can demand its implementation.
- 8) The Indian National Congress session should be call again in Calcutta next year.



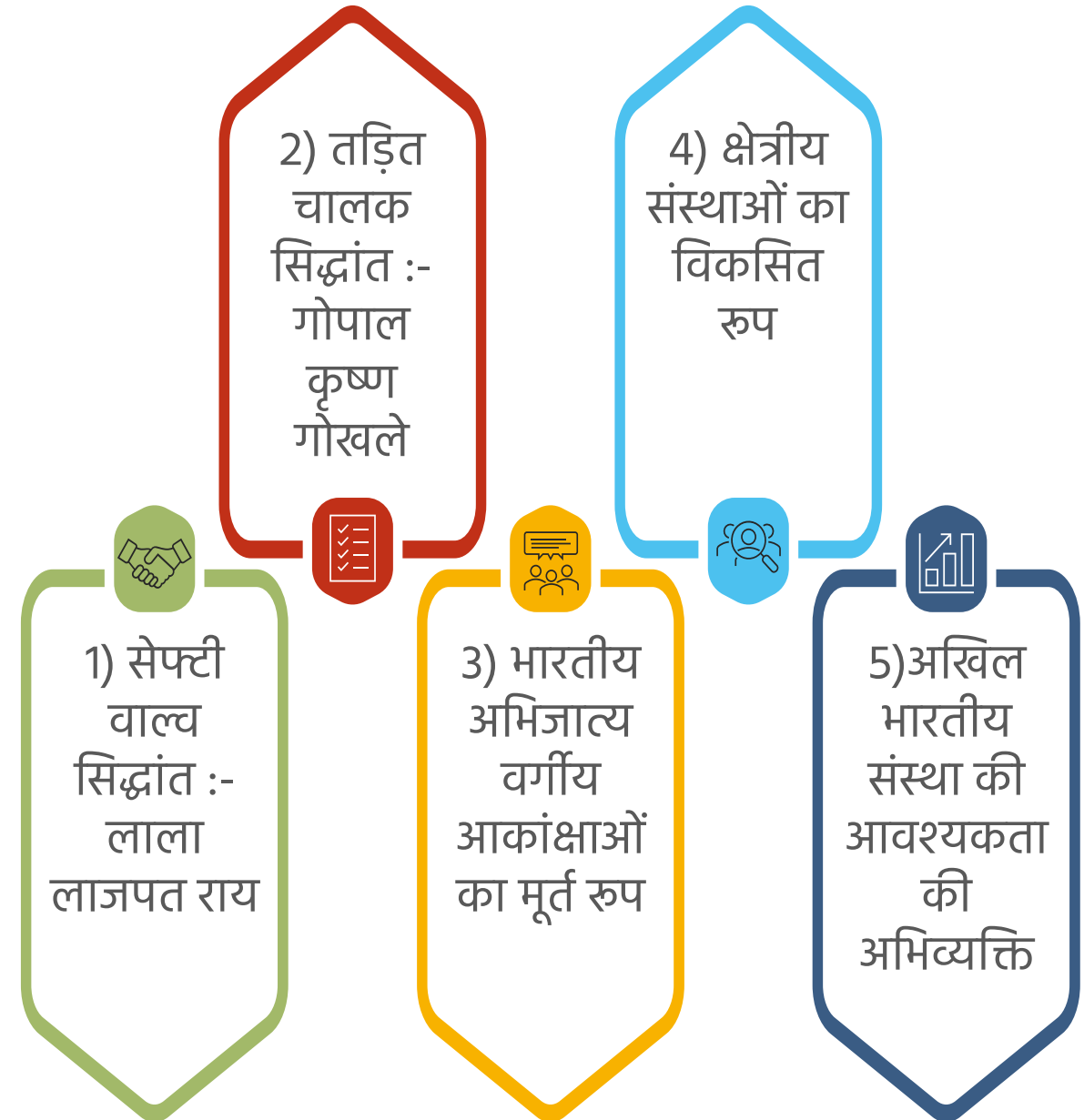
C) कांग्रेस के उद्देश्य

काँग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए व्योमेश चन्द्र बनर्जी ने इसके निम्नलिखित उद्देश्य बतलाये :-

- 1) देश हित की रक्षा करने वाले भारतीयों के बीच व्यक्तिगत सम्पर्क एवं मित्रता बढ़ाना।
- 2) देश प्रेमियों के बीच जाति, सम्प्रदाय तथा प्रान्तीय पक्षपातों की भावना को दूर करके, राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित करना।
- 3) शिक्षित वर्ग की पूर्ण सम्मति से महत्वपूर्ण और आवश्यक सामाजिक प्रश्नों पर विचार प्रकट करना।
- 4) यह निर्धारित करना कि आगामी वर्ष में भारतीय राजनीतिज्ञ लोकहित के लिए किस दिशा में?

स्पष्ट है कि स्थापना के समय भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के उद्देश्य सीमित थे, पर उत्तरोत्तर इस संस्था की शक्ति बढ़ती गयी जिसका परिणाम भारत की स्वतन्त्रता के रूप में हमारे सामने आया।

D) कांग्रेस की उत्पत्ति से संबंधित अवधारणाएं



C) Objectives of Congress

Presiding over the first session of the Congress, Vyomesh Chandra Banerjee stated the following objectives :-

- 1) To increase personal contact and friendship among Indians who protect the interest of the country.
- 2) To develop the feeling of national unity among the patriot by removing the feeling of caste, sect and provincial biases.
- 3) To express views on important and necessary social questions with the full consent of the educated class.
- 4) Determining in which direction the Indian politician will serve the public interest in the coming year?

It is clear that the objectives of the Indian National Congress were limited at the time of establishment, but progressively the power of this institution increased, which resulted in the independence of India.

D) Concepts related to the origin of Congress



-: D.1) सेफ्टी वाल्व थ्योरी || Safety Valve Theory :-

इस अवधारणा का प्रतिपादन लाला लाजपत राय ने यंग इंडिया के लेख में ह्यूम के जीवन-वृत्तांत-लेखक विलियम वेडरबर्न के कथन को आधार बनाकर कांग्रेस के उदारवादी नेतृत्व के संदर्भ में किया था।

- 1) अवधारणा :-** कॉन्ग्रेस लॉर्ड डफरिन के दिमाग की उपज है जिसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन के प्रति संभावित राजनीतिक असंतोष की लहर को रोकना है।
- 2) समर्थक :-** रजनी पाम दत्त, मार्क्सवादी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सीएफ एंड्रयूज व गिरिजा मुखर्जी
- 3) तार्किक विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि ह्यूम, डफरिन के मतानुसार कार्य नहीं कर रहे थे। साथ ही कांग्रेस की स्थापना के पश्चात डफरिन, कांग्रेस के प्रति असहिष्णु हो गए।

इस तरह कांग्रेस की स्थापना के संदर्भ में यह सिद्धांत प्रमाणित नहीं होता, क्योंकि वायसराय डफरिन और ह्यूम के मध्य संबंध कटुता पूर्ण थे। डफरिन ने कांग्रेस की आलोचना करते हुए इसे "मुट्टी भर लोगों" का समूह कहा था। इस तरह कांग्रेस की स्थापना को एक व्यक्ति के मस्तिष्क की उपज मानना ऐतिहासिक प्रवृत्तियों को संकुचित दृष्टिकोण में देखना है। वस्तुतः कांग्रेस से पूर्व भी कई क्षेत्रीय राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना हो चुकी थी तथा राष्ट्रवाद का प्रसार हो रहा था। इस प्रकार भारत की राजनीतिक समस्याओं तथा सुधारों के लिए एक अखिल भारतीय मंच के रूप में कांग्रेस की स्थापना की गई।

-: D.1) Safety Valve Theory :-

This concept was propounded by Lala Lajpat Rai in the Young India article on the basis of the statement of Hume's biographer William Wedderburn in the context of the liberal leadership of the Congress.

- 1) Concept :-** The Congress is the brainchild of Lord Dufferin whose aim is to stem a wave of possible political discontent towards British rule.
- 2) Supporter :-** Rajni Pam Dutt, Marxist Rashtriya Swayamsevak Sangh, CF Andrews and Girija Mukherjee
- 3) On logical analysis it is clear that Hume was not acting according to Dufferin's opinion. Also, after the establishment of Congress, Dufferin became intolerant towards Congress.

Thus, in the context of the establishment of the Congress, this theory is not proved, because the relations between Viceroy Dufferin and Hume were not good. Dufferin criticized Congress, calling it a group of "a handful of people". Thus to consider the establishment of the Congress as a product of one man's mind is to look at historical tendencies in a narrower perspective. In fact, even before the Congress, many regional political institutions had been established and nationalism was spreading. Thus the Congress was established as an all-India forum for India's political problems and reforms.

-: D.2) तड़ित चालक का सिद्धांत ||

Lightning Conductor Theory :-

- 1) सुरक्षा कपाट की अवधारणा के विपरीत **गोपाल कृष्ण गोखले** के द्वारा प्रस्तावित सिद्धांत
- 2) इस अवधारणा के अनुसार भारतीय बुद्धिजीवियों ने ब्रिटिश सेवानिवृत्त अधिकारी ह्यूम का उपयोग भारतीय हितों के लिए किया अन्यथा अंग्रेजी सरकार कांग्रेस जैसी संस्था को विकसित होने से पहले ही दमन कर देती
- 3) इस तरह ह्यूम और दूसरे अंग्रेज उदारवादियों ने कांग्रेस के लिए "तड़ित चालक" का काम किया तथा कांग्रेस पर गिरने वाली सरकारी दमन की बिजली से उसे बचाया।

-: D.3) भारतीय अभिजात्य वर्गीय आकांक्षाओं का मूर्त रूप ||

Manifestation of the aspirations of Indian aristocratic class :-

- 1) इस अवधारणा के अनुसार कांग्रेस अभिजात वर्ग की आकांक्षाओं तथा उनके स्वार्थों को सिद्ध करने वाला एक आंदोलन था
- 2) हालांकि यह अवधारणा ना सिर्फ गलत है बल्कि उस पवित्र भावना तथा राष्ट्रवादी नेताओं की उपेक्षा है जिसने भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया।

-: D.4) क्षेत्रीय संस्थाओं का विकसित रूप || Developed form of regional organizations :-

कांग्रेस की स्थापना से पूर्व भारतीयों द्वारा अनेक राष्ट्रीय राजनीतिक संगठनों की स्थापना के प्रयास किए गए

एस एन बनर्जी के इंडियन एसोसिएशन को तो कांग्रेस की पूर्वगामी संस्था की संज्ञा दी जाती है इस प्रकार कांग्रेस को क्षेत्रीय संस्थाओं का विकसित रूप माना जाता है

-: D.2) Lightning Conductor

Theory :-

- 1) The theory proposed by **Gopal Krishna Gokhale** in contrast to the concept of security valve
- 2) According to this concept, Indian intellectuals used British retired officer Hume for Indian interests, otherwise the British government would have suppressed the institution like Congress before it could develop.
- 3) Thus Hume and other English liberals acted as "lightning drivers" for the Congress and protected it from the lightning of government repression falling on the Congress.

-: D.3) Manifestation of the aspirations of Indian aristocratic class :-

- 1) According to this concept, the Congress was a movement to fulfill the aspirations of the elite and their interests.
- 2) However, this concept is not only wrong, but it neglect the sacred spirit and nationalist leaders who infused national consciousness in the Indian public.

-: D.4) Developed form of regional organizations :-

Before the establishment of the Congress, efforts were made by the Indians to establish many national political organizations. SN Banerjee's Indian Association is called the precursor to the Congress, thus the Congress is considered to be an evolved form of regional organizations.

-: D.5) अखिल भारतीय संस्था की आवश्यकता की

अभिव्यक्ति || Expression of the need for all India organization :-

- 1) 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में आधुनिक शिक्षित नवीन मध्य वर्ग में होने के कारण 1857 ई. के विद्रोह के दौरान राजनीतिक चेतना के अभाव में इनकी सहानुभूति ब्रिटिश शासन के प्रति रही।
- 2) किंतु 1870 ई. के दशक में औपनिवेशिक शोषण प्रणाली के प्रति भारतीयों की समझ बेहतर हुई और राजनीतिक चेतना का विकास हुआ और इसी क्रम में आम जन में राष्ट्रवादी भावना से जुड़े मुद्दों को सरकार के समक्ष
- 3) मज़बूती से रखने के लिये अखिल भारतीय संस्था के रूप में कांग्रेस की स्थापना हुई।

E) विभिन्न वर्गों की प्रतिक्रिया

- 1) **व्यापारी वर्ग :-** कांग्रेस के प्रति व्यापारी वर्ग का दृष्टिकोण सहयोगात्मक रहा ब्रिटिश सरकार द्वारा देश के आर्थिक विकास की उदासीनता को देखते हुए व्यापारी वर्ग कांग्रेस की तरफ खिंचते चले गए क्योंकि कांग्रेस देश में आर्थिक विकास के लिए संघर्षरत थी
- 2) **सामंतवादी वर्ग :-** परंपरागत सामंतवादी वर्ग जैसे जमींदार, साहूकार आदि राष्ट्रवादियों द्वारा स्वराज की मांग किए जाने से चिंतित हो गए क्योंकि स्वराज के अंतर्गत समतामूलक सामाजिक आर्थिक प्रशासन के आदर्श निहित होते हैं अतएव यह वर्ग ब्रिटिश सरकार का पक्षधर हो गया

-: D.5) Expression of the need for all India organization :-

- 1) Being in the modern educated new middle class in the first half of the 19th century, during the revolt of 1857 AD, due to lack of political consciousness, his sympathy was towards the British rule.
- 2) But in the decade of 1870, the understanding of Indians towards the colonial exploitation system improved and political consciousness developed and in this sequence the issues related to nationalist sentiment among the common people were brought before the government.
- 3) The Congress was established as an all-India organization to keep it firmly.

E) Reaction of different classes

- 1) **Merchant class :-** The attitude of the business class towards the Congress was cooperative, in view of the apathy of the economic development of the country by the British government, the business class was drawn towards the Congress because the Congress was struggling for economic development in the country.
- 2) **Feudal class :-** Traditional feudal classes like zamindars, moneylenders, etc. became concerned about the demand for Swaraj by the nationalists as Swaraj contained the ideals of egalitarian socio-economic administration, so this class favored the British government.

3) आम जनता || Common Class :- आरम्भ में कांग्रेस का स्वरूप शहरी एवं मध्यमवर्गीय था। इसकी पहुँच सीमित वर्ग तक ही थी, क्योंकि इसका दायरा अभी सिर्फ पढ़े-लिखे भारतीयों तक ही था। अधिकांश जनता में शिक्षा का अभाव था अतएव जनता आरम्भ में कांग्रेस का महत्त्व सही ढंग से नहीं समझ सकी, परंतु कांग्रेस ने क्रमशः आम जनता की शिकायतों एवं अधिकारों को जब अपने संघर्ष में शामिल किया, तब कांग्रेस को जनता अपनी प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्वीकार करने लगी। किसानों एवं मज़दूर वर्ग का भी समर्थन कांग्रेस को मिला।

4) सरकार/प्रशासक वर्ग || Government/Administrative Class :- कांग्रेस के प्रति सरकार की नीति परिवर्तनशील रही। आरंभिक समय में ब्रिटिश सरकार ने कांग्रेस के प्रति कोई कठोर रवैया नहीं अपनाया किंतु जैसे ही इलाहाबाद अधिवेशन (1888 ई.) से कांग्रेस ने राष्ट्रवादी आंदोलन के प्रसार में भूमिका निभानी शुरू की, वैसे ही ब्रिटिश सरकार का कांग्रेस के प्रति रवैया उत्तरोत्तर विरोधी होता चला गया।

- 3) Common Class :-** Initially the Congress was urban and middle class in nature. Its reach was limited to only a limited class, because its scope was still only to educated Indians. There was a lack of education in most of the people, so the public could not understand the importance of Congress properly in the beginning, but when the Congress gradually included the grievances and rights of the common people in its struggle, then the people accepted the Congress as their representative institution. Started. The Congress also got the support of the peasants and the working class.
- 4) Government/Administrative Class :-** The policy of the government towards the Congress remained variable. In the early times, the British government did not adopt any rigid attitude towards the Congress, but as soon as the Congress started playing a role in the spread of the nationalist movement from the Allahabad session (1888 AD), the attitude of the British government towards the Congress became increasingly antagonistic

F) प्रमुख कथन

- 1) कांग्रेस के बारे में डफरिन ने कहा था कि **'यह जनता के उस अल्पसंख्यक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जिसकी संख्या सूक्ष्म है।**
- 2) कांग्रेस के बारे में एक बार कर्जन ने कहा था कि **'कांग्रेस अपनी मौत की घड़ियाँ गिन रही है,** भारत में रहते हुये मेरी एक सबसे बड़ी इच्छा है कि मैं उसे शांतिपूर्वक मरने में मदद करूँ।' कर्जन ने ही कांग्रेस को 'गंदी चीज' और देशद्रोही संगठन आदि संज्ञा प्रदान की थी।
- 3) व्योमेश चंद्र बनर्जी के अनुसार **'कांग्रेस वास्तव में डफरिन की देन थी। '**
- 4) लाला लाजपत राय ने भी कांग्रेस को **'डफरिन के दिमाग की उपज'** बताया था। उन्होंने ही 'कांग्रेस सम्मेलनों को शिक्षित भारतीयों के राष्ट्रीय मेले की संज्ञा दी थी।
- 5) आर सी दत्त ने कांग्रेस की स्थापना को **'ब्रिटिश सरकार की एक पूर्व निश्चित गुप्त योजना का परिणाम'** बताया।
- 6) तिलक ने कहा था कि **'यदि वर्ष में हम एक बार मेढ़क की भांति टरारें तो हमें कुछ नहीं मिलेगा।'**
- 7) विपिन चंद्र पाल ने कांग्रेस को **'याचना संस्था'**, अश्विनी कुमार दत्त ने **'तीन दिनों का तमाशा'** कहा। पाल ने कांग्रेस की नीति को **'भिखमंगी नीति'** की संज्ञा दी थी।

F) Key statement

- 1) Regarding the Congress, Dufferin said that **'it represents that minority of the people whose numbers are small.**
- 2) Curzon once said about the Congress **The Congress is tottering to its fall** and one of my great ambitions while in India, is to assist it to a peaceful demise.” '. It was Curzon who had given the name of Congress 'dirty thing' and anti-national organization etc.
- 3) According to Vyomesh Chandra Banerjee, **'The Congress was actually Dufferin's gift. ,**
- 4) Lala Lajpat Rai had also called the Congress the **'brainchild of Dufferin'**. It was he who termed the Congress conferences as the national fair of educated Indians.
- 5) RC Dutta described the formation of the Congress as **"the result of a pre-determined secret plan of the British Government".**
- 6) Tilak had said that **'If we trample like a frog once in a year, we will get nothing.'**
- 7) Vipin Chandra Pal called the Congress a **'solicitation body'**, Ashwini Kumar Dutt a **'three-day tamasha'**. Pal had termed the policy of Congress as **'beggar policy'**.

अध्याय – 08 || Chapter - 08

राष्ट्रीय आंदोलन का उदारवादी चरण || Moderate Phase of National Movement (1885-1905)

1) उदारवादी चरण का परिचय

2) उदारवादियों के सिद्धांत
उद्देश्य तथा विचारधारा

3) उदारवादियों की कार्यप्रणाली



6) उदारवादियों की सीमाएं

5) उदारवादियों की प्रमुख
उपलब्धियां

4) उदारवादियों की प्रमुख मांगें

Chapter - 08

Moderate Phase of National Movement (1885-1905)

1) Introduction to the Moderate phase

2) Theory, Objectives and Ideologies of Moderate

3) Modesty of Moderates



6) Moderates ' Limits

5) Major Achievements of Moderates

4) Main demands of Moderates

8.1) उदारवादी चरण का परिचय

1885 में कांग्रेस की स्थापना से 1905 तक का समय कांग्रेस के नेतृत्व कर्ताओं तथा कार्यप्रणाली के कारण उदारवादी चरण कहलाता है। इस समय कांग्रेस पर फिरोजशाह मेहता, दादाभाई नौरोजी, व्योमेश चंद्र बनर्जी, सुरेंद्रनाथ बनर्जी, रमेश चंद्र दत्त जैसे समृद्धशाली मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों का प्रभाव था।

1) **उद्देश्य :-** ब्रिटिश शासन के अंतर्गत ही स्वराज की मांग तथा अ-ब्रिटिश शासन (Unbritish Rule) का विरोध

2) **वैचारिक पृष्ठभूमि :-**

- Ω आंदोलन के नेतृत्वकर्ता मध्यम वर्गीय पेशेवर लोग थे, जो जन आंदोलन के स्थान पर क्रमिक तथा संवैधानिक सुधारों के समर्थक थे।
- Ω प्रारंभिक नेतृत्वकर्ता ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली, नागरिक अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, औद्योगिक क्रांति, न्यायप्रियता के कारण ब्रिटिश शासन को अच्छा समझते थे और भारत में भी ऐसे ही शासन की मांग करते थे।
- Ω इन्होंने अपने विरोध का माध्यम प्रार्थना पत्र, प्रतिवेदन, स्मरण पत्र, भाषण, अखबार तथा निवेदन को बनाया।

इस प्रकार वे ब्रिटिश शासन का विरोध करने के स्थान पर **अ-ब्रिटिश शासन** तथा **भारत में वायसराय** की नीतियों का विरोध करते थे।

8.1) Introduction to the Moderates phase

The period from the establishment of the Congress in 1885 to 1905 is called the liberal phase due to the leadership and functioning of the Congress. At this time the Congress was influenced by rich middle-class intellectuals like Ferozeshah Mehta, Dadabhai Noroji, Womesh Chandra Banerjee, Surendranath Banerjee, Ramesh Chandra Dutt

1) **Purpose :-** Demand for Swaraj under British rule and opposition to non-British rule

2) **Conceptual background :-**

- Ω The leaders of the movement were middle-class professionals, who supported gradual and constitutional reforms rather than mass movements.
- Ω The early leaders understood British rule as good because of Britain's parliamentary system, civil rights, freedom of expression, industrial revolution, justice and demanded similar governance in India.
- Ω He made the medium of his protest application, report, reminder letter, speech, newspaper and request.

In this way, instead of opposing British rule, they opposed **non-British rule** and **Viceroy's policies in India.**

8.2) उदारवादियों के सिद्धांत, उद्देश्य तथा विचारधारा

- 1) ब्रिटिश शासन को एक वरदान माना :-** उदारवादियों का मानना था कि ब्रिटिश शासन के कारण भारत में प्रगतिशील मूल्यों का प्रादुर्भाव हुआ है, जबकि विदेशी आक्रमण और अराजकता का अंत हुआ है। एक सुनिश्चित प्रशासनिक एवं न्याय प्रणाली का निर्माण, अंग्रेजी शिक्षा और यातायात के साधनों का विकास करके भारत में आधुनिकता की नींव रखी है।
- 2) धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद –** कांग्रेस को सांप्रदायिकता, जातिवाद आदि से दूर रखने का प्रयास तथा सभी वर्गों की एकता के द्वारा स्वशासन की मांग।
- 3) ब्रिटिश शासन की न्याय प्रियता में विश्वास –** उदारवादियों का मानना था की जब अंग्रेजों को भारतीयों की योग्यता पर विश्वास हो जाएगा तो वे उन्हें स्वशासन जरूर देंगे तथा हमारी सभी मांगों को पूरा करेंगे।
- 4) पूर्ण स्वराज के स्थान पर स्वशासन की प्राप्ति का लक्ष्य :-** भारतीयों को स्वशासन या अधिराज्य के तहत वही दर्जा प्राप्त होना चाहिए जो कनाडा तथा ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य अधिराज्यों को प्राप्त है
- 5) संवैधानिक उपायों के औचित्य में विश्वास या निष्क्रिय प्रतिरोध :-** क्योंकि कांग्रेस उस समय बाल्य अवस्था में थी अतः अंग्रेजी नीतियों का उग्र विरोध करने के स्थान पर विनम्र तथा उदारवादी विरोध की नीति को अपनाया
- 6) राजनीति का आध्यात्मिकरण :-** गोपाल कृष्ण गोखले का मानना था की, राजनीति का एकमात्र उद्देश्य देश सेवा तथा उचित साधनों के प्रयोग से उचित लक्ष्य की प्राप्ति होना चाहिए। इसमें छल कपट जैसी प्रवृत्तियां नहीं होनी चाहिए।

8.2) Principles, Objectives and Ideology of moderates

- 1) **Considered British rule as a boon :-** Liberal litigants believed that due to British rule, progressive values have emerged in India, while foreign invasion and anarchy have come to an end. The foundation of modernity has been laid in India by building administrative and judicial system, developing English education and means of transport.
- 2) **Secular Nationalism :-** Attempt to keep Congress away from communalism, casteism etc. and demand for self-government through unity of all classes.
- 3) **Belief in the justice of British rule :-** The liberal litigants believed that when the British would have confidence in the ability of Indians, they would definitely give them self-government and fulfill all our demands.
- 4) **The goal of achieving self-government in place of Purna Swaraj :-** Indians should get the same status under self-government or dominion as other dominions like Canada and Australia
- 5) **Belief in the justification of constitutional measures or passive resistance :-** Because the Congress was in its infancy at that time, instead of fiercely opposing the British policies, the policy of polite and liberal opposition was adopted.
- 6) **Spiritualization of Politics :-** Gopal Krishna Gokhale believed that the sole purpose of politics should be to serve the country and achieve the right goal by using the right means. There should be no tendencies like deceit.

7) अन्य :-

- Ω जन जागरूकता व जनमानस को राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ना, हालांकि इस समय कुछ नेताओं का मानना था कि भारतीय जनता अशिक्षित है अतः उसे राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल नहीं करना चाहिए।
- Ω पाश्चात्य शिक्षा की उपयोगिता में दृढ़ विश्वास
- Ω हिंदू मुस्लिम तथा राष्ट्रीय एकता में विश्वास
- Ω मानव प्रगति के लिए स्वतंत्रता में विश्वास
- Ω सुधार हेतु संवैधानिक साधनों तथा क्रमिक सुधारों में विश्वास

8.3) उदारवादियों की कार्यप्रणाली

- 1) अहिंसक एवं संवैधानिक प्रदर्शनों के द्वारा अंग्रेजों से उदारवादी नीतियों की मांग
- 2) प्रतिवेदनो, लेखों, सभाओं द्वारा ब्रिटिश राज्य की प्रशंसा करते हुए अपनी मांगों को सरकार के समक्ष रखना
- 3) समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के माध्यम से जनमानस तक पहुंचने का प्रयास
- 4) भारतीयों को राजनीतिक मुद्दों पर शिक्षित करना
- 5) ब्रिटिश जनता और ब्रिटिश सरकार को भारतीयों की स्थिति की जानकारी देने हेतु लंदन में दादा भाई नौरोजी के द्वारा भारतीय सुधार समिति और विलियम डिग्बी की अध्यक्षता में ब्रिटिश कमेटी ऑन इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की गई।
- 6) भारत में धन के निष्कासन को रोकने हेतु ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का विरोध तथा औद्योगिक संरक्षण, भू राजस्व में कमी, नमक कर की समाप्ति जैसी मांगें।

इस प्रकार उदारवादियों ने **'याचना एवं प्रार्थना'** की पद्धति अपनाई जिससे कांग्रेस को सरकार की दमनकारी नीति का सामना नहीं करना पड़ा और वह बाल्य से युवा अवस्था में पहुंच सकी।

7) Other :-

- Ω Public awareness and connecting the public with the national movement, although at this time some leaders believed that the Indian public was uneducated, so it should not be included in the national movement.
- Ω Strong belief in the usefulness of western education
- Ω Hindu Muslim and belief in national unity
- Ω Believing in Freedom for Human Progress
- Ω Confidence in constitutional means for reform and gradual reforms

8.3) Modus operandi of Liberals

- 1) Demand for liberal policies from the British through non-violent and constitutional demonstrations
- 2) Praising the British state through reports, articles, meetings, placing its demands before the government
- 3) Efforts to reach the masses through newspapers and magazines
- 4) Educating Indians on Political Issues
- 5) In order to inform the British public and the British Government about the condition of Indians, the Indian Reform Committee by Dadabhai Noroji and the British Committee on Indian National Congress under the chairmanship of William Digby was established in London.
- 6) Opposing British economic policies to stop the expulsion of wealth in India and demands like industrial protection, reduction in land revenue, abolition of salt tax

Thus, the liberal litigants adopted the method of '**pleasure and prayer**' so that the Congress did not have to face the repressive policy of the government and it could reach the youthful stage from childhood.

8.4) उदारवादियों की प्रमुख मांगे

1) संवैधानिक मांगे :-

- ♀ विधायिका में भारतीयों की संख्या में वृद्धि
- ♀ वायसराय की कार्यकारी परिषद में दो भारतीय सदस्यों शामिल हो
- ♀ पश्चिमोत्तर प्रांत एवं पंजाब में नई परिषदे स्थापित की जाएं
- ♀ नागरिक अधिकार जैसे- संगठन बनाने की स्वतंत्रता, भाषण एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आदि प्रदान किए जाए

2) आर्थिक मांगे :-

- ♀ भारत से ब्रिटेन को होने वाले धन निष्कासन को रोका जाए
- ♀ अनावश्यक सैन्य तथा प्रशासनिक व्यय में कटौती।
- ♀ स्थाई बंदोबस्त को देश के अन्य क्षेत्रों में लागू किया जाए।
- ♀ भूराजस्व की दरों को कम करते हुए नमक कानून को समाप्त किया जाए।

- ♀ भारतीय उद्योगों के संरक्षण हेतु सीमा शुल्क में बढ़ोतरी तथा संरक्षणवादी नीति को अपनाया जाए।

3) प्रशासनिक मांगे :-

- ♀ भारत को कनाडा एवं ऑस्ट्रेलिया के समान स्वशासन का अधिकार दिया जाए
- ♀ सिविल सेवा का भारतीयकरण करते हुए परीक्षा का आयोजन इंग्लैंड एवं भारत में एक साथ हो तथा अधिकतम आयु सीमा भी बढ़ाई जाए
- ♀ शस्त्र अधिनियम को समाप्त किया जाए
- ♀ अकाल से बचने हेतु सिंचाई योजना का निर्माण
- ♀ प्राथमिक, तकनीकी एवं उच्च शिक्षा के प्रचार हेतु बजट में बढ़ोतरी
- ♀ न्यायपालिका को कार्यपालिका से पृथक किया जाए

8.4) Main demands of liberals

1) Constitutional demands :-

- ♀ Increase in the number of Indians in the legislature
- ♀ The Viceroy's Executive Council consists of two Indian members
- ♀ New councils should be set up in the North-Western Provinces and Punjab.
- ♀ Civil rights such as freedom of association, freedom of speech and expression etc. should be provided.

2) Economic demands :-

- ♀ Stop drain of wealth from India to Britain
- ♀ Reduction in unnecessary military and administrative expenditure.
- ♀ Permanent settlement should be implemented in other areas of the country.
- ♀ The salt law should be abolished while reducing the land revenue rates.

- ♀ Increase in customs duty and adopt protectionist policy to protect Indian industries.

3) Administrative demands :-

- ♀ India should be given the same right of self-government as Canada and Australia
- ♀ Indianization of civil services, the examination should be conducted simultaneously in England and India and the maximum age limit should also be increased.
- ♀ Arms Act should be abolished
- ♀ Construction of irrigation scheme to avoid famine
- ♀ Increase in budget for promotion of primary, technical and higher education
- ♀ The judiciary should be separated from the executive

8.5) उदारवादियों की प्रमुख उपलब्धियां

- 1) भारतीय जनता को राजनीतिक प्रश्नों पर **शिक्षित और एकताबद्ध** करके भारतीय राष्ट्रवाद के गहरे और अच्छे बीज बोए।
- 2) **विदेशों** विशेषकर इंग्लैंड में भारतीय पक्ष हेतु समर्थन जुटाना
- 3) दादा भाई नौरोजी द्वारा **धन निष्कासन की तार्किक व्याख्या** करके ब्रिटिश सरकार के औपनिवेशिक एवं शोषणकारी चरित्र से जनता को अवगत करवाना
- 4) **1892 के भारत परिषद अधिनियम** में उदारवादियों की कुछ मांगें सम्मिलित की गईं
- 5) ब्रिटेन के द्वारा भारतीय व्यय की समीक्षा हेतु **वेल्लबी आयोग** का गठन किया गया
- 6) **1886 में चार्ल्स एचिसन** समिति की सिफारिश पर भारत और लंदन दोनों जगह सिविल सेवा परीक्षा आयोजित कराने पर सहमति बनी।

इस प्रकार उदारवादी चरण में कांग्रेस ने भारतीय जनता को राजनैतिक रूप से शिक्षित करके आगामी आंदोलन की पृष्ठभूमि को तैयार किया।

8.5) Major Achievements of Liberals

- 1) Sow the deep and good seeds of Indian nationalism by **educating and uniting** the Indian masses on political questions.
- 2) To garner support for the Indian side overseas, **especially** in England
- 3) To make the public aware of the colonial and exploitative character of the British Government by giving a logical explanation of the removal of funds by Dadabhai Noroji.
- 4) Some of the demands of the liberals were included in **the India Council Act of 1892.**
- 5) **Welby Commission** was set up by Britain to review Indian expenditure
- 6) **In 1886, on the recommendation of the Charles Aitchison Committee**, both India and London agreed to conduct the Civil Services Examination.

Thus, in the liberal phase, the Congress prepared the background for the upcoming movement by politically educating the Indian masses.

8.6) उदारवादियों की सीमाएं

- 1) ब्रिटिश न्यायप्रियता पर अत्यधिक विश्वास के कारण सरकार के वास्तविक रूप की **समझ का अभाव**
- 2) **संकुचित सामाजिक आधार** जिसमें डॉक्टर, शिक्षक, वकील इत्यादि शामिल थे। उनका मत था कि जनता अशिक्षित है अतः वह साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ने में सक्षम नहीं है।
- 3) **किसान तथा मजदूर वर्ग** से जुड़ी मांगों को कांग्रेस के प्रस्ताव में जगह नहीं दी गई जिस वजह से यह वर्ग इस आंदोलन से नहीं जुड़ा।
- 4) सामाजिक और संगठन की संकीर्णता के कारण कांग्रेस की **अनुनय तथा विनय की नीति** का संतोषजनक परिणाम नहीं मिला।
- 5) अधिकांश नेतृत्वकर्ता पेशेवर वर्ग से संबंधित थे। अतः उनके लिए राजनीति एक **अंशकालिक गतिविधि** थी।
- 6) जनसाधारण की समस्याओं के समाधान के स्थान पर अभिजात्य वर्गीय मांगे जैसे – विधायिका में नेतृत्व, लोक सेवा का भारतीयकरण आदि।

यद्यपि यह प्रयास संतोषजनक नहीं थे तथापि इसने भारतीयों में आरंभिक राष्ट्रवादी चेतना जगाई तथा सबसे बढ़कर ब्रिटिश आर्थिक नीतियों की तार्किक व्याख्या करके भारतीयों के समक्ष अनब्रिटिश शासन के स्वरूप को उजागर किया।

8.6) Limitations of Moderates

- 1) Lack of understanding of the true nature of government due to excessive reliance on British aptness
- 2) The narrow social base which included doctors, teachers, lawyers etc. They believed the people are illiterate and hence they are not able to fight against imperialism.
- 3) The demands related to the peasant and working class were not given place in the Congress resolution,
- 4) Due to the narrowness of people's participation, the policy of persuasion and modesty of the Congress did not yield satisfactory results.
- 5) Most of the leaders belonged to the professional class. Hence, politics was a part-time activity for him.
- 6) Instead of solving the problems of the common people, the demands of the elite class like – leadership in the legislature, Indianization of public service etc.

Although these efforts were not satisfactory, it aroused the initial nationalist consciousness among Indians and above all, exposed the nature of un-British rule to the Indians by rational explanation of British economic policies.

अध्याय – 09 || Chapter - 09

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उग्रवादी चरण || Extremist phase of national movement (1905 - 1919)

1) उग्रवादी/गरमपंथी चरण

2) बंगाल विभाजन (1905)

3) स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन (1905)

4) मुस्लिम लीग की स्थापना (1906)

5) कांग्रेस का सूरत अधिवेशन (1907)

6) मोर्ले-मिंटो सुधार (1909)



7) दिल्ली दरबार (1911)

8) प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव (1914)

9) होमरूल आंदोलन (1916)

10) लखनऊ समझौता (1916)

11) मोंटेग्यू की घोषणा (1917)

Chapter - 09

Extremist phase of national movement (1905 - 1919)

1) Extremist phase

2) Bengal Partition (1905)

**3) Swadeshi and boycott
movement (1905)**

**4) Establishment of Muslim
League (1906)**

5) Surat session of Congress (1907)

6) Morley-Minto Reforms (1909)



7) Delhi Durbar (1911)

**8) Effects of the first world war
(1914)**

9) Home rule movement (1916)

10) Lucknow Pact (1916)

11) Montagu's Declaration (1917)

9.1) उग्रवादी चरण (1905 – 1919)

"हमारा राष्ट्र एक वृक्ष की तरह है जिसका तना स्वराज है और स्वदेशी व बहिष्कार उसकी शाखाएं" :- बाल गंगाधर तिलक



9.1) Militant phase (1905 – 1919)

"Our nation is like a tree whose trunk is Swaraj and its branches are Swadeshi and boycott" :- Bal Gangadhar Tilak



9.1.1) उग्रवादी चरण का परिचय/पृष्ठभूमि

- 1) बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में कांग्रेस में एक ऐसे युवा वर्ग का उदय हुआ जो पूर्ण स्वराज तथा उसकी प्राप्ति हेतु जन आंदोलन का समर्थक था।
- 2) **प्रमुख नेता :-** बाल गंगाधर तिलक (महाराष्ट्र), बिपिन चंद्र पाल व अरविंद घोष (बंगाल) एवं लाला लाजपत राय (पंजाब)
- 3) कांग्रेस के उग्रराष्ट्रवादी नेता **आत्म बलिदान, स्वतंत्रता की भावना, विदेशी शासन के बहिष्कार, स्वदेशी** का प्रयोग जैसी भावनाओं से ओतप्रोत थे।
- 4) भारत में उग्रवादी चरण के प्रारंभकर्ता **लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक** माने जाते हैं।
- 5) इसी समय राष्ट्रीय आंदोलन में क्रांतिकारी आंदोलन का भी आरंभ हुआ।

9.1.2) उग्रवादी आंदोलन के उदय के कारण

1) कांग्रेस की उदारवादी कार्यप्रणाली की असफलता

2) 1892 के अधिनियम से राजनैतिक निराशा

3) धार्मिक पुनरुत्थान आंदोलन

4) लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां

5) अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव

6) दुर्भिक्ष तथा फ्लैग का प्रकोप

9.1.1) Introduction

- 1) In the early years of the twentieth century, youth group emerged in the Congress which was a supporter of Purna Swaraj and mass movement for its attainment.
- 2) **Prominent leaders :-** Bal Gangadhar Tilak (Maharashtra), Bipin Chandra Pal and Arvind Ghosh (Bengal) and Lala Lajpat Rai (Punjab)
- 3) The extremist leaders of the Congress were filled with feelings like **self-sacrifice, the spirit of independence, boycott of foreign rule, use of Swadeshi.**
- 4) **Lokmanya Bal Gangadhar Tilak** is the initiator of the extremist phase in India.
- 5) At the same time revolutionary movement also started in India.

9.1.2) Reasons

1) **The failure of the moderates**

2) **Political disappointment with the Act of 1892**

3) **Religious revival movement**

4) **Lord Curzon's Reactionary Policies**

5) **Impact of international events**

6) **Famine and plague outbreak**

1) कांग्रेस की उदारवादी कार्यप्रणाली की असफलता :-

उदारवादी नेताओं की आवेदन तथा निवेदन की नीति से अपेक्षित सफलता नहीं मिलने के कारण युवा नेताओं ने उदारवादी तरीकों को **राजनैतिक भिक्षावृत्ति** की संज्ञा दी तथा स्वदेशी और बहिष्कार जैसे कठोर तरीकों के द्वारा पूर्ण स्वराज्य की मांग पर बल दिया

2) राजनैतिक निराशा :-

- ♀ 1892 के भारत परिषद अधिनियम द्वारा बजट पर सीमित बहस का अधिकार दिया परंतु पूरक प्रश्न पूछने का अधिकार नहीं मिला।
- ♀ अभिव्यक्ति की आजादी पर रोक, 1897 में तिलक को 18 माह का कारावास, राजद्रोह अधिनियम इत्यादि से कांग्रेस के युवा वर्ग में ब्रिटिश शासन के प्रति आक्रोश में वृद्धि

3) धार्मिक पुनरुत्थान आंदोलन :-

- ♀ बाल गंगाधर तिलक के द्वारा राष्ट्रवाद तथा स्वदेशी के प्रसार हेतु गणपति उत्सव और शिवाजी महोत्सव का आयोजन
- ♀ उदारवादियों के विपरीत उग्रवादी, स्वामी विवेकानंद और दयानंद सरस्वती के विचारों से प्रभावित होकर पाश्चात्य के स्थान पर भारतीय संस्कृति के समर्थक थे
- ♀ **एनी बेसेंट :-** सारी हिंदू प्रणाली पश्चिमी सभ्यता से बढ़कर है।

4) लॉर्ड कर्जन की प्रतिक्रियावादी नीतियां :-

- ♀ 1899 में कोलकाता नगर निगम से भारतीयों की संख्या को घटाना
- ♀ 1903 में एडवर्ड सप्तम को भारत का सम्राट घोषित करने के लिए अकाल के पश्चात भी दिल्ली दरबार का आयोजन
- ♀ 1904 में इंडियन ऑफिसियल सीक्रेट एक्ट से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करना

1) The failure of moderate functioning of

Congress :- Due to not getting the desired success from the policy of request of the liberal leaders, the young leaders termed the liberal methods as **political begging** and stressed on the demand for complete independence through **passive resistance** like Swadeshi and boycott.

2) Political disappointment :-

- ♀ The Indian Council Act of 1892 gave limited debate rights on the budget but not to ask supplementary questions.
- ♀ Restrictions on freedom of expression, 18 months imprisonment for Tilak in 1897, Sedition Act etc. increased resentment towards British rule among the youth of Congress.

3) Religious revival movement :-

- ♀ Bal Gangadhar Tilak organized Ganpati and Shivaji Festival to spread nationalism and Swadeshi
- ♀ The extremists, in contrast to the liberal, were supporters of Indian culture rather than western, influenced by the ideas of Swami Vivekananda and Dayanand Saraswathi.
- ♀ **Annie Besant :-** The whole Hindu system is higher than the western civilization

4) Lord Curzon's Reactionary Policies :-

- ♀ Decreased the number of Indians from Kolkata Municipal Corporation in 1899
- ♀ Delhi Durbar organized even after the famine to declare **Edward VII** as Emperor of India in 1903
- ♀ Bar on freedom of expression by the Indian Official Secret Act of 1904

- ♀ 1904 में भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम से विश्वविद्यालयों पर सरकारी नियंत्रण को बढ़ाना
- ♀ सबसे प्रतिक्रियावादी निर्णय 1905 में बंगाल का विभाजन

5) अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव :-

- ♀ मिस्र, फारस, तुर्की, चीन, आयरलैंड आदि में जन आंदोलन
- ♀ जापान का बिना किसी पश्चिमी सहायता के औद्योगिकीकरण
- ♀ छोटे से अफ्रीकी अबीसीनिया (इथियोपिया) के द्वारा 1896 में इटली की पराजय
- ♀ 1899 के बोअर युद्ध में डचों के द्वारा अंग्रेजों की पराजय
- ♀ 1905 में जापान द्वारा रूस की पराजय
- ♀ मैजिनी, गैरीबाल्डी, कैवर से राष्ट्रवादीयों के प्रयासों से इटली का एकीकरण

6) दुर्भिक्ष तथा प्लेग का प्रकोप :-

- ♀ 1876 से 1900 के मध्य देश में लगभग 18 बड़े अकाल पड़ें परन्तु ब्रिटेन के द्वारा राहत कार्यों का आभाव।
- ♀ तिलक ने अपने समाचार पत्र केसरी में इसकी आलोचना की जिस से प्रभावित होकर चाफेकर बंधुओं (दामोदर, बालकृष्ण और वासुदेव) ने **प्लेग कमिश्नर रैण्ड और आयस्टर** की हत्या कर दी इस आरोप में तिलक को 18 माह की जेल जबकि दामोदर हरी चाफेकर को फांसी दी गई।
- ♀ इससे भारतीय जनता में ब्रिटिश शासन के प्रति और भी ज्यादा आक्रोश उत्पन्न हुआ।

♀ Ultra centralization of universities with the Indian Universities Act of 1904

♀ Most reactionary decision - Partition of Bengal, 1905

5) Impact of international events :-

♀ Mass movement in Egypt, Persia, Turkey, China, Ireland etc.

♀ Industrialization of Japan without any Western aid

♀ The defeat of Italy by the small African Abyssinia (Ethiopia) in 1896

♀ The defeat of the British by the Dutch in the Boer War of 1899

♀ Russia's defeat by Japan in 1905

♀ The Unification of Italy by the Efforts of the Nationalists from Mazzini, Garibaldi, Cavour

6) Famine and plague :-

♀ Between 1876 and 1900, there were about 18 major famines in the country but lack of relief work by Britain.

♀ Tilak criticized this in his newspaper **Kesari**, influenced by which the **Chapekar brothers** (Damodar, Balkrishna and Vasudev) killed the plague commissioner **W. C. Rand and Ayerst**, on this charge Tilak was imprisoned for 18 months while Damodar Hari Chapekar was hanged.

♀ This caused even more resentment among the Indians towards British rule.

9.1.3) उग्रवादी आंदोलन की विचारधारा एवं कार्य पद्धति

- 1) अंग्रेजी शासन से घृणा तथा भारत में पूर्ण स्वराज की स्थापना। इसी परिपेक्ष में बाल गंगाधर तिलक ने कहा कि **“स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।”**
- 2) पूर्ण स्वराज की प्राप्ति के लिए विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी को अपनाने पर बल दिया।
- 3) उदारवादियों की प्रार्थना पत्र स्मरण पत्र तथा अनुनय विनय नीति के स्थान पर **अधिकारों की प्राप्ति हेतु संघर्ष की नीति।**
- 4) दीवानी मामलों के निवारण के लिए **पंच निर्णय समितियां** बनाई।
- 5) कांग्रेस के **संकीर्ण सामाजिक आधार में विस्तार** करके जनसाधारण तक पहुंचाना।
- 6) सहकारी संगठनों की स्थापना, गांव की साफ-सफाई, मेलों का आयोजन जैसे कार्यों द्वारा **राष्ट्रवादी भावना का प्रसार।**
- 7) **अरविंद घोष ने निष्क्रिय प्रतिरोध को साधन बनाया इसके अंतर्गत स्वदेशी का प्रचार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा का प्रसार, सरकारी कानून का बहिष्कार तथा असहयोग** करने जैसी गतिविधियां शामिल थी।
- 8) प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का प्रचार प्रसार करके राष्ट्रीयता एवं आत्मविश्वास की भावना को जगाना। इस हेतु बाल गंगाधर तिलक ने **शिवाजी तथा गणेश महोत्सव** का आयोजन किया।

9.1.3) Ideology and methodology of extremist movement

- 1) Hatred of British rule and establishment of Purna Swaraj in India. In this context, Bal Gangadhar Tilak said that **"Swaraj is my birth right and I shall have it."**
- 2) Emphasis was placed **on boycott of foreign** goods and **adoption of Swadeshi** for attainment of Purna Swaraj.
- 3) **The policy of dissuasion** for the attainment of rights in **place of persuasion policy** of liberal litigants.
- 4) For the redressal of civil cases, **Panch Adjudication Committees** were formed.
- 5) Expanding the narrow social base of the Congress to reach the masses.
- 6) **Spread of nationalist sentiment through** the establishment of cooperative organizations, cleaning of the village, organizing fairs.
- 7) **Aurobindo Ghosh** proposed **passive resistance** under which activities such as **promotion of Swadeshi, boycott of foreign goods, spread of national education, boycott of government law and non-cooperation** were included.
- 8) To awaken the feeling of nationalism and self-confidence by spreading ancient Indian culture. For this, Bal Gangadhar **Tilak organized Shivaji and Ganesh Festival.**

9.1.4) उग्रवादी चरण की प्रमुख उपलब्धियां

- 1) राष्ट्रीय आंदोलन में विद्यार्थी, युवा वर्ग, महिलाओं आदि को शामिल करके **सामाजिक आधार का विस्तार** किया।
- 2) राजनीतिक **संघर्ष की नवीन पद्धतियों** जैसे स्वदेशी एवं बहिष्कार ने सीमित संघर्ष को जन संघर्ष में बदल दिया।
- 3) गणपति महोत्सव, शिवाजी उत्सव जैसे कार्यक्रमों से **धार्मिक एकता** को बढ़ावा।
- 4) प्राचीन गौरवशाली भारतीय इतिहास तथा संस्कृति को जनमानस तक पहुंचा कर **भारतीयों में पुनः आत्मविश्वास** भरा।
- 5) 1911 में सरकार को आंदोलन के कारण **बंगाल विभाजन को रद्द** करना पड़ा

इस प्रकार उग्रवादियों ने **पूर्ण स्वराज्य** की संकल्पना को राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न हिस्सा बनाया जिसे कालांतर में गांधीजी और अन्य नेताओं ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का मुख्य उद्देश्य बनाया।

9.1.5) उग्रवादी आंदोलन की सीमाएं

- 1) राष्ट्रीय आंदोलन में **धार्मिक प्रतीकों का इस्तेमाल** करके कुछ रूप में सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिला।
- 2) उग्रवादी और उदारवादियों के मध्य **1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन** हो गया, जिससे कुछ समय के लिए राष्ट्रीय आंदोलन कमजोर पड़ा।
- 3) स्वदेशी पर अत्यधिक बल देने के कारण **आधुनिक प्रगतिशील विचारों** के प्रति भी लोगों का **रवैया नकारात्मक** हो गया।
- 4) क्रांतिकारी आंदोलन को बढ़ावा मिला जिससे कुछ स्थानों पर ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों से अराजकता पैदा हुई।

हालांकि गहराई से पर्यवेक्षण करने पर यह ज्ञात होता है कि उग्रवादियों ने राष्ट्रीय आंदोलन में युवा वर्ग को जोड़कर आंदोलन के आगामी कार्यक्रमों को **मजबूत पृष्ठभूमि** प्रदान की।

9.1.4) Major achievements

- 1) Expanded the social base by including students, youth, women etc. in the national movement.
- 2) **New methods of political struggle** like Swadeshi and boycott which attracted masses.
- 3) Promotion of **religious unity through programs** like Ganpati Festival, Shivaji Utsav.
- 4) Promotion of pride among Indian by making aware of glorious ancient Indian culture
- 5) In 1911, the government had to cancel the partition of Bengal due to the agitation.

Thus, the extremists made the concept of **Purna Swaraj** an integral part of the national movement, which later Gandhiji and other leaders made the main objective of the Indian national movement.

9.1.5) Limitations

- 1) The use of **religious symbols in the national movement** encouraged some form of communalism.
- 2) In the **Surat session of 1907**, the Congress split between the extremists and the liberals, which weakened the national movement for some time.
- 3) Due to the excessive emphasis on Swadeshi, the attitude of the people towards the modern progressive ideas also became negative.
- 4) Revolutionary movement got a boost due to which repressive policies of British in some places led to anarchy

However, on closer observation, it is known that the extremists provided a **strong background** to the subsequent programs of the movement by integrating the youth and women into the national movement.

9.1.6) उदारवादी तथा उग्रवादी आंदोलन में अंतर

आधार	उदारवादी (नरमपंथी)	उग्रवादी (गरमपंथी)
1) सामाजिक संरचना	उच्च मध्यम वर्ग, अभिजात्यवादी दृष्टिकोण	निम्न मध्यम वर्ग
2) राजनीतिक प्रतिरोध के साधन	याचना की नीति	निष्क्रिय प्रतिरोध
3) वैचारिक मतभेद	पाश्चात्य शिक्षा एवं ब्रिटिश शासन प्रणाली के पक्षधर	भारतीय संस्कृति एवं विरासत के समर्थक
4) लक्ष्य में मतभेद	अंग्रेजों के अधीन स्वशासन	स्वराज या स्वाधीनता

9.1.7) उग्रवादी आंदोलन के प्रमुख नेतृत्वकर्ता

प्रमुख नेता :- बाल गंगाधर तिलक (महाराष्ट्र),
बिपिन चंद्र पाल व अरविंद घोष (बंगाल) एवं
लाला लाजपत राय (पंजाब)

We will study study this in major
leaders

9.1.6) Difference between moderates and extremist movement

Grounds	Moderate	Extremist
1) Social Base	Upper middle class	Lower middle class
2) means of political resistance	Policy of constitutional reform by request	Passive resistance
3) Ideological differences	In favor of western education and the British system of government	Supporter of Indian culture and heritage
4) Difference in goal	self-government under the British	Swaraj or independence

9.1.7) Major leader of the extremist movement

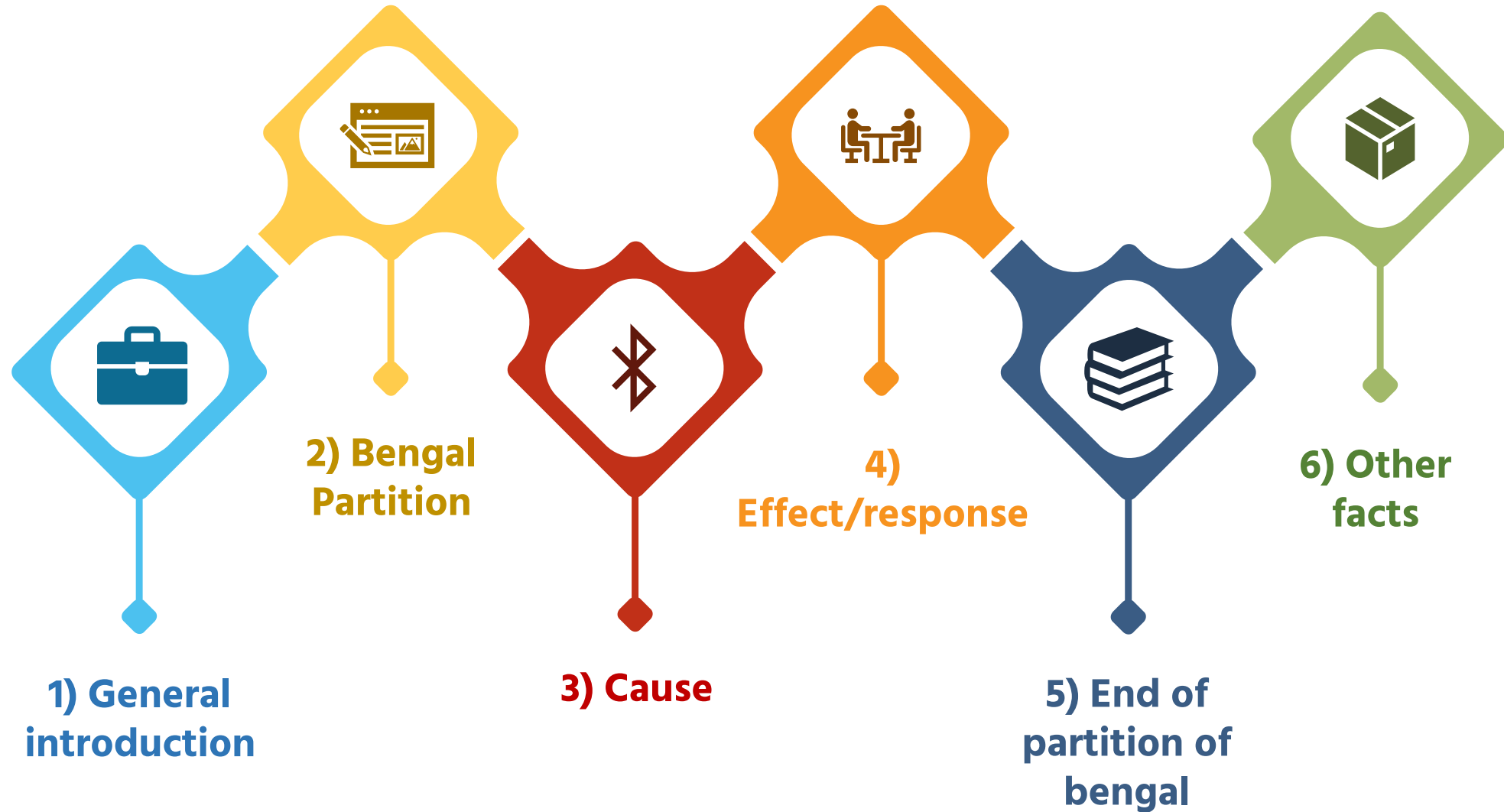
Major Leaders :- Bal Gangadhar Tilak (Maharashtra), Bipin Chandra Pal and Arvind Ghosh (Bengal) and Lala Lajpat Rai (Punjab)

We will study study this in major leaders

9.2) बंगाल का विभाजन



9.2) Partition of Bengal



9.2.1) सामान्य परिचय

1) 18900 वर्ग किमी में विस्तृत लगभग 8 करोड़ की आबादी वाला सबसे बड़ा ब्रिटिश भारतीय प्रांत

2) **बंगाल :-** पश्चिम बंगाल+बिहार+उड़ीसा+बांग्लादेश

3) **मुख्य घटनाएं :-**

♀ **3 दिसंबर 1903 :** गृह सचिव रिजले द्वारा विभाजन की योजना

♀ **20 जुलाई 1905 :** विभाजन की घोषणा

♀ **7 अगस्त 1905 :** कलकत्ता के टाउन हॉल से स्वदेशी आंदोलन का आरंभ

♀ **16 अक्टूबर 1905 :** बंगाल विभाजन प्रभावी (शोक दिवस)

≠ R N टैगोर – रक्षाबंधन

≠ R N टैगोर - अमार सोनार बंग्ला

≠ आनंदमोहन बोस - फेडरेशन हॉल

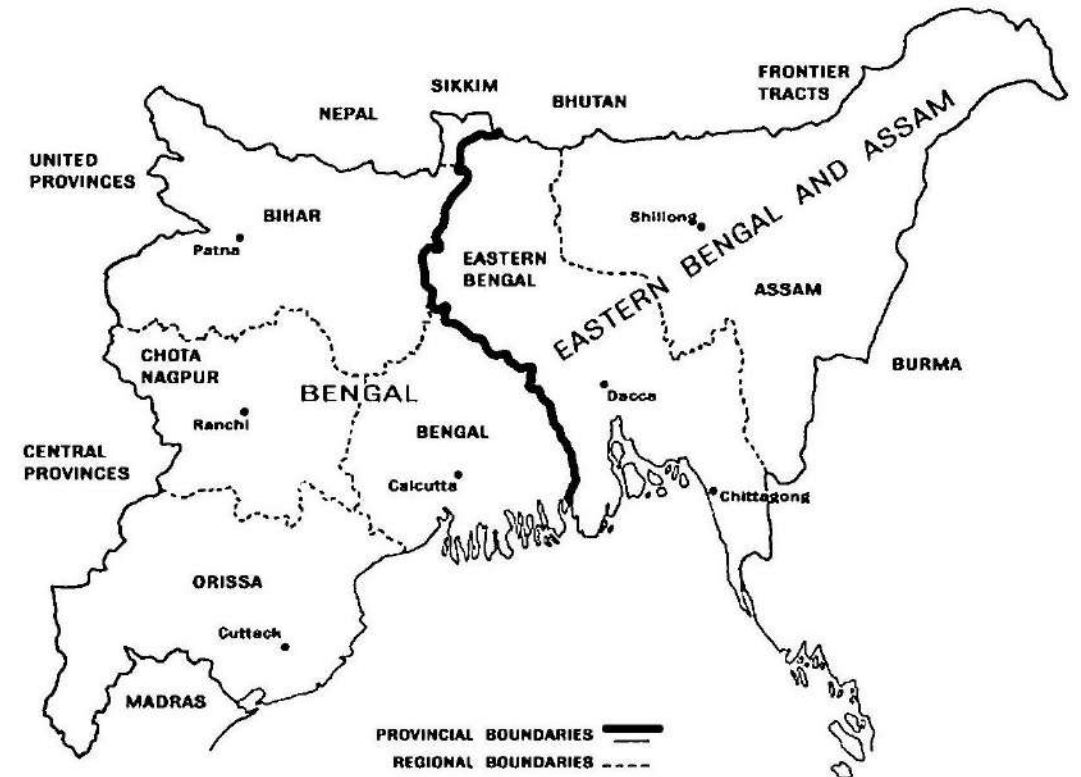
4) **मुख्य व्यक्तित्व :-**

♀ **वायसराय -** लॉर्ड कर्जन

♀ **लेफ्टिनेंट गवर्नर -** फ्रेजर

♀ **गृह सचिव -** रिजले

5) **उद्देश्य :-** फूट डालो व राज करो की नीति के तहत बंगाल का धार्मिक विभाजन व राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करना



9.2.1) General introduction

1) Largest British Indian province with a population of about 80 million with an area of 18900 sq km

2) **Bengal :-** West Bengal+Bihar+Orissa+Bangladesh

3) **Major events :-**

♀ **3 December 1903 :** The plan of partition by Home Secretary Risley

♀ **20 July 1905 :** Declaration of Partition

♀ **7 August 1905 :** Swadeshi Movement started from the Town Hall of Calcutta

♀ **16 October 1905 :** Partition of Bengal effective (Day of Mourning)

≠ R N Tagore – Rakshabandhan

≠ R N Tagore - Amar Sonar Bangla

≠ Ananda Mohan Bose - Federation Hall

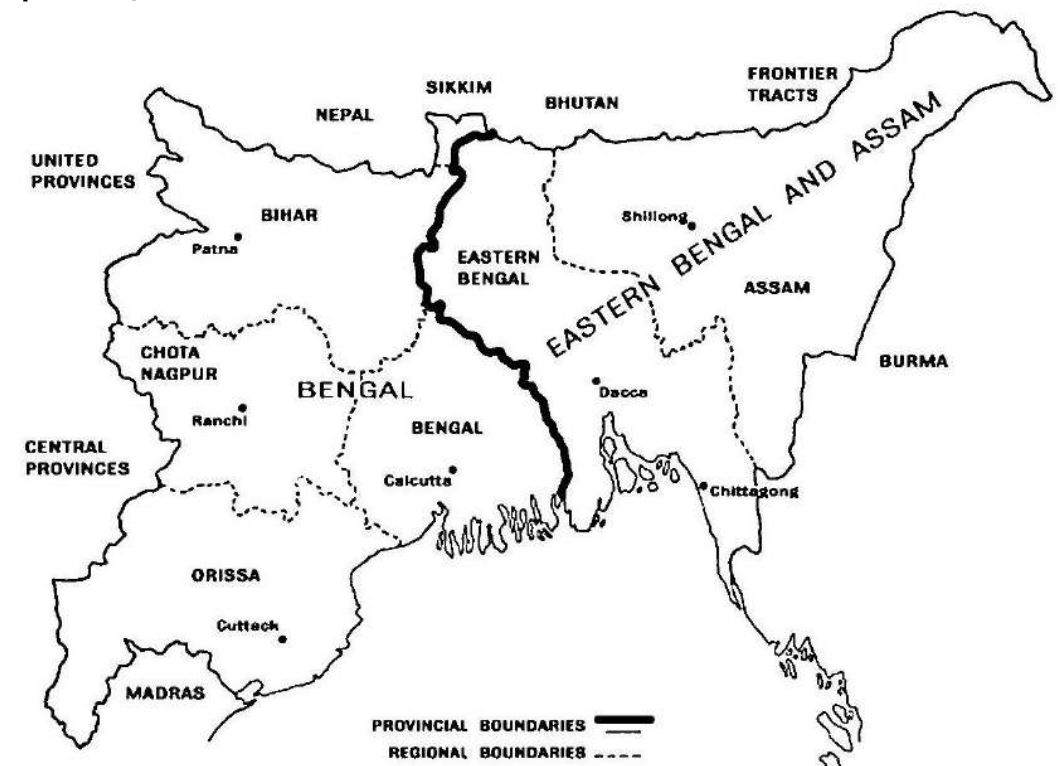
4) **Main personality :-**

♀ **Viceroy** - Lord Curzon

♀ **Lieutenant Governor** - Fraser

♀ **Home Secretary** - Risley

5) **Objective :-** Religious division of Bengal and weakening of the national movement under the policy of divide and rule



9.2.2) बंगाल विभाजन

पश्चिम बंगाल | West Bengal



पश्चिम बंगाल (दार्जिलिंग) + बिहार + उड़ीसा



राजधानी :- कलकत्ता



जनसंख्या :- 5 करोड़ 40 लाख



4 करोड़ 20 लाख (हिंदू)

90 लाख (मुसलमान)



बहुसंख्यक (हालांकि बंगाली भाषी
अल्पसंख्यक)



अल्पसंख्यक

पूर्वी बंगाल | East Bengal



पूर्वी बंगाल + असम (पहले बंगाल का हिस्सा नहीं)



राजधानी :- ढाका



जनसंख्या :- 3 करोड़ 10 लाख



1 करोड़ 80 लाख (मुसलमान)

1 करोड़ 20 लाख (हिंदू)



बहुसंख्यक



अल्पसंख्यक

9.2.2) Bengal Partition

West Bengal



West Bengal (Darjeeling) + Bihar + Orissa



Capital :- Calcutta



Population :- 5 crore 40 lakh



4 crore 20 lakh (Hindu)

90 lakhs (Muslims)



Majority (though Bengali speaking minority)



Minority

East Bengal



East Bengal + Assam (not previously part of Bengal)



Capital :- Dhaka



Population :- 3 crore 10 lakh



1 crore 80 lakh (Muslim)

1 crore 20 lakh (Hindu)



Majority



Minority

9.2.3) कारण

- 1) बंगाल ब्रिटिश राजनैतिक-प्रशासनिक व्यवस्था का केंद्र व राजधानी थी
- 2) आधुनिक शिक्षा, सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों से जागरूकता
- 3) राजनैतिक संस्थाओं का विकास व राष्ट्रवाद
- 4) आंदोलन को कमजोर करने हेतु विभाजन

20 जुलाई 1905 को वायसराय कर्जन ने बंगाल को पूर्वी और पश्चिमी बंगाल में विभाजित कर दिया जिसके निम्नलिखित कारण थे -

1) ब्रिटिश सरकार द्वारा कारण :-

- ♀ अत्याधिक विशाल क्षेत्रफल के कारण प्रशासनिक जटिलता के निवारण हेतु
- ♀ पुलिस पर अत्याधिक दबाव के कारण चोरी व अन्य अपराधों में वृद्धि
- ♀ मुस्लिम बहुल पूर्वी जिलों की विकासात्मक उपेक्षा

2) वास्तविक कारण :-

- ♀ राष्ट्रवादी गतिविधियों का केंद्र बंगाल का विभाजन करके राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करना
- ♀ फूट डालो और राज करो की नीति के तहत हिन्दू मुस्लिम साम्प्रदायिकता को बढ़ाना
- ♀ बंगालियों की आबादी कम करके उन्हें अल्पसंख्यक बनाना
- ♀ ढाका को मुस्लिम राजनैतिक गतिविधियों का केंद्र बनाना जहां कालांतर में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई

राष्ट्रवादियों ने इन कारणों को समझकर स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत की तथा राष्ट्रीय आंदोलन उग्रवादी चरण में प्रवेश कर गया

9.2.3) Cause

- 1) Bengal was the center and capital of the British politico-administrative system
- 2) Awareness from socio-religious reform movements & Modern education
- 3) Growth of political institutions and nationalism
- 4) Partition to weaken the movement

On **20 July 1905**, Viceroy Curzon divided Bengal into East & West Bengal due to following reasons

1) **Reasons by British government :-**

- ♀ To avoid administrative complexity due to large area
- ♀ Increase in theft and other crimes due to excessive pressure on police
- ♀ Developmental neglect of Muslim-majority eastern districts

2) **Actual reason :-**

- ♀ Weakening the national movement by dividing Bengal the center of nationalist activities
- ♀ To promote Hindu Muslim communalism under the policy of divide and rule
- ♀ Making Bengalis a minority by reducing their population
- ♀ Making Dhaka the center of Muslim political activities where later the Muslim League was established

Understanding these reasons, the nationalists started the Swadeshi movement and the national movement entered the militant phase.

9.2.4) प्रभाव/प्रतिक्रिया

- 1) स्वदेशी आंदोलन का आरम्भ
- 2) स्वराज, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा जैसे मुख्य विचारों का प्रसार
 - ♀ **7 अगस्त 1905** - कलकत्ता के टाउन हॉल से स्वदेशी आंदोलन का आरंभ
 - ♀ आचार्य **प्रफुल्ल चन्द्र राय** द्वारा बंगाल केमिकल लिमिटेड की शुरुआत
 - ♀ 1907 में दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता वाले कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में स्वराज की मांग का प्रस्ताव
- 3) भारत में उग्र राष्ट्रीय आंदोलन व क्रांतिकारी गतिविधियों का आरम्भ
- 4) दिसंबर 1911 में दिल्ली दरबार में लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय द्वारा बंगाल विभाजन रद्द

NOTE

- ≠ बंगाल विभाजन को रद्द करने के कारण कर्जन एवं मिंटो की प्रतिक्रियावादी नीतियों से उत्पन्न जनअसंतोष को शांत करने के लिए 1910 में लॉर्ड हार्डिंग को गवर्नर जनरल बनाया गया।
- ≠ वैश्विक स्तर पर यूरोप में महायुद्ध की आशंका थी, ऐसे में सरकार को भारत में समर्थन आधार जुटाना आवश्यक था।
- ≠ कलकत्ता से दिल्ली में राजधानी परिवर्तन करके कलकत्ता में राजनीतिक गतिविधियों के पतन को सुनिश्चित कर लिया गया था।
- ≠ राजनीतिक अशांति एवं कोलाहल का वातावरण।
- ≠ 1909 के एक्ट के तहत सुधारों के खोखलेपन से उदारवादियों को भी निराशा।
- ≠ इन कारणों से तथा भारत में शांति व्यवस्था की स्थापना के उद्देश्य से बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया गया था

9.2.4) Effect/Response

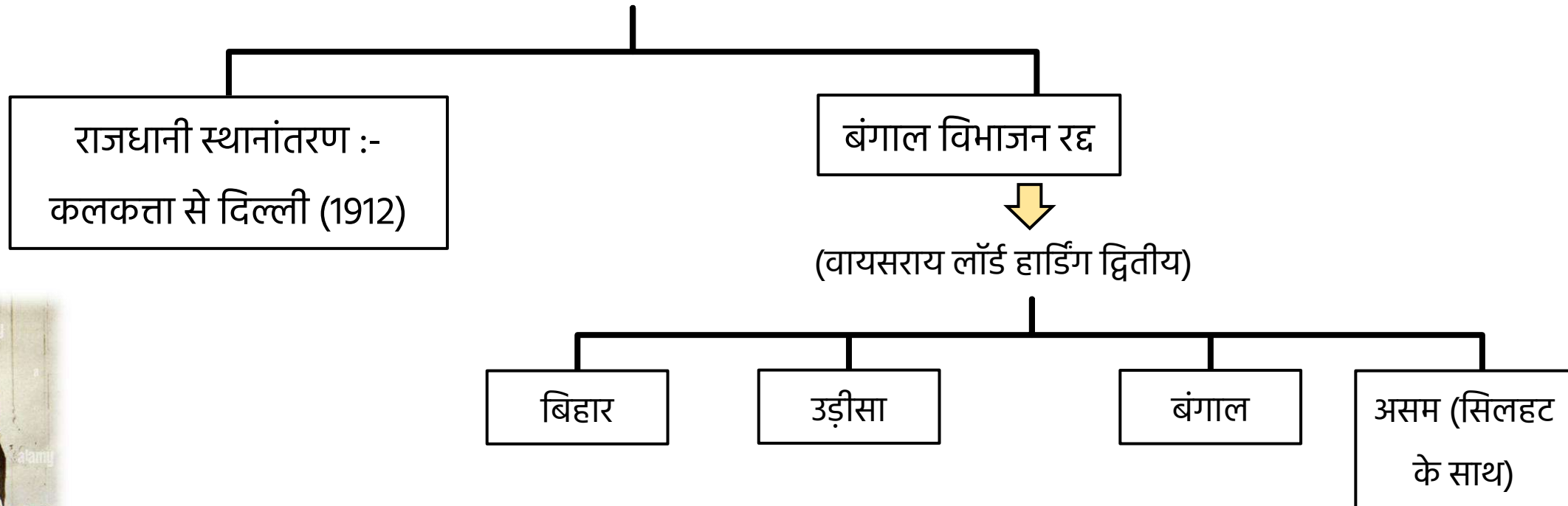
- 1) Start of Swadeshi Movement
- 2) Spread of core ideas like Swaraj, boycott, national education
 - ♀ **7 August 1905** - Swadeshi Movement started from the Town Hall of Calcutta
 - ♀ Bengal Chemical Limited was started by Acharya Prafulla Chandra Rai
 - ♀ In 1907, the demand for Swaraj was proposed in the Calcutta Congress session presided over by Dadabhai Naoroji.
- 3) The beginning of a fierce national movement and revolutionary activities in India
- 4) The partition of Bengal was annulled by Lord Harding II at the Delhi Durbar in December 1911.

NOTE

- ⌘ Lord Hardinge was made the Governor General in 1910 to pacify the public dissatisfaction arising out of the reactionary policies of Curzon and Minto due to the annulment of the partition of Bengal.
- ⌘ Globally, there was a possibility of a world war in Europe, in such a situation it was necessary for the government to mobilize a support base in India.
- ⌘ The decline of political activities in Calcutta was ensured by shifting the capital from Calcutta to Delhi.
- ⌘ Political unrest and chaos.
- ⌘ Liberals were also disappointed by the hollowness of the reforms under the 1909 Act.
- ⌘ For these reasons and for the purpose of establishing peace and order in India, the partition of Bengal was annulled.

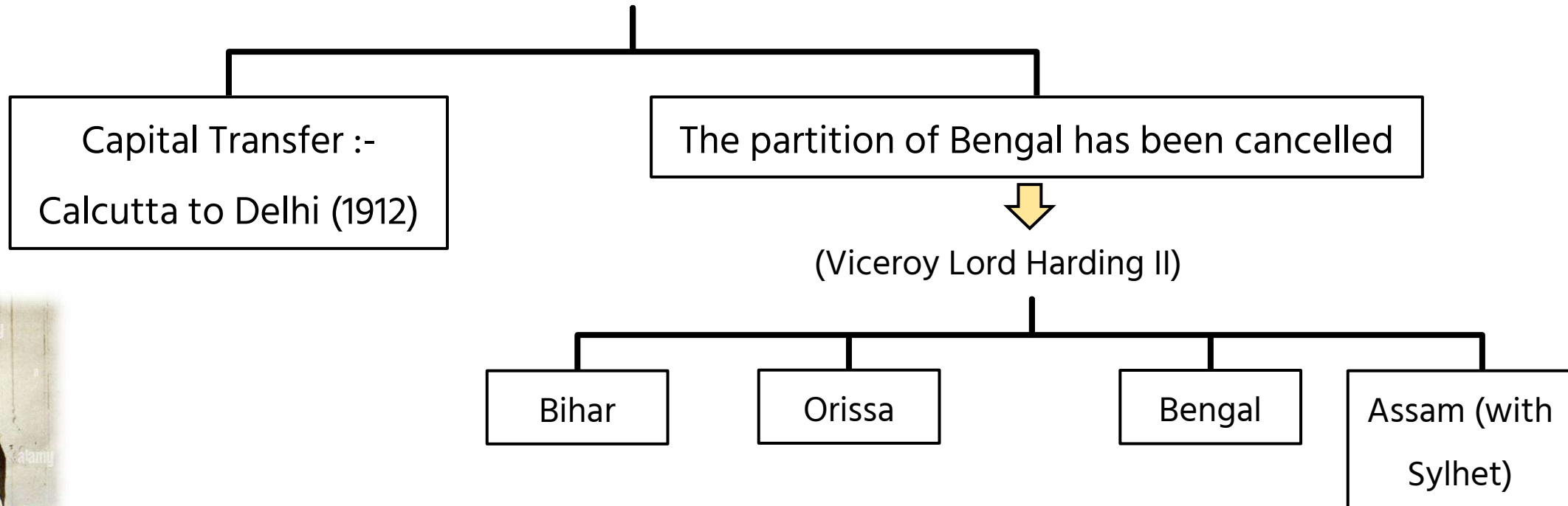
9.2.5) बंगाल विभाजन की समाप्ति

- 1) स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन
- 2) अरुण्डेल समिति (1906) ➡ बंगाल विभाजन रद्द किया जाना चाहिए
- 3) दिल्ली दरबार (दिसंबर 1911) ➡ ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम और रानी मेरी



9.2.5) End of partition of Bengal

- 1) Swadeshi and boycott movement
- 2) Arundel Committee(1906) ➡ Bengal partition should be canceled
- 3) Delhi Durbar (December 1911) ➡ British Emperor George V and Queen Mary

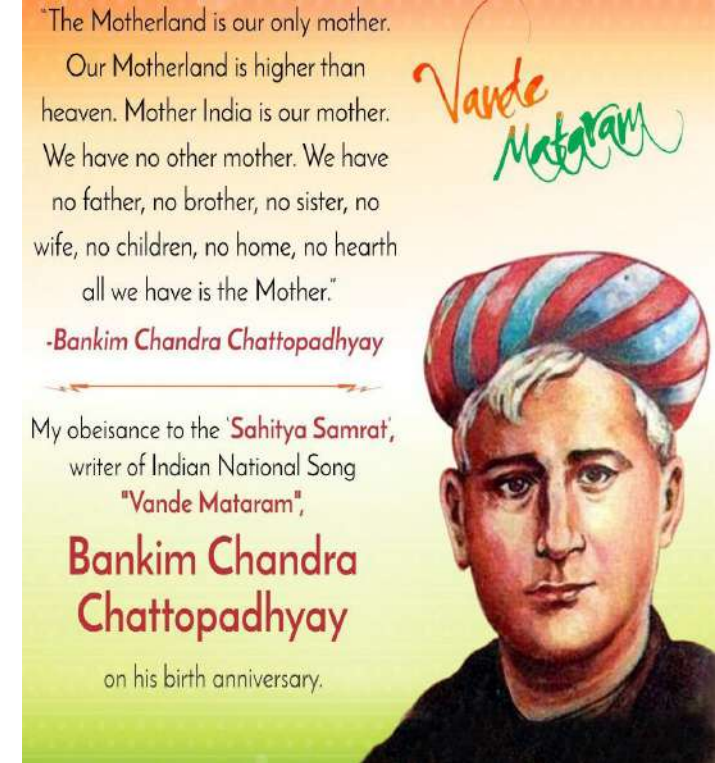


9.2.6) अन्य तथ्य

- 1) स्वदेशी आंदोलन का विचार सर्वप्रथम **कृष्ण कुमार मित्र की पत्रिका संजीवनी** में प्रयुक्त किया गया
- 2) आंध्र प्रदेश के डेल्टा वाले इलाकों में **स्वदेशी आंदोलन को वंदे मातरम आंदोलन** के नाम से जाना जाता है
- 3) रविंद्र नाथ टैगोर ने **आमार सोनार बांग्ला** लिखा
- 4) 1907 में डॉक्टर रासबिहारी घोष की अध्यक्षता में आयोजित सूरत अधिवेशन में स्वदेशी आंदोलन को लेकर कांग्रेस का प्रथम विभाजन नरम दल और गरम दल में हो गया
- 5) ब्रिटिश पत्रकार एच डब्ल्यू नेविन्सन ने **'द न्यू स्पिरिट ऑफ इंडिया'** नामक किताब लिखी
- 6) अगस्त 1906 गुरुदास बैनर्जी ने **'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद'** का गठन किया.
- 7) लोकमान्य तिलक ने मुंबई और पुणे, लाला लाजपत राय ने पंजाब, सैयद हैदर रजा ने दिल्ली और चिदंबर पिल्लई ने मद्रास में आंदोलन को आगे बढ़ाया

9.2.6) Other Fact

- 1) The idea of Swadeshi movement was first used in the **magazine Sanjeevani of Krishna Kumar Mitra.**
- 2) The **Swadeshi movement** in the delta regions of Andhra Pradesh is known as **Vande Mataram movement.**
- 3) Rabindra Nath Tagore wrote **Amar sonar Bangla**
- 4) In 1907, in the Surat session held under the chairmanship of Dr. Rasbihari Ghosh, the first division of the Congress regarding the Swadeshi movement took place in the Moderate Party and the Extremist Party.
- 5) British journalist HW Nevinson wrote a book titled **'The New Spirit of India'**
- 6) August 1906 Gurudas Banerjee formed the **'National Council of Education'.**
- 7) Lokmanya Tilak carried forward the movement in Mumbai and Pune, Lala Lajpat Rai in Punjab, Syed Haider Raza in Delhi and Chidambaram Pillai in Madras



9.3) स्वदेशी आंदोलन



9.3) Swadeshi Movement



9.3.1) उद्देश्य

7 अगस्त 1905 को कलकत्ता के टाउन हॉल में आरम्भ स्वदेशी आंदोलन के कारण/उद्देश्य :-

- ♀ बंगाल विभाजन को रद्द करवाना
- ♀ बहिष्कार, असहयोग आदि के द्वारा ब्रिटिश शासन को कमजोर करना

9.3.2) रूपरेखा/पद्धति/कार्यक्रम

- 1) विदेशी वस्तुओं, सरकारी स्कूलों, अदालतों, नौकरियों, उपाधियों आदि का बहिष्कार
- 2) हड़ताल करके प्रशासन को पंगु बनाना।
- 3) महिलाओं द्वारा विदेशी दुकानों पर धरना देना।
- 4) सामाजिक कुरीतियों, जैसे बाल विवाह, दहेज, शराब आदि का विरोध करना

- 5) आत्मनिर्भरता हेतु स्वदेशी शिक्षा, उद्योग, कला तथा विज्ञान को प्रोत्साहन देना।

9.3.3) कार्यपद्धति

- 1) 16 अक्टूबर 1905 को बंगाल में **शोक दिवस तथा रक्षाबंधन** के रूप में मनाया गया
- 2) बहिष्कार के तहत **विदेशी कपड़ों की होली जलाई** गई तथा कई लोगों ने सरकारी नौकरियों का त्याग कर दिया।
- 3) कोलकाता विश्वविद्यालय की **दास ग्रह के रूप** में आलोचना की गई
- 4) भारतीय शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु गुरुदास बनर्जी ने राष्ट्रीय शिक्षा परिषद, रंगपुर नेशनल स्कूल एवं बंगाल नेशनल कॉलेज की स्थापना की। **अरविंद घोष** बंगाल नेशनल कॉलेज के प्रथम प्राचार्य बने।

9.3.1) Objective

The causes/objectives of the Swadeshi Movement started on 7th August 1905 at the Town Hall of Calcutta :-

- ♀ Cancellation of the partition of Bengal
- ♀ To weaken the British rule by boycott, non-cooperation etc.

9.3.2) Framework/Method/Program

- 1) Boycott of foreign goods, government schools, courts, jobs, titles etc.
- 2) Paralyzing the administration by going on strike.
- 3) Picketing by women at foreign shops.
- 4) Opposing social evils like child marriage, dowry, alcohol etc.

- 5) To encourage education, industry, art and science for self-reliance.

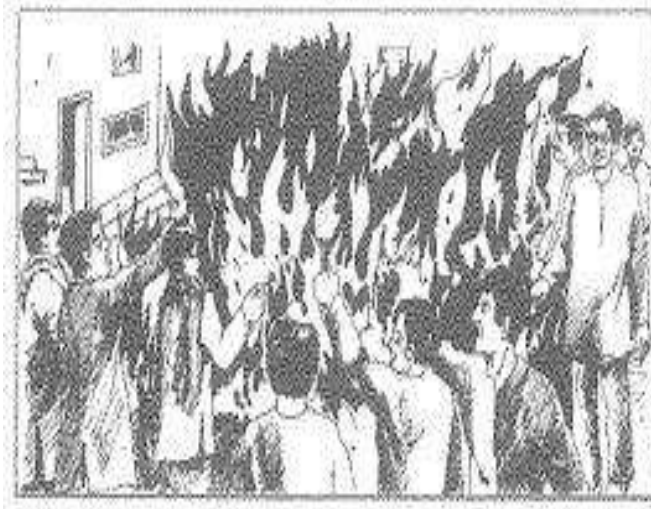
9.3.3) Methodology

- 1) 16 October 1905 celebrated as Mourning Day and Rakshabandhan in Bengal
- 2) As part of the boycott, foreign clothes was burnt, and many people gave up government jobs.
- 3) Kolkata University criticized as a slave planet
- 4) To promote Indian education, Gurudas Banerjee established the National Council of Education, Rangpur National School and Bengal National College. Aurobindo Ghosh became the first principal of Bengal National College.

9.3.4) सामाजिक आधार

- 5) डॉन सोसायटी के सचिव सतीश चंद्र मुखर्जी ने बंगाल में राष्ट्रीय शिक्षा को प्रोत्साहित किया वहीं पंजाब में दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना
- 6) पहली बार राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी :- महिलाओं ने विदेशी प्रसाधन सामग्री उपयोग में लाना बंद कर दिया और दुकानों के बाहर धरना प्रदर्शन किया।
- 7) रविंद्र नाथ टैगोर द्वारा रचित **आमार सोनार बांग्ला तथा बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा रचित वंदे मातरम राष्ट्रीय गीत** बन गया।
- 8) सहकारी संगठन पंच समितियां तथा गणेश महोत्सव, शिवाजी महोत्सव जैसे धार्मिक और पारंपरिक मेलों का आयोजन।

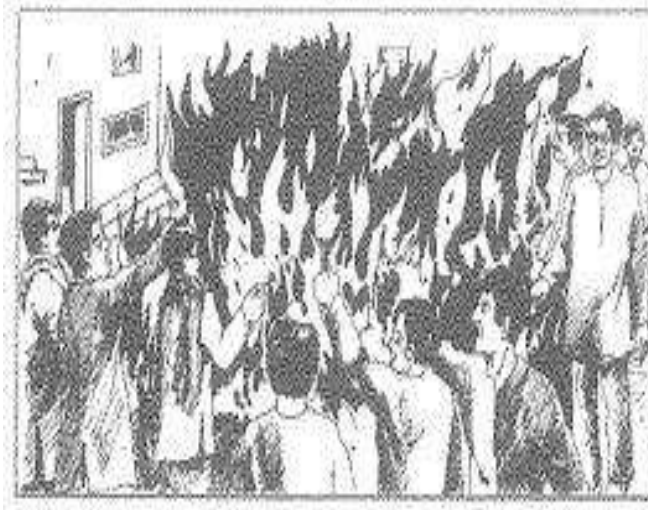
- 1) आन्दोलन में विद्यार्थी मुख्य कर्ता धर्ता थे
- 2) महिलाएं पहली बार घर से निकल कर जुलूस में शामिल हुईं
- 3) पूर्वी बंगाल के मुस्लिम समुदाय की भागीदारी नहीं रखी वस्तुतः उच्च एवं मध्य वर्ग के अधिकांश मुस्लिम नेता आंदोलन से दूर रहे या विभाजन का समर्थन किया
- 4) ढाका ने नवाब सलीमुल्ला ने विभाजन का समर्थन किया लेकिन फिर भी कुछ मुस्लिम नेताओं से आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया जैसे - सैयद हैदर रजा, अब्दुल रसूल, लियाकत हुसैन आदि
- 5) किसान इस आन्दोलन से दूर रहा



9.3.4) Social base

- 5) **Dawn Society secretary Satish Chandra Mukherjee** encouraged national education in Bengal and established Dayanand Anglo Vedic College in Punjab.
- 6) **Active participation of women in the national movement for the first time** :- Women stopped using foreign cosmetics and demonstrated outside the shops.
- 7) **Amar Sonar Bangla composed by Rabindra Nath Tagore and Vande Mataram** composed by Bankim Chandra Chatterjee became the national anthem.
- 8) Co-operative organization Panch Samitis and organizing religious and traditional fairs like Ganesh Mahotsav, Shivaji Mahotsav.

- 1) Students were the main actors in the movement
- 2) For the first time, women came out of the house and joined the procession.
- 3) The Muslim community of East Bengal did not participate, in fact most of the Muslim leaders of the upper and middle classes stayed away from the movement or supported Partition.
- 4) Nawab Salimulla of Dhaka supported the partition but still led the movement from some Muslim leaders like - Syed Haider Raza, Abdul Rasool, Liaquat Hussain etc.
- 5) The farmer stayed away from this movement



9.3.5) प्रसार

- 1) ब्रिटिश सरकार द्वारा 16 अक्टूबर, 1905 ई. में बंगाल विभाजन को लागू कर दिया गया। इस दिन को पूरे बंगाल में शोक दिवस के रूप में मनाया गया।
- 2) लोगों ने एक-दूसरे के हाथों पर राखियां बांधकर एकता प्रदर्शित की। स्वदेशी आन्दोलन का नेतृत्व बंगाल में

3) प्रसारणकर्ता :-

- ♀ बाल गंगाधर तिलक - **पूना और बॉम्बे**
- ♀ लाला लाजपत राय और अजीत सिंह - **पंजाब**
- ♀ सैयद हैदर रजा - **दिल्ली**
- ♀ चिदंबरम पिल्लई - **मद्रास**

इस प्रकार स्वदेशी आन्दोलन बंगाल से प्रारंभ हुआ था, परन्तु शीघ्र ही इसका प्रसार सम्पूर्ण भारत में हो गया।

9.3.6) प्रभाव

1) सकारात्मक

2) नकारात्मक

1) सकारात्मक प्रभाव :-

- ♀ राष्ट्रवाद के वैचारिक आधार को विस्तृत करके उसे उग्र रूप प्रदान किया
- ♀ रचनात्मक व अहिंसक राजनीतिक कार्य पद्धतियों जैसे निष्क्रिय प्रतिरोध, असहयोग, बहिष्कार आदि का सूत्रपात जिसने भविष्य के गांधीवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की।
- ♀ स्वदेशी पर बल देने के कारण भारतीय उद्योगों की स्थापना को प्रोत्साहन मिला। जैसे - पीसी राय द्वारा स्थापित बंगाल केमिकल फैक्ट्री।

9.3.5) Spreading

- 1) The partition of Bengal was implemented by the British government on October 16, 1905. This day was observed as a day of mourning all over Bengal.
- 2) People displayed unity by tying rakhis on each other's hands. Leadership of Swadeshi Movement in Bengal

3) **Broadcaster :-**

- ♀ Bal Gangadhar Tilak - Poona and Bombay
- ♀ Lala Lajpat Rai and Ajit Singh - Punjab
- ♀ Syed Haider Raza - Delhi
- ♀ Chidambaram Pillai - Madras

Thus, the Swadeshi movement started from Bengal, but soon it spread all over India.

9.3.6) Influence

1) Positive

2) Negative

1) **Positive impact :-**

- ♀ Broadened the ideological base of nationalism and gave it a militant form
- ♀ Initiation of constructive and non-violent political methods such as passive resistance, non-cooperation, boycott etc., which formed the background of the future Gandhian movement.
- ♀ The emphasis on Swadeshi encouraged the establishment of Indian industries. For example, Bengal Chemical Factory established by PC Rai.

- ♀ राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना हुई जिसका उद्देश्य साहित्यिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शिक्षा का प्रसार करना था।
- ♀ राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों जैसे- बंगाल नेशनल कॉलेज, बंगाल इंस्टिट्यूट आदि की स्थापना।
- ♀ रविंद्र नाथ टैगोर, रजनीकांत सेन, सैयद अबू अहमद, बंकिम चंद्र चटर्जी आदि ने स्वदेशी और बांग्ला साहित्य के व्यापक विकास में अहम भूमिका निभाई।
- ♀ अविंद्र नाथ टैगोर ने मुगलों, राजपूतों और अजंता की चित्रकला से प्रेरणा प्राप्त करके हिंदू-मुस्लिम समन्वित चित्रकला का विकास किया।
- ♀ 1906 में इंडियन सोसाइटी ऑफ ओरिएंटल आर्ट की स्थापना की गई तथा नंदलाल बोस को चित्रकारी के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त हुई।

2) नकारात्मक प्रभाव :-

- ♀ अब्दुल रसूल, लियाकत हुसैन, सैयद हैदर रजा आदि मुसलमानों के अलावा बहुसंख्यक मुस्लिम वर्ग की आंदोलन से दूरी।
- ♀ ढाका के नवाब सलीमुल्लाह ने स्वदेशी आंदोलन का विरोध किया जिसका आधार अंग्रेजों की फूट डालो राज करो की नीति से निर्मित मुस्लिम लीग थी।
- ♀ आंदोलन की कार्यपद्धति को लेकर उदारवादी तथा उग्रवादियों के मध्य 1907 में कांग्रेस का विभाजन।
- ♀ धार्मिक प्रतीकों एवं नारों के प्रयोग से सांप्रदायिकता को बढ़ावा।
- ♀ किसानों की न्यूनतम भागीदारी।

- ♀ National Council of Education was established whose objective was to spread literary, scientific and technical education.
- ♀ Establishment of national educational institutions like Bengal National College, Bengal Institute etc.
- ♀ Rabindranath Tagore, Rajinikanth Sen, Syed Abu Ahmed, Bankim Chandra Chatterjee etc. played an important role in the comprehensive development of Swadeshi and Bengali literature.
- ♀ Avindra Nath Tagore developed Hindu-Muslim syncretic painting by drawing inspiration from the paintings of the Mughals, Rajputs and Ajanta.
- ♀ In 1906 the Indian Society of Oriental Art was established, and Nandlal Bose received a scholarship for painting.

2) **Negative impact :-**

- ♀ Abdul Rasool, Liaquat Hussain, Syed Haider Raza etc. Apart from Muslims, the distance of the majority Muslim class from the movement.
- ♀ Nawab Salimullah of Dhaka opposed the Swadeshi movement, the basis of which was the Muslim League created by the British policy of divide and rule.
- ♀ The split of the Congress in 1907 between liberals and extremists over the functioning of the movement.
- ♀ Promotion of communalism using religious symbols and slogans.
- ♀ Minimum participation of farmers.

9.3.7) सीमाएं

- 1) समाज के सभी वर्गों यथा किसान मजदूर व मुस्लिम भागीदारी में कमी।
- 2) राजद्रोही सभा अधिनियम, भारतीय समाचार पत्र अधिनियम, फौजदारी कानून अधिनियम आदि कठोर दमनात्मक नीतियों के तहत नेताओं को जेल में डाला।
- 3) नेतृत्वविहीनता
 - ♀ नौ बड़े नेताओं, जैसे- अजीत सिंह, लाला लाजपत राय, अश्विनी कुमार दत्त और कृष्ण कुमार मित्र आदि को निर्वासित कर दिया
 - ♀ तिलक को छह वर्ष की जेल
 - ♀ मद्रास के चिदम्बरम पिल्लै को गिरफ्तार कर लिया गया।
 - ♀ बिपिनचंद्रपाल और अरविंद घोष ने सक्रिय राजनीति से संन्यास ले लिया।
- 4) सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन।
- 5) प्रभावी व दूरदर्शी नीति का अभाव।
- 6) ब्रिटिश सरकार ने 1905 में सर्कुलर जारी करके स्कूल एवं कॉलेज के छात्रों को आंदोलन से दूर रहने के बदले छात्रवृत्ति की योजना बनाई।

बंगाल विभाजन ना रोक पाने के कारण प्रथम दृष्टतः आंदोलन असफल दिखाई पड़ता है हालांकि यह उपनिवेशवाद के विरुद्ध पहला व्यापक जन आंदोलन था जिसमें छात्रों, महिलाओं ने भाग लिया जिससे भविष्य के गांधीवादी आंदोलन के लिए सशक्त आधार तैयार हुआ।

9.3.7) Limitations

- 1) Decreased participation of all sections of the society such as farmers, laborers and Muslims.
- 2) The leaders were imprisoned under harsh repressive policies like the Seditious Assembly Act, the Indian Newspaper Act, the Criminal Law Act etc.
- 3) Headless
 - ♀ Deported nine big leaders, such as Ajit Singh, Lala Lajpat Rai, Ashwini Kumar Dutta and Krishna Kumar Mitra etc.
 - ♀ Tilak gets six years imprisonment
 - ♀ Chidambaram Pillai of Madras was arrested.
 - ♀ Bipin chandrapal and Aurobindo Ghosh retired from active politics.
- 4) Congress split in Surat session.
- 5) Lack of effective and visionary policy.
- 6) By issuing a circular in 1905, the British government planned a scholarship to school and college students in exchange for staying away from the movement.

The movement appears to be unsuccessful as it could not stop the partition of Bengal, although it was the first mass movement against colonialism in which students and women participated, which created a strong foundation for the future Gandhian movement.

9.3.8) सारांश

- 1) **प्रमुख व्यक्तित्व :-** सुरेंद्रनाथ बनर्जी, कृष्ण कुमार मित्र, पृथ्वीश राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिनचंद्र पाल, लाला लाजपत राय, अरविंद घोष
- 2) **विरोध की पद्धति :-** विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, जनसभाओं का आयोजन, उग्र प्रदर्शन, स्वयंसेवी संगठनों का गठन, आत्म-शक्ति व आत्मनिर्भरता पर बल, राष्ट्रीय शिक्षा व उद्योगों को प्रोत्साहन, परम्परागत त्यौहारों व मेलों का आयोजन, शिक्षण संस्थानों व सरकारी सेवाओं का बहिष्कार आदि।
- 3) **घोषणा :-** 7 अगस्त, 1905 (टाउन हॉल, कलकत्ता)
- 4) **16 अक्तूबर, 1905 :** शोक दिवस, राखी दिवस
- 5) **बनारस कांग्रेस अधिवेशन (1905 ई.) :-** स्वशासन प्रस्ताव पारित
- 6) **अगस्त 1906 :** राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् का गठन
- 7) **सामाजिक आधार :-** छात्र महिलाएँ, ज़मींदारों का एक वर्ग, शहरी निम्न मध्यम वर्ग आदि। (किसान व बहुसंख्यक मुसलमान अलग रहे)
- 8) **क्षेत्रीय विस्तार :-** बम्बई व पुणे (तिलक), पंजाब व उत्तर प्रदेश (लाला लाजपत राय व अजीत सिंह), दिल्ली (सैयद हैदर रजा), मद्रास (चिदंबरम पिल्लई, बिपिनचंद्र पाल)
- 9) **अरुंडेल कमेटी (1906 ई. में गठित) :-** बंगाल विभाजन रद्द करने का सुझाव दिया।
- 10) **दिल्ली दरबार (दिसम्बर 1911) :-** बंगाल विभाजन रद्द करने की घोषणा । (लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय)
- 11) **राजधानी परिवर्तन :-** कलकत्ता से दिल्ली

9.3.8) Summary

- 1) **Prominent Personalities :-** Surendra Nath Banerjee, Krishna Kumar Mitra, Prithvisha Rai, Bal Gangadhar Tilak, Bipinchandra Pal, Lala Lajpat Rai, Aurobindo Ghosh
- 2) **Method of protest :-** Boycott of foreign goods, organizing public meetings, violent demonstrations, formation of voluntary organizations, emphasis on self-power and self-reliance, promotion of national education and industries, organizing traditional festivals and fairs, educational institutions and government services. Exclusion etc.
- 3) **Declaration :-** August 7, 1905 (Town Hall, Calcutta)
- 4) **October 16, 1905 :** Mourning Day, Rakhi Day
- 5) **Banaras Congress session (1905 AD) -** Self-government resolution passed
- 6) **August 1906 :** National Council of Education formed
- 7) **Social base :-** students, women, a section of landowners, urban lower middle class etc. (Farmers and majority Muslims remain separate)
- 8) **Territorial Expansion :-** Bombay and Pune (Tilak), Punjab and Uttar Pradesh (Lala Lajpat Rai and Ajit Singh), Delhi (Syed Haider Raza), Madras (Chidambaram Pillai, Bipinchandra Pal)
- 9) **Arundel Committee (formed in 1906 AD) :-** Suggested to cancel the partition of Bengal.
- 10) **Delhi Durbar (December 1911) :-** Announcement to annul the partition of Bengal. (Lord Harding II)
- 11) **Capital Change :-** Calcutta to Delhi

9.4) मुस्लिम लीग की स्थापना

1) पृष्ठभूमि :-

- ♀ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर ने अपनी पुस्तक '**द इंडियन मुसलमान**' में लिखा था कि मुसलमान यदि खुश और संतुष्ट हैं, तो भारत में ब्रिटिश शक्ति का महत्तम बचाव होगा
- ♀ सर सैयद अहमद खान (पृथक देश)

2) विचार :-

- ♀ आगा खां के नेतृत्व में शिमला में 1 अक्टूबर 1906 को वायसराय मिंटो से मिलने के
- ♀ अखिल भारतीय मुस्लिम शैक्षणिक सम्मेलन के आयोजन में ढाका के नवाब सलीमुल्लाह खान (बंगाल विभाजन के समर्थन) द्वारा प्रस्तावित

3) उद्देश्य :-

- ♀ ब्रिटिश सरकार के प्रति मुसलमानों में निष्ठा बढ़ाना
- ♀ अन्य संप्रदायों के प्रति सांप्रदायिकता की भावना को बढ़ने से रोकना
- ♀ मुसलमानों के राजनीतिक अधिकारों की रक्षा और उनका विस्तार करना

1. **गठन :-** ढाका (1906)
2. **प्रथम अध्यक्ष :-** आगा खां
3. **मुख्यालय :-** लखनऊ
4. **सचिव :-** मोहसिन-उल-मुल्क तथा वकार-उल-मुल्क
5. **विदेशी शाखा :-** लंदन में अमीर अली (1908)
6. **अधिवेशन :-** प्रथम (कराची, 1907) और द्वितीय (अमृतसर, 1908)

9.4) Establishment of Muslim League

1) Background :-

- ♀ **W. W. Hunter** wrote in his book '**The Indian Muslim**' that British should follow the policy of Muslim appeasement to rule Indian for long.
- ♀ Sir Syed Ahmed Khan (Separated Country)

2) Thought :-

- ♀ On 1 October 1906 at Shimla under the leadership of Aga Khan to meet Viceroy Minto.
- ♀ Proposed by Nawab Salim Ullah Khan of Dhaka (supporting Bengal Partition) in organizing All India Muslim Educational Conference

3) Objectives :-

- ♀ To increase allegiance among Muslims to the British Government
- ♀ Preventing the spread of communalism towards other sects
- ♀ Protecting and expanding the political rights of Muslims

1. **Formation :-** Dhaka (1906)
2. **First President :-** Aga Khan
3. **Headquarter :-** Lucknow
4. **Secretary :-** Mohsin-ul-Mulk and Waqar-ul-Mulk
5. **Overseas Branch :-** Amir Ali in London (1908)
6. **Sessions :-** First (Karachi, 1907) and Second (Amritsar, 1908)

4) प्रभाव :-

- ♀ अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति की सफलता
- ♀ 1909 के **मार्ले मिंटो सुधार** से सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली शुरू
 - ❖ प्रथम मांग | First demand :- 1906 में आगा खां ने लॉर्ड मिंटो से
 - ❖ द्वितीय मांग | Second demand :- 1908 में अमृतसर अधिवेशन में
- ♀ भारत में सांप्रदायिकता
- ♀ भारत का विभाजन

9.5) कांग्रेस का सूरत अधिवेशन

1907 ई. में कांग्रेस के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस दो भागों में विभाजित हो गई। इस अधिवेशन में गरमपंथियों को कांग्रेस से निकालकर बाहर कर दिया गया।

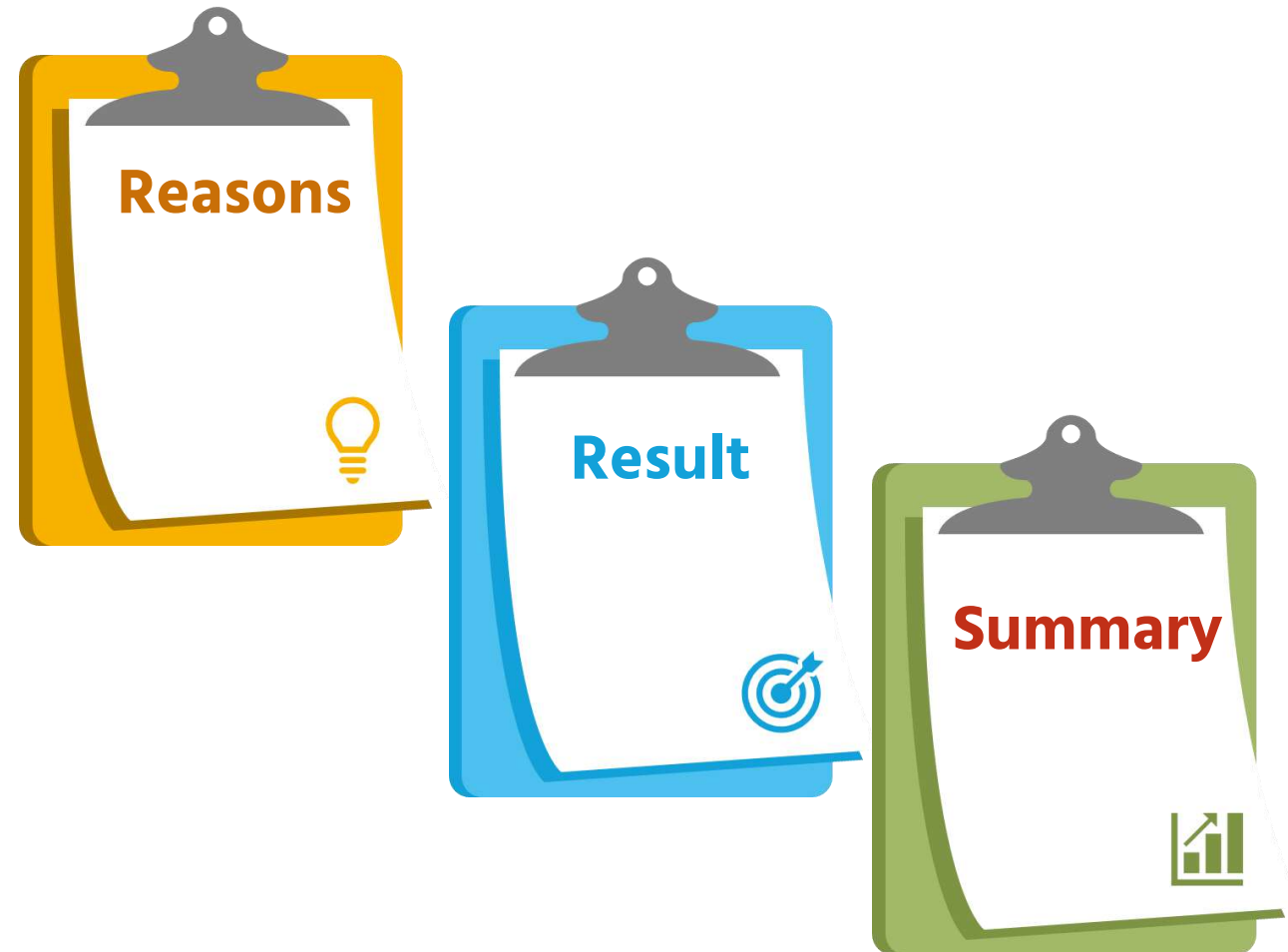


4) Effect :-

- ♀ The success of the British divide and rule policy
- ♀ Communal electoral system started with the **Marley Minto Reforms** of 1909
 - ❖ First demand :- In 1906 Aga Khan asked Lord Minto
 - ❖ Second demand :- In the Amritsar session in 1908
- ♀ Communalism in India
- ♀ Division of India

9.5) Surat session of Congress

In the Surat session of the Congress in 1907 AD, the Congress was divided into two parts. In this session the extremists were thrown out of the Congress.



कांग्रेस का बनारस अधिवेशन, 1905

1) अध्यक्ष :- गोपाल कृष्ण गोखले

2) प्रमुख घटनाएं :-

- ♀ स्वशासन का प्रस्ताव पारित
- ♀ नरम और गरम दल के मध्य समझौते का प्रयास

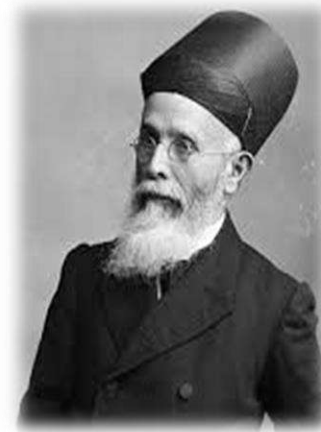


कांग्रेस का कलकत्ता अधिवेशन, 1906

1) अध्यक्ष :- दादा भाई नौरोजी

2) प्रमुख घटनाएं :-

- ♀ नरम दल और गरम दल के मध्य अध्यक्ष पद को लेकर विवाद
- ♀ दादाभाई नौरोजी द्वारा समाधान
- ♀ स्वराज्य, स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा के प्रस्ताव पारित



Banaras session of Congress, 1905

1) **President :-** Gopal Krishna Gokhale

2) **Major events :-**

- ♀ Self-government resolution passed
- ♀ Efforts to compromise between soft and hot parties

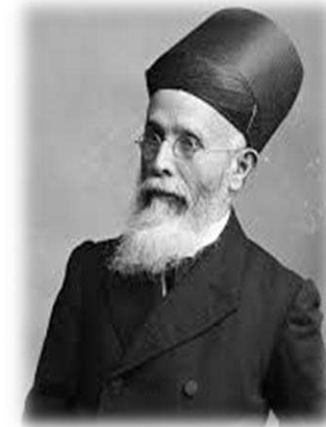


Calcutta session of Congress, 1906

1) **President :-** Dadabhai Naoroji

2) **Major events :-**

- ♀ Controversy over the post of president between soft party and hot party
- ♀ Solution by Dadabhai Naoroji
- ♀ Swaraj, Swadeshi, Boycott, National Education resolutions passed



9.5.1) विभाजन के कारण

- 1) नरमपंथी, स्वदेशी आन्दोलन को बंगाल तक सीमित रखना चाहते थे जबकि **गरमपंथी पूरे देश** हैं
- 2) गरमपंथी विदेशी माल के बहिष्कार के साथ **ब्रिटेन को किसी तरह का सहयोग न दिए जाने की मांग** कर रहे थे।
- 3) 1907 ई. में होने वाले कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्ष के पद को लेकर मतभेद - **गरमपंथी लाला लाजपत राय** जबकि **नरमपंथी राजबिहारी घोष** को अध्यक्ष बनाना चाहते थे
- 4) नागपुर में गरमपंथियों के प्रभाव के कारण नरमपंथियों ने यह अधिवेशन सूरत में आयोजित करवाया
- 5) अफवाह - 1906 ई. में हुए कलकत्ता अधिवेशन में पारित स्वदेशी, बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा तथा स्वालम्बन संबंधी प्रस्ताव रद्द कर दिए जाएंगे
- 6) तिलक तथा रानाड़े के गुट में व्यक्तिगत विरोध

9.5.2) परिणाम

- 1) कांग्रेस का सामाजिक आधार सीमित हो गया
- 2) स्वदेशी आन्दोलन पर प्रतिकूल - एक वर्ष के अन्दर स्वदेशी आन्दोलन समाप्त हो गया।
- 3) भारत के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव जन तथा आन्दोलन की गति धीमी पड़ गई।
- 4) अंग्रेजों को सूरत विभाजन से लाभ हुआ तथा अंग्रेजों ने गरमपंथी नेताओं पर सख्त कार्यवाही की तथा नरमपंथी की मांगों को नजरअंदाज किया

निष्कर्षतः सूरत विभाजन का राष्ट्रीय आन्दोलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। हांलाकि राष्ट्रीय नेताओं ने शीघ्र ही पारस्परिक सहयोग के महत्व को समझते हुए 1916 ई. में लखनऊ में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में गरमपंथी नेताओं को पुनः शामिल कर लिया गया।

9.5.1) Reasons

- 1) Moderates wanted to limit the Swadeshi movement to Bengal while the extremists are the whole country
- 2) The extremists were **demanding no support of any kind to Britain along with boycott of foreign goods.**
- 3) Differences over the post of President in the annual session of Congress to be held in 1907 AD - **Extremist Lala Lajpat Rai** while **moderate Raj Bihari Ghosh** wanted to be made President
- 4) Due to the influence of the extremists in Nagpur, the moderates organized this convention in Surat.
- 5) Rumor - In the Calcutta session held in 1906, the proposals related to Swadeshi, boycott, national education and self-reliance will be canceled
- 6) Personal conflict between Tilak and Ranade's faction

9.5.2) Result

- 1) Congress's social base narrowed
- 2) Adverse to the Swadeshi Movement - Within a year the Swadeshi movement ended.
- 3) Its adverse effect on India's national freedom struggle also slowed down the movement of people and movement.
- 4) The British benefited from the Surat partition and the British took strict action on the extremist leaders and ignored the demands of the moderates.

In conclusion, the partition of Surat had an adverse effect on the national movement. However, the national leaders soon understood the importance of mutual cooperation, the extremist leaders were again included in the Congress session held in Lucknow in 1916 AD.

9.5.3) सारांश

कारण

उदारवादी व उग्रवादियों में मतभेद (स्वदेशी व बहिष्कार, अध्यक्ष पद आदि मुद्दों पर)

- # **वर्ष :-** दिसम्बर 1907
- # **स्थान :-** सूरत
- # **अध्यक्ष :-** रास बिहारी घोष (उग्रवादी लाला लाजपत को बनाना चाहते थे)

मद्रास अधिवेशन (1908) -
उग्रवादियों का कांग्रेस में प्रवेश प्रतिबंधित



Lala Lajpat Roy



Bal Gangadhar Tilak



Bipin Chandra Pal



9.5.3) Summary

Reason

Differences between liberals and extremists (on issues like Swadeshi and boycott, presidency etc.)

- ≠ **Year :-** December 1907
- ≠ **Location :-** Surat
- ≠ **President :-** Rash Behari Ghosh (extremist wanted to make Lala Lajpat

Madras session (1908) -
Entry of militants banned
in Congress



Lala Lajpat Roy



Bal Gangadhar Tilak



Bipin Chandra Pal



9.6) मार्ले मिंटो सुधार (1909)

- 1) वर्ष 1905 में लॉर्ड कर्जन के स्थान पर **लॉर्ड मिंटो** को **भारत का वायसराय** नियुक्त किया गया तथा **जॉन मार्ले को भारत सचिव**
- 2) भारतीय परिषद अधिनियम, 1909 (मार्ले-मिंटो सुधार) का सबसे बड़ा दोष **सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व प्रणाली** के तहत **मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल** की व्यवस्था करना था
 - इस व्यवस्था के अंतर्गत **परिषदों में मुसलमान सदस्यों का निर्वाचन सामान्य निर्वाचक मंडल द्वारा नहीं अपितु केवल मुसलमानों के लिए गठित पृथक निर्वाचक मंडल द्वारा किया जाता था**
- 3) गांधीजी ने कहा था - **"मार्ले-मिंटो सुधार (1909 के इंडियन काउंसिल एक्ट) ने हमारा सर्वनाश कर दिया"**

नोट :- 1906 में आगा खां ने शिमला जाकर लॉर्ड मिंटो से सांप्रदायिक निर्वाचन की प्रथम मांग की।



John Morley

Viceroy Lord Min

9.6) Marley Minto Improvements (1909)

- 1) In the year 1905, **Lord Mito** was appointed **Viceroy of India** in place of Lord Curzon and **John Marley was appointed India's Secretary.**
- 2) The biggest drawback of the Indian Councils Act, 1909 (Marley-Minto Reforms) was the provision of **separate electorates for Muslims** under the system of communal representation.
 - Under this system the Muslim members in the councils were not elected by the general electorate but by a separate electorate constituted only for the Muslims.
- 3) Gandhiji had said - "**The Marley-Minto Reforms (Indian Councils Act of 1909) destroyed us**".

Note :- In 1906, the Aga Khan went to Shimla and made the first demand for communal elections from Lord Minto.



John Morley

Viceroy Lord Min

9.7) दिल्ली दरबार

प्रथम दिल्ली दरबार, 1877

- 1) **वायसराय :-** लॉर्ड लिटन
- 2) **कारण :-** इंग्लैंड की क्वीन विक्टोरिया को भारत की सामग्री घोषित किया गया साथ ही केसर ए हिंद की उपाधि दी गई।
- 3) **अन्य तथ्य :-** दक्षिण भारत में भयंकर अकाल पड़ा हजारों लोगों की जान गई तथा इस दरबार में बेशुमार धन की बर्बादी हुई।

द्वितीय दिल्ली दरबार, 1903

- 1) **वायसराय :-** लॉर्ड कर्जन
- 2) **कारण :-** इंग्लैंड में एडवर्ड सप्तम का राज्यारोहण
- 3) **अन्य तथ्य :-**
 - एडवर्ड सप्तम ने अपने भाई आर्थर (कनॉट के ड्यूक) को भेजा
 - लॉर्ड कर्जन ने पहली बार तार के द्वारा भाषण दिया
 - भयंकर अकाल

तृतीय दिल्ली दरबार, 1911

- 1) **वायसराय :-** लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय
- 2) **कारण :-** जॉर्ज पंचम और मेरी का आगमन
- 3) **अन्य तथ्य :-**
 - राजधानी स्थानांतरण - कलकत्ता से दिल्ली (1912)
 - बंगाल विभाजन रद्द
 - 1 अप्रैल 1936 को उड़ीसा को बिहार से अलग
 - असम (सिलहट) का गठन

9.7) Delhi Durbar

First Delhi Durbar, 1877

- 1) **Viceroy :-** Lord Lytton
- 2) **Reason :-** Queen Victoria of England was declared the material of India as well as given the title of Saffron-e-Hind.
- 3) **Other facts :-** There was a severe famine in South India, thousands of people died and a lot of money was wasted in this court.

Second Delhi Durbar, 1903

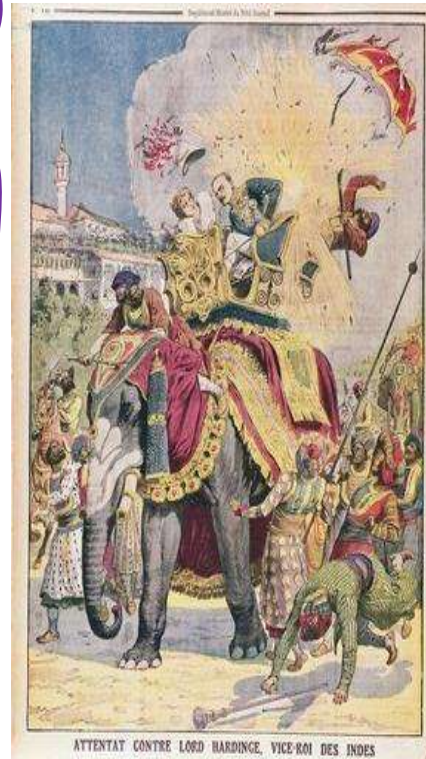
- 1) **Viceroy :-** Lord Curzon
- 2) **Reason :-** The accession of Edward VII in England
- 3) **Other facts :-**
 - Edward VII sent his brother Arthur (Duke of Connaught)
 - Lord Curzon delivers telegram speech for the first time
 - severe famine

Third Delhi Durbar, 1911

- 1) **Viceroy :-** Lord Hardinge II
- 2) **Reason :-** The arrival of George V and Mary
- 3) **Other facts :-**
 - Capital Transfer - Calcutta to Delhi (1912)
 - The partition of Bengal has been cancelled
 - On 1 April 1936, Orissa was separated from Bihar.
 - Formation of Assam (Sylhet)

दिल्ली षड्यंत्र / हार्डिंग बम कांड

1. दिसंबर 1912
2. हार्डिंग द्वितीय, राजधानी स्थानांतरण समारोह जा रहा
3. चांदनी चौक पर हमला
4. 13 लोगों की हिरासत :- अमीर चंद्र, दीनानाथ, बालमुकुंद, अवध बिहारी आदि
 - सरकारी गवाह :- दीनानाथ
 - रासबिहारी बोस जापान चले गए



Amir Chand
1869-1915

He was accused of throwing a bomb on Lord Hardinge and was sentenced to death.

THE 20-YEAR OLD WHO WAS HANGED FOR THROWING A BOMB AT THE BRITISH VICEROY

BASANTA KUMAR BISWAS



Born in 1895, Basanta Kumar Biswas was drawn to the Indian freedom struggle at a young age.

Mentored by Rash Behari Bose, Biswas became a member of the revolutionary group Jugantar.

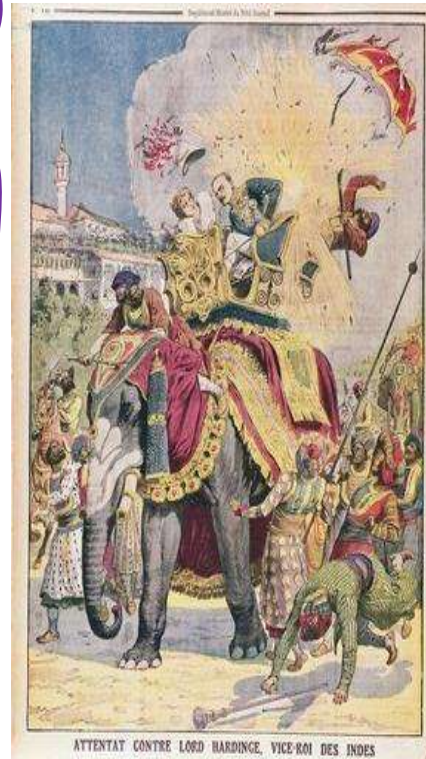
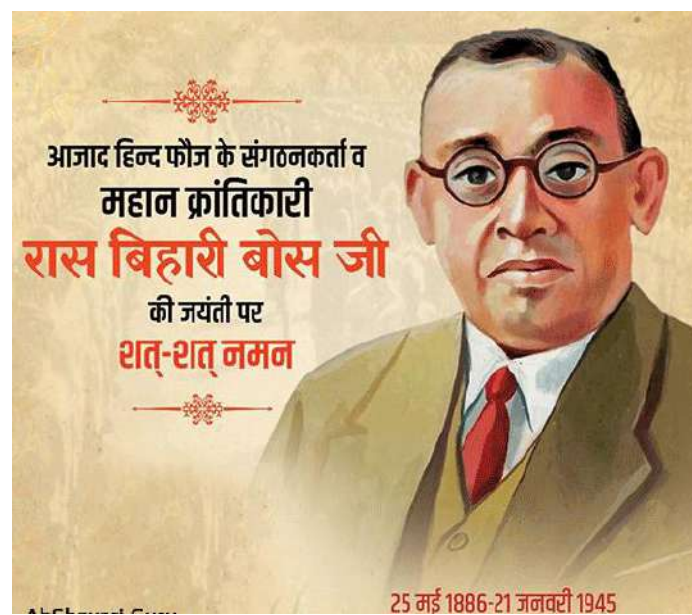
In 1912, Biswas - dressed in a burqa - threw a bomb at Viceroy Lord Hardinge during a parade in Delhi's Chandni Chowk, but the Viceroy survived.

The 20-year old Biswas was hanged in 1915 & became one of the youngest Indians to be executed by the British.

THE MAN WHO GAVE THE SUPREME SACRIFICE FOR HIS NATION TODAY REMAINS A FORGOTTEN HERO

Delhi Conspiracy / Hardinge Bomb Case

1. **December 1912**
2. Harding II, going to capital transfer ceremony
3. attack on Chandni chowk
4. Custody of 13 people :- Amir Chandra, Dinanath, Balmukund, Awadh Bihari etc.
 - Government Witness :- Dinanath
 - Rash Behari Bose went to Japan



Amir Chand
1869-1915

He was accused of throwing a bomb on Lord Hardinge and was sentenced to death.

THE 20-YEAR OLD WHO WAS HANGED FOR THROWING A BOMB AT THE BRITISH VICEROY

BASANTA KUMAR BISWAS



Born in 1895, Basanta Kumar Biswas was drawn to the Indian freedom struggle at a young age.

Mentored by Rash Behari Bose, Biswas became a member of the revolutionary group Jugantar.

In 1912, Biswas - dressed in a burqa - threw a bomb at Viceroy Lord Hardinge during a parade in Delhi's Chandni Chowk, but the Viceroy survived.

The 20-year old Biswas was hanged in 1915 & became one of the youngest Indians to be executed by the British.

**THE MAN WHO GAVE THE SUPREME
SACRIFICE FOR HIS NATION TODAY REMAINS
A FORGOTTEN HERO**

9.8) प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918)

1) जून 1914 में पहला विश्व युद्ध आरंभ हुआ।

2) भारत का योगदान व प्रभाव :-

- ♀ कांग्रेस ने युद्ध के पश्चात स्वशासन प्राप्ति की आशा से सरकार को पूर्ण सहयोग दिया
- ♀ इस युद्ध के बाद लौटे सैनिकों ने जनता के मनोबल बढ़ाया।
- ♀ यूएसएसआर के गठन के साथ ही भारत में भी साम्यवाद का प्रसार (सीपीआई के गठन) हुआ
- ♀ युद्ध के तुरंत बाद अंग्रेज़ों ने रौलेट एक्ट पारित किया, परिणामस्वरूप असहयोग आंदोलन की शुरुआत हुई।
- ♀ खाद्य आपूर्ति, विशेष रूप से अनाज की मांग में वृद्धि से खाद्य मुद्रास्फीति में भी भारी वृद्धि हुई।
- ♀ भारतीय उद्योगों का विकास



9.8) First world war (1914-1918)

1) The First World War started in **1914 June**

2) **India's contribution and influence :-**

- ♀ Congress gave full cooperation to the government with the hope of achieving self-government after the war.
- ♀ The soldiers who returned after this war boosted the morale of the public.
- ♀ Formation of the USSR lead spread of communism in India (the formation of the CPI)
- ♀ The British passed the Rowlett Act soon after the war, resulting the Non-Cooperation Movement.
- ♀ An increase in the demand for food supplies, especially cereals, also led to a sharp rise in food inflation.
- ♀ Development of Indian industries



9.9) होमरूल आंदोलन

1

परिचय

4

कार्यक्रम

2

तिलक व एनी बेसेंट का
होमरूल

5

समाप्ति

3

कारण

6

महत्व



9.9) Indian Home Rule movement

1

Introduction

4

Program

2

Home Rule of Tilak and Annie Besant

5

End

3

Reason

6

Importance

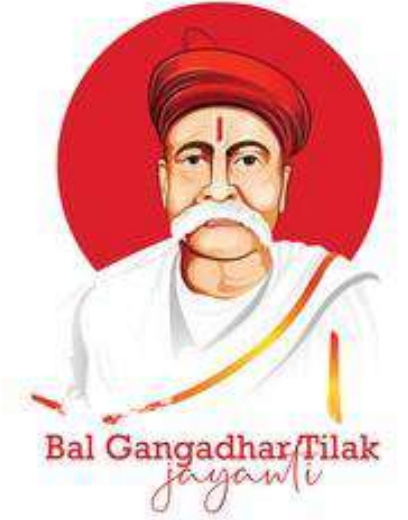


9.9.1) परिचय

- 1) होमरूल की अवधारणा आयरलैंड में होमरूल लीग स्थापित करने वाले नेता रेमाण्ड द्वारा दी गयी
- 2) **अर्थ :-** पराधीनता की स्थिति में स्वशासन की मांग
- 3) भारत में बाल गंगाधर तिलक(अप्रैल 1916) व एनी बेसेंट (सितंबर 1916) ने आन्दोलन को शुरू किया

4) उद्देश्य :-

- ♀ ब्रिटिश शासन के अधीन रहते हुए संवैधानिक एवं शांतिपूर्ण तरीकों से स्वशासन प्राप्त करना।
- ♀ तिलक ने क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा और भाषायी आधार पर राज्यों के निर्माण की मांग को स्वराज के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया।
- ♀ जातिवाद एवं छुआछूत के विरुद्ध अभियान की शुरुआत करना।
- ♀ लोगों को राजनीतिक शिक्षा देना
- ♀ स्वशासन के अंतर्गत जिला परिषद्, नगरपालिका एवं प्रांतीय स्तरों पर पूर्ण स्थानीय सरकार का निर्माण करना।
- ♀ भारतीय राजनीति में उग्र विचारधारा के विस्तार को सीमित करना।



9.9.1) Introduction

- 1) The concept of home rule was given by Raymond, the leader who founded the home rule league in Ireland.
- 2) **Meaning :-** self-government in internal affairs by a dependent political unit
- 3) Bal Gangadhar Tilak (April 1916) and Annie Besant (September 1916) started the movement in India.

4) **Objectives :-**

- ♀ To achieve self-government by constitutional and peaceful means while under British rule.
- ♀ Tilak presented the demand for education in regional language and creation of states on linguistic basis by linking them with Swaraj.
- ♀ To launch a campaign against casteism and untouchability.
- ♀ Political education to the people
- ♀ Formation of complete local government at the Municipal and Provincial levels
- ♀ Limiting the spread of radical ideology in Indian politics.



9.9.2) तिलक और एनी बेसेंट के होमरूल लीग



लाला लाजपत राय - अमेरिका में होमरूल (1915)

लंदन में भारतीय होमरूल (1912) - महासचिव डी. ग्राहमपोल

तिलक की होमरूल लीग

स्थापना - अप्रैल 1916, पूना

कार्यक्षेत्र :- कर्नाटक महाराष्ट्र मुंबई के अतिरिक्त मध्य प्रांत बरार

अध्यक्ष :- जोसेफ बैपटिस्टा | सचिव :- एन.सी. केलकर

प्रचार :- मराठा (English) और केसरी (मराठी)

एनी बेसेंट की होमरूल लीग

स्थापना - सितंबर 1916, मद्रास

कार्यक्षेत्र :- तिलक के क्षेत्रों को छोड़कर लगभग समस्त भारत

सचिव :- जॉर्ज अरुंडेल

प्रचार :- कामनबिल और न्यू इंडिया

गोखले द्वारा स्थापित सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी के सदस्यों को तिलक की लीग में No Entry



9.9.2) Home Rule League of Tilak and Annie Besant



Lala Lajpat Rai - Home Rule in America (1915)

Indian Home Rule in London (1912) - Secretary General D. Graham pole

Tilak's Home Rule League

Annie Besant's Home Rule League

Established - April 1916, Poona

Established - September 1916, Madras

Karnataka Maharashtra, Central Province Berar

Almost all of India except the areas of Tilak

President :- Joseph Baptista. Secretary :- N.C. Kelkar

Secretary :- George Arundel

Maratha (English) and Kesari (Marathi)

Common will and New India

No Entry to the members of the Servants of India Society founded by Gokhale in Tilak's League

9.9.3) होमरूल लीग के कारण

- 1) कांग्रेस विभाजन के पश्चात उपजी **राजनैतिक निष्क्रियता**
- 2) 1909 के **मार्ले मिंटो सुधार** (भारत परिषद अधिनियम) के बाद उदारवादी नेताओं की लोकप्रियता में कमी।
- 3) स्वदेशी आंदोलन के उपरांत राष्ट्रीय **नेतृत्व की शून्यता** :- बाल गंगाधर तिलक को जेल भेजा गया जबकि अरविंद घोष ने राजनीति से संन्यास ले लिया
- 4) एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक का कुशल नेतृत्व
- 5) प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश साम्राज्यवाद की वास्तविक प्रवृत्ति तथा मंशा का उजागर होना।
- 6) प्रथम विश्व युद्ध के बाद **भारत में महंगाई, कर वृद्धि इत्यादि से जन असंतोष** बढ़ गया था।

9.9.4) कार्यक्रम



9.9.3) Reasons of Home Rule League

- 1) Political inaction after Congress split
- 2) The decline in popularity of liberal leaders after the Marley Minto Reforms (India Council Act) of 1909.
- 3) Vacancy of National Leadership after Swadeshi Movement :- Bal Gangadhar Tilak was sent to jail while Aurobindo Ghosh retired from politics
- 4) Efficient leadership of Annie Besant and Bal Gangadhar Tilak
- 5) The real tendency and intention of British imperialism to be exposed during the First World War.
- 6) After the First World War, public discontent had increased in India due to inflation, tax increase, etc.

9.9.4) Strategy



9.9.5) होमरूल आंदोलन के मंद पड़ने के कारण

- 1) **केसरी** (मराठी भाषा में) एवं **मराठा** (अंग्रेज़ी भाषा में) पत्रों के माध्यम से **तिलक** ने, जबकि **न्यू इंडिया एवं कॉमनवील** (साप्ताहिक पत्र) नामक पत्रों के माध्यम से **एनी बेसेंट** ने जनसंचार का कार्य किया
- 2) तिलक ने समस्त भारत का दौरा करके जनमत तैयार करने का कार्य किया तथा नारा दिया, **“स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूँगा”** ।
- 3) 1917 ई. में अध्यक्ष पद पर रहते हुए एनी बेसेंट ने कहा कि **“भारत अब अनुग्रहों के लिये अपने घुटनों पर नहीं, बल्कि अधिकारों के लिये अपने पैरों पर खड़ा है।”**

1) ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियां :-

- ♀ तिलक एवं बिपिन चंद्र पाल के दिल्ली एवं पंजाब में प्रवेश पर रोक।
- ♀ जून 1917 में एनी बेसेंट, जॉर्ज अरुंडेल, बीपी वाडिया को गिरफ्तार कर लिया गया जिसके विरोध में एस सुब्रमण्यम अय्यर ने नाइटहुड की उपाधि वापस कर दी।
- ♀ मद्रास में छात्रों के जनसभा में शामिल होने पर प्रतिबंध

2) एडविन मोंटेग्यू की घोषणा तथा नेतृत्व विहीनता :-

- ♀ नवीन भारत सचिव मोंटेग्यू ने संसद में कहा कि भारतीयों को स्वशासन का अवसर मिलना चाहिए।
- ♀ इस घोषणा के पश्चात एनी बेसेंट ने आंदोलन वापस ले लिया
- ♀ 1918 में **वैलेंटाइन शिरोल** ने अपनी पुस्तक **“इंडियन अनरेस्ट”** में तिलक को **भारतीय अशांति का जनक** कहा जिसके पश्चात तिलक, शिरोल पर मानहानि का मुकदमा करने लंदन चले गए।

9.9.5) Reasons to the slowdown

- 1) Tilak did the work of mass communication through **Kesari (in Marathi language) and Maratha (in English language)**, while Annie Besant did the work of mass communication through **New India and Common will (weekly paper)**.
- 2) Tilak traveled all over India to prepare public opinion and gave the slogan, **"Swaraj is our birthright and I shall have it"**.
- 3) In 1917 AD, Annie Besant, while holding the post of president, said that **"India is no longer standing on its knees for favors, but on its feet for rights."**

1) Repressive policies of the British government :-

- ♀ Ban on entry of Tilak and Bipin Chandra Pal in Delhi and Punjab.
- ♀ In June 1917, Annie Besant, George Arundel, BP Wadia were arrested in protest which S Subramaniam Iyer returned the knighthood.
- ♀ Ban on students from attending public meetings in Madras

2) Edwin Montagu's Declaration and Leadership :-

- ♀ New India Secretary Montagu said in Parliament that Indians should get the opportunity of self-government.
- ♀ After this announcement, Annie Besant withdrew the movement.
- ♀ In 1918, Valentin Shirol in his book "Indian Unrest" called Tilak the father of Indian unrest, after which Tilak went to London to sue Shirol for defamation.

3) 1917-18 के सांप्रदायिक दंगे

4) **गोपाल कृष्ण गोखले** द्वारा स्थापित **सर्वेंट ऑफ़ इंडिया सोसाइटी** के सदस्यों को लीग में प्रवेश ना करने देना।

1920 में गांधी जी द्वारा होम रूल लीग का नाम बदलकर स्वराज सभा कर दिया गया। इस प्रकार यह आंदोलन अपने मूल उद्देश्य होमरूल को प्राप्त नहीं कर सका, परंतु इसने पुनः राष्ट्रव्यापी आंदोलन की भावना को जीवित करके आगामी आंदोलनों की आधारशिला तैयार की।

9.9.6) होमरूल आंदोलन का महत्व या उपलब्धियां

- 1) राष्ट्रव्यापी जन आंदोलन को जन्म देकर, गांधीजी के लिए भावी राष्ट्रीय आंदोलन की आधारशिला तैयार की।
- 2) राजनीतिक शून्यता के दौर में राष्ट्रीय आंदोलन को गति प्रदान करके आगे बढ़ाया।
- 3) **राष्ट्रीय आंदोलन के भावी नेता** जैसे मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, तेज बहादुर सप्रू, भूलाभाई देसाई, चितरंजन दास, के एम मुंशी, सैफुद्दीन किचलू, मदन मोहन मालवीय, मोहम्मद अली जिन्ना, लाला लाजपत राय आदि होम रूल लीग के सदस्य थे।
- 4) इस आंदोलन में पेशेवर और मध्यम वर्ग की भागीदारी सर्वाधिक थी हालांकि मुस्लिम वर्ग, स्त्री, व्यापारी और मजदूर वर्ग ने भी भाग लिया।
- 5) 1916 के लखनऊ समझौते के तहत **गरमपंथियों के पुनः प्रवेश** से कांग्रेस दोबारा ऊर्जावान हो गई।
- 6) **उदारवादी शासन** पर सहमति प्रकट करते हुए **भारत शासन अधिनियम 1919** या मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार भारत में पारित हुआ।

- 3) Communal Riots of 1917-18
- 4) Not allowing members of the Servants of India Society, founded by Gopal Krishna Gokhale, to enter the league.

In 1920, the Home Rule League was renamed as Swaraj Sabha by Gandhiji. Thus, this movement could not achieve its original objective of Home Rule, but it again revived the spirit of the nationwide movement and prepared the foundation for the subsequent movements.

9.9.6) Significance of Home Rule Movement

- 1) Giving birth to a nationwide mass movement, laid the foundation for a future national movement for Gandhiji.
- 2) In the era of political vacuum, the national movement was propelled forward by giving impetus.
- 3) Future leaders of the national movement like Motilal Nehru, Jawaharlal Nehru, Tej Bahadur Sapru, Bhulabhai Desai, Chittaranjan Das, KM Munshi, Saifuddin Kitchlew, Madan Mohan Malviya, Mohammad Ali Jinnah, Lala Lajpat Rai etc. were members of the Home Rule League.
- 4) Professional and middle-class participation was highest in this movement, although the Muslim class, women, business and working class also participated.
- 5) The Congress was re-energized with the re-entry of the extremists under the Lucknow Pact of 1916.
- 6) The Government of India Act 1919 or Montagu Chelmsford Reforms was passed in India, agreeing to liberal rule.

9.10) कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन 1916

- 1) **अंबिका चरण मजूमदार** की अध्यक्षता में आयोजित कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन (1916) द्वारा **गरमपंथियों की कांग्रेस में वापसी तथा कांग्रेस व मुस्लिम लीग के मध्य समझौता** हुआ।
- 2) **महत्वपूर्ण कारक :-** एनी बेसेंट व बाल गंगाधर तिलक तथा 1915 में उदारवादी नेता गोपाल कृष्ण गोखले एवं फिरोजशाह मेहता की मृत्यु।
- 3) **लखनऊ समझौता या कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के मध्य समझौता**
 - ♀ कांग्रेस द्वारा **उत्तरदाई शासन की मांग** को **लीग ने स्वीकार** किया जबकि **कांग्रेस द्वारा मुसलमानों के लिए पृथक निर्वाचन व्यवस्था** को स्वीकार किया गया।
 - ♀ दोनों पार्टियां ब्रिटिश सरकार को **संवैधानिक सुधारों हेतु संयुक्त योजना** भेजने पर सहमत हुए।
 - ♀ केंद्रीय व्यवस्थापिका में कुल निर्वाचित सदस्यों का 1/9 भाग तथा प्रांतीय सभाओं में निर्वाचित भारतीयों की संख्या का एक निश्चित हिस्सा मुस्लिम वर्ग के लिए आरक्षित किया जाएगा।
 - ♀ एनी बेसेंट और तिलक ने इसका समर्थन किया जबकि **मदन मोहन मालवीय ने इसका विरोध**।

यह समझौता असहयोग आंदोलन की समाप्ति पर स्थगित हो गया परंतु कांग्रेस के द्वारा सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली की मांग स्वीकार करने के कारण **भारत में सांप्रदायिकता का बीजारोपण हुआ, जिसके परिणामस्वरूप द्विराष्ट्र सिद्धांत की अवधारणा के तहत भारत का विभाजन हुआ।**

9.10) Lucknow session of Congress 1916

- 1) The Lucknow session (1916) of the Congress held under the presidency of **Ambika Charan Mazumdar** returned the extremists to the Congress and an agreement was reached between the Congress and Muslim League.
- 2) **Important factors :-** Annie Besant and Bal Gangadhar Tilak and the death of liberal leaders Gopal Krishna Gokhale and Ferozeshah Mehta in 1915.
- 3) **Lucknow Pact or Agreement between Congress and Muslim League**
 - ♀ Both parties agreed to send a joint plan for constitutional reforms to the British government.
 - ♀ The demand for accountable governance by the Congress was accepted by the League while the Congress accepted the separate electoral system for the Muslims.
 - ♀ One/9th of the total elected members in the central legislature and a certain part of the number of elected Indians in the provincial assemblies shall be reserved for the Muslim class.
 - ♀ Annie Besant and Tilak supported it while Madan Mohan Malviya opposed it.

This agreement was shelved at the end of the non-cooperation movement, but the acceptance of the demand for a communal electoral system by the Congress sowed the seeds of communalism in India, resulting in the partition of India under the concept of the two-nation theory.

9.11) मॉटेग्यू की घोषणा, 1917

- 1) **एडविन मॉटेग्यू** को 1917 में भारत के लिए राज्य सचिव नियुक्त किया गया था
- 2) 20 अगस्त 1917 को मॉटेग्यू ने ब्रिटिश संसद में अगस्त घोषणा की। इस घोषणा ने प्रशासन में भारतीयों की बढ़ती भागीदारी और भारत में स्वशासी संस्थाओं के विकास का प्रस्ताव रखा।
- 3) वर्ष 1918 में राज्य सचिव एडविन सेमुअल मांटेग्यू (Edwin Samuel Montagu) और वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड ने संवैधानिक सुधारों की अपनी योजना तैयार की, जिसे मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड (या मोंट-फोर्ड) सुधार के रूप में जाना जाता है, जिसके कारण वर्ष 1919 के भारत शासन अधिनियम को अधिनियमित किया गया।
- 4) वर्ष 1921 में मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों को लागू किया गया।
- 5) इस अधिनियम का एकमात्र उद्देश्य भारतीयों का शासन में प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना था।



Lord Chelmsford



Edwin Montagu

9.11) Montagu's Declaration, 1917

- 1) **Edwin Montagu** was appointed Secretary of State for India in 1917
- 2) **On 20 August 1917**, Montagu made the August Declaration in the British Parliament. This declaration proposed the increasing participation of Indians in administration and the development of self-governing institutions in India.
- 3) In 1918, the Secretary of State Edwin Samuel Montagu and the Viceroy Lord Chelmsford formulated their plan of constitutional reforms, known as the Montagu-Chelmsford (or Mont-Ford) Reforms, which led to the 1919 India Government Act was enacted.
- 4) The Montagu-Chelmsford Reforms were implemented in the year 1921.
- 5) The sole purpose of this act was to ensure representation of Indians in governance.



Lord Chelmsford



Edwin Montagu

9.11.1) 1919 अधिनियम के प्रमुख प्रावधान

- 1) वायसराय की कार्यकारी परिषद में आठ सदस्यों को शामिल करने का प्रावधान किया गया जिसमें तीन भारतीय सदस्यों को शामिल करना था।
- 2) इस अधिनियम द्वारा केंद्रीय विधायिका को अधिक शक्तिशाली और जवाबदेह बनाया गया।
- 3) द्विसदनीय विधानमंडल: अधिनियम में द्विसदनीय विधायिका की शुरुआत की गई जिसमें निम्न सदन या केंद्रीय विधानसभा (Lower House or Central Legislative Assembly) और उच्च सदन या राज्य परिषद (Upper House or Council of State) शामिल थी।
- 4) विधायिका का कार्यकाल 3 वर्ष का था, जिसे वायसराय अपने अनुसार बढ़ा सकता था।
- 5) इस अधिनियम ने प्रांतीय स्तर पर कार्यपालिका हेतु द्वैध शासन प्रणाली (दो व्यक्तियों/पार्टियों का शासन) की शुरुआत की।
- 6) विषयों को दो सूचियों में विभाजित किया गया था: 'आरक्षित' और 'स्थानांतरित'। आरक्षित सूची में शामिल विषयों का प्रशासन गवर्नर
- 7) महिलाओं को भी वोट देने का अधिकार दिया गया।
- 8) प्रांतीय विधान परिषदों का और अधिक विस्तार किया गया तथा 70% सदस्यों का चुनाव किया जाना था।

9.11.1) Major Provisions of the 1919 Act

- 1) Provision was made to include eight members in the Viceroy's Executive Council, out of which three Indian members were to be included.
- 2) This act made the central legislature more powerful and accountable.
- 3) Bicameral Legislature: The Act introduced a bicameral legislature consisting of the Lower House or Central Legislative Assembly and the Upper House or Council of State.
- 4) The term of the legislature was for 3 years, which the Viceroy could extend as he wished.
- 5) This act introduced the system of dyarchy (rule of two persons/parties) for the executive at the provincial level.
- 6) Subjects were divided into two lists: 'reserved' and 'transferred'. Governor of the subjects included in the reserve list
- 7) Women were also given the right to vote.
- 8) The provincial legislative councils were further expanded and 70% of the members were to be elected.

9.12) संभावित प्रश्न || Possible Questions

लघु उत्तरीय प्रश्न :-

- 1) उन कारकों का वर्णन कीजिए जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद के उत्थान में सहायता की ?
- 2) भारत में राष्ट्रीयता के उदय और विकास का वर्णन कीजिए?
- 3) 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना किन कारणों से हुई?
- 4) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के उद्देश्य बताइए?
- 5) भारतीय नेताओं ने ह्ययूम का प्रयोग तड़ित चालक के रूप में किया स्पष्ट कीजिए?
- 6) बंगाल विभाजन के कारणों को स्पष्ट कीजिए ?
- 7) स्वदेशी आंदोलन पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए ?
- 8) कांग्रेस के सूरत विभाजन पर लेख लिखिए ?
- 9) होमरूल आंदोलन के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए?
- 10) बंगाल का विभाजन लॉर्ड कर्जन की महान भूल थी, स्पष्ट कीजिए ?
- 11) स्वदेशी आंदोलन के महत्व पर प्रकाश डालिए ?
- 12) बंगाल विभाजन की परिस्थितियों का वर्णन कीजिए ?
- 13) उदारवादियों के सिद्धांतों या राजनीतिक विचारों की व्याख्या कीजिए ?
- 14) स्वदेशी आंदोलन के कारण एवं महत्व पर प्रकाश डालिए ?
- 15) उदारवादियों के कोई चार सिद्धांत लिखिए ?
- 16) लॉर्ड कर्जन द्वारा किया गया बंगाल विभाजन अपने उद्देश्य और प्रभाव से एक धूर्तता पूर्ण कार्य था स्पष्ट कीजिए ?
- 17) भारतीय राजनीति में उदारवादियों और गरमदलियों के राजनीतिक विचारों में अंतर स्पष्ट कीजिए ?
- 18) लाल बाल पाल पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ?

9.12) Possible Questions

Short answer questions :-

- 1) Describe the factors which helped in the rise of Indian nationalism.
- 2) Describe the rise and development of nationalism in India?
- 3) What were the reasons for the formation of the Indian National Congress in 1885?
- 4) State the objectives of the establishment of the Indian National Congress?
- 5) Indian leaders used Hume as a lightning conductor. Explain?
- 6) Explain the reasons for the partition of Bengal.
- 7) Write a short note on Swadeshi Movement?
- 8) Write an article on Surat Partition of Congress?
- 9) Describe the objectives of Home Rule Movement?
- 10) The partition of Bengal was a great mistake of Lord Curzon, explain?
- 11) Throw light on the importance of Swadeshi Movement?
- 12) Describe the circumstances of the partition of Bengal.
- 13) Explain the principles or political views of Moderates?
- 14) Throw light on the cause and importance of Swadeshi Movement?
- 15) Write any four principles of Moderates.
- 16) The partition of Bengal by Lord Curzon was a cunning act. Explain
- 17) Explain the difference between the political views of moderates and extremists in Indian politics?
- 18) Write a short note on Lal Bal Pal?

- 19) उदारवादियों के विचारों में आदर्शवाद तथा यथार्थवाद का सुंदर समन्वय था इसको स्पष्ट कीजिए ?
- 20) गरम दलों के मुख्य सिद्धांत तथा कार्यक्रम की व्याख्या कीजिए ?
- 21) 1907 ईस्वी में कांग्रेसमें जो फूट पड़ी उसके क्या कारण थे? उसके क्या परिणाम हुए?
- 22) ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की स्थापना किन परिस्थितियों में हुई ? उसकी क्या उद्देश्य थे ?
- 23) भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में गरमदली आंदोलन की भूमिका पर प्रकाश डालिए?
- 24) बाल गंगाधर तिलक के योगदान पर टिप्पणी लिखिए ?
- 25) लखनऊ समझौते पर एक टिप्पणी लिखिए ?

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न :-

- 1) इंडियन लीग
- 2) लंदन इंडिया कमेटी
- 3) लैंडहोल्डर्स सोसायटी
- 4) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
- 5) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन
- 6) तड़ित चालक सिद्धांत
- 7) सेफ्टी वाल्व सिद्धांत
- 8) चार प्रमुख उदारवादी नेताओं के नाम
- 9) बंगाल विभाजन
- 10) स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन
- 11) मुस्लिम लीग
- 12) प्रथम दिल्ली दरबार
- 13) होमरूल आंदोलन

- 14) कांग्रेस का प्रथम विभाजन
- 15) चार प्रमुख उग्रवादी नेताओं के नाम
- 16) कृष्ण कुमार मित्र
- 17) केसरी तथा मराठा

- 19) Explain that there was a beautiful amalgamation of idealism and realism in the ideas of liberals?
- 20) Explain the main principle and program of extremist group of congress.
- 21) What were the reasons for the split in the Congress in 1907? What were its results?
- 22) Under what circumstances was the All-India Muslim League established? What were his objectives?
- 23) Throw light on the role of the extremist movement in the Indian freedom struggle.
- 24) Write a note on the contribution of Bal Gangadhar Tilak?
- 25) Write a note on Lucknow Pact?

Very Short answer questions :-

- 1) Indian league
- 2) London India Committee
- 3) Landholders Society
- 4) Indian National Congress
- 5) First session of Indian National Congress
- 6) Lightning conductor theory
- 7) Safety valve principle
- 8) Names of four prominent liberal leaders
- 9) Bengal Partition
- 10) Swadeshi and boycott movement
- 11) Muslim League
- 12) First Delhi Durbar
- 13) Home rule movement
- 14) First split of Congress
- 15) Names of four major extremist leaders
- 16) Krishna kumar Mitra
- 17) Kesari and Maratha

अध्याय – 10 || Chapter - 10

राष्ट्रीय आंदोलन का गांधीवादी चरण || Gandhian phase of national movement (1919-1942)

- 1) महात्मा गांधी का परिचय तथा विचारधारा
- 2) रौलट एक्ट (1919)
- 3) जलियांवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल 1919)
- 4) खिलाफत आंदोलन (1919)
- 5) कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन (1920)
- 6) असहयोग आंदोलन (1920)
- 7) स्वराज पार्टी (1923)
- 8) साइमन कमीशन (1927)
- 9) नेहरू रिपोर्ट (1928)
- 10) जिन्ना का 14 सूत्री फार्मूला (1928)
- 11) पूर्ण स्वराज तथा लाहौर अधिवेशन (1929)
- 12) गांधीजी की 11 सूत्री मांगें (1930)



- 13) दांडी मार्च (1930) तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन
- 14) लाल कुर्ती आंदोलन
- 15) गोलमेज सम्मेलन तथा गांधी इरविन समझौता
- 16) सांप्रदायिक पंचाट व पूना पैक्ट (24 दिसंबर 1932)
- 17) प्रांतीय चुनाव (1937)
- 18) अगस्त प्रस्ताव (1940)
- 19) व्यक्तिगत सत्याग्रह (1940)
- 20) पाकिस्तान की मांग (1940)
- 21) क्रिप्स मिशन (मार्च 1942)
- 22) भारत छोड़ो आंदोलन (1942)
- 23) वर्धा प्रस्ताव (1942)

Chapter - 10

Gandhian phase of national movement (1919-1942)

- 1) Introduction and Ideology of Mahatma Gandhi
- 2) Rowlett Act (1919)
- 3) Jallianwala Bagh Massacre (13 April 1919)
- 4) Khilafat Movement (1919)
- 5) Nagpur Session of Congress (1920)
- 6) Non-Cooperation Movement (1920)
- 7) Swaraj Party (1923)
- 8) Simon Commission (1927)
- 9) Nehru Report (1928)
- 10) Jinnah's 14 Point Formula (1928)
- 11) Purna Swaraj and Lahore Session (1929)
- 12) Gandhi's 11 point demands (1930)



- 13) Dandi March (1930) and Civil Disobedience Movement
- 14) Red Kurti movement
- 15) Round Table Conference & Gandhi Irwin Pact
- 16) Communal Arbitration and Poona Pact (24 December 1932)
- 17) Provincial Elections (1937)
- 18) August Proposal (1940)
- 19) Individual Satyagraha (1940)
- 20) Demand for Pakistan (1940)
- 21) Cripps Mission (March 1942)
- 22) Quit India Movement (1942)
- 23) Wardha Proposal (1942)

10.1) महात्मा गांधी का परिचय व विचारधारा

6) उदय के कारण

1) सामान्य परिचय

2) विचाराधारा

3) कार्य पद्धति या रणनीति



5) भारत वापसी व आरंभिक कार्य

4) दक्षिण अफ्रीका प्रवास

10.1) Introduction and Ideology of Mahatma Gandhi



10.1.1) सामान्य परिचय

महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा व सत्याग्रह के साधनों से 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में विशाल जन आंदोलन को आरंभ किया जिसकी परिणति भारत की स्वतंत्रता हुई

- 1) **मूल नाम :-** मोहनदास करमचंद गांधी
- 2) **जन्म :-** 2 अक्टूबर 1869 पोरबंदर (काठियावाड़, गुजरात)
- 3) **पिता :-** पोरबंदर, राजकोट एवं बीकानेर के दीवान करमचंद गांधी
- 4) **माता :-** पुतली बाई (अत्याधिक धार्मिक)
- 5) **विवाह :-** 13 वर्ष की आयु में कस्तूरबा गांधी (1882)
- 6) **चार पुत्र :-** हरीलाल, रामदास, मणिलाल एवं देवदास
[जमनालाल बजाज को पांचवां पुत्र कहकर पुकारा]
- 7) **शिक्षा :-** राजकोट में आरंभिक जबकि लंदन (1889-91) में वकालत

- 8) **1893 :-** भारत में राजकोट व बम्बई में वकालत के बाद गुजराती व्यापारी दादा अब्दुला का मुकदमा लड़ने हेतु दक्षिण अफ्रीका गए (1893-1915)
- 9) **प्रथम सत्याग्रह (1906) :-** दक्षिण अफ्रीका में पंजीकरण प्रमाण पत्र के विरुद्ध
- 10) **1901 :-** पहली बार कांग्रेस के अधिवेशन में शामिल (कलकत्ता)
- 11) **9 जनवरी 1915 :-** भारत आगमन (प्रवासी भारतीय दिवस)
- 12) **राजनैतिक गुरु :-** गोपाल कृष्ण गोखले
- 13) **गांधी जी पर निम्न व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा :-**
 - ♀ **शारीरिक परिश्रम -** जॉन रस्किन की पुस्तक अंटू दिस लास्ट
 - ♀ **सत्याग्रह व सविनय अवज्ञा -** हेनरी थारो के निबंध सिविल डिसेओबिडिएंस से
 - ♀ **अहिंसा -** जैन व बौद्ध धर्म
 - ♀ **टॉलस्टॉय -** ईश्वर का राज्य तुम्हारे अंदर है

10.1.1) General Introduction

Mahatma Gandhi started a huge mass movement in the latter half of the 20th century with the means of truth, non-violence and satyagraha, which culminated in India's independence.

- 1) **Original name :-** Mohandas Karamchand Gandhi
- 2) **Birth :-** 2 October 1869 Porbandar (Kathiawad, Gujarat)
- 3) **Father :-** Karamchand Gandhi, Diwan of Porbandar, Rajkot and Bikaner
- 4) **Mother :-** Putli Bai (highly religious)
- 5) **Marriage :-** Kasturba Gandhi (1882) at the age of 13)
- 6) **Four sons :-** Harilal, Ramdas, Manilal and Devdas
[Jamnalal Bajaj was called the fifth son]
- 7) **Education :-** Beginning in Rajkot while practicing law in London (1889-91)

- 8) **1893 :-** After practicing in Rajkot and Bombay in India, Gujarati businessman went to South Africa to fight the case of Dada Abdulla (1893-1915)
- 9) **First satyagraha(1906) :-** Against Certificate of Registration in South Africa
- 10) **1901 :-** Attended Congress session for the first time (Calcutta)
- 11) **9 January 1915 :-** Arrival in India(Pravasi Bhartiya Divas)
- 12) **Political teacher :-** Gopal Krishna Gokhale
- 13) **Gandhiji was influenced by the following persons :-**
 - ♀ **Physical exertion** - John Ruskin's book Unto This Last
 - ♀ **Satyagraha and Civil Disobedience** - From Henry Tharo's Essay Civil Disobedience
 - ♀ **Non-violence** - Jainism and Buddhism
 - ♀ **Tolstoy** - The kingdom of god is inside you

14) मृत्यु :- 30 जनवरी 1948, बिड़ला हाउस दिल्ली (5:15pm)

[अभियुक्त नाथूराम गोडसे व नाना आष्टे को 15 नवंबर 1949 को अम्बाला जेल में फांसी]

❖ **J. L. नेहरू** - हमारे जीवन से प्रकाश चला गया

आश्रम	स्थान	वर्ष
1. टॉलस्टाय फार्म	जोहान्सबर्ग	1910
2. फीनिक्स फार्म	डरबन	1904
3. साबरमती आश्रम	साबरमती नदी (अहमदाबाद)	1915
4. सत्याग्रह आश्रम	कोचरब (अहमदाबाद)	1915
5. अनाशक्ति आश्रम	कौसानी (उत्तराखण्ड)	1929
6. सेवाग्राम आश्रम	वर्धा (महाराष्ट्र)	1936

उपाधि	सम्बोधनकर्ता
कैसर-ए-हिन्द	प्रथम विश्व युद्ध के समय
भर्ती करने वाला सार्जेंट	प्रथम विश्व युद्ध के समय
कुली बैरिस्टर	दक्षिण अफ्रीका के अंग्रेज मजिस्ट्रेट
आधुनिक युग के अज्ञात शत्रु	डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
मलंग बाबा	कबायलियों द्वारा
बापू	सी.एफ एण्डूज व जवाहरलाल
अर्द्धनग्न/देशद्रोही फकीर	विंस्टन चर्चिल
भिखारियों का राजा	पं. मदन मोहन मालवीय
राष्ट्रपिता	सुभाष चन्द्र बोस
वन मैन ब्राउंड्री फोर्स	लॉर्ड माउंटबेटन
महात्मा	रवीन्द्रनाथ टैगोर

14) Death :- - 30 January 1948, Birla House Delhi (5:15pm)
[accused Nathuram Godse and Nana Apte hanged on 15 November 1949 in Ambala Jail]
❖ **J. L. Nehru** - - The light has gone out of our lives

Ashram	Place	Year
1. Tolstoy Farm	Johannesburg	1910
2. Phoenix Farms	Durban	1904
3. Sabarmati Ashram	Sabarmati River (Ahmedabad)	1915
4. Satyagraha Ashram	Kochrab (Ahmedabad)	1915
5. Anashakti Ashram	Kausani (Uttarakhand)	1929
6. Sevagram	Wardha (Maharashtra)	1936

Title	Given by
Kaisar-i-Hind	During the first world war
Recruiting sergeant	During the first world war
Coolie barrister	English magistrate of South Africa
आधुनिक युग के अज्ञात शत्रु	Dr. Rajendra Prasad
Malang Baba	By the tribesmen
Bapu	CF Andrews and Jawaharlal
Half-naked/traitorous fakir	Winston Churchill
King of beggars	Pt. Madan Mohan Malviya
Father of the nation	Subhash Chandra Bose
One Man Broundry Force	lord mountbatten
Mahatma	Rabindranath tagore

उपाधि

- ‡ कर्मवीर
- ‡ कुली वैरिस्टर (अंग्रेजों ने उपहास रूप में)
- ‡ सेवा ग्राम का संत
- ‡ मलंग बाबा (पश्चिमी सीमा प्रांत के कबाइली लोगों द्वारा)
- ‡ भर्ती करने वाला सार्जेंट (अंग्रेजों द्वारा)
- ‡ कैसर ए हिन्द
- ‡ जुलु युद्ध पदक और बोअर युद्ध पदक
- ‡ अर्ध नंगा फ़कीर एवं देशद्रोही फकीर (1931 में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के दौरान ब्रिस्टल चर्चिल द्वारा)
- ‡ महात्मा (चंपारण सत्याग्रह के सफल नेतृत्व के कारण सर्वप्रथम रवींद्र नाथ टैगोर द्वारा (कुछ विद्वानों के अनुसार राजवैध जीवराम कालिदास द्वारा)
- ‡ बापू (जवाहर लाल नेहरू द्वारा)
- ‡ राष्ट्रपिता (सुभाष चंद्र बोस ने 6 जुलाई 1944 को रंगून रेडियो से अपने संबोधन में सर्वप्रथम सम्बोधित किया)
- ‡ वन मैन बाउंड्री फोर्स (लार्ड माउंटबेटन ने)

Title

- ‡ Karmaveer
- ‡ Coolie barrister
- ‡ Service village saint
- ‡ Malang Baba (by the tribal people of the Western Frontier Province)
- ‡ Recruiting sergeant
- ‡ kaiser e hind
- ‡ The half naked mystic and the traitorous fakeer (by Bristol Churchill during the Second Round Table Conference in 1931)
- ‡ Mahatma (due to successful leadership of Champaran Satyagraha first by Rabindranath Tagore (according to some scholars by Rajvaidhi Jivaram Kalidas)
- ‡ Bapu (by Jawaharlal Nehru)
- ‡ Father of the Nation (Subhash Chandra Bose first addressed in his address from Rangoon Radio on 6 July 1944)
- ‡ One Man Boundary Force (by Lord Mountbatten)

पुस्तक

- ‡ एक लेखक के रूप में गाँधी जी की पहली पुस्तक '**लंदन गाइड**' थी।
- ‡ दक्षिण अफ्रीका में रह रहे भारतीयों की दुर्दशा का चित्रण उन्होंने '**इण्डियन-फ्रेंचाइज**' संज्ञक पुस्तक में किया है।
- ‡ '**ए गाइड टू-हेल्थ**' में गाँधी जी ने सात्विक आहार के महत्व का निरूपण किया है।
- ‡ 1909 में दक्षिण अफ्रीका की धरती पर '**हिन्द स्वराज**' या '**इंडियन होम रूल**' नामक कृति का गाँधी जी ने सृजन किया।
- ‡ '**माई आर्ली लाइफ**', **माई एक्सपेरिमेंट विथ दुथ** '**माई चाइल्ड हुड**' एवं '**इण्डियन ओपेनियन**' गाँधी जी अन्य प्रमुख पुस्तकें हैं।
- ‡ रस्किन बांड की पुस्तक '**अन-टू-दि-लॉस्ट**' का गुजराती भाषा में 'सर्वोदय' नाम से गाँधी जी ने अनुवाद किया ।
- ‡ '**स्टोरी ऑफ सत्याग्रही**' नामक पुस्तक में गाँधी जी ने प्लेटो की पुस्तक 'डिफेंस एण्ड डेथ ऑफ सार्केर' के मूल्यों को आधार बनाया है।
- ‡ गाँधी जी ने भारतीय संतों के गीतों का एक अंग्रेजी अनुवाद '**सांग्स फ्रॉम दी प्रिजन**' नाम से प्रस्तुत किया। इसके अलावा गाँधी जी द्वारा समय-समय पर अनेक पत्र और पत्रिकाओं का सम्पादन किया गया।
- ‡ 1893 में दक्षिण अफ्रीका से '**इण्डियन ओपेनियन**', 1919 में गुजरात के इंदुलाल याज्ञनिक के सहयोग से '**नवजीवन**' नामक मासिक पत्रिका गुजराती तथा हिन्दी भाषा में निकाली गई।
- ‡ 1919 में अंग्रेजी भाषा में गाँधी जी ने '**यंग इण्डिया**' नामक पत्रिका का सम्पादन किया।
- ‡ 1933 में हिन्दी साप्ताहिक '**हरिजन**' और हरिजन सेवक एवं हरिजन बंधु आदि का सम्पादन किया।

Book

- ‡ Gandhi's first book as a writer was '**The London Guide**'.
- ‡ He has depicted the plight of Indians living in South Africa in the book '**Indian-Franchise**'.
- ‡ In '**A Guide to Health**', Gandhiji has described the importance of a sattvik diet.
- ‡ In 1909, Gandhi created a work called '**Hind Swaraj**' or 'Indian Home Rule' on the soil of South Africa.
- ‡ '**My Early Life**', 'My Experiment with Truth', '**My Child Hood**' and '**Indian Opinion**' are other important books of Gandhiji.
- ‡ Gandhiji translated Ruskin Bond's book '**Un-to-the-Lost**' into Gujarati language under the name 'Sarvodaya'.
- ‡ In the book 'Story of Satyagrahi', Gandhiji has based the values of Plato's book '**Defense and Death of Sarkar**'.
- ‡ Gandhiji presented an English translation of the songs of Indian saints under the name '**Songs from the Prison**'.
- ‡ Apart from this, many papers and magazines were edited by Gandhiji from time to time.
- ‡ In 1893, '**Indian Opinion**' from South Africa, in 1919, in collaboration with Indulal Yagnik of Gujarat, a monthly magazine named '**Navjivan**' was brought out in Gujarati and Hindi languages.
- ‡ In 1919, Gandhiji edited a magazine called '**Young India**' in English language.
- ‡ In 1933, edited Hindi weekly '**Harijan**' and Harijan Sevak and Harijan Bandhu etc.

10.1.2) गांधी जी की विचारधारा



10.1.2) Gandhi's ideology



1) सत्याग्रह :-

- ♀ सत्य और अहिंसा पर आधारित गांधीवादी सिद्धान्त
- ♀ **अर्थ** - अहिंसा का प्रयोग करते हुए असत्य पर आधारित बुराई का विरोध करना फिर चाहे कितनी भी यातनाएं सहन करना पड़ा
- ♀ **साधन** - असहयोग, सविनय अवज्ञा, बहिष्कार, धरना आदि
- ♀ **महत्व** - यह भौतिक शक्ति को नैतिक शक्ति के सामने झुकाने की कला, जिसमें सत्य व अहिंसा के कारण व्यापक जनभागीदारी होती है
- ♀ **सत्याग्रह व निष्क्रिय प्रतिरोध में अंतर** - निष्क्रिय प्रतिरोध में शोषक के प्रति **आक्रोश** का भाव होता है, जबकि सत्याग्रह में शोषक के प्रति **मानवीय भाव** रखा जाता है। निष्क्रिय प्रतिरोध से प्राप्त लक्ष्य प्रायः **अल्पकालिक** होता है, क्योंकि शोषक को जैसे ही पुनः शोषण करने का मौका प्राप्त होता है, वह पुनः समस्या उत्पन्न कर देता है। इसके विपरीत सत्याग्रह से प्राप्त लक्ष्य **दीर्घकालिक** होता है, क्योंकि इससे दोनों पक्षों को आत्मिक संतोष मिलता है।

2) साधन एवं साध्य की पवित्रता :-

- ♀ मैकियावेली के विपरीत साध्य व साधन दोनों की पवित्रता पर बल
- ♀ **उदाहरण** - वृक्ष की प्रकृति बीज के अनुरूप होती है
- ♀ गाँधीजी ने **स्वराज** जैसे **पवित्र साध्य** की प्राप्ति हेतु **सत्याग्रह** जैसे **पवित्र साधन** का उपयोग किया

3) वर्ग समन्वय :-

- ♀ कार्ल मार्क्स वर्ग सिद्धांत के विपरीत गांधी जी ने वर्ग समन्वय की अवधारणा दी
- ♀ **अर्थ** - देश की स्वतंत्रता हेतु सभी वर्गों (जमींदार, किसान, शिक्षित, अशिक्षित, व्यापारी, मजदूर आदि) की भागीदारी तथा विकास

1) Satyagraha:-

- ♀ Gandhian principles based on truth and non-violence
- ♀ **Meaning** - Using non-violence to oppose evil based on untruth, no matter how many tortures one had to endure
- ♀ **Means**- Non-cooperation, civil disobedience, boycott, demonstration etc.
- ♀ **Importance** - art of subjugating physical power to moral power, in which widespread public participation due to truth and non-violence.
- ♀ **Difference between satyagraha and passive resistance** - In passive resistance there is a feeling of resentment towards the exploiter, whereas in Satyagraha there is human attitude towards the exploiter. The goal achieved by passive resistance is often short-lived, as the exploiter creates a problem again as soon as the exploiter has the opportunity to re-exploit. On the contrary, the goal achieved through Satyagraha is long-term, as it gives spiritual satisfaction to both the parties.

2) Purity of means and ends :-

- ♀ In contrast to Machiavelli, he emphasized the purity of both the ends and the means.
- ♀ **Example** - The nature of the tree corresponds to the seed.
- ♀ Gandhiji used the sacred means like **Satyagraha** to achieve the holy end like **Swaraj**.

3) Class coordination :-

- ♀ In contrast to Karl Marx's class theory, Gandhiji gave the concept of class coordination.
- ♀ **Meaning** - participation and development of all classes (landlords, farmers, educated, uneducated, traders, laborers etc.) for the independence of the country

4) सर्वोदय की अवधारणा :-

- ♀ बेंथम के उपयोगितावादी सिद्धान्त (अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख) के स्थापित पर सर्वोदय(सभी का समान उदय) पर बल
- ♀ **अर्थ** - प्रत्येक व्यक्ति की भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति
- ♀ यह अवधारणा **जॉन रस्किन** के विचारों से प्रेरित है

5) शिक्षा सम्बंधी विचार :-

- ♀ मातृ भाषा में शिक्षा के समर्थक
- ♀ उत्पादन, व्यवसायी व तकनीकी शिक्षा पर बल
- ♀ **उद्देश्य** - आत्म साक्षात्कार, आध्यात्मिक व चारित्रिक गुणों से परिपूर्ण शिक्षा
- ♀ **उदाहरण** - वर्धा शिक्षा योजना

6) आर्थिक विचार :-

- ♀ मशीनीकरण के स्थान पर लघु व कुटीर उद्योग

- ♀ आत्मनिर्भर व ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था
- ♀ औद्योगिक पूंजीवाद के आलोचक
- ♀ **ट्रस्टीशिप या न्यास का सिद्धांत** - यह पूंजीवाद और समाजवाद के समन्वय का रूप है जिसके अनुसार संपत्ति का स्वामित्व निजी होने के बावजूद मालिक उसे सार्वजनिक उपयोग के लिए उपलब्ध कराएगा अतः मालिक निजी संपत्ति का ट्रस्टी है

7) सामाजिक विचार :-

- ♀ जातीय व लैंगिक समानता पर बल
- ♀ कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था के समर्थक
- ♀ अस्पृश्यता के संपूर्ण उन्मूलन पर विशेष बल

4) Concept of sarvodaya :-

- ♀ Emphasis on Sarvodaya (equal rise of all) in place of Bentham's utilitarian theory (maximum happiness of maximum people)
- ♀ **Meaning** - Material and spiritual progress of each individual
- ♀ The concept is inspired by the ideas of **John Ruskin**

5) Educational ideas :-

- ♀ supporter of mother tongue education
- ♀ Emphasis on production, business and technical education
- ♀ **Objective** - Self-realization, education full of spiritual and character qualities
- ♀ **Example** - Wardha Education Scheme

6) Economic thoughts :-

- ♀ Small and cottage industries in place of mechanization

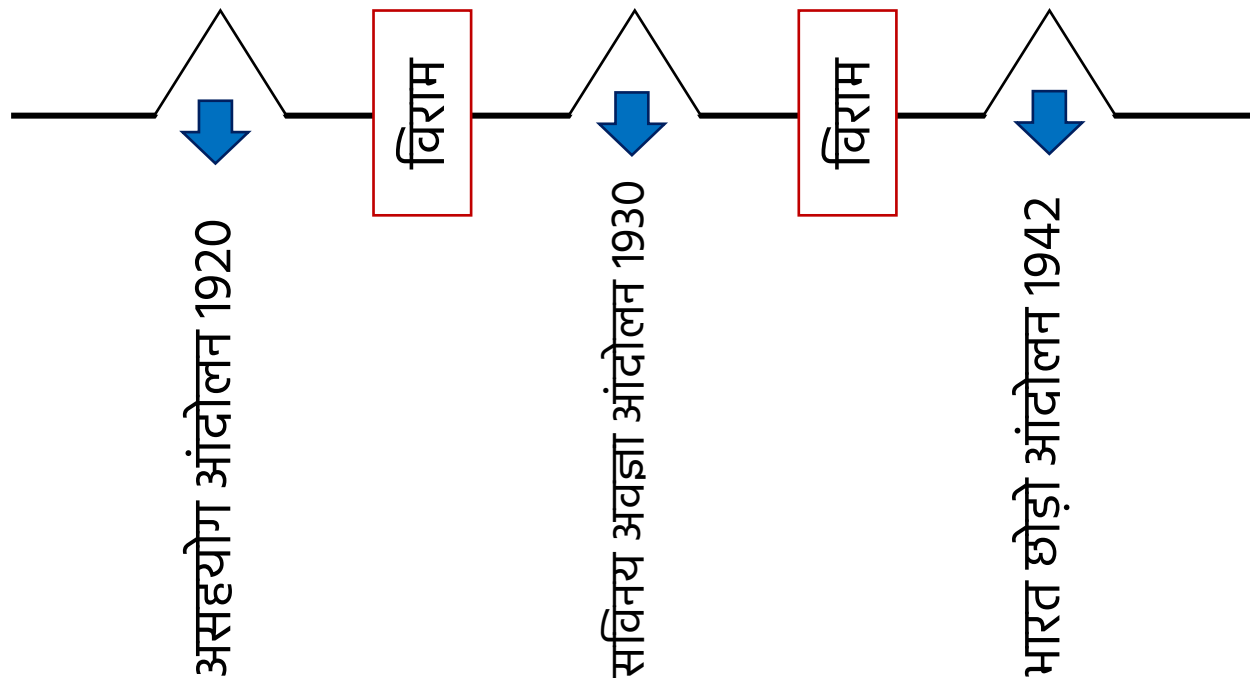
- ♀ Self-reliant and village-based economy
- ♀ Criticism of Industrial Capitalis
- ♀ **Doctrine of trusteeship** – Merger of capitalism and socialism, according to which the owner of the property will be made available for public use even though the ownership of the property is private, hence the owner is the trustee of the private property.

7) Social thought :-

- ♀ Emphasis on racial and gender equality
- ♀ Supporter of karma based varna system
- ♀ Special emphasis on the complete abolition of untouchability

10.1.3) गांधी जी की कार्यपद्धति/रणनीति

- 1) **संघर्ष-विराम-संघर्ष की रणनीति :-** गांधीजी के अनुसार जनता के दमन सहन करने की शक्ति सीमित होती है जिस कारण कोई भी आंदोलन निरंतर नहीं चलाना चाहिए बल्कि विराम लेकर रचनात्मक कार्यों से जन भागीदारी बढ़ाने के बाद पुनः आंदोलन करना चाहिए

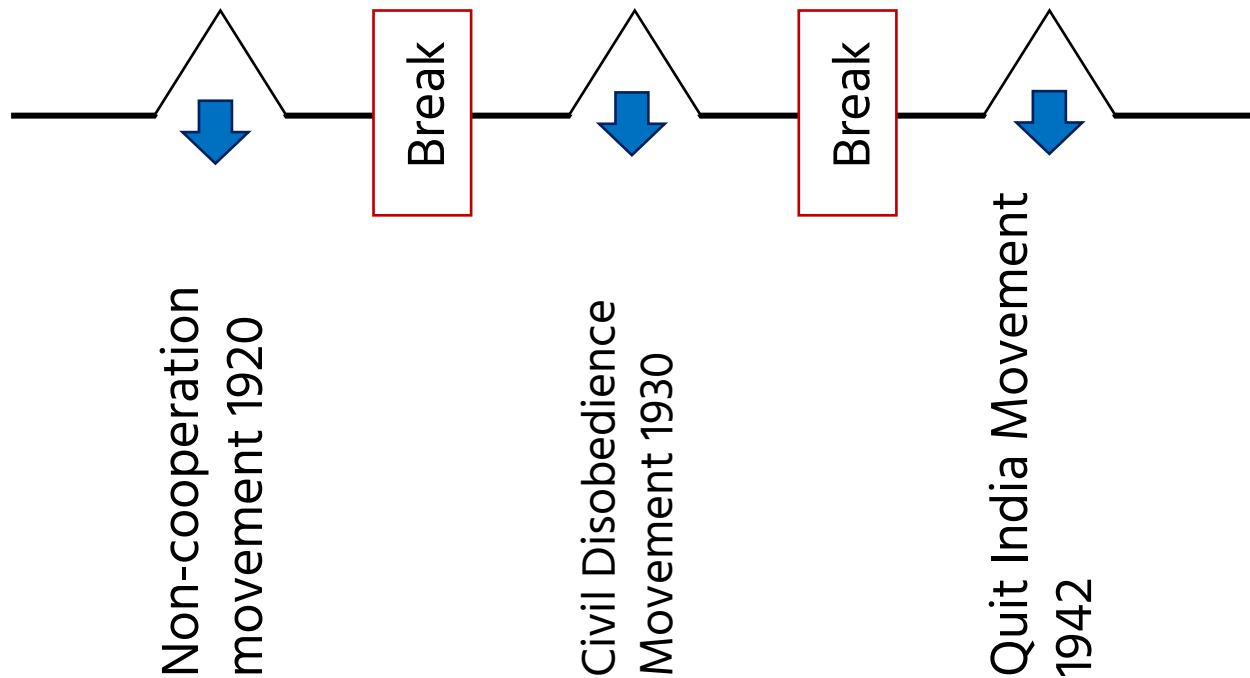


- 2) **दबाव समझौता दबाव की रणनीति :-** गांधी जी ने संघर्ष के साथ साथ समझौते पर भी बल दिया गांधीजी ने प्रारंभिक दबाव के उपरांत अंग्रेजों से समझौता कर शेष रह गए उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पुनः अंग्रेजों पर दबाव बनाने की नीति अपनाई। जन आंदोलनों को वापस लेना और फिर शुरू करना गांधीजी की इसी रणनीति का एक पहलू था।
- 3) **नियंत्रित जनआंदोलन पर बल :-**

- ♀ सत्याग्रह और अहिंसा के द्वारा नियंत्रित जन आंदोलन पर बल
- ♀ **उद्देश्य** - विस्तृत जन भागीदारी तथा आंदोलन को हिंसक होने से बचाना, ताकि ब्रिटिश सरकार आंदोलन का हिंसक दमन ना कर सके

10.1.3) Gandhiji's methodology/strategy

- 1) **Cease-fire strategy :-** According to Gandhiji, the power to bear the repression of the people is limited, due to which no movement should be run continuously, but after taking a break and increasing the public participation with constructive work, the movement should be done again.



- 2) **Pressure Compromise Pressure Strategy :-** Along with the struggle, Gandhiji also stressed on the compromise, after the initial pressure, after compromising with the British, he again adopted the policy of pressurizing the British to achieve the remaining objectives. The withdrawal and resumption of mass movements was one aspect of this strategy of Gandhiji.

- 3) **Controlled mass movement :-**

- ♀ Emphasis on mass movement controlled by Satyagraha and non-violence
- ♀ **Objective-** Wide public participation and to prevent the movement from turning violent, so that the British government could not violently suppress the movement

4) अन्य :-

- ♀ कताई, बुनाई, खादी, चरखा जैसे रचनात्मक साधनों का प्रयोग
- ♀ जनता की केंद्रीय भूमिका पर बल
- ♀ अत्यधिक सामान्य जीवन शैली जैसे आसान व मातृभाषा में लोगों से संवाद तथा अति सामान्य वेशभूषा
- ♀ ग्रामीण क्षेत्रों में सभी वर्गों यथा किसान, मजदूर आदि को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ना

इस तरह गांधी जी ने राष्ट्रीय आंदोलन की

सुषुप्तावस्था को समाप्त करके आंदोलन को एक निश्चित दिशा, उद्देश्य व नेतृत्व देकर सफल बनाया

10.1.4) गांधीजी का दक्षिण अफ्रीका प्रवास

- 1) 1893 में गुजराती व्यापारी दादा अब्दुल्ला का मुकदमा लड़ने हेतु डरबन गए

2) मुख्य समस्याएं :-

- ♀ **प्रजातीय व रंग आधारित भेदभाव** - गांधी जी को **मेरिट्सबर्ग** नामक स्टेशन पर रेल के प्रथम श्रेणी डिब्बे से धक्का देकर उतारा
- ♀ भारतीयों को अपने साथ अंगूठे के निशान वाले पंजीकरण प्रमाण पत्र की अनिवार्यता
- ♀ भारतीय श्रमिकों पर 3 पौंड का कर
- ♀ गैर ईसाई पद्धति से संपन्न विवाहों को अवैध घोषित करना

इन अत्याचारों के निवारण हेतु गांधीजी ने पहले उदारवादी(1894-1906) तरीकों को अपनाया फिर अहिंसात्मक प्रतिरोध (1906-1914) को

4) Other:-

- ♀ Use of creative means like spinning, weaving, khadi, spinning wheel
- ♀ Emphasis on the central role of the people
- ♀ Extremely simple lifestyle such as easy communication with people in mother tongue and very simple dress
- ♀ Connecting all sections like farmers, laborers etc. with the national movement in rural areas

In this way, Gandhiji ended the dormant phase of the national movement and made the movement successful by giving it a definite direction, purpose and leadership.

10.1.4) Gandhi's stay in South Africa

- 1) In 1893, a Gujarati merchant went to Durban to fight the case of Dada Abdullah.

2) Major problems :-

- ♀ **Racial discrimination** - Gandhiji was pushed off the first-class compartment of the train at a station called **Meritsberg**.
- ♀ Indians required to carry their thumb impression registration certificate
- ♀ 3-pound tax on Indian workers
- ♀ Declaring unconstitutional marriages if it is not from Christian customs

For the redress of these atrocities, Gandhiji first adopted liberal (1894–1906) methods and then non-violent resistance (1906–1914).

3) दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के मुख्य कार्य :-

♀ **1894** - नटाल इंडियन कांग्रेस की स्थापना



अखबार - इंडियन ओपिनियन (गुजराती, हिंदी , अंग्रेजी और तमिल)

♀ **1904** - डरबन में फिनिक्स आश्रम की स्थापना



गांधी जी का प्रथम आश्रम

फरवरी 2000 में पुनः खोला गया

♀ **1906** - पंजीकरण प्रमाणपत्र की अनिवार्यता के विरोध में 'सत्याग्रह'



गांधीजी का प्रथम सत्याग्रह

1908 में जेल

♀ **1909** :- लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए 'हिंद स्वराज' नामक पुस्तक की रचना

♀

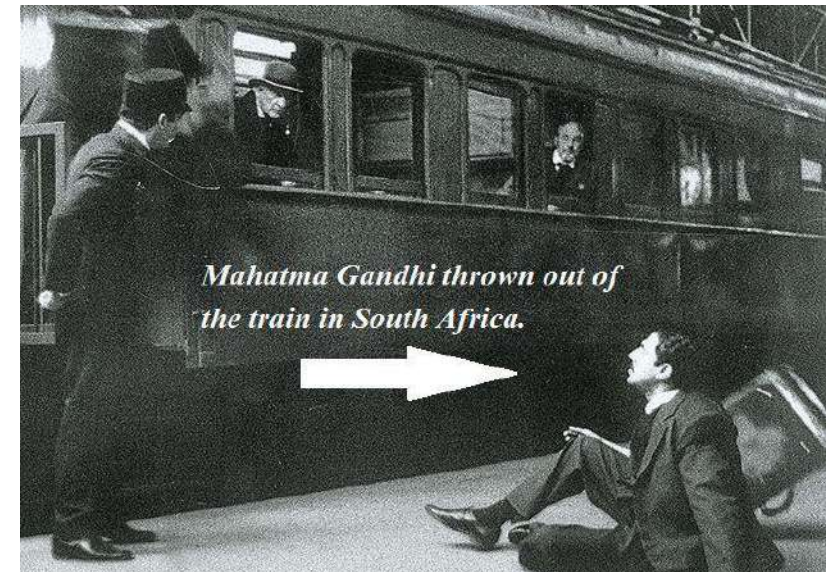
1910 :- सत्याग्रह में शामिल व्यक्तियों की सहायता हेतु जर्मन शिल्पकार 'कॉलेन बाख' की सहायता से 'टॉलस्टॉय फॉर्म' की स्थापना



परिणाम - 1914 तक भारतीयों से भेदभाव करने वाले अधिकतर कानूनों को खत्म किया गया

♀

9 जनवरी 1915 - 21 वर्षों के बाद दक्षिण अफ्रीका से भारत वापसी



3) Main works of Gandhiji in South Africa :-

♀ **1894** - Establishment of Natal Indian Congress

↓
Newspaper-Indian Opinion(Gujarati, Hindi, English &Tamil)

♀ **1904** - Establishment of Phoenix Ashram in Durban

└─→ Gandhi's first ashram
└─→ Reopened in February 2000

♀ **1906** - 'Satyagraha' against the mandatory registration certificate

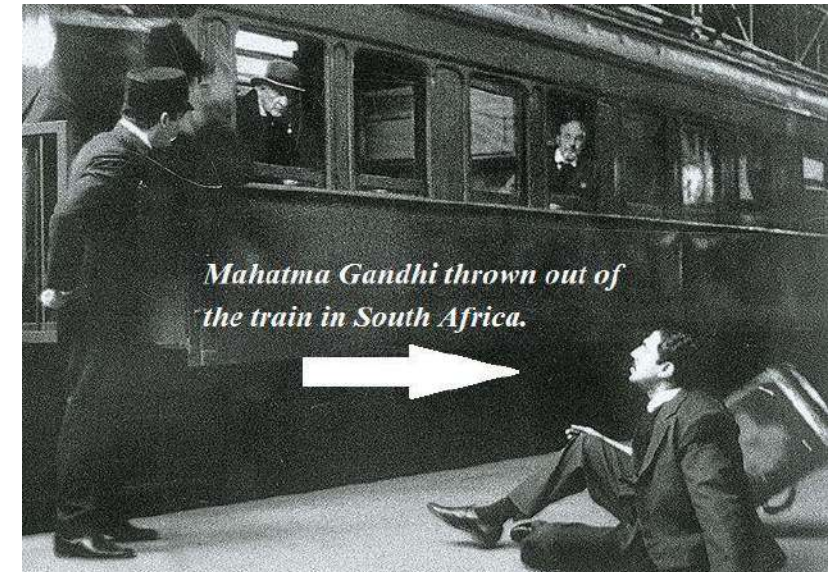
└─→ Gandhi's first Satyagraha
└─→ Jail in 1908

♀ **1909** :- Composing a book titled 'Hind Swaraj' while returning from London to South Africa

♀ **1910** :- Establishment of 'Tolstoy Farm' with the help of German craftsman 'Collen Bach' to help those involved in Satyagraha

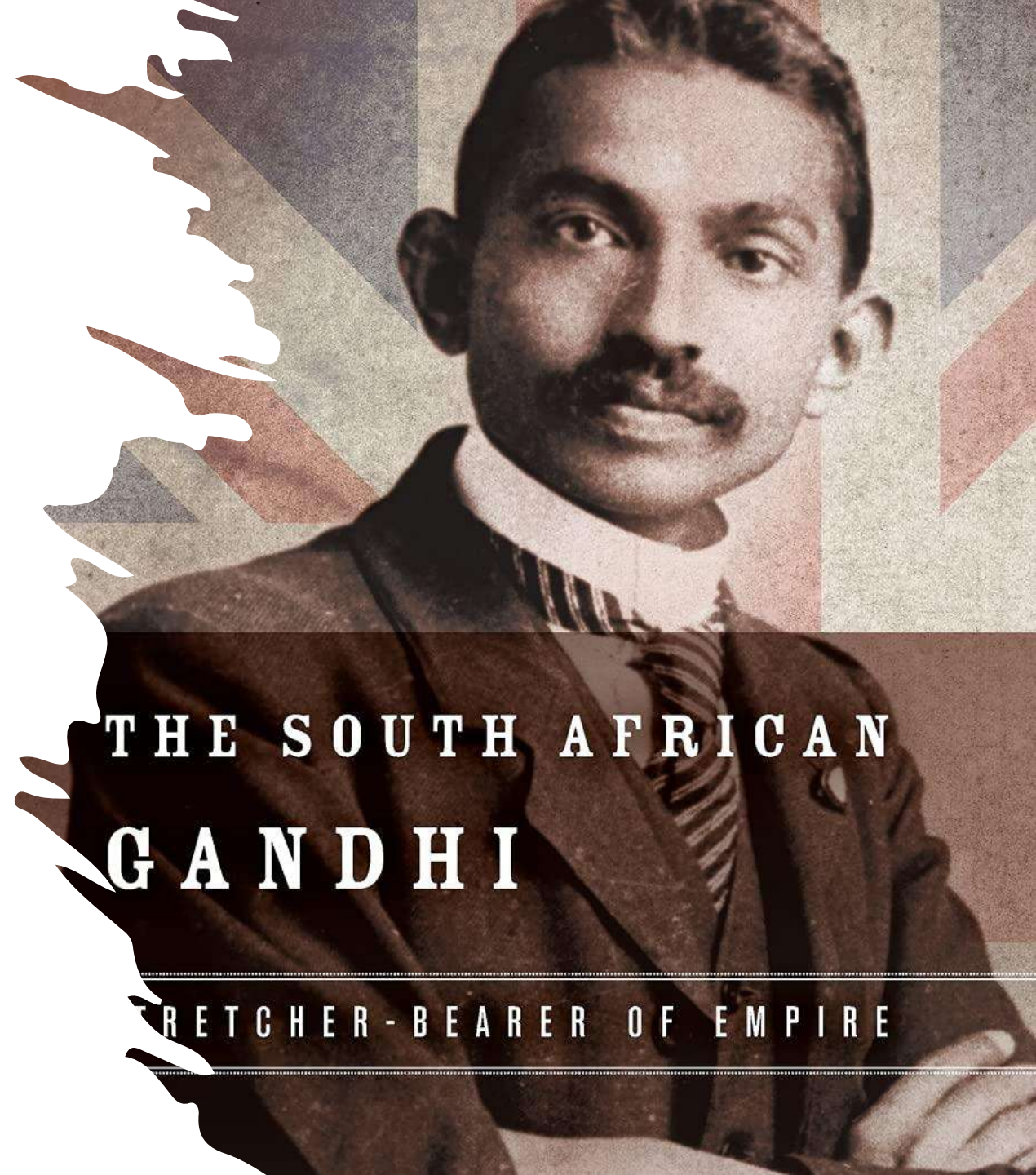
↓
Result - By 1914, most laws discriminating against Indians were abolished.

♀ **9 January 1915** - Returns India from South Africa after 21 years



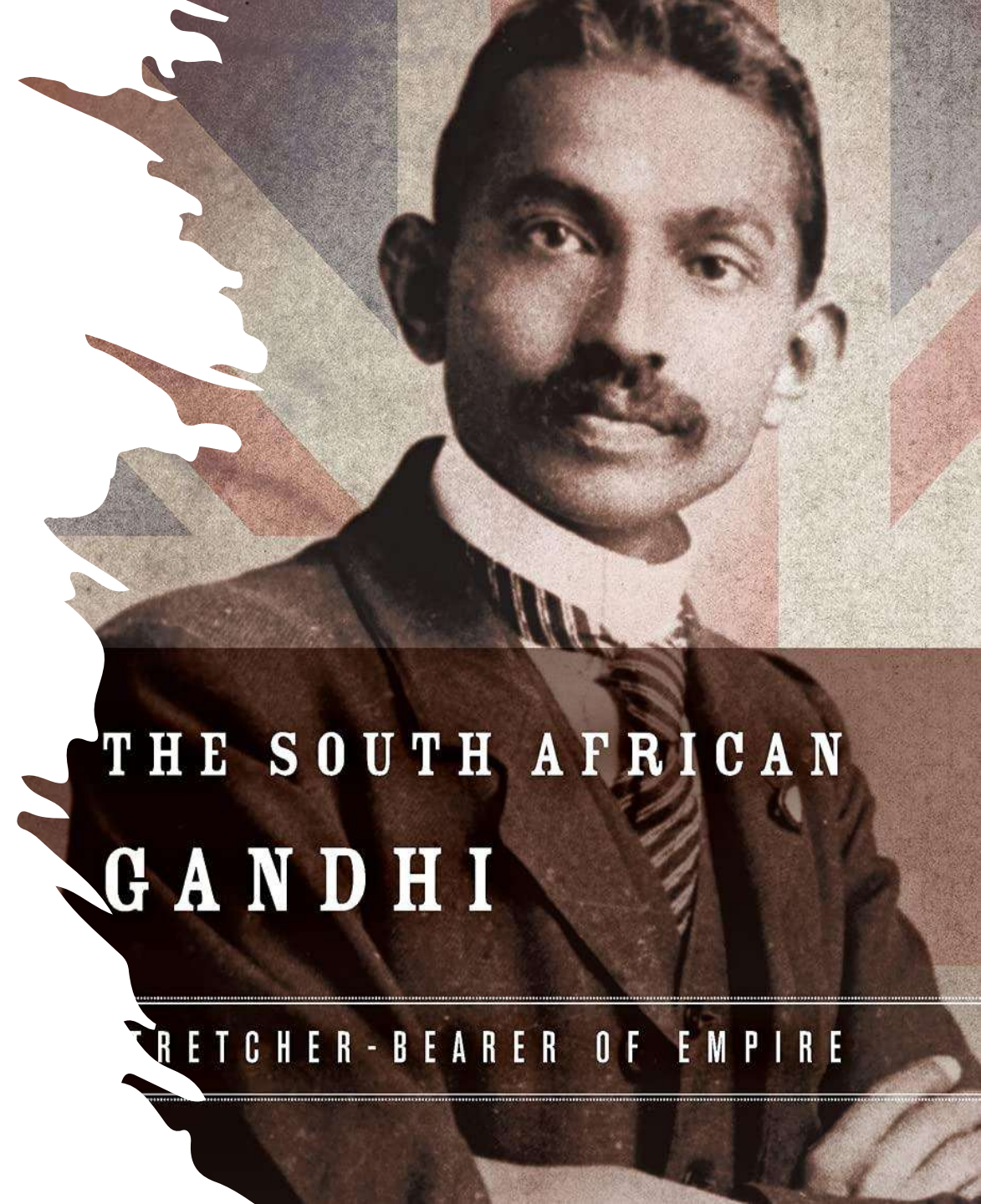
4) महत्व :-

- ♀ गांधीजी ने भारतीय **स्वतंत्रता आंदोलन को नेतृत्व प्रदान** करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई
- ♀ दक्षिण अफ्रीका में किये गए सत्याग्रह में गांधी जी को **अनेक समुदायों धर्मों एवं वर्गों का समर्थन** प्राप्त हुआ
- ♀ दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी को प्राप्त हुए इसी समर्थन में भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के लिए आधार का काम किया
- ♀ दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी को **एक विशेष राजनैतिक शैली, नेतृत्वकारी क्षमता तथा संघर्ष नवीन पद्धतियों** को विकसित करने का अवसर मिला
- ♀ इस प्रकार गांधी को अपनी रणनीति, कार्य पद्धति एवं संघर्ष के तरीकों की कमजोरियों एवं मजबूतियों को जानने का उचित अवसर प्राप्त हुआ, जिससे भारत में इन रणनीतियों एवं कार्य प्रणालियों का प्रभावी क्रियान्वयन हो सका जिसकी **प्रयोगशाला दक्षिण अफ्रीका** सिद्ध हुई



4) Importance:-

- ♀ Gandhiji played an important role in providing leadership to Indian independence movement.
- ♀ In Satyagraha conducted in South Africa, Gandhiji got the support of many communities, religions and classes.
- ♀ Support received by Gandhiji in South Africa served as the basis for India's independence movement.
- ♀ In South Africa, Gandhiji got a special political style, leadership ability and opportunity to develop new methods of struggle
- ♀ In this way, Gandhi got a fair opportunity to know the weaknesses and strengths of his strategy, methodology and methods of struggle, which could lead to effective implementation of these strategies and methods in India, whose **laboratory proved to be South Africa.**



10.1.5) महात्मा गांधी का भारत आगमन व आरंभिक आंदोलन

अहमदाबाद का श्रमिक विवाद,
1918

04

खेड़ा सत्याग्रह (1918)

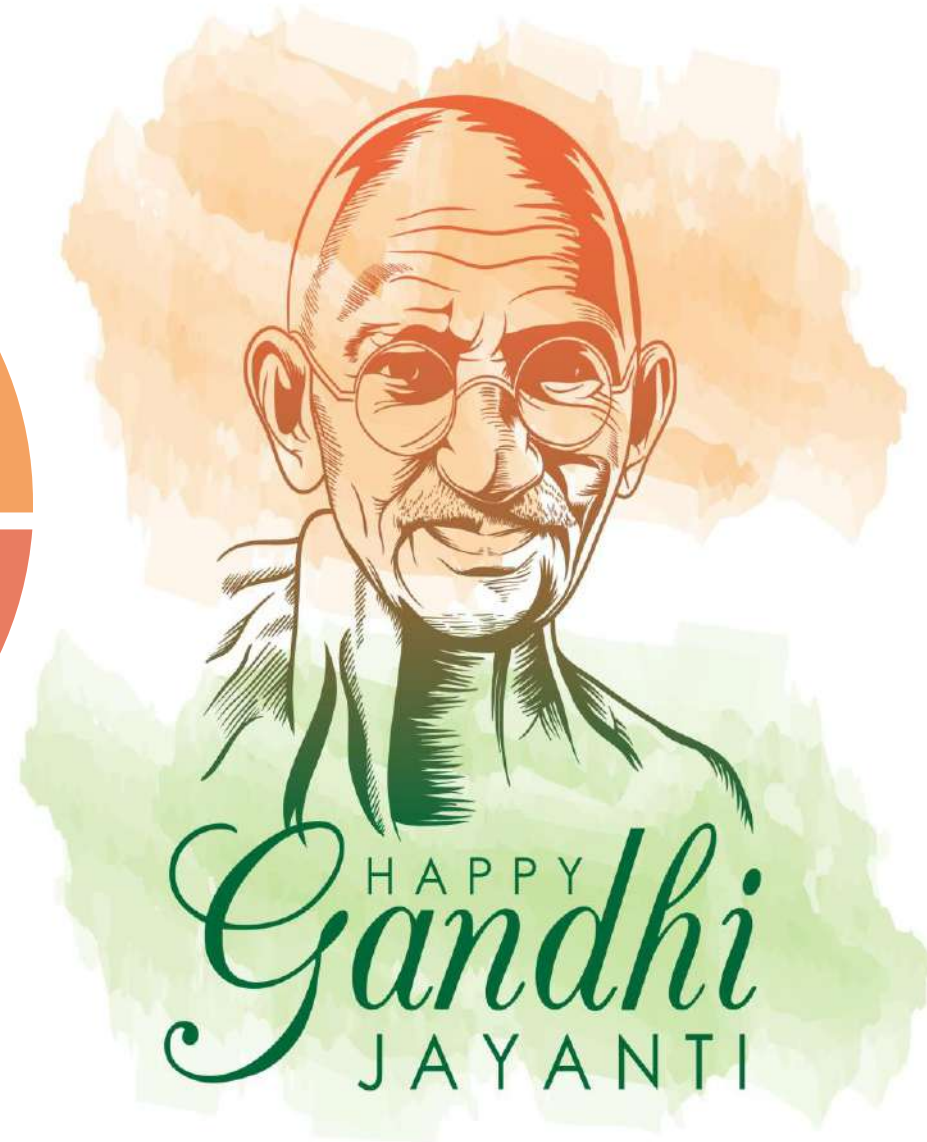
03

चंपारण सत्याग्रह (1917)

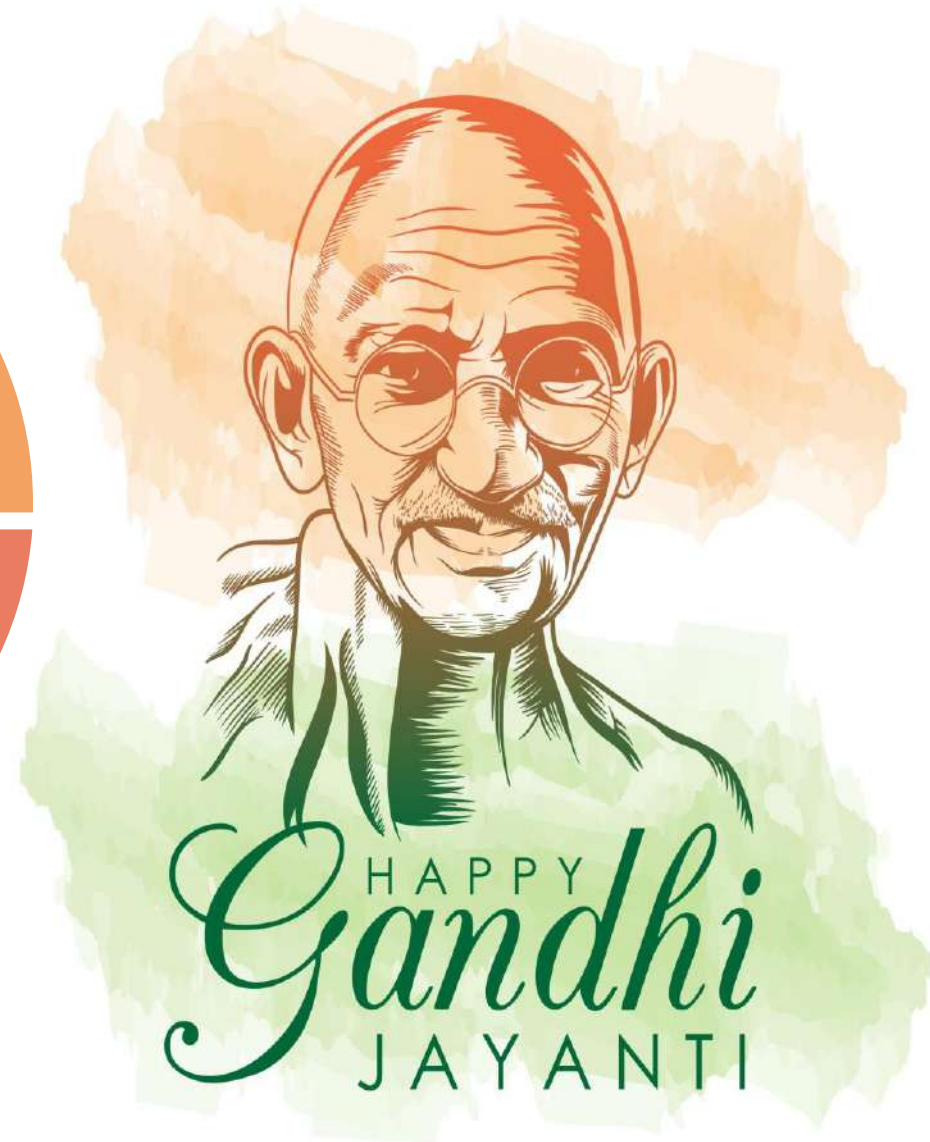
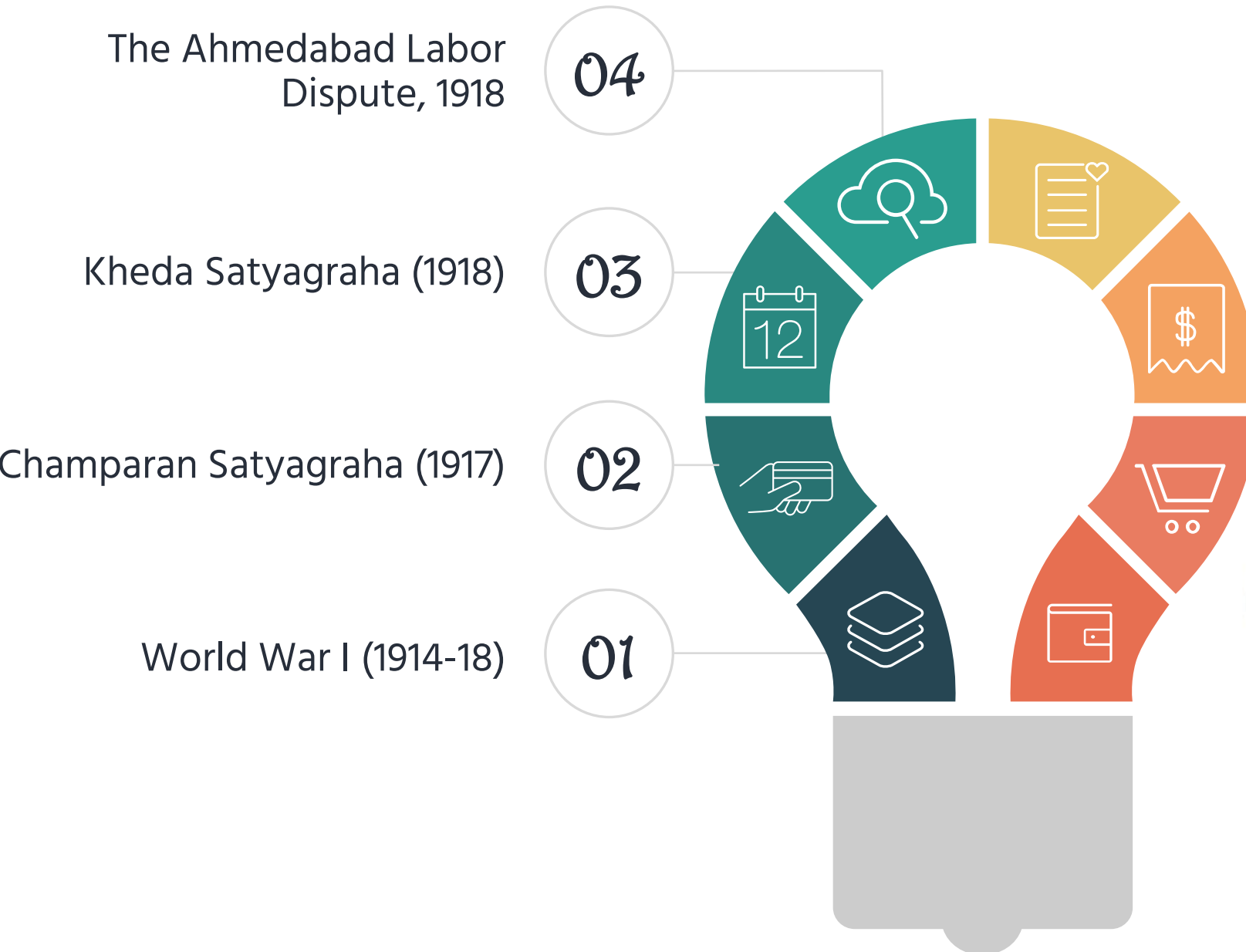
02

प्रथम विश्व युद्ध (1914-18)

01



10.1.5) Mahatma Gandhi's arrival in India and early movement



A) प्रथम विश्व युद्ध (1914-18)

1) 9 जनवरी 1915 :- भारत आगमन

♀ गोपाल कृष्ण गोखले को राजनीतिक गुरु माना

2) प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों का समर्थन

♀ **कारण** - अंग्रेज युद्ध के बाद भारत को स्वराज प्रदान करेंगे

♀ गांधीजी को **भर्ती करने वाला सार्जेंट** कहा गया

♀ इंग्लैंड में गांधीजी को **केसर-ए-हिंद** की उपाधि दी

3) एक वर्ष तक तक भारत भ्रमण

♀ अहिंसक प्रतिरोध / सत्याग्रह की नीति द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को आगे बढ़ाया

B) अहमदाबाद का श्रमिक विवाद, 1918

1) अहमदाबाद के मिल मालिकों और श्रमिकों में 'प्लेग बोनस' को लेकर विवाद की स्थिति।

2) कारण :-

❖ मिल मालिक 20% बोनस देना चाहते थे, जबकि गांधी 35% चाहते थे, जिसे बाद में स्वीकार कर लिया गया

❖ मालिकों द्वारा मजदूरों को दिए जाने वाले प्लेग बोनस को समाप्त करना

❖ प्रथम विश्व युद्ध के कारण महंगाई

3) शांतिपूर्ण और अहिंसक तरीके से कामबंदी और भूख हड़ताल

4) **प्रमुख सहयोगी :-** मिल मालिक अंबालाल साराभाई (विरोधी) की बेटी अनुसूया बेन

5) गांधीजी का प्रथम सफल आमरण अनशन

6) 'अहमदाबाद टेक्स्टाइल लेबर एसोसिएशन' की स्थापना

A) World War I (1914-18)

1) **9 January 1915 :-** Arrival in India

♀ considered Gopal Krishna Gokhale a political guru

2) supported British in first World War

♀ **Reason-** The British will provide Swaraj to India after the war.

♀ Gandhiji was called a recruiting sergeant.

♀ In England, Gandhiji was given the title **of Kesar-e-Hind**

3) India tour for one year

♀ The Indian national movement carried forward through the policy of non-violent resistance / satyagraha.

B) Ahmedabad labor dispute, 1918

1) Controversy situation among mill owners and workers of Ahmedabad over 'plague bonus'.

2) **Reason:-**

- ❖ The mill owners wanted a 20% bonus, while Gandhi wanted 35%, which was later accepted.
- ❖ Abolition of plague bonuses paid by employers to workers
- ❖ Inflation due to World War

3) Demonstration and hunger strike in a peaceful and non-violent manner

4) **Major supporter:-** Anusuya Ben, daughter of mill owner Ambalal Sarabhai (opponent)

5) Gandhiji's first successful fast unto death

6) Establishment of 'Ahmedabad Textile Labor Association

10.1.6) गांधीजी के उदय के कारण

तात्कालिक
परिस्थितियां



गांधी जी की
विचारधारा

कार्यपद्धती

1. राजनीतिक शून्यता
2. दक्षिण अफ्रीका से प्राप्त अनुभव
3. प्रथम विश्व युद्ध से उपजी समस्याएं

10.1.6) Reasons for the rise of Gandhiji

**Immediate
circumstances**



**Gandhi's
ideology**

Methodology

1. political vacuum
2. Experience gained from South Africa
3. Problems arising from the first world war

10.2) रौलेट एक्ट या द अनार्किकल एवं रिवाल्यूशनरी क्राइम एक्ट 1919

1) ब्रिटिश शासन के विरुद्ध बढ़ने वाली भारतीय क्रांतिकारी गतिविधियों को रोकने हेतु लॉर्ड चेम्सफोर्ड द्वारा 10 दिसंबर 1917 को न्यायाधीश सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में देशद्रोह समिति का गठन

2) **मुख्य सिफारिश :-** अप्रैल 1918 में प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार भारत में क्रांतिकारी एवं अराजकतावादी कानून बनना चाहिए

3) **18 मार्च 1919 में भारतीयों के तीव्र विरोध के बाद भी क्रांतिकारी एवं अराजकतावादी अधिनियम पारित :-**

- ♀ ब्रिटिश सरकार द्वारा बिना मुकदमे के भारतीयों को जेल में बंद करना
- ♀ साक्ष्य विधि के अंतर्गत अमान्य साक्ष्यों की कोर्ट द्वारा मान्यता
- ♀ कोर्ट के निर्णय के विरुद्ध अपील नहीं की जा सकती
- ♀ बिना वारंट की तलाशी एवं गिरफ्तारी

4) **प्रतिक्रिया :-**

- ♀ भारतीयों द्वारा अधिनियम का **"काला कानून"** तथा **"बिना वकील, बिना अपील व बिना दलील"** वाला कानून कहकर तीव्र विरोध
- ♀ जिन्ना, मदन मोहन मालवीय और मजहरुल हक ने केंद्रीय व्यवस्थापिका से इस्तीफा दिया
- ♀ महात्मा गांधी ने सत्याग्रह सभा की स्थापना करके 6 अप्रैल 1919 को देशव्यापी अहिंसक हड़ताल को शुरू किया

5) **अन्य तथ्य :-**

- ♀ **महात्मा गांधी -** " यह कानून बिल्कुल अनुचित, स्वतंत्रता विरोधी तथा व्यक्ति के मूल अधिकारों की हत्या करने वाला है"

10.2) Rowlatt Act or the Anarchical and Revolutionary Crime Act 1919

1) Sedition Committee was constituted by Lord Chelmsford on 10 December 1917 under chairmanship of Judge Sidney Rowlett to stop growing Indian revolutionary activities against the British rule.

2) **Major recommendation :-** According to the report presented in April 1918, revolutionary and anarchist laws should be made in India.

3) **On March 18, 1919, Revolutionary and Anarchist Act was passed even after strong opposition from Indians :**

- ♀ Indians jailed without trial by the British government
- ♀ Court recognition of invalid evidence under the law of evidence
- ♀ The decision of the court cannot be appealed
- ♀ Search and arrest without warrant

4) Reaction:-

- ♀ Strong opposition by Indians to the Act by calling it a "**black law**" and a "**law without lawyer, without appeal and without argument**".
- ♀ Jinnah, Madan Mohan Malviya and Mazharul Haque resign from the central legislature
- ♀ Mahatma Gandhi started a nationwide non-violent strike on 6 April 1919 by establishing the Satyagraha Sabha.

5) Other facts:-

- ♀ **Mahatma Gandhi-** " This law is absolutely unfair, anti-freedom and killing the fundamental rights of the individual.

♀ **सत्याग्रह सभा के सदस्य** - जमनालाल बजाज, शंकरलाल

बैकर, उमर सोमानी, बी.जी. हार्नीमन आदि

♀ गांधी जी ने आन्दोलन हेतु होमरूल लीग तथा कुछ इस्लामी समूहों का प्रयोग किया

♀ सत्याग्रह का प्रभाव दिल्ली(स्वामी श्रद्धानंद), पंजाब(डॉ सत्यपाल व सैफुद्दीन किचलू), बम्बई, लाहौर आदि में फैला

♀ सरकार द्वारा हिंसक व दमनात्मक नीतियों का प्रयोग

♀ 9 अप्रैल 1919 को गांधी जी को हरियाणा के पलवल में गिरफ्तार किया गया जब वे पंजाब जा रहे थे

हालांकि यह आंदोलन रोलेट को निरस्त नहीं किया जा

सका परंतु इस देशव्यापी आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन में गांधी जी व कांग्रेस को अग्रणी पंक्ति में खड़ा कर दिया

6) कथन :-

♀ **चिंतामणि** - रोलेट एक्ट से देश भर में विरोध की भावना भड़क उठी थी इसका विरोध प्रत्येक गैर सरकारी भारतीय निर्वाचित एवं मनोनीत सदस्यों ने किया था किंतु सरकार अपनी बात पर अड़ी रही और इस विधेयक को पारित कराने में सरकार ने अपनी सारी शक्ति लगा दी

♀ **जवाहरलाल नेहरू** - रोलेट अधिनियमो से सारे देश में रोष की लहर दौड़ गयी और सभी भारतीय ने उसका विरोध किया

♀ **महात्मा गांधी** - मुझे पहला धक्का रोलेट अधिनियम से लगा है जो जनता की स्वतंत्रता छीनने के उद्देश्य से बनाया गया था मुझे मेरी अंतरात्मा से प्रेरणा मिली कि इसके विरुद्ध तीव्र आंदोलन करना होगा

- ♀ **Member of Satyagraha Sabha** - - Jamnalal Bajaj, Shankarlal Backer, Umar Somani, B.G. Harniman etc.
- ♀ Gandhiji used the Home Rule League and some Islamic groups for the movement.
- ♀ The effect of Satyagraha spread in Delhi (Swami Shraddhanand), Punjab (Dr. Satyapal and Saifuddin Kitchlew), Bombay, Lahore etc.
- ♀ Use of violent and repressive policies by the government
- ♀ Gandhi was arrested on 9 April 1919 in Palwal, Haryana while he was on his way to Punjab.

Although this movement Rowlatt could not be canceled, but this nationwide movement put Gandhiji and Congress in the front line in the national movement.

6) **Statement:-**

- ♀ **Chintamani** - The Rowlatt Act had provoked a sense of protest across the country, it was opposed by every non-official elected and nominated Indian members, but the government was adamant on its point and the government put all its power in getting this bill passed
- ♀ **Jawaharlal Nehru** - The Rowlatt Acts caused a wave of fury all over the country and all Indians opposed it.
- ♀ **Mahatma Gandhi**- I got the first blow from the Rowlatt Act which was made with the aim of snatching the freedom of the people, I was inspired by my conscience that there would have to be a strong movement against it.

10.3) जलियांवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल 1919)

1) **घटना :-** 13 अप्रैल 1919(बैसाखी) को रौलेट एक्ट के विरोध में अमृतसर के जलियांवाला बाग में आयोजित शांतिपूर्ण सभा पर पंजाब के तत्कालीन जनरल रेजीनॉल्ड एडवर्ड हैरी डायर गोलीबारी से 1000 से ज्यादा लोगों की मृत्यु

2) **कारण :-**

- ♀ सरकार द्वारा रौलेट एक्ट पारित करना
- ♀ गांधी जी के पंजाब आगमन को रोकने हेतु पलवल में गिरफ्तारी
- ♀ पंजाब में दो नेताओं(डॉ सत्यपाल व सैफुद्दीन किचलू) की बिना कारण गिरफ्तारी
- ♀ पंजाब में मार्शल लॉ लागू करना

3) **आलोचनाएं :-**

- ♀ **रविंद्र नाथ टैगोर** - नाइटहुड की उपाधि वापस की

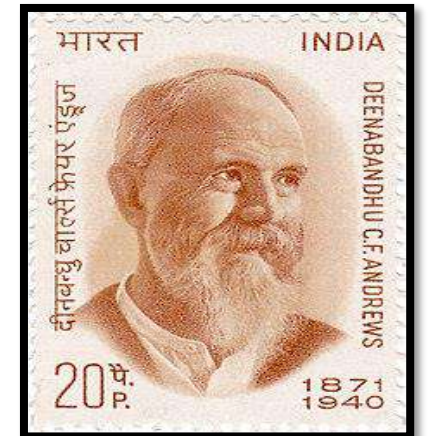
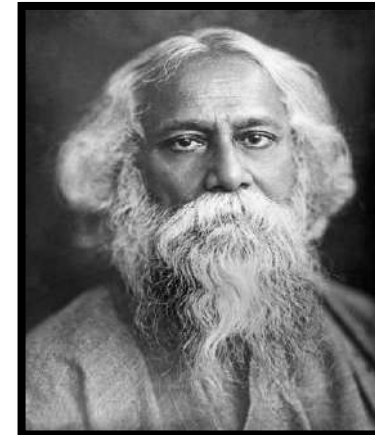
♀ **संकरन नायर** - वायसराय की कार्यकारिणी परिषद से इस्तीफा

♀ **सी. एफ. एंड्रूज़ (दीनबन्धु)** - जानबूझकर की गई क्रूर हत्या

♀ **मांटैग्यू** - निवारक हत्या

♀ **ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरून (2013)** - ब्रिटिश इतिहास की शर्मनाक घटना

♀ समितियों / जांच आयोग का गठन



10.3) Jallianwala Bagh Massacre (13 April 1919)

1) Incident:- On April 13, 1919 (Baisakhi), General of Punjab, General Reginald Edward Harry Dyer, fired at a peaceful meeting held at Jallianwala Bagh in Amritsar in protest against the Rowlatt Act, killing more than 1000 people.

2) Reason:-

- ♀ Passing of Rowlatt Act by Government
- ♀ Arrest in Palwal to stop Gandhi's arrival in Punjab
- ♀ Unreasonable arrest of two leaders (Dr. Satyapal and Saifuddin Kitchlew) in Punjab
- ♀ Implementation of Martial Law in Punjab

3) Criticism:-

- ♀ **Rabindranath Tagore** - gave up his knighthood title

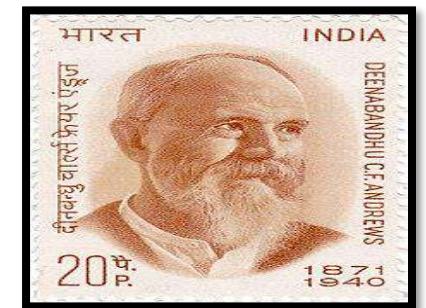
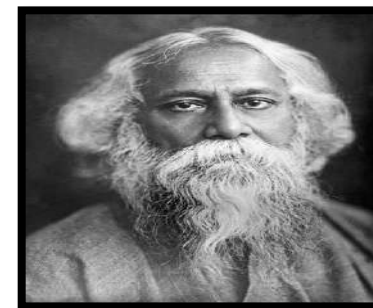
♀ **Sankaran Nair** - Resignation from the Viceroy's Executive Council

♀ **C. F. Andrews (Dinabandhu)** - intentional brutal murder

♀ **Montague** - preventive killing

♀ **British Prime Minister David Cameron (2013)** - shameful event in british history

♀ Constitution of Committees / Commission of Inquiry



4) जांच समितियां

ब्रिटिश सरकार



हंटर जांच आयोग



8 सदस्य

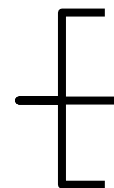
भारतीय सदस्य - चिमन लाल सीतलवाड़, साहबजादा, सुल्तान अहमद तथा जगत नारायण



रिपोर्ट 1920 :- डायर को दोषी नहीं माना,
मात्र नौकरी से हटाया



ब्रिटेन में डायर का सम्मान



- ब्रिटिश साम्राज्य का रक्षक
- ब्रिटिश साम्राज्य का शेर
- मान की तलवार (Sword of Honour) की उपाधि



कांग्रेस



- ॥ मदन मोहन मालवीय समिति (तहकीकात समिति)
- ॥ सदस्य - महात्मा गांधी (रिपोर्ट को लिखा) सी.आर.दास, मोतीलाल नेहरू, पुपुल जयकर, अब्बास तैय्यबजी
- ॥ हंटर कमीशन की रिपोर्ट की आलोचना



जलियांवाला बाग में बचे गए 1 बच्चे ऊधम सिंह ने 1940 में लंदन में माइकल ओ डायर की हत्या की

4) Investigation Committees

British Government

Hunter Commission



8 Member

Indian member- Chiman Lal Setalvad, Sahabzada, Sultan Ahmed and Jagat Narayan



Report 1920 :- Dyer was not considered guilty, only removed from the job



Dyer honored in Britain

- Protector of the British empire
- Lion of British empire
- **Sword of Honor**



Congress



ℒ Madan Mohan Malviya Committee
(Investigation Committee)

ℒ Members - Mahatma Gandhi (wrote the report) CR Das, Motilal Nehru, Pupul Jayakar, Abbas Tyabji

ℒ Criticism of Hunter Commission report



Udham Singh, the 1st survivor of Jallianwala Bagh, murdered Michael O'Dwyer in London in 1940

10.4) खिलाफत आंदोलन

प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश ने अपने वादे के प्रतिकूल तुर्की साम्राज्य का विभाजन करके खलीफा पद समाप्त कर दिया, जिससे 1919-20 में भारतीय मुसलमानों ने खिलाफत आंदोलन शुरू कर दिया

1

कारण

2

उद्देश्य

3

घटनाक्रम

4

पतन

5

परिणाम

6

मूल्यांकन

10.4) Khilafat Movement

After First World War, the British abolished the Khalifa post by partitioning the Turkish Empire contrary to their promise, which led to the Khilafat movement by Indian Muslims in 1919–20.

1

Reason

2

Objective

3

Coarse of events

4

Decline

5

Result

6

Evaluation

A) कारण

- 1) प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की का जर्मनी को समर्थन
- 2) भारतीय मुसलमानों का समर्थन प्राप्त करने हेतु
- 3) तुर्की का खलीफा मुस्लिम विश्व का आध्यात्मिक गुरु माना जाता है भारतीय मुसलमान भी उससे भावनात्मक रूप से जुड़ते थे
- 4) वस्तुतः प्रथम विश्व युद्ध में तुर्की, इंग्लैंड के विरुद्ध था किंतु ब्रिटिश सरकार ने मुसलमानों का समर्थन लेने के लिए यह आश्वासन दिया था कि तुर्की सुल्तान का सम्मान बनाए रखा जाएगा किंतु सेवर्स की संधि के तहत ब्रिटिश ने जब इस आश्वासन को भंग कर दिया और तुर्की राज्य का विभाजन कर दिया अतः मुस्लिम समुदाय असंतुष्ट हुआ और ब्रिटिश के विरुद्ध खिलाफत आंदोलन शुरू हुआ
- 5) गांधी ने हिंदू मुस्लिम एकता के अगले कदम के रूप में खिलाफत आंदोलन को समझा इसी क्रम में कांग्रेस को भी ब्रिटिश के विरुद्ध असहयोग आंदोलन के लिए तैयार किया

B) उद्देश्य

- 1) खलीफा के सम्मान, सर्वोच्चता एवं शक्ति की पुनर्स्थापना
 - 2) खलीफा के पक्ष में जनमत तैयार कर तुर्की का विभाजन रोकना
 - 3) हिंदू मुस्लिम एकता
 - 4) खलीफा के अधीन इतना भूभाग हो कि वह इस्लाम की रक्षा कर सकें
- 5) जजीरतुल अरब (अरब, सीरिया, इराक, फिलिस्तीन)**
पर मुसलमानों की संप्रभुता बनी रहे



A) Reason

- 1) Turkey's support to Germany in World War I
- 2) To get the support of Indian Muslims
- 3) The Caliph of Turkey is considered to be the spiritual master of the Muslim world, Indian Muslims were also emotionally attached to him.
- 4) In fact, Turkey was against England in First World War, but British government, to take support of the Muslims, had assured that the honor of the Turkish Sultan would be maintained, but under the Treaty of Svres, when the British dissolved this assurance and Turkey was divided, so the Muslim community was dissatisfied and the Khilafat movement started against the British.
- 5) Gandhi understood the Khilafat movement as the next step for Hindu-Muslim unity, in the same sequence, prepared the Congress for the non-cooperation movement against the British.

B) Objective

- 1) Restoration of the honor, supremacy and power of the Caliph
- 2) Preventing the partition of Turkey by preparing public opinion in favor of the Caliph
- 3) Hindu Muslim Unity
- 4) Caliph should have enough land to protect Islam
- 5) Muslims retain sovereignty over **Jaziratul Arab (Arab, Syria, Iraq, Palestine)**



C) घटनाक्रम

- 1) 1919 में अली बंधुओं (शौकत अली, मोहम्मद अली) अजमल खान, मौलाना आजाद आदि के नेतृत्व में खिलाफत कमेटी का गठन हुआ जिसका उद्देश्य तुर्की के प्रति ब्रिटेन के व्यवहार को बदलने के लिए दबाव बनाना था
- 2) कमेटी का अधिवेशन **जून 1920 में इलाहाबाद** :- अधिवेशन में स्कूल, न्यायालय के बहिष्कार का निर्णय लिया और **गांधी जी को आंदोलन का नेतृत्व** करने का दायित्व सौंपा गया
- 3) इसी समय जलियांवाला बाग हत्या कांड हुआ था और सरकार द्वारा जर्नल डायर को निर्दोष करार दिया गया था तथा पंजाब के नरसंहार एवं खिलाफत के मुद्दे पर गांधी जी ने **कांग्रेस को भी आंदोलन** के लिए तैयार किया
- 4) खिलाफत समिति ने औपचारिक तौर पर असहयोग आंदोलन की शुरुआत अगस्त 1920 में की किंतु 1 अगस्त 1920 को ही तिलक की मृत्यु हो गई

D) आन्दोलन का पतन

- 1) असहयोग आंदोलन के प्रभाव में खिलाफत आंदोलन दब गया
- 2) ब्रिटिश सरकार ने तीव्र दमन चक्र चलाकर, आंदोलन से जुड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया
- 3) 1924 में तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा का उदय हुआ जिसने खलीफा के पद को ही समाप्त कर दिया था अतः 1924 में खिलाफत आंदोलन समाप्त हो गया

C) Coarse of events

- 1) In 1919, the Khilafat Committee was formed under the leadership of Ali's brothers (Shaukat Ali, Muhammad Ali), Ajmal Khan, Maulana Azad, etc., whose purpose was to pressurize Britain to change its behavior towards Turkey.
- 2) Committee's session in June 1920 Allahabad :- In the session the decision was taken to boycott the school, court and Gandhiji was entrusted with the responsibility of leading the movement.
- 3) At the same time the Jallianwala Bagh massacre took place and the Journal Dyer was acquitted by the government and Gandhiji prepared the Congress for the movement on the issue of Punjab's genocide and Khilafat.
- 4) The Khilafat Committee formally started the non-cooperation movement in August 1920, but Tilak died on August 1, 1920.

D) Decline

- 1) The Khilafat movement was suppressed under the influence of the non-cooperation movement.
- 2) The British government launched a rapid repression cycle and arrested the leaders associated with the movement.
- 3) Mustafa Kemal Pasha emerged in Turkey in 1924, who abolished the post of Caliph, so the Khilafat movement ended in 1924.

E) परिणाम व योगदान

- 1) राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में मुस्लिम वर्ग की भागीदारी
- 2) मुस्लिम नेताओं का एक गुट राष्ट्रीय आंदोलन का प्रबल समर्थक हो गया, जैसे - अबुल कलाम आजाद, हकीम अजमल खान तथा अली बंधु आदि
- 3) यह आंदोलन धर्म के मुद्दे पर प्रारंभ हुआ था अतः आगे चलकर इससे संप्रदायिकता को प्रोत्साहन मिला

F) मूल्यांकन

खिलाफत आंदोलन को भारतीय राजनीति से जोड़ने पर इसे गांधी जी की बड़ी भूल बताया जाता है क्योंकि इससे धर्म का राजनीति में प्रवेश हुआ और कट्टरपंथियों को राजनीति में हस्तक्षेप का अवसर मिला जिससे अंततः सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिला

इस संदर्भ में कोई निर्णायक टिप्पणी करने से पूर्व यह जानना जरूरी है कि गांधीजी ने खिलाफत मुद्दे को भारतीय राजनीति से क्यों जोड़ा वस्तुतः ब्रिटिश फूट डालो एवं राज करो की नीति पर चल रहे थे और सांप्रदायिकता को प्रोत्साहित कर रहे थे। ऐसी स्थिति में खिलाफत का मुद्दा भारत में हिंदू-मुस्लिम एकता का अवसर प्रदान कर रहा था। इतना ही नहीं खिलाफत का मुद्दा मुस्लिम संप्रदाय से जुड़ा जरूर था किंतु किसी दूसरे संप्रदाय का विरोध नहीं कर रहा था। अतः भारत के अंदर विभिन्न वर्गों ने आंदोलन का समर्थन किया इसी तरह गांधी जी ने साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन को मजबूत बनाने के लिए तथा जनशक्ति को एकजुट करने के लिए इसे सुनहरे अवसर के रूप में देखा

इस दृष्टि से यह गांधीजी की भूल नहीं बल्कि एक रणनीतिक कदम माना जा सकता है।

E) Results and contributions

- 1) Participation of Muslim Class in the National Freedom Movement
- 2) A group of Muslim leaders became strong supporters of the national movement, such as Abul Kalam Azad, Hakim Ajmal Khan and Ali's brothers etc.
- 3) This movement was started on the issue of religion, so later it encouraged communalism.

F) Evaluation

Linking the Khilafat movement with Indian politics is said to be Gandhi's big mistake because it allowed religion to enter into politics and radicals got an opportunity to intervene in politics, which eventually led to communalism.

Before making any conclusive remarks in this context, it is necessary to know why Gandhiji linked the Khilafat issue with Indian politics, in fact the British were following the policy of divide and rule and were encouraging communalism. In such a situation the issue of Khilafat was providing an opportunity for Hindu-Muslim unity in India. Not only this, the issue of Khilafat was definitely related to the Muslim sect but was not opposing any other sect. Therefore, various sections within India supported the movement, similarly Gandhi saw it as a golden opportunity to strengthen the anti-imperialist movement and to unite the people's power.

From this point of view, it can be considered a strategic move, not a mistake of Gandhiji.

10.5) असहयोग आंदोलन (1920-1922)



10.5) Non-Cooperation Movement (1920-1922)



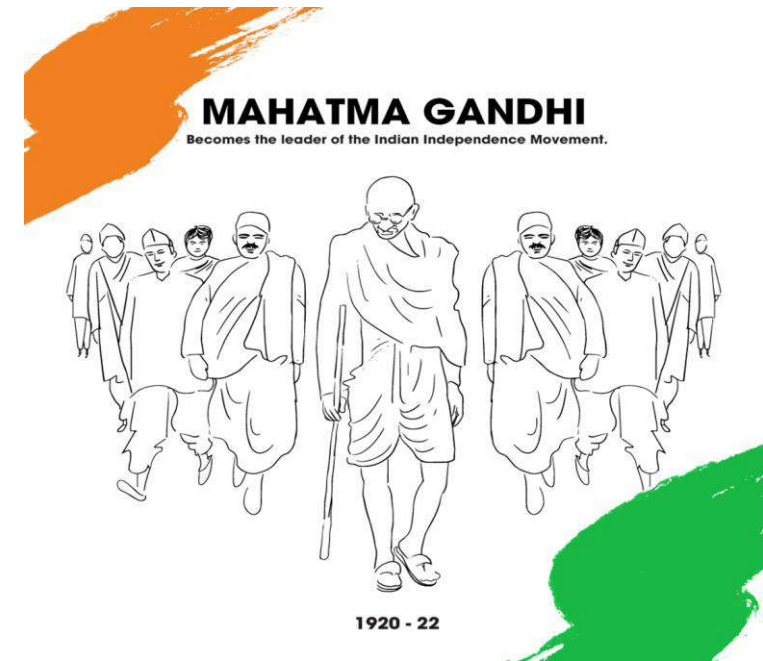
1) परिचय

स्वराज की प्राप्ति हेतु गांधी जी द्वारा अगस्त 1920 से राष्ट्रव्यापी अहिंसक, असहयोग आंदोलन आरंभ किया

- 1) **समय :-** 1 अगस्त 1920
- 2) **स्थिति :-** 12 फरवरी 1922
- 3) **प्रथम प्रस्ताव :-** गांधीजी ने 4 सितंबर 1920 को कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में (अध्यक्ष - लाला लाजपत राय) प्रस्ताव रखा हालांकि सी आर दास (विधायिका बहिष्कार के कारण), एनी बेसेंट, मदन मोहन मालवीय, जिन्ना आदि के विरोध के कारण प्रस्ताव खारिज
- 4) **असहयोग आंदोलन की पुष्टि :-** सी आर दास द्वारा चक्रवर्ती विजय राघवाचारी की अध्यक्षता में आयोजित कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में असहयोग का प्रस्ताव रखा गया जिसे स्वीकार कर लिया गया इसके विरोध में **एनी बेसेंट, जिन्ना, विपिन चंद्र पाल व खापर्डे ने कांग्रेस से त्यागपत्र दिया**

5) उद्देश्य :-

- ♀ खिलाफत के प्रश्न का सम्मानजनक समाधान
 - ♀ जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरुद्ध न्याय की मांग
 - ♀ स्वराज की प्राप्ति
- 6) गांधी जी ने **'केसर ए हिंद'** तथा जमनालाल बजाज ने **'रायबहादुर'** की उपाधि लौटाकर 1 अगस्त 1920 से असहयोग आंदोलन को शुरू किया साथ ही एक करोड़ रुपए लक्ष्य के साथ **'तिलक स्वराज फंड'** की स्थापना की



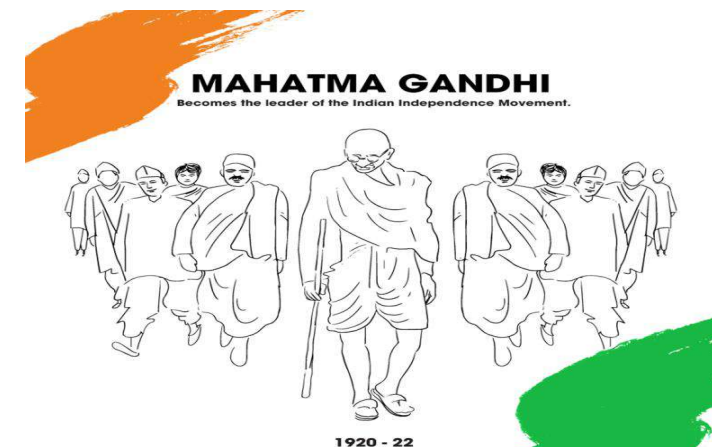
1. Introduction

For the attainment of Swaraj, Gandhiji started a nationwide non-violent, non-cooperation movement from August 1920.

- 1) **Time :-** 1 august 1920
- 2) **Adjourned :-** 12 February 1922
- 3) **First proposal :-** Gandhiji proposed at the Calcutta session of Congress (President - Lala Lajpat Rai) CR Das (legislature boycott), Annie Besant, Madan Mohan Malviya, Jinnah etc. rejected the proposal.
- 4) **Confirmation of non-cooperation movement :-** In the Nagpur session of Congress organized by CR Das under the chairmanship of Chakravarti Vijay Raghavachari, a proposal for non-cooperation was proposed, which was accepted.
Annie Besant, Jinnah, Vipin Chandra Pal and Khaparde resigned from the Congress in protest.

5) Objective :-

- ♀ Respectable solution to the question of the khilafat
 - ♀ Demand for justice against Jallianwala Bagh massacre
 - ♀ Attainment of swaraj
- 6) Gandhiji returned the title of '**Kesar e Hind**' and Jamnalal Bajaj returned the title of '**Rai Bahadur**' and started the non-cooperation movement from 1st August 1920 as well as '**Tilak Swaraj Fund**' with a target of one crore rupees. की स्थापना की



कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन, दिसंबर 1920

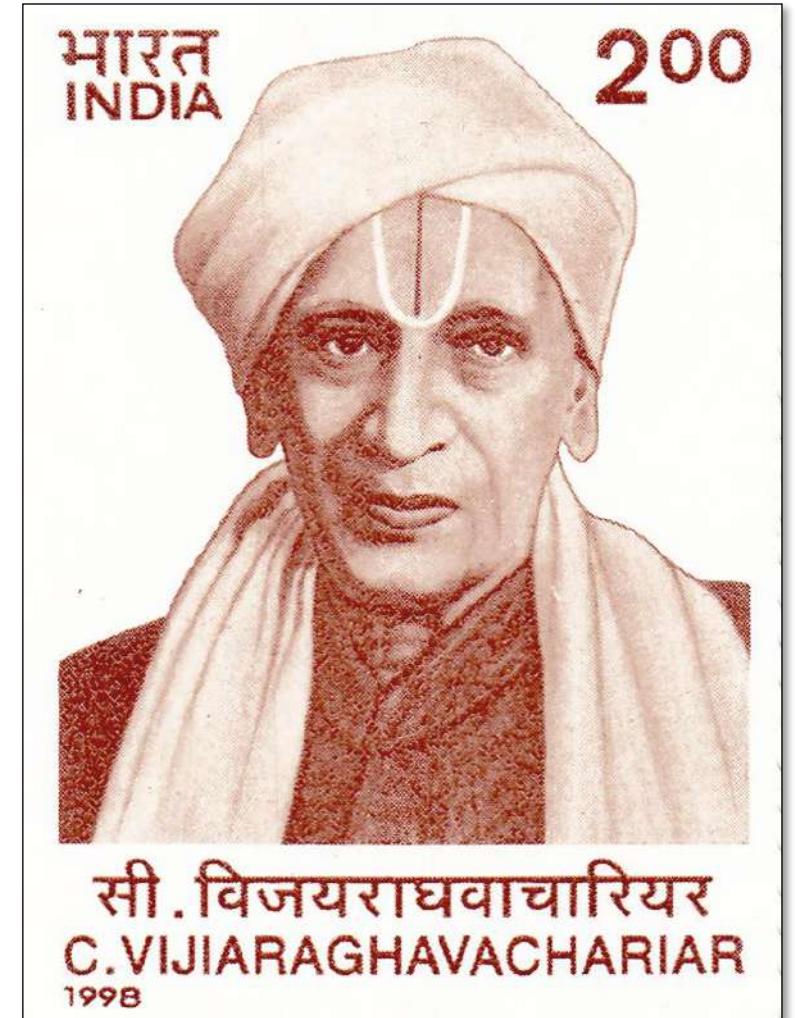
1) **समय :-** 26 से 30 दिसंबर 1920

2) **स्थान :-** नागपुर

3) **अध्यक्ष :-** सी विजयराघवाचार्य

4) **मुख्य कार्य :-**

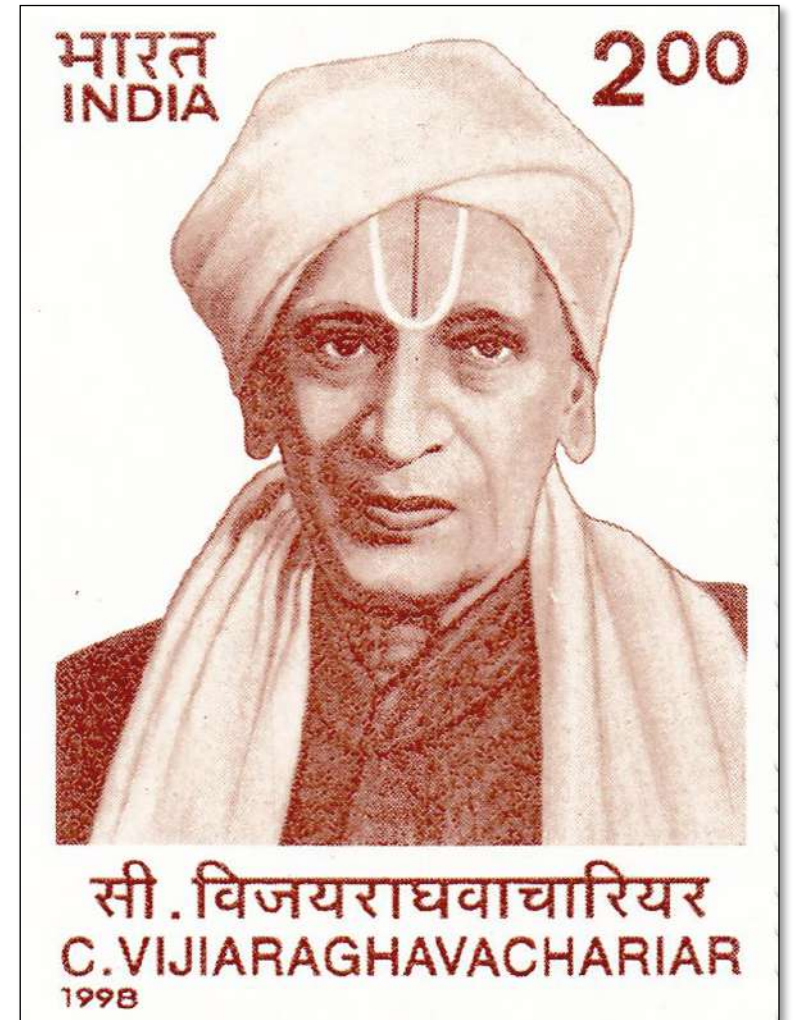
- ♀ सी आर दास द्वारा प्रस्तुत असहयोग आंदोलन के प्रस्ताव की पुष्टि
- ♀ वैधानिक व शांतिपूर्ण ढंग से स्वराज प्राप्ति
- ♀ प्रांतीय कमेटी का भाषाई आधार पर पुनर्गठन
- ♀ सदस्यता शुल्क घटाकर चार आने (25 पैसे)
- ♀ कांग्रेस के संचालन हेतु 15 सदस्यीय वर्किंग कमेटी का गठन
- ♀ कांग्रेस के उद्देश्य में परिवर्तन (संविधानिक तरीकों के स्थान पर अहिंसक उचित तरीकों से स्वराज)



Nagpur Session of Congress, December 1920

- 1) **Time :-** 26 to 30 December 1920
- 2) **Place :-** Nagpur
- 3) **President :-** C. Vijayaraghavachariar
- 4) **Major work:-**

- ♀ Confirmation of the proposal of non-cooperation movement presented by CR Das
- ♀ Attainment of swaraj legally and peacefully
- ♀ Reorganization of provincial committee on linguistic basis
- ♀ Membership fee reduced to four annas (25 paise)
- ♀ Formation of a 15-member working committee to run the Congress
- ♀ Change in the aim of the Congress (Swaraj by non-violent proper methods in place of constitutional methods)



2) आंदोलन के कारण

1) प्रथम विश्व युद्ध से निर्मित परिस्थितियां :-

- ♀ युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार का स्वशासन के वादे से मुकरना
- ♀ सेवर्स की संधि द्वारा तुर्की से दुर्व्यवहार से उपजा खिलाफत आंदोलन
- ♀ महंगाई व बेरोजगारी से असंतोष

- 2) नागरिक अधिकारों का दमन करने वाले **रॉलेट एक्ट** को लागू करना
- 3) जलियांवाला बाग हत्याकांड तथा इसकी जांच हेतु गठित हंटर कमेटी द्वारा डायर को निर्दोष घोषित करना
- 4) मोंटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार द्वारा **प्रांतों में द्वैध शासन** लागू किया गया, जिसमें निर्वाचित सरकार को न्यूनतम अधिकार दिए गए

3) आंदोलन के कार्यक्रम/ रणनीति

कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में आंदोलन हेतु निम्नलिखित रचनात्मक व असहयोग संबंधी कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए :-

1) रचनात्मक कार्यक्रम :-

- ♀ **स्वदेशी** को प्रोत्साहन देना :- स्वदेशी वस्तुओं, विद्यालयों, संस्थाओं को बढ़ावा देना
- ♀ **चरखा, खादी एवं कताई-बुनाई** जैसी गतिविधियों को बढ़ावा देना।
- ♀ स्थानीय विवादों का निपटारा करने के लिये **पंचायती अदालतों** की स्थापना करना।
- ♀ हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना।
- ♀ छुआछूत, मद्यपान जैसी बुराइयों को समाप्त करना
- ♀ अहिंसा के पालन को बढ़ावा देना।
- ♀ सभी वयस्कों को कांग्रेस की सदस्यता प्रदान करना।

2) Reasons of movement

1) Circumstances created by the First World War :-

- ♀ After the war, the British government deny on its promise of self-government.
- ♀ The Khilafat Movement stemmed from Turkey's abuse by the Treaty of Svres
- ♀ Dissatisfaction with inflation and unemployment

2) Enactment of **Rowlatt Act** suppressing civil rights

3) Declaring Dyer innocent by the Hunter Committee constituted to investigate the Jallianwala Bagh massacre

4) **Diarchy was introduced in the provinces** by the Montagu-Chelmsford Reformation, in which the elected government was given minimum powers.

3) Movement programmes/strategies

The following constructive and non-cooperation programs were presented for the movement in the Nagpur session of the Congress. :-

1) Constructive program:-

- ♀ **Promoting Swadeshi** :- To promote indigenous goods, schools, institutions
- ♀ To promote activities like **spinning wheel, khadi and spinning-weaving.**
- ♀ Establishment of **Panchayati Adalats** to settle local disputes.
- ♀ Promoting Hindu-Muslim unity.
- ♀ Eradicating evils like untouchability, drinking
- ♀ Promoting the practice of non-violence.
- ♀ Granting Congressional membership to all adults.

- ♀ 300 सदस्यों वाली अखिल भारतीय कांग्रेस समिति का गठन।
- ♀ ज़िला, तालुका एवं ग्राम स्तरों पर कांग्रेस समितियों का एक संस्तर बनाना
- ♀ भाषायी आधार पर प्रांतीय कांग्रेस समितियों का पुनर्गठन।
- ♀ आंदोलन के कार्यक्रमों की गतिविधियों के लिए 1 करोड़ रुपए का कोष स्थापित किया जाएगा जिसका नाम तिलक स्वराज फंड होगा क्योंकि तिलक कि 1 अगस्त 1920 को मृत्यु हो गई थी

2) असहयोग संबंधी कार्यक्रम :-

- ♀ ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदान की गई उपाधियों का त्याग
- ♀ सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र देना
- ♀ विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करना
- ♀ सरकारी उत्सव का बहिष्कार करना

- ♀ सरकारी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों का बहिष्कार
- ♀ वकीलों द्वारा ब्रिटिश न्याय व्यवस्था का बहिष्कार करना
- ♀ आवश्यकता पड़ने पर कर अदा न करना

4) आंदोलन का प्रचार-प्रसार

असहयोग आंदोलन को पश्चिम उत्तर भारत तथा बंगाल में अभूतपूर्व सफलता मिली जिसका कारण निम्नलिखित गतिविधियां थी :-

- 1) 1 अगस्त 1920 को खिलाफत आंदोलन के साथ असहयोग आंदोलन की घोषणा
- 2) गांधी जी द्वारा "केसर ए हिंद" की उपाधि का त्याग
- 3) 'तिलक स्वराज फंड' की स्थापना
- 4) कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में आंदोलन को स्वीकृति तथा कांग्रेस की कार्य पद्धति में परिवर्तन जैसे सदस्यता शुल्क कम करना आदि
- 5) गांधी जी द्वारा जेल भरने का आवाहन किया गया

- ♀ Formation of All India Congress Committee consisting of 300 members.
- ♀ Formation of a strata of Congress Committees at the district, taluka and village levels
- ♀ Reorganization of Provincial Congress Committees on linguistic basis.
- ♀ A fund of Rs 1 crore will be set up for the activities of the movement's programs, which will be named Tilak Swaraj Fund because Tilak died on 1 August 1920.

2) Non-cooperation program :-

- ♀ Renunciation of titles conferred by the British Government
- ♀ Resign from government jobs
- ♀ Boycott foreign clothes
- ♀ Boycott the official festival

- ♀ Boycott of government universities, colleges
- ♀ Lawyers boycott the British judicial system
- ♀ Non-payment of tax when required

4) Propagation of the movement

The non-cooperation movement got unprecedented success in West North India and Bengal due to the following activities :-

- 1) Declaration of non-cooperation movement along with Khilafat movement on 1st August 1920
- 2) Gandhi relinquished the title "Kesar-e-Hind"
- 3) Establishment of 'Tilak Swaraj Fund'
- 4) Acceptance of movement in Nagpur session of Congress and change in working method of Congress like reducing membership fee etc.
- 5) Gandhiji gave a call to fill the jail

- 5) ताड़ी एवं शराब की दुकानों पर महिलाओं का धरना (यह मूल कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं था)
- 6) राष्ट्रीय शिक्षण संस्थाओं की स्थापना, जैसे - काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, महाराष्ट्र विद्यापीठ, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय आदि कलकत्ता में नेशनल कॉलेज को स्थापित किया गया जिस के **प्रधानाचार्य सुभाष चंद्र बोस** बने
- 7) प्रतिष्ठित वकीलों (सी आर दास, मोतीलाल नेहरू, एमआर जयकर, सैफुद्दीन किचलू, बल्लभ भाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू, विठ्ठल भाई पटेल, सी राजगोपालाचारी राजेंद्र प्रसाद आदि) ने न्यायालयों का बहिष्कार किया
- 8) विदेशी कपड़ों की होली जलाकर बहिष्कार :- 1920-21 में जहां 102 करोड़ रुपए मूल्य की विदेशी कपड़ों का आयात हुआ, वहीं 1921-22 में यह घटकर 57 करोड़ रुपए ही रह गया
- 9) **पंजाब में सिखों ने अकाली आंदोलन** शुरू किया, **असम में चाय बागानों के मजदूरों** ने हड़ताल की, **मिदनापुर** के किसानों ने **यूनियन बोर्ड को कर देने से इनकार** कर दिया, मालाबार में जमींदारों के विरोध में मुस्लिम कृषकों ने आंदोलन शुरू कर दिया
- 10) 17 नवंबर 1921 को **प्रिंस ऑफ वेल्स** के भारत आगमन पर **काले झंडे दिखाए** गए
- 11) 1927 के अंत तक ब्रिटिश सरकार द्वारा कांग्रेस व खिलाफत कमेटी को प्रतिबंधित करके अनेक नेताओं को गिरफ्तार किया जैसे मोहम्मद अली, मोतीलाल नेहरू, सरदार पटेल, जिन्ना, चितरंजन दास, आदि
- 12) फरवरी 1921 में गांधी जी ने वायसराय लॉर्ड रीडिंग को पत्र लिखकर चेतावनी दी कि यदि 1 हफ्ते के अंदर राजनीतिक बंदी रिहा नहीं किए गए और उत्पीड़नकारी नीतियां वापस नहीं ली गईं तो वह **व्यापक रूप से सविनय अवज्ञा आंदोलन** शुरू कर देंगे

- 5) Women's dharna at toddy and liquor shops (this was not included in the original program)
- 6) Establishment of national educational institutions, such as Kashi Vidyapeeth, Bihar Vidyapeeth, Gujarat Vidyapeeth, Maharashtra Vidyapeeth, Aligarh Muslim University etc. National College was established in Calcutta, whose **principal was Subhash Chandra Bose**.
- 7) Eminent lawyers (CR Das, Motilal Nehru, MR Jayakar, Saifuddin Kichlu, Ballabhbhai Patel, Jawaharlal Nehru, Vitthalbhai Patel, C Rajagopalachari Rajendra Prasad etc.) boycotted the courts
- 8) Boycott of foreign clothes by burning Holi: - In 1920-21, where foreign clothes worth Rs 102 crore were imported, in 1921-22 it came down to Rs 57 crore only.
- 9) **Sikhs start Akali movement in Punjab, tea garden workers strike in Assam, Midnapore farmers refuse to pay taxes to Union Board**, Muslim farmers start agitation against landlords in Malabar
- 10) Black flags shown on the arrival of **the Prince of Wales** to India on 17 November 1921
- 11) By the end of 1927, the British government banned the Congress and the Khilafat Committee and arrested many leaders such as Mohammad Ali, Motilal Nehru, Sardar Patel, Jinnah, Chittaranjan Das, etc.
- 12) In February 1921, Gandhi wrote a letter to the Viceroy Lord Reading, warning that he would **launch a massive civil disobedience movement** if political prisoners were not released within a week and the oppressive policies were not withdrawn.

- 14) 4 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश में घटित चोरी-चोरा हिंसक घटना के कारण 12 फरवरी 1922 को गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस लिया
- **मोतीलाल नेहरू :-** “यदि कन्याकुमारी के एक गांव में अहिंसा का पालन नहीं किया तो इसकी सजा हिमालय के एक गांव को क्यों मिलनी चाहिए?”
 - **गांधीजी :-** “आंदोलन को हिंसा होने से बचाने के लिए मैं हर एक अपमान, यहां तक कि मौत भी सहने को तैयार हूं”
- 15) **मार्च 1922** में गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा **न्यायाधीश ब्रूमफिल्ड** द्वारा गांधी को असंतोष फैलाने के अपराध के कारण 6 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई **किंतु 5 फरवरी 1924 को स्वास्थ्य कारणों का हवाला** देते हुए उन्हें रिहा कर दिया गया

 **आज का इतिहास**

चौरी चौरा घटना के 100 साल



4 फरवरी 1922
को गुस्साई भीड़ ने गोरखपुर के चौरी चौरा पुलिस थाने में आग लगा दी थी

12 फरवरी 1922
को महात्मा गांधी ने इस घटना के चलते असहयोग आंदोलन वापस ले लिया था

- 14) Gandhi withdrew the non-cooperation movement on 12 February 1922 due to the violent incident that took place in Uttar Pradesh on 4 February 1922.
- **Motilal Nehru :-** "If non-violence is not followed in a village in Kanyakumari, why should a village in the Himalayas be punished for it?"
 - **Gandhiji :-** "I am ready to bear every humiliation, even death, to save the movement from turning into violence."
- 15) Gandhi was arrested in **March 1922** and sentenced to 6 years imprisonment by **Judge Broomfield** for the offense of spreading discontent but **was released on 5 February 1924 citing health reasons.**

 आज का इतिहास

चौरी चौरा घटना के 100 साल



4 फरवरी 1922
को गुस्साई भीड़ ने गोरखपुर के चौरी चौरा पुलिस थाने में आग लगा दी थी

12 फरवरी 1922
को महात्मा गांधी ने इस घटना के चलते असहयोग आंदोलन वापस ले लिया था

चोरी-चौरा कांड (4 फरवरी 1922)

- 1) यह घटना 4 फरवरी 1922 को गोरखपुर जिले के चोरी चोरी कस्बे में घटी थी
- 2) पुलिस वालों ने भगवान अहीर तथा कुछ अन्य लोगों की पिटाई कर दी प्रतिक्रिया स्वरूप उग्र जनता ने पुलिस थाने पर हमला करके उसे जला दिया जिसमें 22 पुलिसकर्मी मारे गए
- 3) 170 भारतीयों को मृत्युदंड दिया गया था किंतु पंडित मदन मोहन मालवीय ने पैरवी करते हुए 151 लोगों को फांसी से बचा लिया
- 4) गांधीजी ने क्षुब्ध होकर 12 फरवरी 1922 को कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में असहयोग आंदोलन को स्थगित करवा दिया
- 5) यह प्रस्ताव कांग्रेस कार्यकारिणी की **बारदोली बैठक** में रखा गया था
- 6) **मोतीलाल नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, राजगोपालाचारी, सी आर दास, मुहम्मद और शौकत अली** ने गांधीजी के निर्णय की आलोचना की
- 7) **पंडित जवाहरलाल नेहरू :-** हम सब को बड़ा दुख हुआ जब हमने सुना कि हमारी लड़ाई उस समय बंद कर दी गई जब हम सफलता की ओर बढ़ रहे थे
- 8) **सी आर दास :-** गांधीजी आंदोलन को बहुत साहस से प्रारंभ करते हैं कुछ समय तक कुशलता से चलाते हैं परंतु अंत में साहस खोकर बहक जाते हैं
- 9) **सुभाष चंद्र बोस :-** उस समय जनता का उत्साह बहुत ऊंचा था तब पीछे हटने का आदेश देना राष्ट्रीय संकट से कुछ कम नहीं था

Chori-Chaura incident(4 February 1922)

- 1) This incident took place on 4 February 1922 in Chori Chaura town of Gorakhpur district.
- 2) Bhagwan Ahi was beaten by police and some others. In response, the furious people attacked and burnt the police station in which 22 policemen were killed.
- 3) 170 Indians were given death sentence, but Madan Mohan Malviya defended 151 people from hanging
- 4) Gandhiji got agitated and suspended the non-cooperation movement on 12 February 1922 in the Congress Working Committee meeting.
- 5) This proposal was placed in the Bardoli meeting of the Congress Working Committee
- 6) **Motilal Nehru, Subhash Chandra Bose, Jawaharlal Nehru, Rajagopalachari, CR Das, Muhammad and Shaukat Ali** criticized Gandhi's decision
- 7) **Pandit jawaharlal nehru :-** We all felt very sad when we heard that our fight had been called off while we were on our way to success.
- 8) **C R Das :-** Gandhiji starts the movement with great courage, runs it efficiently for some time but in the end loses his courage and goes away.
- 9) **Subhash Chandra Bose :-** At that time the enthusiasm of the public was very high, then ordering the retreat was nothing less than a national crisis.

5) आंदोलन के परिणाम/ उपलब्धियां

असहयोग आंदोलन **स्वराज प्राप्ति के लक्ष्य को प्राप्त नहीं** कर सका फिर भी आंदोलन की निम्न दूरगामी उपलब्धियां रही :-

- 1) कांग्रेस ने प्रार्थना पत्रों के स्थान पर अहिंसक व उचित कार्यवाही की नीति बनाई
- 2) कांग्रेस वर्ग के स्थान पर जन समूह का नेतृत्व करने वाली संस्था बन गई
- 3) आंदोलन में शिक्षित वर्ग के साथ-साथ कृषक मजदूर स्त्री आदि सभी की भागीदारी
- 4) मालाबार की घटनाओं के बाद भी हिंदू मुस्लिम एकता में वृद्धि
- 5) विदेशी शासन के भय में कमी तथा भारतीयों के आत्मविश्वास में वृद्धि
- 6) ग्रामीण क्षेत्र की भागीदारी

वस्तुतः असहयोग आंदोलन समाप्त नहीं अपितु गांधीजी के संघर्ष-विराम-संघर्ष की नीति के तहत स्थगित किया गया जिससे आगामी आंदोलन के लिए व्यापक जनाधार तैयार हुआ

5) Movement Results/Achievements

The non-cooperation movement **could not achieve the goal of achieving Swaraj**, yet the movement had the following far-reaching achievements: :-

- 1) Congress made a policy of non-violent and appropriate action in place of applications.
- 2) Congress became the organization leading the masses instead of the class
- 3) In the movement, participation of all the educated class as well as agricultural laborers, women etc.
- 4) Hindu-Muslim unity increased even after Malabar events
- 5) Decreased fear of foreign rule and increased self-confidence of Indians
- 6) Rural sector participation

In fact, the non-cooperation movement was not ended but was postponed under Gandhiji's policy of cease-fire, which created a broad base for the upcoming movement.

6) आंदोलन की वापसी

चौरी-चौरा की घटना के पश्चात् असहयोग आंदोलन को अचानक वापस ले लिया गया, जिसकी आलोचना करते हुए कुछ इतिहासकारों ने गांधीजी को बुर्जुआ हितों का पोषक बताया है। उनके आक्षेपानुसार आंदोलन वापसी के प्रमुख कारण थे :-

- 1) गांधीजी को असहयोग आंदोलन का नेतृत्व अपने हाथ से निकलकर लड़ाकू ताकतों के हाथ में जाता दिखा।
- 2) गांधीजी जमींदारों का हित चाहते थे इसीलिये उन्होंने बारदोली प्रस्ताव में किसानों से ज़मींदारों को कर अदा करने को कहा।

परंतु इस सतही विश्लेषण की अपेक्षा हमें गांधीजी की वैचारिक पृष्ठभूमि के आधार पर तथा तत्कालीन परिस्थितियों के आलोक में आंदोलन वापसी हेतु निम्नलिखित कारणों को उत्तरदायी ठहराना अधिक युक्तिसंगत होगा –

- 1) गांधीजी, अहिंसा को लेकर एक तार्किक सोच रखते थे। उनके अनुसार हिंसक आंदोलन को सरकार आसानी से कुचल देगी।
- 2) चौरी-चौरा कांड से पूर्व ही कार्यक्रम में जन-भागीदारी घटती जा रही थी, ऐसे में जनांदोलन कमजोर हो रहा था।
- 3) कोई भी जन-आंदोलन लगातार नहीं चल सकता है। चूँकि यह आंदोलन एक वर्ष से अधिक समय से चल रहा था, ऐसे में जनता लंबे समय तक पूर्ण ऊर्जा के साथ आंदोलन से जुड़ी नहीं रह सकती थी
- 4) यह आक्षेप कि 'आंदोलन की बागडोर अब लड़ाकू ताकतों के हाथ में चली गई थी' का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं मिलता है।

6) Return of movement

After the Chauri-Chaura incident, the non-cooperation movement was suddenly withdrawn, criticizing which some historians have described Gandhiji as a supporter of bourgeois interests. According to his objection, the main reason for the withdrawal of the movement was :-

- 1) Gandhiji saw the leadership of the non-cooperation movement passing out of his hands and passing into the hands of the fighting forces.
- 2) Gandhiji wanted the interest of the zamindars, that is why he asked the farmers to pay taxes to the zamindars in the Bardoli resolution.

But instead of this superficial analysis, it would be more reasonable for us to attribute the following reasons for the withdrawal of the movement on the basis of Gandhiji's ideological background and in the light of circumstances.–

- 1) Gandhiji had logical view of non-violence. According to him the govt will easily crush the violent movement.
- 2) Even before the Chauri-Chaura incident, public participation in program was decreasing, so the mass movement was weakening.
- 3) No mass movement can go on continuously. Since this movement had been going on for more than a year, the public could not engage with the movement with full energy for long.
- 4) There is no clear evidence of the assertion that 'the reins of the movement had now passed into the hands of the fighting forces'.

7) आंदोलन की समीक्षा

तात्कालिक रूप से असहयोग आंदोलन निश्चित रूप से अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में असमर्थ रहा फिर भी इस आंदोलन की राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

- 1) भारतीयों ने एकजुट होकर राजनीतिक संघर्ष किया
- 2) महिलाओं तथा समाज के अन्य वर्गों की भागीदारी से राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया
- 3) जनमानस में साम्राज्यवादी सत्ता के विरुद्ध, निर्भीकता एवं उत्साह
- 4) स्वदेशी वस्तुओं के प्रति लगाव से कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन
- 5) साम्राज्यवादी सत्ता की अजेयता के सिद्धांत को इस आंदोलन ने तोड़ दिया
- 6) असहयोग आंदोलन ने मुसलमानों की भागीदारी को बढ़ाया, किंतु आगामी वर्षों में साम्प्रदायिक सौहार्द्र को बनाए न रखा जा सका

7) Evaluation of movement

The immediate non-cooperation movement was unable to achieve its objective, yet this movement played an important role in the national movement.

- 1) Indians fought a political struggle unitedly
- 2) With the participation of women and other sections of the society, the national movement was given the form of a mass movement.
- 3) Fearlessness and enthusiasm in public against imperial power
- 4) Promotion of cottage industries by attachment to indigenous goods
- 5) This movement broke the principle of invincibility of imperial power.
- 6) The non-cooperation movement increased the participation of the Muslims, but the communal harmony could not be maintained in the coming years.

10.6) स्वराज पार्टी, 1923

3) कांग्रेस का दिल्ली अधिवेशन 1923



10.6) Swaraj Party, 1923

3) Delhi session of Congress 1923



परिचय

- 1) **स्थापना :-** मार्च 1923 (इलाहाबाद)
- 2) **संस्थापक :-** चितरंजन दास (अध्यक्ष) और मोतीलाल नेहरू (महासचिव)
- 3) **सदस्य :-** श्रीनिवास आयंगर (मद्रास प्रांत स्वराज पार्टी), एन. सी. केलकर, विठ्ठलभाई पटेल (केंद्रीय विधानमंडल, अध्यक्ष)
- 4) **उद्देश्य :-** इस पार्टी का मुख्य उद्देश्य चुनावों के माध्यम से काउंसिलों में प्रवेश कर तथा उन्हें काम न करने देकर वर्ष 1919 के भारत शासन अधिनियम का उच्छेदन करना था



Introduction

- 1) **Establishment :-** March 1923 (Allahabad)
- 2) **Founder :-** Chittaranjan Das (President) and Motilal Nehru (Secretary General)
- 3) **Member :-** Srinivasa Iyengar (Madras Province Swaraj Party), N. C. Kelkar, Vithalbhai Patel (Central Legislature, Speaker)
- 4) **Objective :-** :- The main objective of this party is to abolish the Government of India Act of the year 1919 by entering the councils through elections and allowing them not to function.



1) पृष्ठभूमि व कारण

- 1) मार्च 1922 में गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद उपजी राजनीतिक शून्यता
- 2) विधान परिषद चुनावों में सम्मिलित होने पर कांग्रेस में दो गुटों का निर्माण

दो गुट

**परिवर्तनवादी (Pro-changers) - सी आर दास,
मोतीलाल नेहरू, विठ्ठल भाई पटेल**



- विधान परिषद में शामिल होकर सरकारी प्रस्तावों का विरोध
- सरकारी कार्य में बाधा उत्पन्न करना
- राजनीतिक शून्यता के दौर में राजनीतिक संघर्ष जारी रखना

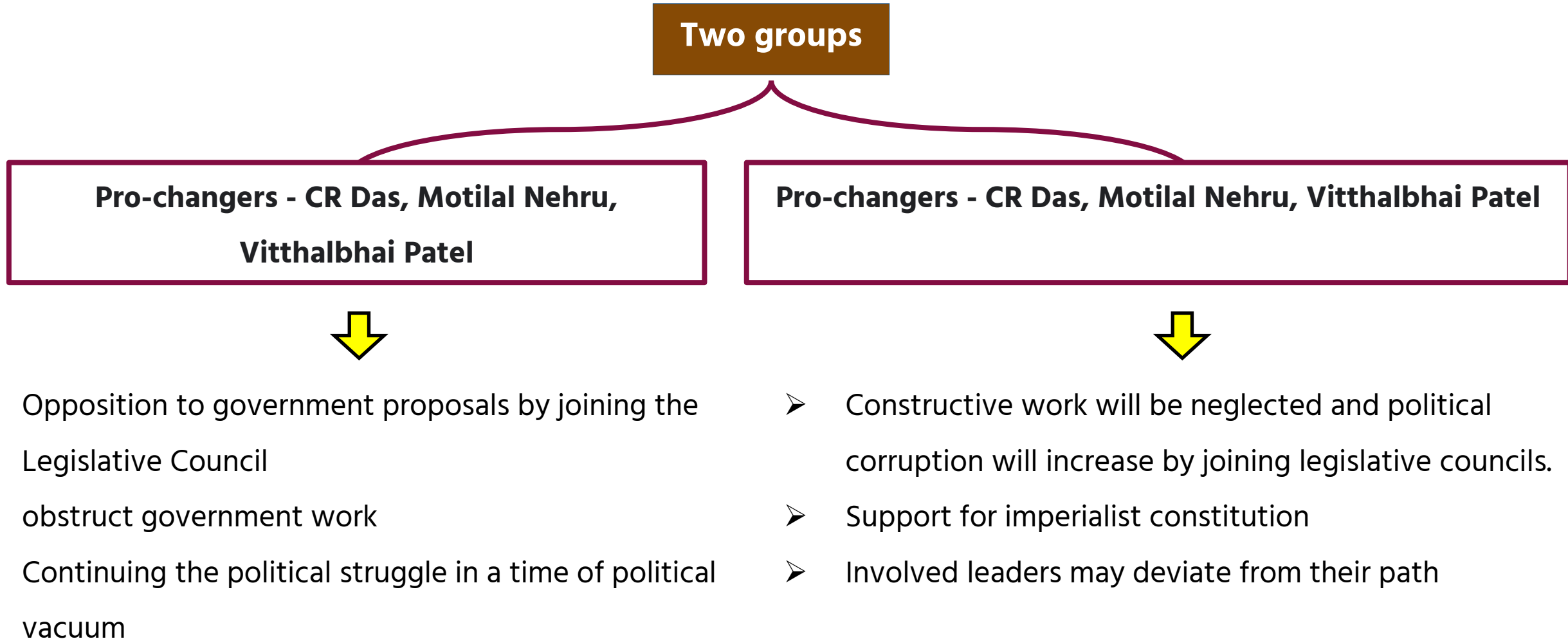
**No-changers - Dr. Rajendra Prasad, Vallabhbhai Patel,
C. Rajagopalachari, Dr. Ansari, Iyengar, NG Ranga**



- विधान परिषदों में शामिल होकर रचनात्मक कार्यों की उपेक्षा होगी और राजनीतिक भ्रष्टाचार में वृद्धि होगी
- साम्राज्यवादी संविधान को समर्थन मिलेगा
- शामिल नेता अपने मार्ग से भटक सकते हैं

1) Background and reasons

- 1) Political vacuum created after Gandhi's arrest in March 1922
- 2) Formation of two groups in Congress on participation in Legislative Council elections



- 3) परिवर्तनवादी नेताओं ने गया अधिवेशन (दिसम्बर, 1922) में इस नए कार्यक्रम से संबद्ध प्रस्ताव रखा। प्रस्ताव नामंजूर हुआ और सी. आर. दास- मोतीलाल नेहरू ने 1 जनवरी, 1923 को इलाहाबाद में स्वराज पार्टी की स्थापना की।
- 4) सितंबर 1923 में अबुल कलाम आजाद के अध्यक्षता में दिल्ली में कांग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया जिसमें कांग्रेस के सदस्यों को व्यक्तिगत स्तर पर चुनाव लड़ने की स्वतंत्रता प्रदान की गई ताकि कांग्रेस का विभाजन ना हो

2) उपलब्धियां

- 1) प्रान्तीय विधान परिषदों में मध्य प्रान्त में स्पष्ट बहुमत प्राप्त हुआ।
- 2) बंगाल में सबसे बड़े दल के रूप में उभरे
- 3) सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली की 101 निर्वाचित सीटों में से 42 सीटों पर इनकी जीत हुई।
- 4) इन्होंने 1919 ई. के अधिनियम की जांच हेतु मुड़ीमैन समिति नियुक्त कराई।
- 5) इसके अतिरिक्त कपास पर लगने वाले उत्पाद शुल्क की समाप्ति नमक कर में कटौती, श्रमिकों की स्थिति में सुधार तथा मजदूर संघों की सुरक्षा आदि महत्वपूर्ण कार्य किए।
- 6) पब्लिक सेफ्टी बिल तथा ट्रेड डिसप्यूट्स बिल को पारित नहीं होने दिया।
- 7) विठ्ठल भाई पटेल को सेन्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली का अध्यक्ष चुना गया
- 8) 1923-1924 ई. में स्थानीय निकायों के चुनाव में सफलता :- सी. आर. दास कोलकाता के मेयर, विठ्ठल भाई पटेल अहमदाबाद के, राजेन्द्र प्रसाद पटना के तथा जवाहरलाल नेहरू इलाहाबाद के मेयर चुने गए।

2) Achievements

- 3) The revolutionary leaders proposed new program in the Gaya session (December 1922). But it was rejected and C.R. Das-Motilal Nehru founded the Swaraj Party in Allahabad on January 1, 1923.
- 4) In September 1923, a special session of the Congress was called in Delhi under the chairmanship of Abul Kalam Azad, in which the members of the Congress were given freedom to contest elections at the individual level so that the Congress would not split.
- 1) In the provincial legislative councils, a clear majority was obtained in the Central Provinces.
- 2) emerged as the largest party in Bengal
- 3) He won 42 of the 101 elected seats of the Central Legislative Assembly.
- 4) He appointed Muddiman Committee to investigate the Act of 1919 AD.
- 5) Apart from this, the abolition of excise duty on cotton, reduction in salt tax, improvement in the condition of workers and protection of trade unions etc. did important work.
- 6) Public Safety Bill and Trade Disputes Bill were not allowed to be passed.
- 7) Vitthalbhai Patel was elected as the President of the Central Legislative Assembly
- 8) Success in the election of local bodies in 1923-1924 AD :- C.R. Das was elected Mayor of Kolkata, Vitthalbhai Patel of Ahmedabad, Rajendra Prasad of Patna and Jawaharlal Nehru as Mayor of Allahabad.

1923 ई. का चुनाव

केंद्रीय विधानमंडल | Central legislature –

101 निर्वाचित सीटों में से 42 पर जीत

प्रांतीय विधानमंडल | Provincial legislature -

मध्य प्रांत- स्पष्ट बहुमत बंगाल :- सबसे बड़ी पार्टी

संयुक्त प्रांत व असम :- दूसरी बड़ी पार्टी

पब्लिक सेफ्टी बिल (1928 ई.) पर सरकार की पराजय

विठ्ठलभाई पटेल को केंद्रीय विधानमंडल का अध्यक्ष बनवाने में सफलता

स्वराज
पार्टी की
सफलता

अवरोध नीति द्वारा विधान मंडलों का असली चरित्र उजागर किया गया

गोलमेज सम्मेलन का सुझाव दिया गया फलतः मुडीमैन आयोग का गठन

नगरपालिका व स्थानीय निकायों पर वर्चस्व (1923-24 ई.)

कोलकत्ता :- सी.आर.दास मेयर व सुभाषचंद्र बोस मुख्य कार्यकारी अधिशासी चुने गये

अहमदाबाद :- विठ्ठलभाई पटेल

पटना :- राजेद्र प्रसाद

इलाहबाद :- जवाहरलाल नेहरू नगरपालिका अध्यक्ष चुने गये

Election of 1923 AD

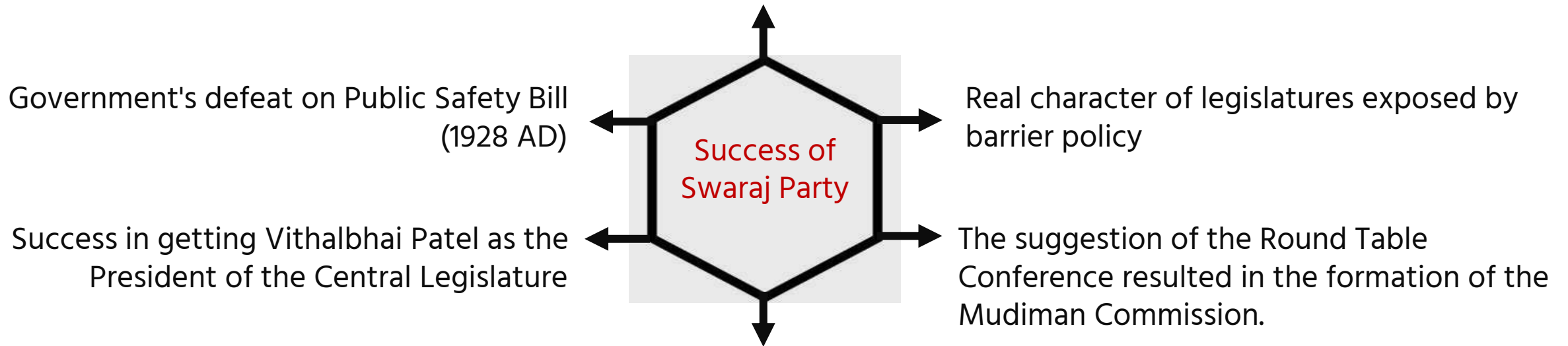
Central legislature –

Won 42 out of 101 elected seats

Provincial legislature -

Central Provinces - Clear majority Bengal: - Largest party

United Provinces and Assam: Second largest party



Supremacy over municipal and local bodies (1923-24 AD)

Kolkata :- CR Das Mayor and Subhash Chandra Bose were elected Chief Executive

Ahmedabad :- Vithalbhai Patel

Patna :- Rajendra Prasad

Allahabad :- Jawaharlal Nehru elected municipal president

3) कांग्रेस का दिल्ली अधिवेशन 1923

- 1) 1923 में मौलाना आजाद की अध्यक्षता में दिल्ली अधिवेशन में कांग्रेसी एकता को बनाए रखने हेतु समझौता वादी रुख अपनाया गया
- 2) इस अधिवेशन में कांग्रेस ने अपने सदस्यों को स्वराज पार्टी के अंतर्गत चुनावी प्रक्रिया में सम्मिलित होने की अनुमति प्रदान कर दी
- 3) इस विचार का अपना समर्थन विठ्ठल भाई पटेल एवं एमआर जयकर ने समर्थन किया

4) गांधी दास पैक्ट नवम्बर 1924

फरवरी 1924 में जेल से रिहा हुए गांधीजी ने नवम्बर 1924 में चितरंजन दास एवं मोतीलाल नेहरू से मिलकर एक संयुक्त वक्तव्य प्रस्तुत किया इसे गांधी-दास पैक्ट के नाम से जाना जाता है।

- 1) इस पैक्ट में विधानसभाओं के भीतर स्वराज पार्टी को कांग्रेस के नेतृत्व में तथा उसके अभिन्न अंग के रूप में कार्य करने का अधिकार दे दिया गया।
- 2) साथ ही असहयोग आंदोलन को अब राष्ट्रीय कार्यक्रम नहीं मानने का निर्णय लिया गया।
- 3) इसके अतिरिक्त, रचनात्मक कार्यक्रमों की ज़िम्मेदारी गांधीजी को सौंप दी गई।

इस पैक्ट के मुख्य प्रस्तावों को 1924 ई. में गांधी की अध्यक्षता में सम्पन्न बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन द्वारा स्वीकार कर लिया गया।

3) Delhi session of Congress 1923

- 1) In 1923, in the Delhi session under the chairmanship of Maulana Azad, a compromiseist approach was adopted to maintain the unity of the Congress.
- 2) In this session, the Congress allowed its members to participate in the electoral process under the Swaraj Party.
- 3) This idea was supported by Vitthal Bhai Patel and MR Jayakar.

4) Gandhi Das Pact November 1924

Gandhi, who was released from prison in February 1924, presented a joint statement in November 1924 with Chittaranjan Das and Motilal Nehru, which is known as the Gandhi-Das Pact.

- 1) In this pact, within the legislatures, the Swaraj Party was given the right to work under the leadership of the Congress and as an integral part of it.
- 2) At the same time, it was decided not to consider the non-cooperation movement as a national program.
- 3) In addition, the responsibility of constructive programs was handed over to Gandhiji.

The main proposals of this pact were accepted by the Belgaum Congress session held under the chairmanship of Gandhi in 1924 AD.

मुड्रीमैन समिति

ब्रिटिश सरकार ने 1924 ई. में सर अलेक्जेंडर मुड्रीमैन की अध्यक्षता में रिफॉर्म्स इन्क्वायरी समिति का गठन किया गया, जिसने अपनी रिपोर्ट 1925 ई. में प्रस्तुत की :-

- ‡ भारत सरकार अधिनियम, 1919 के तहत 1921 में लागू संविधान में **द्विशासन पद्धति की समीक्षा** करना था।
- ‡ **भारतीय सदस्य :-** सर शिवास्वामी अय्यर, आर. पी. परांजपे, तेजबहादुर सप्रू, मोहम्मद अली जिन्ना, बिजॉय चंद महताब
- ‡ इस समिति के सदस्यों में मतभेद होने के कारण रिपोर्ट को दो भागों में बाँटा गया- अल्पमत रिपोर्ट और बहुमत रिपोर्ट।
 - ❖ **बहुमत रिपोर्ट :-** यह रिपोर्ट अधिकारियों और राजभक्तों द्वारा तैयार की गई थी। इनका मानना था कि द्विशासन पद्धति को अभी पर्याप्त समय नहीं मिला है, अतः उन्होंने केवल छोटे-मोटे बदलावों की अनुशंसा की।
 - ❖ **अल्पमत रिपोर्ट :-** इस रिपोर्ट को गैर-शासकीय भारतीय सदस्यों द्वारा तैयार किया गया था। इनका मानना था कि 1919 का भारत सरकार अधिनियम अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में असफल सिद्ध हुआ है।
- ‡ दोनों रिपोर्ट द्वारा संयुक्त रूप से शाही आयोग (रॉयल कमीशन) की नियुक्ति की सिफारिश की गई।

Muddiman committee

The British Government constituted the Reforms Inquiry Committee under the chairmanship of Sir Alexander Muddiman in 1924 AD, which presented its report in 1925 AD. :-

- ‡ Under the Government of India Act, 1919, the Constitution, enacted in 1921, had to review the system of dyarchy.
- ‡ **Indian Members** :- Sir Shivaswami Iyer, R. P. Paranjpe, Tej Bahadur Sapru, Mohammad Ali Jinnah, Bijoy Chand Mahtab
- ‡ Due to differences of opinion among the members of this committee, the report was divided into two parts – Minority Report and Majority Report.
 - ❖ **Majority report** :- This report was prepared by officials and royalists. They believed that the bicameral system had not yet got enough time, so they recommended only minor changes.
 - ❖ **Minority report** :- This report was prepared by non-official Indian members. They believed that the Government of India Act of 1919 has proved unsuccessful in achieving its goal.
- ‡ The two reports jointly recommended the appointment of a royal commission.

5) स्वराज आन्दोलन का पतन

- 1) सत्ता के पद के प्रति लोलुपता(अवरोध की बजाय सहयोग नीति का अनुसरण)
- 2) जून 1925 में सी आर दास का निधन
- 3) सांप्रदायिकता का उत्थान
- 4) 1926 के चुनावों में अपेक्षित सफलता का ना मिलना
- 5) सविनय अवज्ञा आंदोलन 1930 के कारण विधानमंडल का बहिष्कार

इस प्रकार असहयोग आंदोलन के उपरांत जब राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में कांग्रेस का महत्व कम हो गया था तब स्वराज पार्टी ने ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध संघर्ष जारी रखा वस्तुतः इन्हीं की मांगों का यह परिणाम था कि भारत में उत्तरदाई शासन की स्थापना हेतु लंदन में तीन गोलमेज सम्मेलनों का आयोजन किया गया

5) Decline of Swaraj Movement

- 1) Greediness for positions of power (following a policy of cooperation rather than inhibition)
- 2) C R Das died in June 1925.
- 3) Rise of communalism
- 4) Failure of expected success in 1926 elections
- 5) Boycott of Legislature due to Civil Disobedience Movement 1930

Thus, after the non-cooperation movement, when the importance of the Congress in the national independence movement had diminished, the Swaraj Party continued to struggle against the British government as a result of which three Round Table Conferences were organized in London for the establishment of responsible governance in India.

10.7) 1922-27 के दौरान की अन्य गतिविधियां

1) अखिल भारतीय मुस्लिम लीग :-

- ♀ 1924 ई. में तुर्की में मुस्तफा कमालपाशा के नेतृत्व में खलीफा के पद को समाप्त करने की घोषणा के साथ ही भारत में खिलाफत समिति ने कार्य करना बंद कर दिया।
- ♀ फलतः 1924 ई. में ही अखिल भारतीय मुस्लिम लीग का पुनरुत्थान हुआ तथा मुहम्मद अली जिन्ना इस लीग के प्रमुख नेता बनकर उभरे।

2) हिंदू महासभा :-

- ♀ हिंदू महासभा की स्थापना पंडित मदनमोहन मालवीय द्वारा 1915 ई. में हरिद्वार में की गई।
- ♀ कासिम बाज़ार के महाराजा की अध्यक्षता में महासभा का प्रथम सम्मेलन आयोजित किया गया।

- ♀ 1924 ई. में मदनमोहन मालवीय के अध्यक्ष बनने के पश्चात् यह दल अधिक प्रभावी बनकर उभरा।

3) 'यूनियनिस्ट पार्टी' :-

- ♀ इस पार्टी की स्थापना पंजाब के भू-स्वामी वर्गों के हितों की रक्षा हेतु की गई थी।
- ♀ इस पार्टी ने 1937 ई. के चुनावों के पश्चात् मुस्लिम लीग के साथ मिलकर मिली-जुली सरकार (गठबंधन सरकार) बनाई।

4) अकाली आंदोलन :-

- ♀ अकाली आंदोलन का उद्देश्य गुरुद्वारों को अंग्रेज़ समर्थक एवं भ्रष्ट आनुवंशिक महंतों के प्रभाव से मुक्त करना था।

10.7) Other activities during 1922-27

1) All India Muslim League :-:-

- ♀ In 1924 AD, with the announcement of abolishing the post of Caliph under the leadership of Mustafa Kamalpasha in Turkey, the Khilafat Committee in India stopped functioning.
- ♀ As a result, there was a revival of the All-India Muslim League in 1924 itself and Muhammad Ali Jinnah emerged as the main leader of this league.

2) Hindu Mahasabha :-

- ♀ Hindu Mahasabha was founded by Pandit Madan Mohan Malviya in 1915 AD in Haridwar.
- ♀ The first conference of General Assembly was held under the chairmanship of Maharaja of Qasim Bazar.

- ♀ In 1924, after Madan Mohan Malviya became the president, this party emerged as more effective.

3) 'Unionist Party :-:-

- ♀ This party was established to protect the interests of the land-owning classes of Punjab.
- ♀ This party formed a coalition government (coalition government) with the Muslim League after the elections of 1937 AD.)

4) Akali Movement :-:-

- ♀ The aim of the Akali movement was to free the Gurdwaras from the influence of pro-British and corrupt hereditary mahants.

- ♀ ब्रिटिश सरकार में भय उत्पन्न कर दिया कि कहीं इस आंदोलन से ब्रिटिश सेना में कार्यरत सिख में असंतोष उत्पन्न ना हो जाए
- ♀ 1925 में एक विधेयक पारित करके शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति की स्थापना :- पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के चुनाव का अधिकार सिख समुदाय के व्यक्तियों को ही सौंप दिया गया

5) वलसाड आंदोलन :-

- ♀ यह आंदोलन **गुजरात के खेड़ा जिले के वलसाड** नगर में डकैतों से रक्षा करने हेतु पुलिस द्वारा प्रत्येक वयस्क पर रुपये 7 आने का कर लगाने के विरुद्ध
- ♀ 1923 ई. में गांधीवादी आंदोलन तथा अत्यधिक सामाजिक दबाव के कारण **सरकार द्वारा यह कर समाप्त कर** दिया गया।

6) नागपुर झंडा सत्याग्रह :-

- ♀ 1923 में सरकार ने स्थानीय आदेश द्वारा **नागपुर में कांग्रेस को अपने ध्वज के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा** दिया था, फलतः यह सत्याग्रह शुरू किया गया।
- ♀ गुजरात से आंदोलनकारियों के समूह सरकार पर दबाव बनाने के लिये नागपुर भेजे गए, जिससे सरकार समझौते के लिये बाध्य हो गई।

7) वायकोम सत्याग्रह :-

- ♀ यह सत्याग्रह टी.के. माधवन, के.के. केलप्पन तथा के. पी. केशव मेनन के नेतृत्व में किया गया।
- ♀ गांधीजी द्वारा भी 1925 में वायकोम का दौरा किया गया।
- ♀ **उद्देश्य :-** श्रमिक निम्न जातियों (एझवाओं) एवं अछूतों द्वारा गांधीवादी तरीके से त्रावणकोर (केरल) के मंदिर प्रवेश

- ♀ Created fear in the British government that this movement should not cause discontent among the Sikhs working in the British army.
- ♀ Establishment of Shiromani Gurdwara Parbandhak Committee by passing a bill in 1925 :- The right of election of office bearers and workers was handed over to the persons of Sikh community only.

5) Valsad Movement :-:-

- ♀ This movement was against the imposition of a tax of Rs 7 per adult by the police in Valsad town of **Kheda district of Gujarat** to protect them from dacoits.
- ♀ **In 1923 AD, this tax was abolished by the government** due to Gandhian movement and extreme social pressure.

6) Nagpur Flag Satyagraha :-

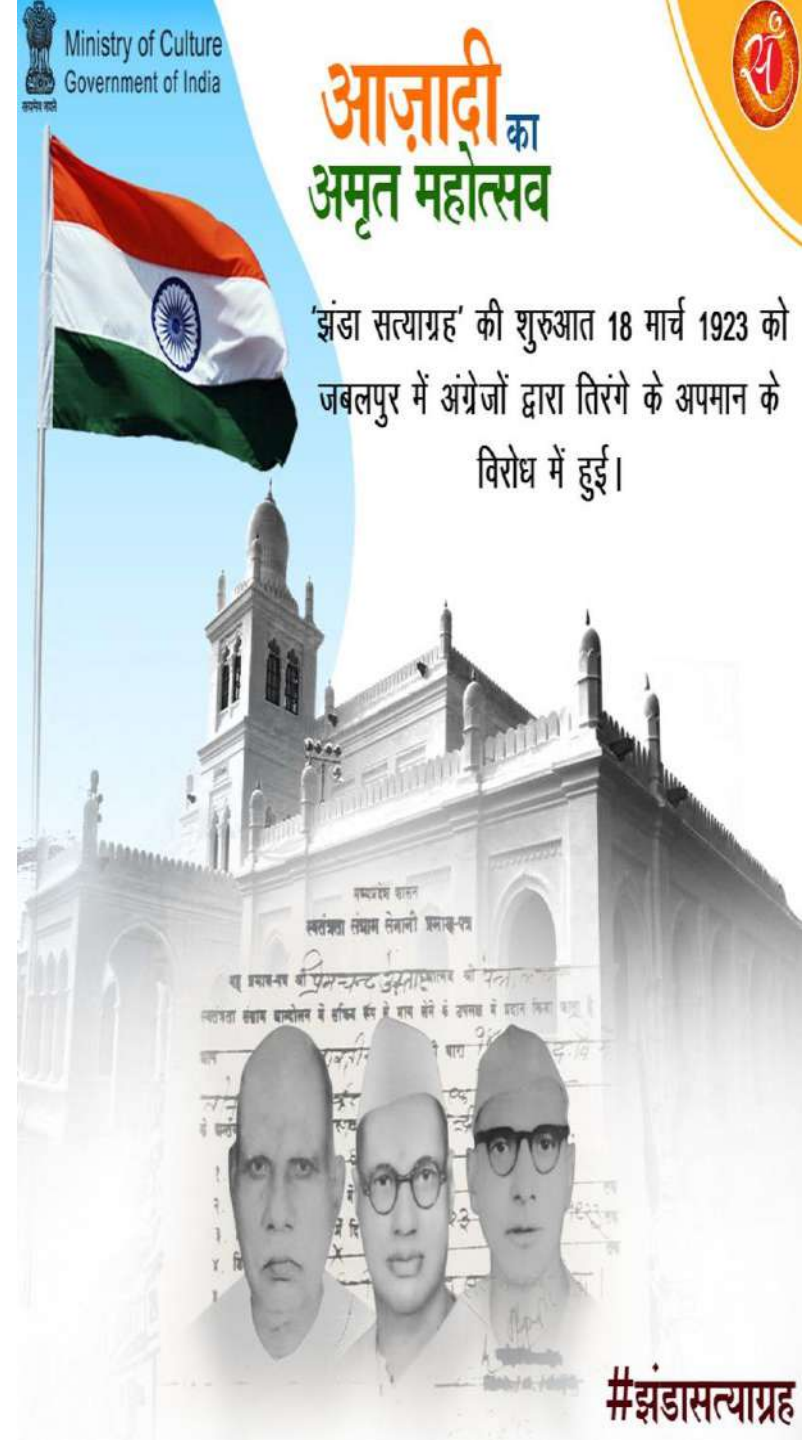
- ♀ In 1923, the government by local order banned the Congress from using its flag in Nagpur, as a result of which this satyagraha was started.
- ♀ Groups of agitators from Gujarat were sent to Nagpur to put pressure on the government, forcing the government to compromise.

7) Vaikom Satyagraha :-

- ♀ This Satyagraha Madhavan, K.K. Kelappan and K. Led by P. Keshav Menon.
- ♀ Gandhiji also visited Vaikom in 1925.
- ♀ **Objective :-** Gandhian temple entry in Travancore (Kerala) by laboring lower castes (Ezhavas) and untouchables

8) जबलपुर झंडा सत्याग्रह :-

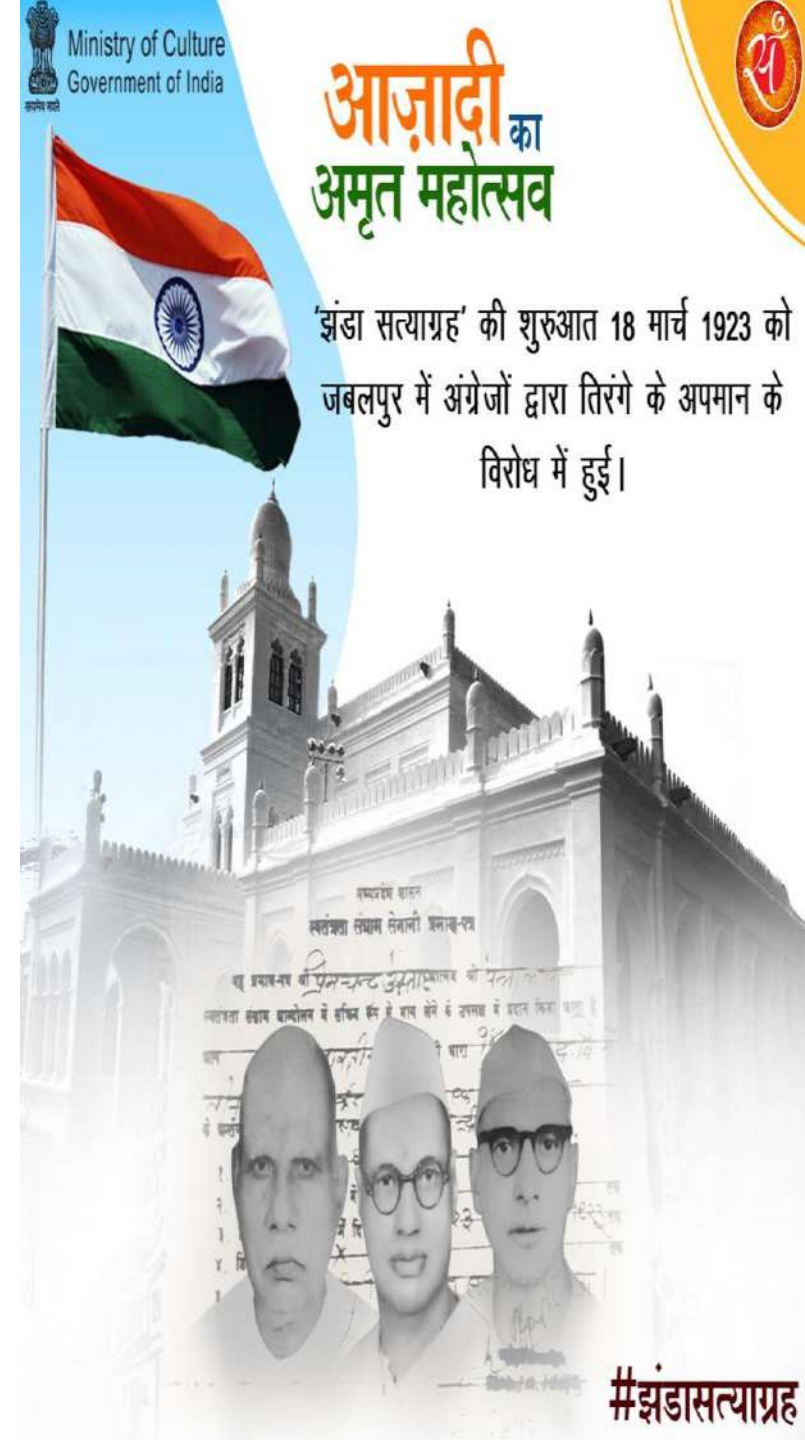
- ♀ झंडा सत्याग्रह एक शांतिपूर्ण नागरिक अवज्ञा आंदोलन था जिसमें लोग राष्ट्रीय झंडा फहराने के अपने अधिकार के तहत जगह-जगह झंडा फहरा रहे थे
- ♀ इतिहासविदों के अनुसार आज़ादी के लिये झंडा आंदोलन की शुरुआत ही जबलपुर से हुई थी। यहाँ आज़ादी के लिये जुनून ऐसा था कि जेल में तिरंगे के लिये लाल रंग नहीं मिला तो नौजवानों ने अपना लहू निकालकर उससे केसरिया रंग बना लिया।
- ♀ 1923 में डॉ. राजेंद्र प्रसाद, राजगोपालाचारी, जमनालाल बजाज, देवदास गांधी समेत कॉन्ग्रेस समिति के अन्य पदाधिकारी जबलपुर आए।
- ♀ म्युनिसिपल कमेटी के अध्यक्ष कुशलचंद्र जैन ने डिप्टी कमिश्नर हैमिल्टन से टाउनहाल (वर्तमान गांधी भवन) के ऊपर झंडा फहराने की अनुमति चाही, किंतु नहीं मिली।
- ♀ इससे उपजे असंतोष के बाद जनता ने आंदोलन प्रारंभ किया जिसे झंडा सत्याग्रह नाम दिया गया।
- ♀ इस समय नगर कॉन्ग्रेस कमेटी के अध्यक्ष पं. सुंदरलाल थे। यहाँ पर राष्ट्रीय झंडा फहराने के कारण सुंदरलाल को 6 माह की कारावास की सजा दी गई।



#झंडासत्याग्रह

8) Jabalpur Jhanda Satyagraha :-

- ♀ Jhanda Satyagraha was a peaceful civil disobedience movement in which people were hoisting flags from place to place as part of their right to fly the national flag.
- ♀ According to historians, flag movement for independence was started from Jabalpur. Here the passion for freedom was such that if red color was not found for the tricolor in jail, the youths took out their blood and made saffron color from it.
- ♀ In 1923, Dr. Rajendra Prasad, Rajagopalachari, Jamnalal Bajaj, Devdas Gandhi and other office bearers of the Congress Committee came to Jabalpur.
- ♀ Municipal Committee President Kushalchandra Jain sought permission from Deputy Commissioner Hamilton to hoist the flag above the Town Hall (present Gandhi Bhavan) but did not get it.
- ♀ After this discontent, people started movement called Jhanda Satyagraha.
- ♀ At this time President of City Congress Committee was Pt. Sunderlal who was sentenced to 6 months imprisonment for hoisting the national flag



**तारकेश्वर आंदोलन 1924 :-
बंगाल में भ्रष्ट महंत के विरुद्ध
स्वामी विश्वानंद द्वारा**

**इस काल के कुछ
अन्य आंदोलन**

**पंजाब (1922-23) :- गुरु का बाग
सत्याग्रह**

**वलसाड (1923-24) :- प्रत्येक
वयस्क पर रुपये 7 आने का कर
लगाने के विरुद्ध**

**Tarakeswar Movement
1924 :- By Swami
Vishwananda against the
corrupt Mahant in Bengal**

**Some other
movements
of this period**

**Punjab (1922-23) :- Guru
Ka Bagh Satyagraha**

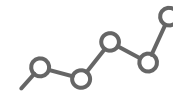
**Valsad (1923-24) :- Against
the imposition of tax of 7
annas on every adult**

10.8) साइमन कमीशन (1927)



2) भारतीय प्रतिक्रिया

1) परिचय व पृष्ठभूमि



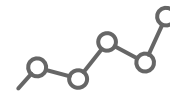
3) मुख्य सिफारिशें

10.8) Simon Commission (1927)



2) Indian reaction

1) Introduction and Background



3) Major Recommendations

1) परिचय व पृष्ठभूमि

- 1) 1919 के भारत शासन अधिनियम में 10 वर्षों के पश्चात अधिनियम की समीक्षा हेतु एक आयोग के गठन का प्रावधान था, परन्तु ब्रिटिश चुनावों के कारण **8 वर्ष पहले 1927** में गठन

2) आयोग का परिचय :-

- ♀ तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री स्टेनली बाल्डविन (कंजरवेटिव पार्टी) द्वारा 8 नवंबर 1927 में गठित सात सदस्यीय आयोग (इंडियन स्टेचुटरी कमीशन)
- ♀ **अध्यक्ष :-** जॉन साइमन (लेबर पार्टी)
- ♀ लॉर्ड इरविन की सिफारिश पर **सारे 7 सदस्य ब्रिटिश :-** चूंकि इस आयोग में कोई भारतीय नहीं था अतः इसे **श्वेत कमीशन** कहकर विरोध किया गया

3) साइमन कमीशन के उद्देश्य :-

- ♀ 1919 के भारत शासन अधिनियम की समीक्षा
- ♀ उत्तरदायी सरकार की प्रगति की दिशा में किये गए कार्यों की समीक्षा
- ♀ भारतीयों को और कितने तथा किस स्वरूप में संवैधानिक अधिकार दिए जाएं

1. जॉन साइमन (लिबरल पार्टी)
2. बाथम (कंजरवेटिव पार्टी)
3. स्ट्रेथ कोना (कंजरवेटिव पार्टी)
4. लेन फोक्स (कंजरवेटिव)
5. कैडेगन (कंजरवेटिव पार्टी)
6. एटली (लेबर पार्टी)
7. बर्नोन हार्ट शोन (लेबर पार्टी)

1) Introduction and Background

- 1) In the Government of India Act of 1919, there was a provision for the formation of a commission to review the Act after 10 years, but due to the British elections, it was formed **8 years ago in 1927**.

2) Introduction to Commission :-

- ♀ Seven-member commission (Indian Statutory Commission) constituted on 8 November 1927 by the contemporary British Prime Minister Stanley Baldwin (Conservative Party)
- ♀ **President :-** John Simon (Labor Party)
- ♀ **All 7 members British on the recommendation of Lord Irwin :-** Since there was no Indian in this commission, it was opposed by calling it a white commission.

3) Objectives of Simon Commission :-

- ♀ Review of the Government of India Act of 1919
- ♀ Review of the work done towards the progress of the responsible government
- ♀ How many and in what form should constitutional rights be given to Indians

1. John Simon (Liberal Party)
2. Batham (Conservative Party)
3. Strath Kona (Conservative Party)
4. Lane Fox (Conservative)
5. Cadogan (Conservative Party)
6. Atlee (Labor Party)
7. Bernon Hart Schon (Labor Party)

2) भारतीय प्रतिक्रिया

1) भारत में विरोध के कारण :-

- ♀ समय से 2 वर्ष पूर्व गठन
- ♀ समिति में कोई भारतीय नहीं
- ♀ सभी सदस्य ब्रिटिश
- ♀ भारतीय संविधान निर्माता भारतीय नहीं थे
- ♀ स्वराज हेतु आवश्यक योग्यता

2) प्रतिक्रिया :-

- ♀ मुहम्मद शफी वाली मुस्लिम लीग, जस्टिस पार्टी(मद्रास), यूनियनिष्ट पार्टी(पंजाब), डिप्रेस्ड क्लास एसोसिएशन, अखिल भारतीय अछूत संगठन के अलावा **कांग्रेस, जिन्ना गुट वाली मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, किसान मजदूर पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी** आदि द्वारा साइमन कमीशन का बहिष्कार

- ♀ कांग्रेस ने 'हर चरण में और हर रूप में' आयोग के बहिष्कार का निर्णय **डॉ अंसारी की अध्यक्षता वाले 1927 के मद्रास अधिवेशन** में लिया
- ♀ 3 फरवरी 1928 को आयोग मुंबई पहुंचा - **साइमन गो बैक के नारे, काले झंडे व हड़ताल**
- ♀ लखनऊ में जवाहरलाल नेहरू व गोविंद वल्लभ पंत द्वारा विरोध
- ♀ लाहौर में लाला लाजपत राय द्वारा विरोध। पुलिस के लाठीचार्ज के कारण लाला लाजपत राय की दिसंबर 1928 में मृत्यु हो गयी। इस दौरान लाला लाजपत राय ने कहा था कि **"मेरे ऊपर लाठियों से किया गया एक एक प्रहार एक दिन ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत की आखिरी कील साबित होगी"**

2) Indian reaction

1) Reasons for protest in India :-

- ♀ Formation 2 years ahead of time
- ♀ No Indian in the committee
- ♀ All members British
- ♀ Indian constitution makers were not Indians
- ♀ Essential Qualification for Swaraj

2) Reaction :-

- ♀ Simon Commission by Muhammad Shafi Muslim League, Justice Party (Madras), Unionist Party (Punjab), Depressed Class Association, All India Untouchable Organization, Congress, Jinnah faction Muslim League, Hindu Mahasabha, Kisan Mazdoor Party, Communist Party etc. boycotted simon commission

- ♀ The Congress decided to boycott the commission 'at every stage and in every form' in the Madras session of 1927 presided over by Dr. Ansari.
- ♀ Commission reached Mumbai on 3 February 1928 - Simon go back slogans, black flags and strike
- ♀ Protest by Jawaharlal Nehru and Govind Vallabh Pant in Lucknow
- ♀ Protest by Lala Lajpat Rai in Lahore. Lala Lajpat Rai died in December 1928 due to police lathi charge. During this, Lala Lajpat Rai had said that "**every single blow on me with sticks will one day prove to be the last nail in the coffin of the British Empire**".

3) आयोग की मुख्य सिफारिशें



- 1) द्वैध शासन को समाप्त करने तथा प्रांतों को स्वायत्तता सौंपने की सिफारिश की
- 2) गवर्नर जनरल एवं गवर्नरों के अधिकारों को बढ़ाने का सुझाव दिया गया
- 3) केंद्र में भारतीयों को कोई भी उत्तरदायित्व न दिया जाए
- 4) संघीय संविधान निर्मित किया जाए तथा केंद्रीय विधान मंडल को पुनर्गठित किया जाए
- 5) उच्च न्यायालय को भारत सरकार के नियंत्रण में लाने के लिये सुझाव
- 6) प्रांतीय विधानमंडल की सदस्य संख्या का विस्तार किया जाए।
- 7) अल्पसंख्यक जातियों के हितों के प्रति गवर्नर-जनरल से विशेष ध्यान देने को कहा गया।
- 8) मताधिकार का विस्तार कर इसकी वर्तमान सीमा 2.8% से बढ़ाकर 10 से 15 प्रतिशत तक करने की बात कही गई
- 9) प्रत्येक 10 वर्ष के पश्चात् पुनरीक्षण आयोग की नियुक्ति की व्यवस्था को समाप्त किया जाए।
- 10) केंद्रीय विधानमंडल का पुनर्गठन करने, बर्मा को भारत से और सिंध को बम्बई से अलग करने, उड़ीसा को अलग प्रांत बनाने, सेना के भारतीयकरण करने, भारत परिषद को बनाये रखते हुए उसके अधिकारों में कमी करने की सिफारिश साइमन कमीशन ने की

इस रिपोर्ट में स्वराज्य के बारे में एक शब्द भी नहीं था, बल्कि भारतीयों को उत्तरदायी शासन हेतु अयोग्य करार दिया गया।

परिणामस्वरूप उपजे विरोध से विभिन्न दलों के पारस्परिक मतभेद कम हुए तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन हेतु सशक्त आधार तैयार हुआ

3) Major Recommendations of the Commission

- 1) Recommended to end the diarchy and hand over autonomy to the provinces
- 2) Suggested to increase the powers of Governor General and Governors
- 3) Indians should not be given any responsibility at the center
- 4) Create a federal constitution and reorganize the central legislature
- 5) Suggestions for bringing the High Court under the control of the Government of India
- 6) The number of members of the provincial legislature should be expanded.
- 7) The Governor-General was asked to pay special attention to the interests of the minority castes.
- 8) By expanding the franchise, it was said to increase its limit from 2.8% to 10 to 15 percent.
- 9) The system of appointment of Revision Commission after every 10 years should be abolished.
- 10) Simon Commission recommended to reconstitute the Central Legislature, separate Burma from India and Sindh from Bombay, make Orissa a separate province, Indianize the army, maintain the Council of India and reduce its powers.



In this report there was not a word about Swarajya, but Indians were declared unfit for responsible governance. As a result of the opposition, the mutual differences of various parties were reduced, and a strong basis was prepared for the civil disobedience movement.

- कथन :-** <
- **कुपलैंड** - पुस्तकालय हेतु **"एक अन्य श्रेष्ठ रचना"**
 - **शिवस्वामी अय्यर** - रद्दी की टोकरी में फेकने लायक

- ♀ रिपोर्ट पर विचार-विमर्श करने हेतु लंदन में तीन गोलमेज सम्मेलन आयोजित किये गए
- ♀ 1935 के भारत शासन अधिनियम पर प्रभाव
- ♀ मोतीलाल नेहरू द्वारा नेहरू रिपोर्ट



- Statement :-** 
- **Coupland** - "Another great work" for the library
 - **Shivaswamy Iyer** - Should be thrown on a heap of rubbish

- ♀ Three Round Table Conferences were held in London to discuss the report
- ♀ Effect on the Government of India Act of 1935
- ♀ Nehru Report by Motilal Nehru

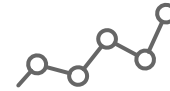


10.9) नेहरू रिपोर्ट 1928



2) मुख्य सिफारिशें

1) पृष्ठभूमि व परिचय



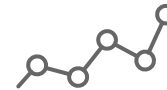
3) आगामी घटनाक्रम

10.9) Nehru Report 1928



2) Major recommendations

1) Background and Introduction



3) Upcoming Events

1) पृष्ठभूमि व परिचय

- 1) भारत सचिव **लार्ड बर्केनहेड** ने 24 नवम्बर 1927 को भारतीयों को चुनौती दी कि वे स्वयं अपने लिए ऐसा संविधान तैयार करें जो सर्वमान्य हो
- 2) कांग्रेस ने चुनौती स्वीकार करते हुए 28 फरवरी 1928 को दिल्ली में सर्वदलीय सम्मेलन बुलाया, जिसमें 29 दलों ने भाग लिया।
- 3) **मई 1928 में मुंबई में डॉ अंसारी** की अध्यक्षता में दूसरा सर्वदलीय सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसमें मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक कमेटी का गठन किया गया, जिसे भारत के संविधान का एक मसौदा (प्रारूप) तैयार करना था

NOTE

नेहरू कमेटी के सदस्य

- ‡ पंडित मोतीलाल नेहरू (अध्यक्ष)
- ‡ जवाहरलाल नेहरू (सचिव)
- ‡ तेज बहादुर सप्रू (लिबरल फेडरेशन)
- ‡ एन एम जोशी (लेबर पार्टी)
- ‡ सुभाष चंद्र बोस (कांग्रेस)
- ‡ एम आर जयकर (हिन्दू महासभा बाद में अपना नाम वापस ले लिया था)
- ‡ अली इमाम (मुस्लिम लीग)
- ‡ शोएब कुरैशी (मुस्लिम लीग)
- ‡ मंगल सिंह सिंध (सिख)
- ‡ जी पी प्रधान (गैर ब्राह्मण)



1) Background and Introduction

- 1) The Secretary of India, **Lord Birkenhead**, challenged the Indians on 24 November 1927 to prepare a constitution for themselves which would be universally accepted.
- 2) The Congress accepted the challenge and called an all-party conference in Delhi on 28 February 1928, in which 29 parties participated.
- 3) **In May 1928**, the second all-party conference was held in Mumbai under the chairmanship of **Dr. Ansari**, in which a committee was formed under the chairmanship of Motilal Nehru, which was to prepare a draft of the Constitution of India.

NOTE

Nehru committee member

- ‡ Pandit Motilal Nehru (President)
- ‡ Jawaharlal Nehru (Secretary)
- ‡ Tej Bahadur Sapru (Liberal Federation)
- ‡ N M Joshi (Labor Party)
- ‡ Subhas Chandra Bose (Congress)
- ‡ MR Jayakar (Hindu Mahasabha later withdrew his name)
- ‡ Ali Imam (Muslim League)
- ‡ Shoaib Qureshi (Muslim League)
- ‡ Mangal Singh Sindh (Sikh)
- ‡ GP Pradhan (Non Brahmin)



2) मुख्य सिफारिशें

मोतीलाल नेहरू व तेज बहादुर सप्रू द्वारा रिपोर्ट का प्रारूप किया गया, जिसे **10 अगस्त 1928** को प्रस्तुत किया गया :-

- 1) भारत को अधिराज्य का दर्जा (डोमिनियन पद) दिया जाय
- 2) भारत एक संघ होगा जिसके अधीन केन्द्र में द्विसदनीय विधानमण्डल होगा।
- 3) मन्त्रिमण्डल इस सदन के प्रति उत्तरदायी होगा।
- 4) प्रान्तों में द्वैध शासन नहीं होगा।
- 5) गवर्नर जनरल केवल संवैधानिक प्रमुख होगा जिसकी शक्तियाँ ब्रिटिश शाही 'ताज' के समान होंगी।
- 6) साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धति नहीं होगी।
- 7) नागरिकता की परिभाषा दी गई तथा 19 मूल अधिकारों को प्रतिपादित किया गया।

- 8) एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की जाय जिसके अधिकार संसद द्वारा निर्धारित हों।
- 9) सार्वभौम वयस्क मताधिकार (21 वर्ष) की व्यवस्था की जाय।
- 10) सिंध को बम्बई प्रांत से अलग एक नया प्रान्त बनाने की सिफारिश की गई।
- 11) भाषाई आधार पर प्रान्तों के गठन की सिफारिश की गई।
- 12) देशी रियासतों के नरेशों के अधिकारों की रक्षा का आश्वासन।

नेहरू रिपोर्ट का भारतीय संवैधानिक इतिहास में विशेष महत्व है। नेहरू रिपोर्ट स्वतन्त्र भारत के संविधान की पूर्वगामी प्रमाणित हुई। इसी कारण अनेक इतिहासकारों ने नेहरू रिपोर्ट को वर्तमान संविधान का 'ब्लू प्रिंट' माना है

2) Major recommendations

The report was drafted by Motilal Nehru and Tej Bahadur Sapru, which was submitted on **10 August 1928**. :-

- 1) India should be given dominion status
- 2) India will be a union under which there will be a bicameral legislature at the centre.
- 3) The cabinet will be responsible to this house.
- 4) There will be no diarchy in the provinces.
- 5) The Governor General would be the only constitutional head with powers similar to those of the British imperial 'crown'.
- 6) There will be no communal election system.
- 7) Citizenship was defined and 19 fundamental rights were propounded.

- 8) Establish a Supreme Court whose powers are determined by the Parliament.
- 9) Universal adult franchise (21 years) should be arranged.
- 10) Sindh was recommended to be carved out of the Bombay province as a new province.
- 11) The formation of provinces on linguistic basis was recommended.
- 12) Assurance to protect the rights of the princes of the princely states.

The Nehru Report has a special significance in the Indian constitutional history. The Nehru Report proved the foregoing of the Constitution of independent India. For this reason, many historians have considered the Nehru Report as the 'blueprint' of the present Constitution.

3) आगामी घटनाक्रम व मतभेद

- 1) 1928 के लखनऊ सर्वदलीय सम्मेलन में जिन्ना ने **नेहरू रिपोर्ट को अस्वीकार** कर दिया
- 2) जिन्ना मुसलमानों के लिए **केंद्रीय विधानमंडल** में एक तिहाई प्रतिनिधित्व की मांग कर रहे थे, जिसे कांग्रेस ने अस्वीकार कर दिया
- 3) युवा राष्ट्रवादी जैसे सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू और सत्यमूर्ति डोमनियन स्टेट की जगह पूर्ण स्वराज को कांग्रेस का लक्ष्य बनाना चाहते थे
- 4) नवंबर 1928 में सुभाषचंद्र बोस और जवाहर लाल नेहरू ने पूर्ण स्वराज की प्राप्ति हेतु **ऑल इंडिया इंडिपेंडेंस लीग** की स्थापना की
- 5) गाँधीजी ने सरकार को चेतावनी दी कि यदि एक वर्ष के भीतर **नेहरू रिपोर्ट के अनुसार डोमनियन स्टेट का दर्जा नहीं दिया गया, तो कांग्रेस पूर्ण स्वराज से कम किसी** प्रस्ताव पर समझौता नहीं करेगी

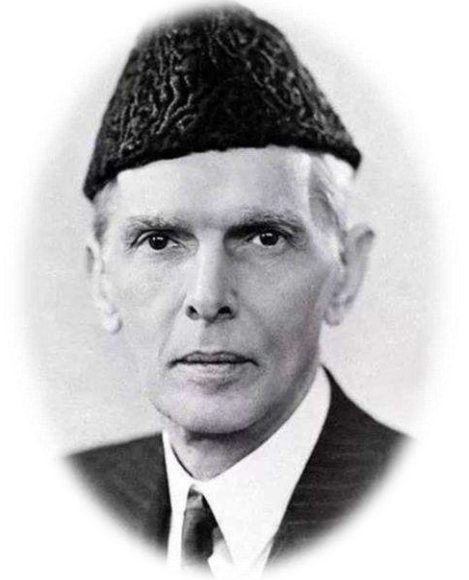
3) Upcoming events and differences

- 1) **Jinnah rejected the Nehru Report** at the Lucknow All-Party Conference of 1928
- 2) Jinnah was demanding one-third representation for Muslims in the Central Legislature, which was rejected by the Congress.
- 3) Young nationalists like Subhas Chandra Bose, Jawaharlal Nehru and Satyamurti wanted Purna Swaraj as the goal of the Congress instead of Dominion State.
- 4) In November 1928, Subhas Chandra Bose and Jawaharlal Nehru founded the **All-India Independence** League for the attainment of Purna Swaraj.
- 5) Gandhiji warned the government that if **the Dominion State status was not granted as per the Nehru Report within a year, the Congress would not settle for anything less than Purna Swaraj.**

10.10) जिन्ना का 14 सूत्री फॉर्मूला

नेहरू रिपोर्ट के विरोध में मुहम्मद अली जिन्ना ने **मार्च 1929** में अपनी रिपोर्ट दी, जिसमें निम्नलिखित **14 शर्तें** :-

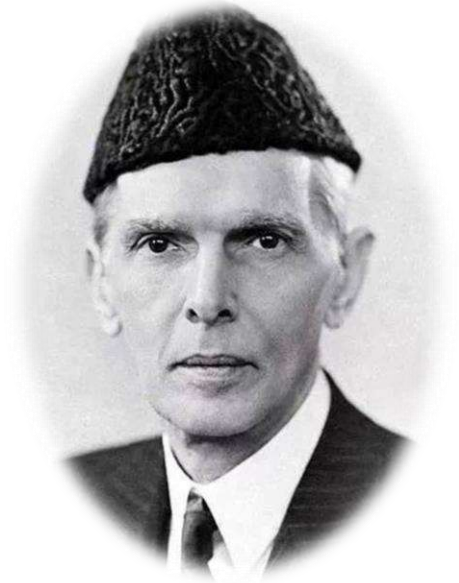
- 1) भारतीय संविधान परिसंघात्मक हो तथा अवशिष्ट शक्तियाँ प्रांतों को दी जायें।
- 2) सभी प्रांतों को एक समान स्वायत्तता हो।
- 3) सभी विधान मंडलों तथा निर्वाचित निकायों में अल्पसंख्यकों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व हो ।
- 4) केन्द्रीय विधानमंडल में मुसलमानों का प्रतिनिधित्व **एक-तिहाई से कम न** हो।
- 5) केन्द्रीय तथा प्रांतीय **मंत्रिमंडलों** में मुसलमानों को कम से कम एक-तिहाई प्रतिनिधित्व मिले।
- 6) राज्य की सभी सेवाओं तथा स्थानीय निकायों में **मुसलमानों के लिए स्थान आरक्षित** हों।
- 7) सांप्रदायिक समूहों के प्रतिनिधित्व हेतु **पृथक निर्वाचन मंडल** की व्यवस्था बनी रहे।
- 8) उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत, बंगाल तथा पंजाब में कोई भी क्षेत्रीय बदलाव मुस्लिम बहुमत को प्रभावित न करे।
- 9) सभी संप्रदायों को **धार्मिक स्वतंत्रता** हो।
- 10) सिंध को बंबई से पृथक किया जाये।
- 11) उत्तर-पश्चिमी सीमा प्रांत तथा बलूचिस्तान में संवैधानिक सुधार हो।



10.10) Jinnah's Fourteen Demands

In opposition to Nehru report, Muhammad Ali Jinnah gave his report in March 1929, in which the following **14 conditions** :-

- 1) Federal Constitution with residual powers to provinces.
- 2) Provincial autonomy.
- 3) No constitutional amendment by the centre without the concurrence of the states constituting the Indian federation.
- 4) All legislatures and elected bodies to have adequate representation of Muslims in every province without reducing a majority of Muslims in a province to a minority or equality.
- 5) Adequate representation to Muslims in the services and in self-governing bodies.
- 6) One-third Muslim representation in the Central Legislature.
- 7) In any cabinet at the centre or in the provinces, one- third to be Muslims.
- 8) Separate electorates for Muslims.
- 9) No bill or resolution in any legislature to be passed if three-fourths of a minority community considers such a bill or resolution to be against their interests.
- 10) Any territorial redistribution not to affect the Muslim majority in Punjab, Bengal and NWFP
- 11) Separation of Sind from Bombay.



- 12) मुस्लिम संस्कृति, धर्म तथा व्यक्तिगत कानून (पर्सनल लॉ) को सुरक्षा दी जाये।
- 13) किसी संप्रदाय के 3/4 सदस्यों के विरोध करने पर विधानमंडल अथवा स्थानीय निकाय में कोई विधेयक व प्रस्ताव पारित न हो।
- 14) केंद्रीय विधान मंडल द्वारा भारतीय परिषद की इकाई राज्यों की सहमति के बिना संविधान में संशोधन न किया जाये।

ध्यातव्य है कि मि. जिन्ना ने उपर्युक्त माँगों को इंग्लैण्ड में प्रथम गोलमेज सम्मेलन के समक्ष पेश किया। जिन्ना की इन माँगों में से अधिकांश माँगें अगस्त, 1932 में मि. मैकडोनाल्ड के 'साम्प्रदायिक निर्णय' में स्वीकार कर ली गयीं। इस सम्बन्ध में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने लिखा है "इन शर्तों का केवल इसलिए महत्व है कि रैम्जे मैकडोनाल्ड ने इनके आधार पर भारत के लिए साम्प्रदायिक निर्णय का सिद्धांत बनाया था"

- 12) Constitutional reforms in the NWFP and Baluchistan.
- 13) Full religious freedom to all communities.
- 14) Protection of Muslim rights in religion, culture, education and language

It is noteworthy that Mr. Jinnah presented the above demands before the First Round Table Conference in England. Most of these demands of Jinnah were met in August 1932 by Mr. Macdonald's 'Communal Decision'. In this regard, Dr. Rajendra Prasad has written "these conditions have significance only because Ramsay MacDonald formulated the theory of communal decision for India on the basis of them".

10.11) कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन व पूर्ण स्वराज की मांग (1929)

दिसंबर 1929 में कांग्रेस का ऐतिहासिक अधिवेशन लाहौर में हुआ। अधिवेशन में **पं जवाहरलाल नेहरू को अध्यक्ष** बनाया गया, जिसमें अधोलिखित संकल्पों को स्पष्ट किया गया :-

- 1) नेहरू समिति की **डोमिनियन राज्य के दर्जे की योजना समाप्त कर** दी गयी
- 2) ब्रिटिश शासन से **पूर्ण स्वाधीनता की मांग** की गई।
- 3) **31 दिसंबर 1929** की मध्य रात्रि को **रावी नदी के तट पर जवाहर लाल नेहरू ने नया तिरंगा झंडा** फहराया
- 4) 26 जनवरी 1930 को संपूर्ण देश में स्वतंत्रता दिवस मनाने की घोषणा की, गई इसी कारण **26 जनवरी 1950 को संविधान लागू** हुआ तथा गणतंत्र दिवस मनाया जाने लगा
- 5) राष्ट्रीय आन्दोलन का नेतृत्व पुनः गांधीजी को सौंपा गया।
- 6) अधिवेशन में सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने की घोषणा की गई
- 7) केंद्रीय, प्रांतीय विधानमंडल तथा सरकारी समितियों का पूर्णतः बहिष्कार



10.11) Lahore session of Congress and demand for Purna Swaraj (1929)

The historic session of the Congress was held in Lahore in **December 1929**. **Pandit Jawaharlal Nehru** was made the President in the convention, in which the following resolutions were clarified :-

- 1) Nehru Committee's **plan for Dominion state status was abolished**
- 2) **Complete independence** from British rule was demanded.
- 3) **Jawaharlal Nehru unfurled the new tricolor flag on the banks of river Ravi on the midnight of 31 December 1929.**
- 4) On 26 January 1930, it was announced to celebrate Independence Day all over the country, that is why the **Constitution came into force on 26 January 1950** and Republic Day was celebrated.
- 5) The leadership of the national movement was again handed over to Gandhiji.
- 6) It was announced to start civil disobedience movement in the convention.
- 7) Complete boycott of central, provincial legislatures and government committees



10.12) गांधी जी की 11 सूत्री मांगे, जनवरी 1930

सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने से पूर्व गांधी जी ने अपने पत्र यंग इंडिया के माध्यम से वायसराय लॉर्ड इरविन एवं ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड के सम्मुख 31 जनवरी 1930 को 11 सूत्रीय मांगे रखी जो निम्नलिखित हैं -

1) सामान्य हित से सम्बंधित :-

- ♀ सेना खर्च में 50% की कमी
- ♀ राजनीतिक बंदियों की रिहाई
- ♀ नशीली वस्तुओं की बिक्री पर रोक
- ♀ सीआईडी (गुप्तचर विभाग) पर सार्वजनिक नियंत्रण
- ♀ सशस्त्र कानून में परिवर्तन
- ♀ डाक आरक्षण बिल

2) विशिष्ट पूंजीपति वर्ग से संबंधित :-

- ♀ रुपए का विनिमय दर कम करना

♀ विदेशी कपड़ों पर आयात शुल्क लगाना

♀ तटकर विधेयक पास किया जाए

3) कृषक वर्ग से सम्बंधित :-

♀ नमक कर की समाप्ति

♀ भू राजस्व में 50% की कमी

वायसराय ने गांधी जी के पत्र पर कोई ध्यान नहीं दिया उसने गांधी जी से मिलने से भी इंकार कर दिया। सुभाष चंद्र बोस एवं अन्य कार्यकर्ताओं को सरकार ने गिरफ्तार कर लिया। बाध्य होकर गांधी जी को अपना सविनय अवज्ञा आंदोलन दांडी मार्च से आरंभ करने का निश्चय करना पड़ा।

10.12) Gandhiji's 11-point demand, January 1930

Before starting the Civil Disobedience Movement, Gandhiji, through his letter Young India, placed 11-point demands in front of the Viceroy Lord Irwin and British Prime Minister Ramsay Macdonald on 31 January 1930, which are as follows

1) Of common interest :-

- ♀ 50% reduction in military spending
- ♀ release of political prisoners
- ♀ Prohibition on sale of narcotics
- ♀ Public Control over CID (Intelligence Department)
- ♀ Armed Law Changes
- ♀ postal reservation bill

2) Belonging to the elite bourgeoisie :-

- ♀ lowering the exchange rate of the rupee

♀ Import duty on foreign clothing

♀ Tatkar bill be passed

3) Belonging to the farming class :-

♀ abolition of salt tax

♀ 50% reduction in land revenue

The Viceroy did not pay any attention to Gandhiji's letter, he also refused to meet Gandhiji. Subhash Chandra Bose and other activists were arrested by the government. Being compelled, Gandhiji had to decide to start his civil disobedience movement from Dandi March.

10.13) સવિનય અવજ્ઞા આંદોલન (1930-1934)



10.13) Civil Disobedience Movement (1930-1934)

1) Introduction

2) Cause

3) Program, launch and
dissemination



6) Review and importance

5) Adjournment

4) Social base

1) आन्दोलन का परिचय

1930 में **पूर्ण स्वराज** के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आरंभ किया गया **गांधी जी** का दूसरा राष्ट्रीय आंदोलन। सविनय अवज्ञा का अर्थ है **कानूनों की नम्रता पूर्वक अवमानना** करना

1) 12 मार्च 1930 को गांधी जी ने दांडी यात्रा द्वारा आंदोलन आरंभ किया

2) आंदोलन दो चरणों में हुआ :-

♀ **प्रथम** - 12 मार्च 1930 से 5 मार्च 1931

♀ **द्वितीय** - जनवरी 1932 से 1934

3) 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस कार्यकारिणी को सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने का अधिकार दिया गया

4) फरवरी 1930 में साबरमती आश्रम में हुई कांग्रेस कार्यकारिणी की दूसरी बैठक में महात्मा गांधी को नेतृत्व सौंपा गया

5) **उद्देश्य** :- पूर्ण स्वराज



12 मार्च 1930 :- दांडी
मार्च

जनवरी 1931 :- गांधी
इरविन पैक्ट

सितंबर 1931 :- द्वितीय
गोलमेज सम्मेलन

1934 :- आंदोलन वापसी

1) Introduction to Movement

Gandhiji's second national movement was started in 1930 to achieve the goal of **Purna Swaraj**. Civil disobedience means meekly disobeying laws

1) On 12 March 1930, Gandhiji started the movement through Dandi Yatra.

2) The movement took place in two phases :-

♀ **First** - 12 March 1930 to 5 March 1931

♀ **Second** - January 1932 to 1934

3) In the Lahore session of the Congress in 1929, the Congress Working Committee was given the right to start the Civil Disobedience Movement.

4) In the second meeting of the Congress Working Committee held at Sabarmati Ashram in February 1930, leadership was given to Mahatma Gandhi.

5) Objective :- Purna Swaraj



**12 March 1930 :-
Dandi March**

**January 1931 :-
Gandhi Irwin Pact**

**September 1931 :-
Second Round Table
Conference**

**1934 :- Movement
Return**

2) आंदोलन के कारण

- 1) साइमन कमीशन में किसी भी भारतीय को शामिल ना करना तथा केंद्र में भारतीयों को उत्तरदाई शासन हेतु अयोग्य बताना
- 2) नेहरू समिति की रिपोर्ट को सरकार द्वारा अस्वीकार करना
- 3) प्रथम विश्व युद्ध, अमेरिका व ब्रिटेन की पूंजीपति नीतियों के कारण उपजी वैश्विक महामंदी
- 4) दिसंबर 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पारित पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव
- 5) आंदोलनों का सरकार द्वारा क्रूरता से दमन
- 6) गांधीजी ने वायसराय लॉर्ड इरविन के सामने 11 सूत्री मांगे रखी थी किंतु इरविन के द्वारा इन मांगों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। परिणाम स्वरूप गांधी जी के नेतृत्व में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ हो गया।

3) आंदोलन के कार्यक्रम

- 1) नमक कानून का उल्लंघन करना एवं स्वयं नमक बनाना
- 2) करों को अदा ना करना
- 3) महिला द्वारा शराब, विदेशी कपड़ों एवं अफीम की दुकानों पर धरना देना
- 4) सरकारी उपाधियों एवं नौकरियों का परित्याग करना
- 5) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार एवं विदेशी कपड़ों की होली जलाना
- 6) वकीलों द्वारा वकालत का बहिष्कार करना
- 7) न्यायालयों का परित्याग करना
- 8) सरकारी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का बहिष्कार करना
- 9) चरखा एवं सूत कातने पर जोर देना
- 10) सत्य एवं अहिंसा को सर्वोपरि रखना, ताकि स्वराज्य की प्राप्ति की जा सके

2) Reasons of the movement

- 1) Non-inclusion of any Indian in the Simon Commission and disqualifying Indians for responsible governance at the Center
- 2) Rejection of Nehru Committee report by the government
- 3) Great Depression caused by World War I, and capitalist policies of America and Britain
- 4) Purna Swaraj resolution passed in Lahore session of Congress in December 1929
- 5) Brutal suppression of movements by the government
- 6) Gandhiji had put 11-point demands before the Viceroy Lord Irwin, but Irwin did not pay any heed to these demands. As a result, the civil disobedience movement started against the British government under the leadership of Gandhiji.

3) Movement programs

- 1) Violating the salt law and making salt by own
- 2) Non-payment of taxes
- 3) Picketing by women on liquor, foreign clothes and opium shops
- 4) Relinquishing government titles and jobs
- 5) Boycott of foreign goods and burning of Holi of foreign clothes
- 6) Boycott of british judicial system by lawyers
- 7) Boycott government schools and colleges
- 8) Emphasis on spinning the charkha and yarn
- 9) Keeping truth and non-violence paramount, so that Swaraj can be achieved

4) सामाजिक आधार

- 1) व्यापारी एवं किसानों की अत्यधिक भागीदारी
- 2) जनजातियों भागीदारी :- मणिपुर (रानी गैडिनेल्यु), मध्य प्रांत, कर्नाटक, महाराष्ट्र में जनजातियों की भूमिका उल्लेखनीय रही
- 3) महिलाओं की सक्रिय भूमिका रही जिन्होंने विदेशी कपड़ों की दुकानों, मदिरा की दुकानों व अफीम के ठेकों पर धरने दिए
- 4) छात्रों की सक्रिय व उल्लेखनीय भूमिका रही
- 5) मुसलमानों की भागीदारी नगण्य रही और इसका कारण यह था कि मुस्लिम नेताओं ने मुसलमानों को अलग रहने की सलाह दी फिर भी उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत में मुसलमानों की पर्याप्त भागीदारी रही

नमक केंद्रीय मुद्दा क्यों ?

नमक का मुद्दा जन सामान्य से जुड़ा था और वर्ग समन्वय एवं जनशक्ति का आधार था वस्तुतः यह दैनिक उपयोग की वस्तु थी। अतः किसान, मजदूर, शहरी, ग्रामीण, धनी, निर्धन सभी के लिए महत्वपूर्ण थी। इतना ही नहीं नमक के मुद्दे पर कोई सांप्रदायिक भेदभाव की आशंका भी नहीं थी। इस संदर्भ में गांधी ने कहा कि पानी से पृथक नमक नाम की कोई चीज नहीं है, जिस पर कर लगाकर सरकार करोड़ों लोगों को भूखा मार सकती है तथा असहाय, बीमार एवं विकलांगों को पीड़ित कर सकती है। इसलिए यह कर अत्यंत अविवेकपूर्ण एवं अमानवीय है

4) Social base

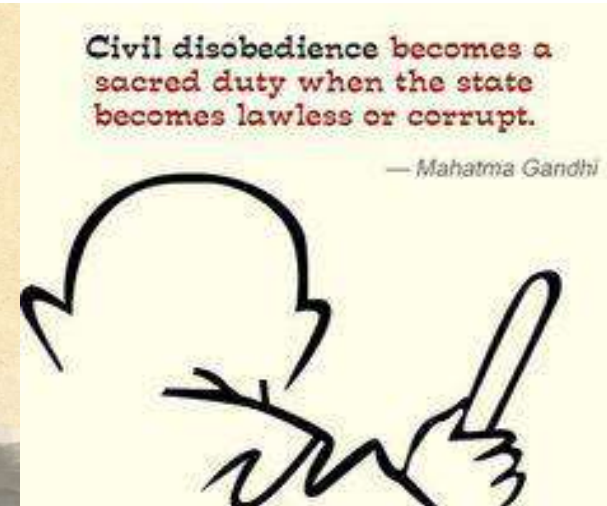
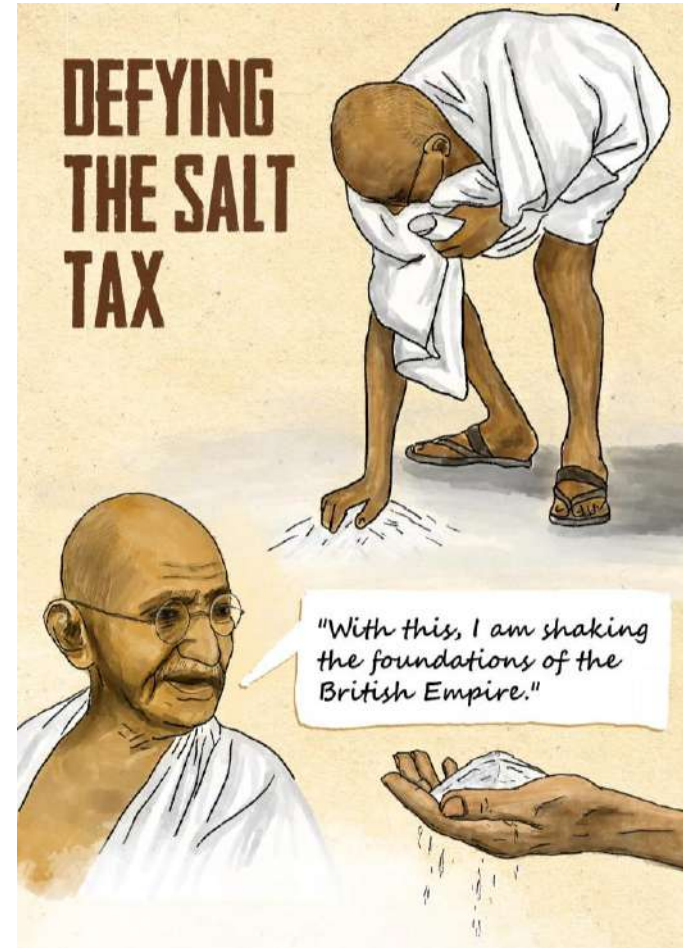
- 1) High participation of traders and farmers
- 2) Tribals Participation :- The role of tribes in Manipur (Rani Gadineluy), Central Provinces, Karnataka, Maharashtra has been remarkable.
- 3) There was an active role of women who staged dharna at foreign clothing shops, liquor and opium shops .
- 4) Students played an active and significant role
- 5) The participation of Muslims was negligible and the reason for this was that Muslim leaders advised Muslims to remain separate, yet there was a substantial participation of Muslims in the Northwest Frontier Province

Why is salt a central issue?

The issue of salt was related to the common man and was the basis of class coordination and manpower, in fact it was a commodity of daily use. So, it was important for everyone, farmer, laborer, urban, rural, rich, poor. Not only this, but there was also no fear of any communal discrimination on the issue of salt. In this context, Gandhi said that there is no such thing as salt apart from water, on which by taxing the government can starve crores of people and make the helpless, sick and handicapped suffer. Therefore, this tax is extremely unreasonable and inhuman.

5) आंदोलन का आरंभ व प्रसार

- 1) **आरम्भ :-** गांधी जी की दांडी यात्रा
- 2) **दक्षिण भारत :-** राजगोपालाचारी(त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम) तथा के. के. लप्पन व टी के माधवन(कालीकट से प्यंनूर)
- 3) **धरसणा, बम्बई :-** सरोजनी नायडू, इमाम शाह, कस्तूरबा गांधी, मणिलाल गांधी
- 4) **पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत :-** खान अब्दुल गफ्फार खान(सीमांत गांधी) का लाल कुर्ती आन्दोलन
- 5) **मणिपुर :-** रानी गाडिनेल्यु के नेतृत्व में जियारलांग आंदोलन
- 6) **असम :-** तरुण राम फुकान
- 7) **बिहार :-** चौकीदारी कर ना अदा करने पर आंदोलन
- 8) **गुजरात के खेड़ा, सूरत तथा बारदोली :-** कर ना अदायगी का आंदोलन
- 9) **उत्तर प्रदेश :-** जमींदारों को कर ना देने का आंदोलन
- 10) **मध्य प्रांत, महाराष्ट्र और कर्नाटक :-** वन नियमों के विरुद्ध सत्याग्रह चलाया गया



5) Beginning and spreading of movement

1) **Beginning :-** Gandhiji's Dandi Yatra

2) **South India :-** Rajagopalachari (Vedaranyam from Trichanapally) and K. Kelappan and TK Madhavan (Calicut to Payyanur)

3) **Dharsana, Bombay :-** Sarojini Naidu, Imam Shah, Kasturba Gandhi, Manilal Gandhi

4) **North-West Frontier Province :-** Red Kurti Movement of Khan Abdul Ghaffar Khan (Frontier Gandhi)

5) **Manipur :-** Giarlang movement led by Rani Gadineluy

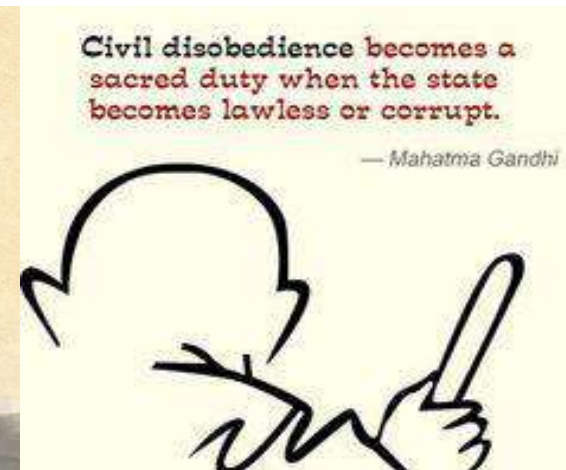
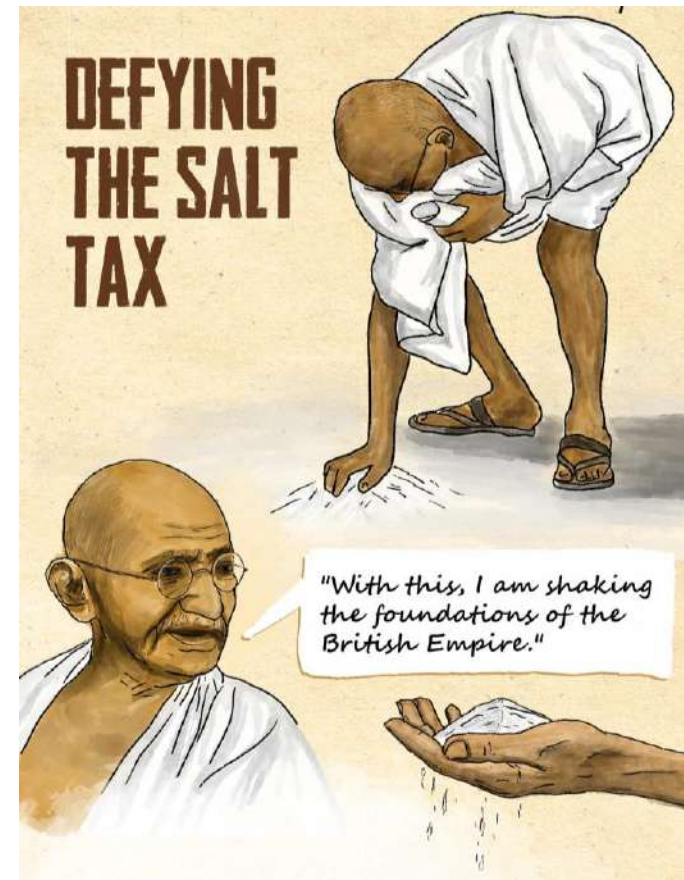
6) **Assam :-** Tarun Ram Phukan

7) **Bihar :-** Movement on non-payment of Chowkidari tax

8) **Kheda, Surat and Bardoli of Gujarat :-** Movement of non-payment of tax

9) **Uttar Pradesh :-** Movement of non-payment of taxes to landlords

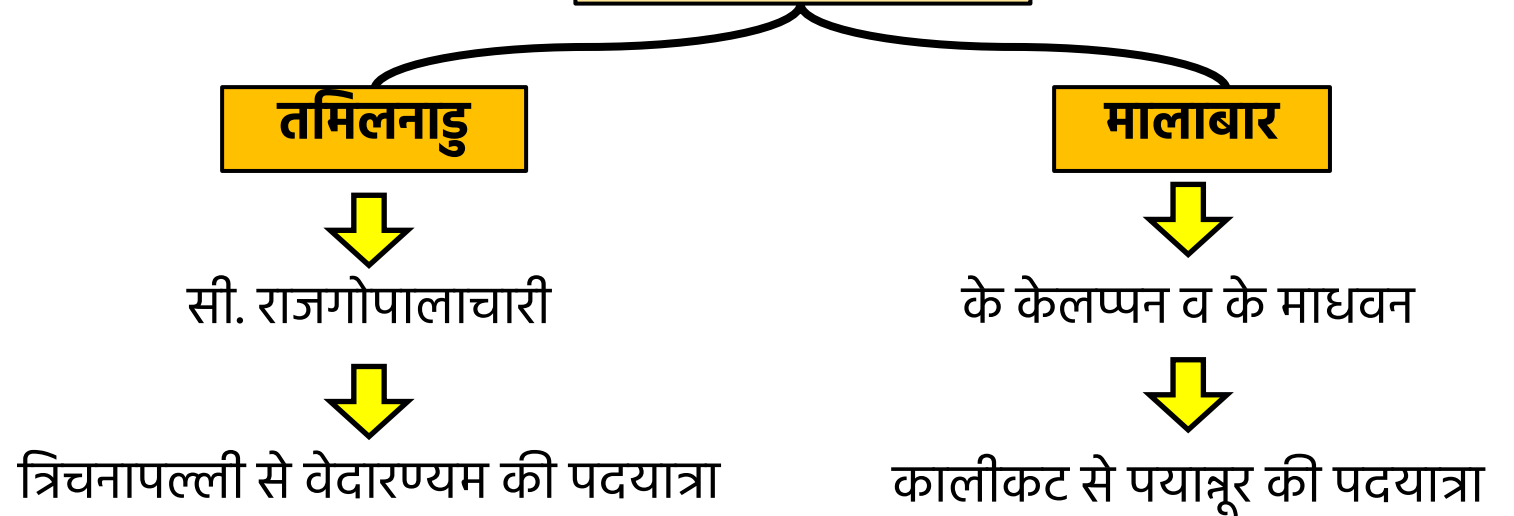
10) **Central Provinces, Maharashtra and Karnataka :-** Satyagraha was launched against forest rules



5.1) दांडी यात्रा

- 1) 12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी ने अपने 78 अनुयायियों के साथ नमक कानून का उल्लंघन करने के लिए साबरमती आश्रम से दांडी तक 241 मील का मार्च प्रारंभ किया
- 2) 6 अप्रैल 1930 को दांडी में अवैध रूप से नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन कर सविनय अवज्ञा आंदोलन को प्रारंभ किया
- 3) सुभाष चंद्र बोस ने गांधी जी की दांडी मार्च की तरह **नेपोलियन के पेरिस मार्च और मुलोसिनी के रोम मार्च** से की

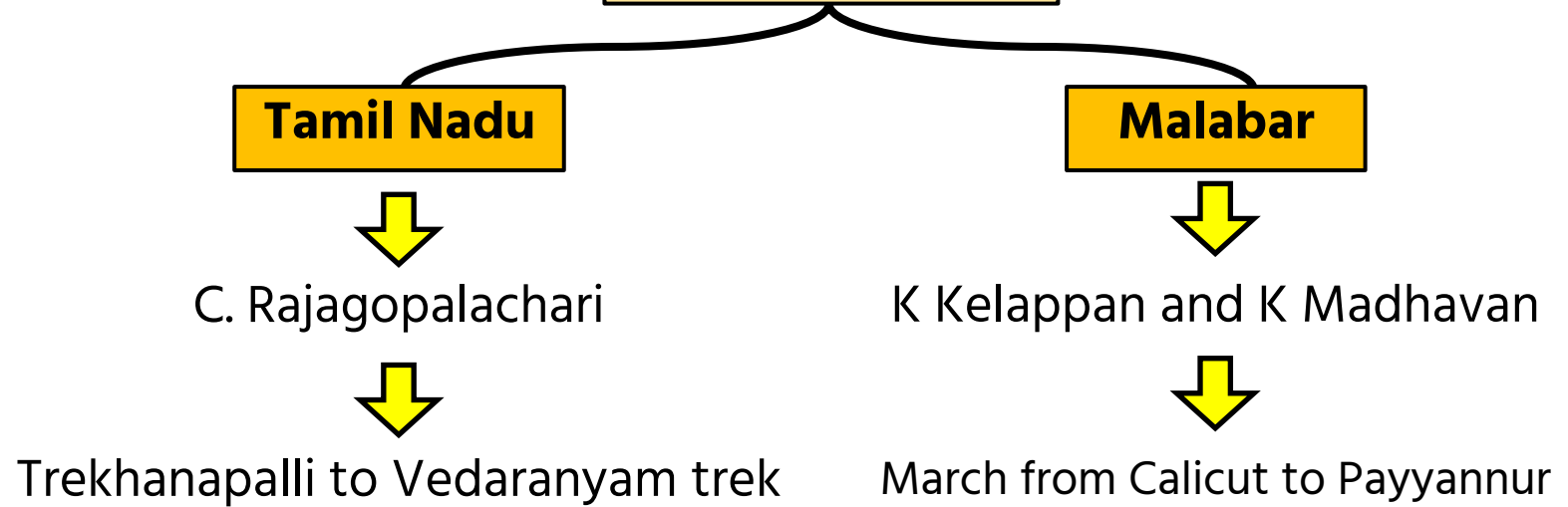
5.2) दक्षिण भारत



5.1) Dandi Yatra

- 1) On 12 March 1930, Mahatma Gandhi along with his 78 followers started a 241-mile march from Sabarmati Ashram to Dandi to violate the salt law.
- 2) On 6 April 1930, by making salt illegally in Dandi, violating the Salt Act, started the Civil Disobedience Movement.
- 3) Like Gandhi's Dandi March, Subhash Chandra Bose did Napoleon's Paris March and Mulosini's Rome March

5.2) South India



5.3) अन्य

- 1) तमिलनाडु में सविनय अवज्ञा आन्दोलन का नेतृत्व सी. राजगोपालाचारी ने किया। इन्होंने त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम तक की यात्रा की तथा नमक कानून का उल्लंघन किया।
- 2) मालाबार में केलप्पन ने आन्दोलन का नेतृत्व किया तथा इन्होंने कालीकट से पेन्नार की यात्रा की और नमक कानून तोड़ा।
- 3) ओडिशा ने नमक सत्याग्रह गोपचन्द्र बन्धु चौधरी के नेतृत्व में चलाया गया।
- 4) बम्बई के निकट धरसना नामक स्थान में सरोजनी नायडू, इमाम शाह, कस्तूरबा गांधी तथा मणिलाल ने नमक कानून का उल्लंघन किया। धरसना के निहत्थे सत्याग्रहियों पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज करने का प्रत्यक्षदर्शी **अमेरिकी पत्रकार वेब मिलर** था। मिलर ने लिखा कि "धरसना जैसा भयानक दृश्य मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा।"
- 4) पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त में खान अब्दुल गफ्फार खान (सीमांत गांधी) के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया गया। खान अब्दुल गफ्फार खान के नेतृत्व में गठित **खुदाई खिदमतगार (लाल कुर्ती)** नामक संगठन ने आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। पैशावर में गढ़वाल रेजीमेंट के सिपाहियों ने चंद्रसिंह गढ़वाली के नेतृत्व में निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने से इंकार कर दिया था
- 5) मणिपुर की जनजातियों ने भी सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी निभाई। यहां रानी गाडिनेल्यू के नेतृत्व में जियालरंग आन्दोलन किया गया। गाडिनेल्यू को गिरफ्तार कर आजीवन कारावास की सजा दी गई। गाडिनेल्यू स्वाधीनता संग्राम में सर्वाधिक समय तक जेल में रहने वाली महिला थी

5.3) Other

- 1) The Civil Disobedience Movement in Tamil Nadu was led by C. Rajagopalachari. He traveled from Trichanapally to Vedaranyam and violated the salt law.
- 2) In Malabar, Kelappan led the movement and traveled from Calicut to Pennar and broke the salt law.
- 3) The Salt Satyagraha in Odisha was launched under the leadership of Gopachandra Bandhu Chaudhary.
- 4) Sarojini Naidu, Imam Shah, Kasturba Gandhi and Manilal violated the salt law at a place called Dharasana near Bombay. **American journalist Webb Miller** was an eyewitness to the police lathi on the unarmed Satyagrahis of Gharasana. Miller wrote that "I have never seen such a horrific scene as Gharasana in my life ."
- 4) The Civil Disobedience Movement was launched in the North-West Frontier Province under the leadership of Khan Abdul Ghaffar Khan (Frontier Gandhi). An organization called **Khudai Khidmatgar (Red Kurti)** formed under the leadership of Khan Abdul Ghaffar Khan played an active role in the movement. The soldiers of the Garhwal Regiment in Paishawar refused to open fire on the unarmed mob led by Chandra Singh Garhwali.
- 5) The tribes of Manipur also took an active part in the civil disobedience movement. Here the Jialarang movement was organized under the leadership of Rani Gadineluy. Who was arrested and sentenced to life imprisonment. Gadineluy was the longest prisoner woman in the freedom struggle

लोकप्रियता के साधन

1. प्रभात फेरियाँ व पत्र-पत्रिकाओं का वितरण

2. संदेश देने हेतु लालटेन का प्रयोग

3. वानर सेना व मंजरी सेना का गठन

4. जनसभाएँ व दौरे करना

- 6) असम में छात्रों ने कनिंघम सरकुलर के विरोध में आन्दोलन चलाया। इस सरकुलर तहत छात्रों को अपने अभिभावकों से सद्व्यवहार का प्रमाण-पत्र प्राप्त करना होता था।
- 7) सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय बच्चों ने बानर सेना तथा लड़कियों ने माजरी सेना का गठन किया था।
- 8) असम के सिलहट तथा बंगाल के नोआखली में भी नमक कानून तोड़ने का प्रयास किया गया।

Tools of popularity



```
graph LR; A[Tools of popularity] --- B[1. Prabhat Pheris and distribution of magazines]; A --- C[2. Use of Lanterns for Messages]; A --- D[3. Formation of Vanar Sena and Manjari Sena]; A --- E[4. Holding Public Meetings and Tours];
```

1. Prabhat Pheris and distribution of magazines

2. Use of Lanterns for Messages

**3. Formation of Vanar Sena and
Manjari Sena**

4. Holding Public Meetings and Tours

- 6) In Assam, students started a movement against the Cunningham circular. Under this circular, students were required to obtain a certificate of good conduct from their parents.
- 7) During the Civil Disobedience Movement, the children formed the Banar Sena and the girls formed the Majri Sena.
- 8) Attempts were also made to break the salt law in Sylhet in Assam and Noakhali in Bengal.

6) आन्दोलन कि समाप्ति

- 1) **1930 :-** लॉर्ड इरविन ने गांधी जी और अन्य बड़े नेताओं को गिरफ्तार किया
- 2) **5 मार्च 1931 :-** गांधी इरविन समझौता तथा आंदोलन स्थगित
- 3) **7 सितंबर 1931 :-** द्वितीय गोलमेज सम्मेलन की विफलता
- 4) **1931 :-** लॉर्ड बिलिंगटन नया वायसराय बना



गांधी इरविन समझौता नहीं माना

- 5) **जनवरी 1932 :-** आंदोलन पुनः प्रारंभ
- 6) **क्रूरता से दमन :-**
 - ♀ नेताओं की गिरफ्तारी
 - ♀ कांग्रेस को गैरकानूनी संस्था घोषित

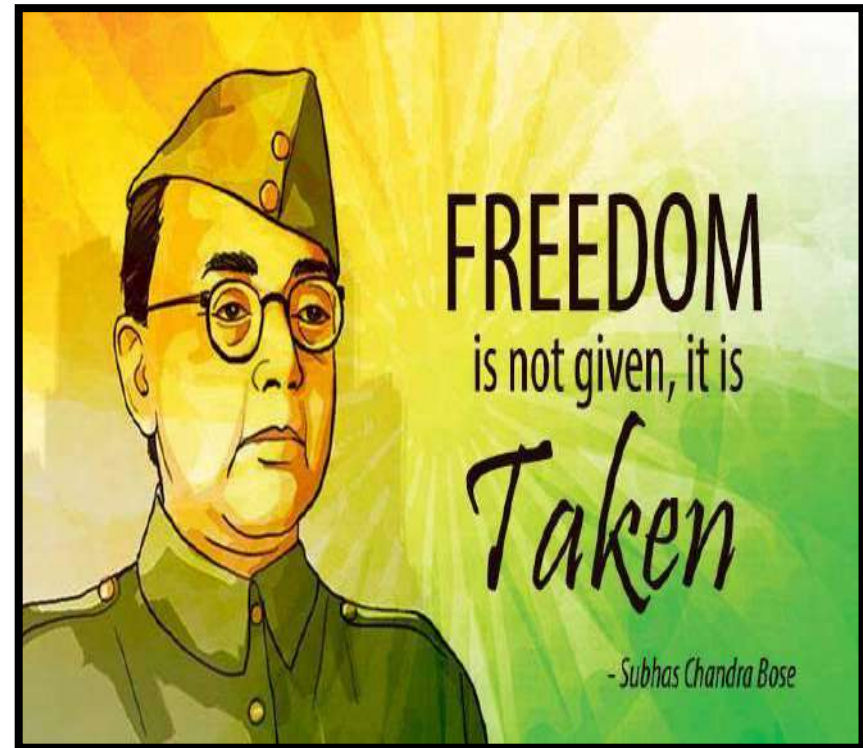
7) **1932 :-** “पूना सांप्रदायिक पंचाट और पूना पैक्ट” में गांधीजी की व्यस्तता

8) लोगों का समर्थन कम होने लगा

9) **1934 :-** आंदोलन को स्थगित किया



गांधीजी ने पिछले 13 वर्षों की मेहनत पर पानी फेर दिया
- ‘सुभाष चंद्र बोस’



6) The end of the movement

- 1) **1930 :-** Lord Irwin arrested Gandhiji and other big leaders
- 2) **5 March 1931 :-** Gandhi Irwin Pact and Movement postponed
- 3) **7 September 1931 :-** Failure of the Second Round Table Conference
- 4) **1931 :-** Lord Billington becomes new Viceroy



Gandhi did not accept the Irwin Pact

- 5) **January 1932 :-** Movement restart
- 6) **Brutally repressed :-**
 - ♀ Arrest of leaders
 - ♀ Congress declared as illegal organization

- 7) **1932 :-** Gandhi's engagement in the "Poona Communal Tribunal and the Poona Pact"
- 8) People's support became to decline
- 9) **1934 :-** movement suspended



Gandhiji ruined the hard work of the last 13 years - 'Subhash Chandra Bose'



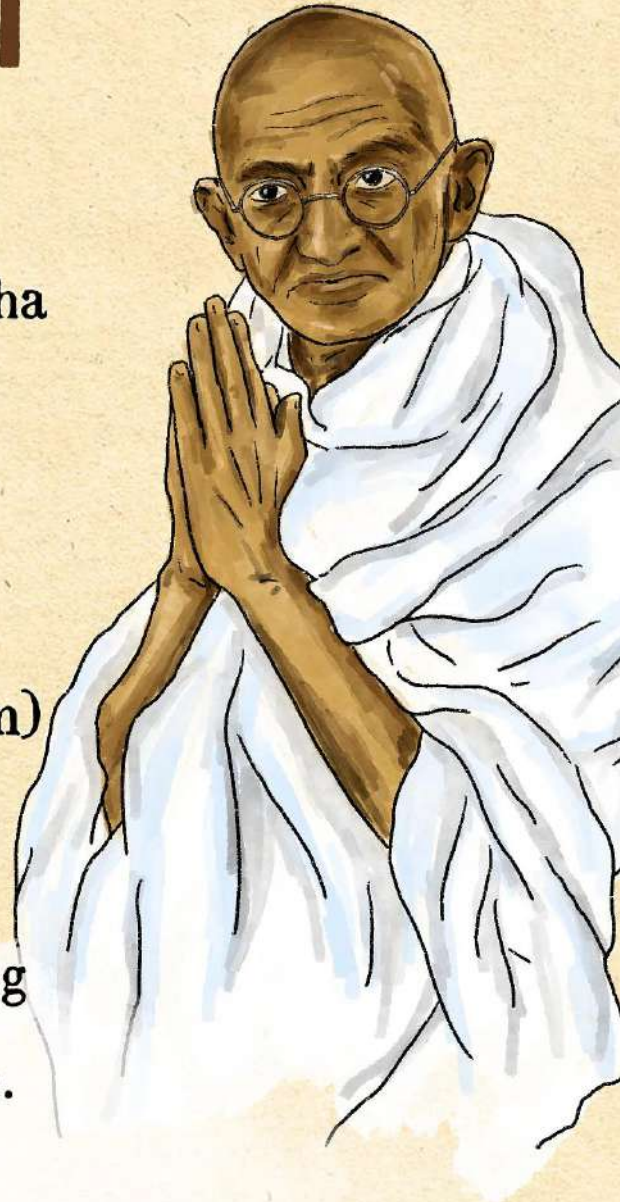
7) महत्व/समीक्षा

- 1) राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी
- 2) विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई इसका प्रतिकूल प्रभाव ब्रिटिश अर्थव्यवस्था पर पड़ा
- 3) भारतीय पूंजीपति वर्ग का राष्ट्रीय आंदोलन को भारी समर्थन
- 4) किसानों की भागीदारी भी पर्याप्त थी किंतु मजदूरों की सक्रियता पहले की अपेक्षा कम थी
- 5) मुस्लिम वर्ग की भागीदारी असहयोग आंदोलन की अपेक्षा नगण्य
- 6) स्वराज्य के स्थान पर सविनय अवज्ञा आंदोलन में पूर्ण स्वतंत्रता को मुख्य लक्ष्य बनाया गया
- 7) नमक कानून तोड़कर गांधी जी ने भारत की आम जनता के मन से ब्रिटिश शासन का भय समाप्त कर दिया
- 8) सविनय अवज्ञा आंदोलन में बुद्धिजीवी वर्ग की भागीदारी में कमी आई
- 9) युवा वर्ग ने बड़ी तत्परता एवं गर्मजोशी से भाग लिया

CIVIL DISOBEDIENCE MOVEMENT

Gandhiji's words did come true. The Salt Satyagraha spiralled into the Civil Disobedience movement across India.

The call for 'Purna Swaraj' (Complete Freedom) grew louder. Indians gradually refused to pay other unpopular taxes, truly shaking the foundations of the British Empire.



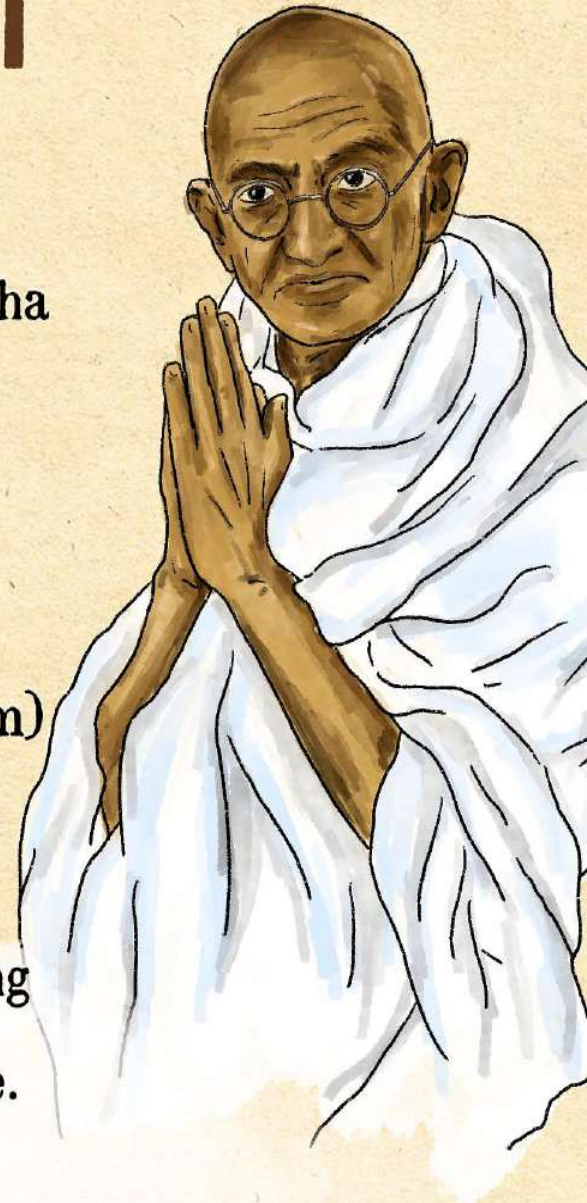
7) Importance/review

- 1) Increased participation of women in the national movement
- 2) Holi of foreign clothes was burnt; it had an adverse effect on the British economy.
- 3) Massive support of the Indian bourgeoisie to the national movement
- 4) The participation of the farmers was also sufficient, but the workers' activity was less than before.
- 5) The participation of the Muslim class is negligible compared to the non-cooperation movement
- 6) In place of Swaraj, complete independence was made the main goal in the civil disobedience movement.
- 7) Gandhiji ended the fear of British rule from the minds of the common people of India by breaking the salt law.
- 8) The participation of the intellectual class in the civil disobedience movement decreased
- 9) The youth participated with great enthusiasm and willingness.

CIVIL DISOBEDIENCE MOVEMENT

Gandhiji's words did come true. The Salt Satyagraha spiralled into the Civil Disobedience movement across India.

The call for 'Purna Swaraj' (Complete Freedom) grew louder. Indians gradually refused to pay other unpopular taxes, truly shaking the foundations of the British Empire.



10.14) गोलमेज सम्मेलन

- 1) परिचय
- 2) प्रथम गोलमेज सम्मेलन (12 नवंबर 1930 से 19 जनवरी 1931)
- 3) गांधी इरविन समझौता (5 मार्च 1931)
- 4) कांग्रेस का कराची अधिवेशन, 1931
- 5) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 सितंबर 1931 से 1 दिसम्बर से 1931)



- 6) साम्प्रदायिक पंचाट (1932)
- 7) पूना समझौता (26 सितम्बर 1932)
- 8) तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 नवंबर 1932 से 24 दिसंबर 1932)

10.14) Round table conference

1) introduction

2) **First Round Table Conference (12 November 1930 to 19 January 1931)**

3) **Gandhi Irwin Pact (5 March 1931)**

4) **Karachi session of Congress, 1931**

5) **Second Round Table Conference (7 September 1931 to 1 December 1931)**



6) **Communal Award (1932)**

7) **Poona Pact (26 September 1932)**

8) **Third Round Table Conference (17 November 1932 to 24 December 1932)**



1) परिचय

- 1) ब्रिटिश सरकार द्वारा साइमन कमीशन की रिपोर्ट तथा भारत के आगामी संवैधानिक सुधारों पर चर्चा करने हेतु **लंदन में** आयोजित **तीन** सम्मेलन :-
 - ♀ **1930** : प्रथम गोलमेज सम्मेलन
 - ♀ **1931** : द्वितीय गोलमेज सम्मेलन
 - ♀ **1932** : तृतीय गोलमेज सम्मेलन
- 2) सामान्यतः ब्रिटिश प्रधानमंत्री, भारत सचिव व विभिन्न पार्टियों के प्रतिनिधि इसमें शामिल होते थे
- 3) भारतीयों को पहली बार ब्रिटिश शासकों के बराबर दर्जा दिया गया तथा इन्हीं सम्मेलनों के आधार पर भारत में **सांप्रदायिक पंचाट** तथा **भारत शासन अधिनियम 1935** पारित हुए

प्रथम गोलमेज सम्मेलन 12 नवंबर 1930 से आरंभ

♀ साइमन कमीशन की सिफारिशों पर विचार करने के लिए आयोजन	♀ कांग्रेस के भाग न लेने के कारण वार्ता असफल
---	--

द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 7 सितंबर 1931 से प्रारंभ

♀ वायसराय लॉर्ड वेलिंगटन के समय आयोजित सम्मेलन में कांग्रेस की तरफ से गांधी की भागीदारी	♀ दलितों के लिए प्रथक निर्वाचक मंडल की मांग के कारण वार्ता असफल
---	---

तृतीय गोलमेज सम्मेलन 17 नवंबर 1932 से प्रारंभ

♀ कांग्रेस द्वारा सम्मेलन का बहिष्कार	♀ सम्मेलन के पश्चात भारत शासन विधेयक प्रस्तुत, भारत शासन अधिनियम 1935 में पारित
---------------------------------------	---

1) Introduction

- 1) Three conferences organized by the British government in London to discuss the Simon Commission report and the upcoming constitutional reforms of India :-
 - ♀ **1930** : First round table conference
 - ♀ **1931** : Second round table conference
 - ♀ **1932** : Third round table conference
- 2) Usually the British Prime Minister, India Secretary and representatives of various parties were involved in this.
- 3) Indians were given equal status to British rulers for the first time and on the basis of these conventions, Communal Award and Government of **India Act 1935** was passed in India.

First Round Table Conference started on 12 November 1930

- | | |
|--|---|
| ♀ Organizing to consider the recommendations of the Simon Commission | ♀ Negotiations failed as Congress did not participate |
|--|---|

Second Round Table Conference started on 7 September 1931

- | | |
|---|---|
| ♀ Gandhi's participation on behalf of the Congress in the conference organized during the time of Viceroy Lord Wellington | ♀ Negotiations failed due to demand for separate electorates for Dalits |
|---|---|

Third Round Table Conference started from 17th November 1932

- | | |
|-------------------------------------|--|
| ♀ Congress boycotted the conference | ♀ After the conference, the Government of India Bill was introduced, the Government of India Act was passed in 1935. |
|-------------------------------------|--|

2) प्रथम गोलमेज सम्मेलन (12 नवंबर 1930 से 19 जनवरी 1931)

1) सामान्य परिचय

- 1) **स्थान व समय :-** 12 नवंबर 1930 से 19 जनवरी 1931 तक लंदन के सेंट जेम्स पैलेस में
- 2) **उद्घाटन :-** तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज पंचम (अल्पसंख्यक वर्ग के हितों की सुरक्षा का आश्वासन)
- 3) **सभापति :-** तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड
- 4) **उद्देश्य :-** साइमन कमीशन की रिपोर्ट तथा आगामी संवैधानिक सुधारों पर चर्चा
- 5) **प्रतिभागी :-** इसमें कुल 89 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें ब्रिटेन की तीन पार्टियों, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, उदारवादी दल, देसी रजवाड़ों आदि का प्रतिनिधित्व था जबकि कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन में इसके बहिष्कार का निर्णय लिया



2) first round table conference (12 November 1930 to 19 January 1931)

1) General introduction

- 1) **Place and Time :-** 12 November 1930 to 19 January 1931 at St James's Palace in London
- 2) **Inauguration :-** British Emperor George V (Assurance of the protection of the interests of the minority class)
- 3) **Chairman :-** The then British Prime Minister Ramsay MacDonald
- 4) **Objective :-** Discussion on Simon Commission report and upcoming constitutional reforms
- 5) **Participants :-** A total of 89 participants participated in this, in which three parties of Britain, Muslim League, Hindu Mahasabha, liberal parties, indigenous princely states etc. were represented, while Congress decided to boycott it in Lahore session



कुल प्रतिभागी - 89

ब्रिटिश सरकार - 16

देसी रियासतें - 16

भारतीय राजनैतिक दल - 57

- I. तेज बहादुर सप्रू, श्रीनिवास शास्त्री एवं सी वाई चिंतामणि **(उदारवादी)**
- II. बी एस मुंजे एवं डॉ एम आर जयकर **(हिन्दु महासभा)**
- III. मु. अली जिन्ना, मुहम्मद अली जौहर, आगा खां, फजलुल हक एवं जफरुल्ला **(मुस्लिम लीग)**
- IV. सरदार सम्पूर्ण सिंह **(सिक्ख)**

- V. भीमराव अंबेडकर **(दलित वर्ग)**
- VI. होमी मोदी **(व्यापारी)**
- VII. के टी पाल **(आंग्ल भारतीय ईसाई)**
- VIII. सुंदर सिंह मजीठिया

Total participants - 89

British Government - 16

Princely states - 16

Indian political party - 57

- I. Tej Bahadur Sapru, Srinivas Shastri and CY Chintamani **(Liberal)**
- II. BS Munje and Dr. MR Jayakar **(Hindu Mahasabha)**
- III. Mu. Ali Jinnah, Muhammad Ali Jauhar, Aga Khan, Fazlul Haq and Zafarullah **(Muslim League)**
- IV. Sardar Sampurn Singh **(Sikh)**

- V. Bhimrao Ambedkar **(Dalit Class)**
- VI. Homi Modi **(Businessman)**
- VII. K T Pal **(Anglo Indian Christian)**
- VIII. Sunder Singh Majithia

2) प्रमुख मांगे

- 1) **डॉक्टर अंबेडकर :-** दलितों हेतु पृथक निर्वाचक मंडल की मांग
- 2) **मुस्लिम लीग :-** पृथक निर्वाचक मंडल की पृथक निर्वाचन मंडल के विस्तार की मांग
- 3) **भारतीय रजवाड़े :-** ब्रिटिश भारत के अंतर्गत अखिल भारतीय संघ की स्थापना का प्रस्ताव (भारतीय रजवाड़े)

फलतः सम्मेलन का कोई **सर्वमान्य नतीजा नहीं**

निकल सका। ब्रिटिश सरकार **अखिल भारतीय संघ का निर्माण,**
प्रदेशों में पूर्ण उत्तरदाई शासन तथा **केंद्र में द्वैध शासन पर सहमत**

हुई। कांग्रेस के बहिष्कार ने सम्मेलन को निरर्थक बना दिया। प्रो. विपिन चंद्र के शब्दों में "कांग्रेस के बिना भारतीय मामलों से संबंधित कोई सम्मेलन वैसे ही था जैसे राम के बिना रामलीला का प्रदर्शन"

3) गांधी इरविन समझौता (5 मार्च 1931)

प्रथम गोलमेज सम्मेलन की असफलता के बाद 5 मार्च 1931 को तेज बहादुर सप्रू एवं एमआर जयकर आदि के प्रयास से महात्मा गांधी और लॉर्ड इरविन के मध्य समझौता हुआ, इस समझौते की शर्तें निम्नलिखित थी :-

- 1) कांग्रेस व उसके कार्यकर्ताओं की जब्त की गई सम्पत्ति वापस की जाये।
- 2) सरकार द्वारा सभी अध्यादेशों एवं अपूर्ण अभियोगों के मामले को वापस लिया जाये।
- 3) हिंसात्मक कार्यों में लिप्त अभियुक्तों के अतिरिक्त सभी राजनीतिक कैदियों को मुक्त किया जाये।
- 4) समुद्र के किनारे बसने वाले लोगों को नमक बनाने व उसे एकत्रित करने की छूट दी जाये।

2) Major

demands

- 1) **Dr. Ambedkar :-** Demand for separate electorate for Dalits
- 2) **Muslim League :-** Demand for expansion of separate electorate for separate electorate
- 3) **Indian princely states :-** Proposal for the establishment of All India Federation under British India (Indian princely states)

As a result, no consensus could be reached of the conference. The British government agreed on the creation of an All-India Federation, full responsible governance in the territories and diarchy at the centre. The boycott of the Congress made the convention redundant. . In the words of Vipin Chandra, "Any conference on Indian affairs without Congress was like a Ramlila performance without Ram".

3) Gandhi Irwin Pact (5 March 1931)

After the failure of the First Round Table Conference, on March 5, 1931, an agreement was reached between Mahatma Gandhi and Lord Irwin with the efforts of Tej Bahadur Sapru and MR Jayakar etc. The terms of this agreement were as follows :-

- 1) The annexed property of Congress and its workers should be returned.
- 2) All the ordinances and the cases of incomplete prosecutions should be withdrawn by the government.
- 3) All political prisoners should be freed except those accused in violent acts.
- 4) People living on the shores of the sea should be allowed to make and collect salt.

- 5) अफीम, शराब एवं विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर शांतिपूर्ण ढंग से धरने की अनुमति दी जाये।

महात्मा गाँधी ने कांग्रेस की ओर से निम्न शर्तें स्वीकार कीं :-

- 1) 'सविनय अवज्ञा आन्दोलन' स्थगति
- 2) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के प्रतिनिधि भी भाग लेंगे।
- 3) पुलिस की ज्यादतियों के खिलाफ **निष्पक्ष न्यायिक जाँच** की मांग वापस ले ली जायेगी।
- 4) नमक कानून उन्मूलन की मांग एवं बहिष्कार की मांग को वापस ले लिया जायेगा।

जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाषचन्द्र बोस ने समझौते की आलोचना करते हुए कहा कि गाँधी जी ने पूर्ण स्वतंत्रता के लक्ष्य को बिना ध्यान में रखे ही समझौता कर लिया।

श्री अयोध्या सिंह :- "पूर्ण स्वाधीनता या डोमिनियन स्टेट्स (अधिराज्य) की बात जाने दीजिए; न तो लगान कम किया गया, न कोई टैक्स, न नमक पर सरकार की इजारेदारी हटाई गई, सिर्फ बुर्जुआ वर्ग को नाममात्र के लिए एक-दो सुविधाएँ दी गईं। बस इसी पर सारा जन-आंदोलन उसवक्त बंद कर दिया गया, जब वह चरम सीमा पर पहुँच रहा था और क्रांतिकारी रूप ले रहा था। एक बार फिर बुर्जुआ वर्ग के स्वार्थ के लिए सारे देश के स्वार्थ की बलि दे दी गई।"

- राजपूताना नामक जहाज में महादेव देसाई, मदन मोहन मालवीय, देवदास गांधी, घनश्याम दास बिड़ला एवं मीरा बेन
- सरोजनी नायडू ने इरविन व गांधीजी को दो महात्मा कहा।
- के. एम. मुंशी ने इस समझौते को भारत के संवैधानिक इतिहास में एक युग प्रवर्तक घटना कहा है।

- 5) Peaceful dharna should be allowed at the shops of opium, liquor and foreign clothes.

Mahatma Gandhi accepted the following conditions on behalf of the Congress :-

- 1) 'Civil Disobedience Movement' suspension
- 2) Congress representatives will also participate in the Second Round Table Conference.
- 3) The demand for a **fair judicial inquiry** against police excesses will be withdrawn.
- 4) The demand for abolition of salt law and the demand for boycott will be withdrawn.

Criticizing the agreement, Jawaharlal Nehru and Subhash Chandra Bose said that Gandhiji made the agreement without keeping in mind the goal of complete independence.

Shri Ayodhya Singh :- "Let's talk about complete independence or dominion states; neither rents were reduced, no taxes, nor government monopoly on salt was removed, only a few facilities were given to the bourgeoisie in nominal terms. That's all. But the whole mass movement was stopped when it was reaching its peak and taking a revolutionary form. Once again the interest of the whole country was sacrificed for the selfishness of the bourgeoisie."

- **Mahadev Desai, Madan Mohan Malviya, Devdas Gandhi, Ghanshyam Das Birla and Mira Ben in a ship named Rajputana**
- **Sarojini Naidu called Irwin called Gandhiji two Mahatmas.**
- **K. M. Munshi has called this agreement an epoch-**

4) कांग्रेस का कराची अधिवेशन, 1931

- 1) गांधी इरविन समझौता या दिल्ली समझौता को स्वीकृति प्रदान करने के लिए कांग्रेस का अधिवेशन **29 मार्च 1931 को वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में कराची** में आयोजित किया गया
- 2) कराची अधिवेशन में **मौलिक अधिकार** तथा **आर्थिक कार्यक्रम** संबंधी प्रस्ताव पारित किए गए
- 3) अधिवेशन में कांग्रेस के द्वारा किसी भी तरह की राजनीतिक हिंसा का समर्थन ना करने की बात दोहराते हुए क्रांतिकारियों के वीरता और बलिदान की प्रशंसा की गई
- 4) मौलिक अधिकारों से संबंधित प्रस्ताव :-
 - ♀ अभिव्यक्ति एवं प्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता
 - ♀ संगठन बनाने की स्वतंत्रता
 - ♀ सार्वभौम वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनावों की स्वतंत्रता
 - ♀ सभा एवं सम्मेलन आयोजित करने की स्वतंत्रता



आज का इतिहास

गांधी-इरविन समझौते की मुख्य बातें

दांडी मार्च के राजनीतिक बंदियों को रिहा किया

भारतीयों को फिर से मिला नमक बनाने का हक

आंदोलन के दौरान हुए त्यागपत्र किए गए अस्वीकार

आंदोलन में जब्त की गई संपत्ति भी सबको लौटाई गई



आज का इतिहास

आजादी के बाद 562 रियासतों को एक कर एक देश बनाया

हैदराबाद और जूनागढ़ जैसी रियासतों पर पाक की चाल नाकाम की

15 दिसंबर 1950 को रात 9 बजकर 37 मिनट पर आखिरी सांस ली

4) Karachi session of Congress, 1931

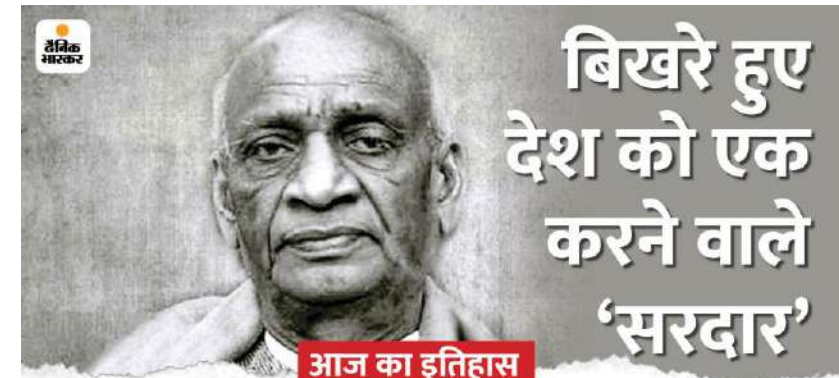
- 1) To approve the Gandhi Irwin Pact or Delhi Pact Congress session was held in Karachi on 29 March 1931 under the chairmanship of Vallabhbhai Patel.
- 2) **Fundamental rights** and **economic program** resolutions were passed in Karachi session
- 3) In the convention, the valor and sacrifice of the revolutionaries were praised while reiterating that the Congress did not support any kind of political violence.
- 4) Fundamental Rights Proposals :-
 - ♀ Full freedom of expression and press
 - ♀ freedom to form organization
 - ♀ Freedom of election on the basis of universal adult suffrage
 - ♀ Freedom to hold meetings and conferences



आज का इतिहास

गांधी-इरविन समझौते की मुख्य बातें

दांडी मार्च के राजनीतिक बंदियों को रिहा किया	भारतीयों को फिर से मिला नमक बनाने का हक	आंदोलन के दौरान हुए त्यागपत्र किए गए अस्वीकार	आंदोलन में जब्त की गई संपत्ति भी सबको लौटाई गई
--	---	---	--



आज का इतिहास

आजादी के बाद 562 रियासतों को एक कर एक देश बनाया	हैदराबाद और जूनागढ़ जैसी रियासतों पर पाक की चाल नाकाम की	15 दिसंबर 1950 को रात 9 बजकर 37 मिनट पर आखिरी सांस ली
---	--	---

♀ जाति धर्म एवं लिंग इत्यादि से हटकर कानून के समक्ष समानता का अधिकार

♀ सभी धर्मों के प्रति राज्य का तटस्थ भाव

♀ निशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की गारंटी

5) राष्ट्रीय आर्थिक कार्यक्रम से संबंधित प्रस्ताव :-

♀ लगान और मालगुजारी में उचित कटौती

♀ अलाभकर जोतो को लगन से मुक्ति

♀ किसानों को कर्ज से राहत और सूदखोरों पर नियंत्रण

♀ मजदूरों के लिए बेहतर सेवा शर्तें, महिला मजदूरों की सुरक्षा तथा काम के नियमित घंटे

♀ मजदूरों और किसानों को अपने यूनियन बनाने की स्वतंत्रता

♀ प्रमुख उद्योगों परिवहन और खदान को सरकारी स्वामित्व एवं नियंत्रण में रखने का वायदा

6) अधिवेशन में कांग्रेस ने पहली बार **पूर्ण स्वराज्य को परिभाषित** किया

➤ कराची अधिवेशन के पूर्व 23 मार्च 1931 को भगत सिंह राजगुरु एवं सुखदेव को फांसी दी गई इनके मृत्युदंड के कारण गांधी जी को अपनी कराची यात्रा के दौरान जनता के तीव्र आक्रोश का सामना करना पड़ा

➤ इस दौरान गांधीजी ने कहा "गांधी मर सकता है किंतु गांधीवाद नहीं"। पंजाब नौजवान सभा ने भगत सिंह एवं उनके कामरेड साथियों को फांसी की सजा सेना न बचा पाने के लिए गांधीजी की तीव्र आलोचना की

♀ Right to equality before the law irrespective of caste, religion and gender etc.

♀ Neutral attitude of the state towards all religions

♀ Guarantee of free and compulsory primary education

5) Proposals relating to National Economic Program :-

♀ Fair deduction in rent and revenue

♀ No tax for infertile land

♀ Debt relief to farmers and control over moneylenders

♀ Better service conditions for workers, safety of women workers and regular working hours

♀ Freedom for workers and peasants to form their own unions

♀ Promise to keep key industries, transport and mines under government ownership and control

6) In the session, for the first time, the **Congress defined Purna Swaraj.**

- Bhagat Singh Rajguru and Sukhdev were hanged on 23 March 1931 before the Karachi session.
- During this Gandhiji said "Gandhi may die but Gandhism cannot". Punjab Naujawan Sabha sharply criticized Gandhiji for not being able to save the army from the death sentence to Bhagat Singh and his comrades.

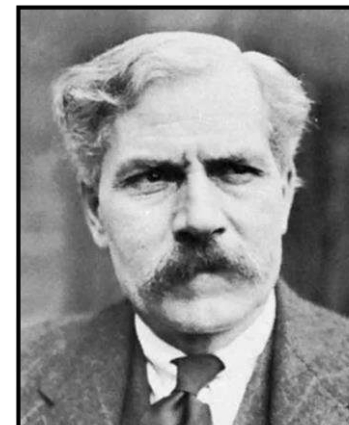
5) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (7 सितंबर 1931 से 1 दिसंबर 1931)

1) सामान्य परिचय

- 1) **स्थान व समय :-** 7 सितंबर 1931 से 1 दिसंबर 1931 तक लंदन के सेंट जेम्स पैलेस में
- 2) **भारतीय वायसराय :-** लार्ड विलिंगटन (1931 से 1936)
- 3) **ब्रिटिश प्रधानमंत्री :-** रैम्जे मैकडोनाल्ड (लेबर पार्टी के स्थान पर सर्वदलीय सरकार बनने से कमजोर स्थिति)
- 4) **भारत के गृह सचिव :-** सैमुअल होअर
- 5) **कुल 31 प्रतिभागी :-**

- ♀ **कांग्रेस** - महात्मा गांधी (S.S. राजपूताना जहाज व किंग्स पैलेस होटल)
- ♀ **भारतीय महिला** - सरोजनी नायडू

- ♀ **दलित** - डॉ भीमराव अंबेडकर
- ♀ **हिन्दू महासभा** - मदन मोहन मालवीय
- ♀ **उदारवादी** - सप्रू चिंतामणि
- ♀ **भारतीय व्यवसायी** - जीडी बिड़ला
- ♀ **मुस्लिम लीग** - मो. इकबाल, अली इमाम, जिन्ना
- ♀ **भारतीय ईसाई** - एस के दत्ता



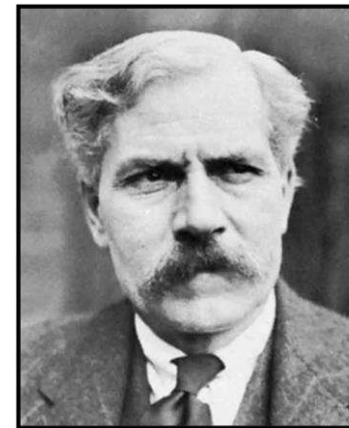
रैम्जे मैकडोनाल्ड



5) second round table conference (7 September 1931 to 1 December 1931)

1) General introduction

- 1) **Place and Time :-** 7 September 1931 to 1 December 1931
at St James's Palace in London
- 2) **Indian Viceroy :-** Lord Willington (1931 to 1936)
- 3) **British Prime Minister :-** Ramsay MacDonald (weak
position due to the formation of an all-party
government in place of the Labor Party)
- 4) **Home Secretary of India :-** Samuel Hoare
- 5) **Total 31 participants :-**
 - ♀ **Congress** - Mahatma Gandhi (S.S. Rajputana jahaz
and King's Palace Hotel)
 - ♀ **Indian woman** - Sarojini Naidu
 - ♀ **Dalit** - Dr. Bhimrao Ambedkar
 - ♀ **Hindu Mahasabha** - Madan Mohan Malviya
 - ♀ **Liberals** - Sapru, Chintamani
 - ♀ **Indian Businessman** - GD Birla
 - ♀ **Muslim League** - Mohd. Iqbal, Ali Imam, Jinnah
 - ♀ **Indian Christian** - SK Dutta



रैम्जे मैकडोनाल्ड



2) मुख्य घटनाएं व निष्कर्ष

- 1) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में मुख्यतः रुढ़िवादी, प्रतिक्रियावादी, साम्प्रदायिक एवं ब्रिटिश राजभक्तों के प्रतिनिधि थे, जिनका उपयोग सरकार ने यह प्रदर्शित करने के लिए किया कि कांग्रेस सभी भारतीयों को एकमात्र प्रतिनिधि संस्था नहीं है।
- 2) इस समय तक पृथक निर्वाचक मंडल की मांग मुस्लिम वर्ग के अतिरिक्त दलित, भारतीय ईसाई, एंग्लो इंडियन एवं यूरोपियन भी करने लगे थे
- 3) गांधीजी ने अनुसूचित जातियों को हिन्दू समाज का अभिन्न अंग बताकर डॉ आंबेडकर द्वारा की गई दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल की मांग का विरोध किया

- 4) सम्मेलन की विफलता का लाभ उठाकर प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडोनाल्ड ने भारत के लिए एक योजना रखी। इस प्रस्ताव में निम्नलिखित बातों पर बल दिया गया था -
 - ♀ संघीय केंद्र और स्वायत्तता की व्यवस्था
 - ♀ प्रांतों के लिये सीमित स्वायत्तता अधिकार
 - ♀ वित्त, विदेशी व्यापार और सुरक्षा संबंधी मामलों में अंग्रेजी संसद एवं वायसराय का एकाधिकार

सरकारी रुख से दुखी और निराश होकर गांधी **बेसंठियाना**

नामक इटली के पोत पर बैठकर **28 दिसंबर 1931** को भारत लौटे। गांधीजी ने कहा "मैं भारत खाली तो जरूर लौटा हूं पर मैंने अपने देश की इज्जत को बट्टा नहीं लगने दिया"। 29 दिसम्बर 1931 को कांग्रेस कार्यकारिणी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से प्रारंभ करने का निर्णय लिया।

फ्रैंक मॉरिस :- "अर्धनग्न फकीर को ब्रिटिश प्रधानमंत्री से वार्ता हेतु सेंट जेम्स पैलेस की सीढ़ियाँ चढ़ने का दृश्य अपने-आप में अनोखा एवं दिव्य प्रभाव उत्पन्न करने वाला था"

2) Main Events and Conclusions

- 1) The Second Round Table Conference consisted mainly of conservative, reactionary, communal and British royalists, which the government used to demonstrate that the Congress was not the only representative body for all Indians.
- 2) By this time, apart from the Muslim class, Dalits, Indian Christians, Anglo-Indians and Europeans were also demanding a separate electorate.
- 3) Gandhiji opposed the demand of separate electorate for Dalits made by Dr. Ambedkar by calling Scheduled Castes an integral part of Hindu society.

- 4) Taking advantage of the failure of the conference, Prime Minister Ramsay MacDonald laid out a plan for India. The following points were emphasized in this proposal -
 - ♀ Federal center and system of autonomy
 - ♀ limited autonomy rights for the provinces
 - ♀ Monopoly of the English Parliament and the Viceroy in matters relating to finance, foreign trade and securityUnhappy and disappointed with the government's stand, Gandhi returned to India on **28 December 1931** from an Italian ship named Besantiana. Gandhiji said "I have returned empty-handed to India, but I have not allowed the honor of my country to be tarnished". On 29 December 1931, the Congress Working Committee decided to resume the Civil Disobedience Movement.

Frank Morris :- "The sight of a half-naked mystic climbing the stairs of St. James's Palace to talk to the British Prime Minister was a unique and divine effect in itself."

6) साम्प्रदायिक पंचाट (16 अगस्त 1932)

ब्रिटिश प्रधानमंत्री **रैम्जे मैकडोनाल्ड** ने भारतीय मताधिकार समिति (लोथियन समिति) की रिपोर्ट के आधार पर **16 अगस्त 1932** को साम्प्रदायिक पंचाट की घोषणा की, जिसके बिंदु निम्नलिखित हैं :-

- 1) अल्पसंख्यकों अर्थात् **मुसलमानों, सिक्खों तथा यूरोपीयों** के लिए अलग निर्वाचन की व्यवस्था की गई
- 2) दलितों को हिंदुओं से अलग अल्पसंख्यक मानकर, पृथक निर्वाचन मंडल की व्यवस्था की गई
- 3) प्रांतीय व्यवस्थापिका सभाओं की सदस्य संख्या बढ़ाकर दुगुनी कर दी गई। जिसमें 71 सीटें दलितों के लिए आरक्षित थीं
- 4) स्त्रियों के लिए भी कुछ स्थान आरक्षित किये गए
- 5) श्रम, वाणिज्य, उद्योग, चाय बागान संघों, जमींदारों और विश्वविद्यालयों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था की गई
- 6) जिन क्षेत्रों में हिंदू अल्पसंख्यक में थे, उन्हें वैसी रियायतें नहीं दी गई जैसी मुसलमानों को दी गई जहां उनकी संख्या कम थी

इस प्रकार सांप्रदायिक पंचाट ने दलितों को हिंदुओं से पृथक करने का प्रयास किया तथा "फूट डालो व राज करो" की नीति द्वारा भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने का भी प्रयास किया।

6) Communal Award(16 August 1932)

British Prime Minister **Ramsay Macdonald** announced the Communal Award on **16 August 1932** on the basis of the report of the Indian Suffrage Committee (Lothian Committee), whose points are as follows :-

- 1) Separate electorates were arranged for minorities i.e., **Muslims, Sikhs and Europeans.**
- 2) Treating Dalits as a separate minority from Hindus, a separate electoral college was arranged
- 3) The number of members of the provincial legislative assemblies was doubled. In which 71 seats were reserved for Dalits.
- 4) Some seats were also reserved for women.
- 5) Separate elections were arranged for labour, commerce, industry, tea garden unions, zamindars and universities.
- 6) Areas where Hindus were in the minority were not given the same concessions as were given to Muslims where they were few.

Thus, the Communal Tribunal tried to separate the Dalits from the Hindus and also tried to weaken the Indian national movement by the policy of "divide and rule".

7) पूना समझौता, 24 सितंबर 1932

महात्मा गांधी ने सांप्रदायिक पंचाट का विरोध किया क्योंकि इसके द्वारा दलित वर्ग को हिंदुओं से अलग करने का प्रयत्न किया जा रहा था। अतः गांधीजी ने 20 सितंबर 1932 को यरवदा जेल में आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया। इसी अनशन को समाप्त करने के लिए पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ राजेंद्र प्रसाद, पुरुषोत्तम दास, राजगोपालाचारी, एमसी राजा के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप 24 सितंबर 1932 को पूना समझौता हुआ। दलित वर्ग की ओर से **डॉ. अम्बेडकर** ने तथा हिन्दू जाति की ओर से **पं. मदनमोहन मालवीय** ने इस समझौते पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते के तहत :-

- ♀ दलित वर्ग के लिए पृथक निर्वाचक मण्डल समाप्त कर दिया गया।
- ♀ केन्द्रीय विधानमण्डल में दलित वर्ग के लिए आरक्षित सीटों की संख्या में 18% की वृद्धि।
- ♀ प्रान्तीय विधानमण्डलों में दलित वर्ग के लिए आरक्षित सीटों की संख्या बढ़ाकर 148 कर दी गई।
- ♀ सार्वजनिक सेवाओं एवं स्थानीय निकायों में दलित वर्ग के उचित प्रतिनिधित्व और शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास के लिए प्रयास किया जाएगा।

पूना समझौते के बाद गांधीजी का पूरा ध्यान दलित उत्थान की तरफ हो गया। गांधीजी ने दलित वर्ग को 'हरिजन' नाम दिया।

7) Poona Pact, 24 September 1932

Mahatma Gandhi opposed the Communal Award as it was trying to separate the Depressed Classes from the Hindus. Therefore, Gandhiji started a fast unto death on 20 September 1932 in Yerwada Jail. Poona Pact was signed on 24 September 1932 as a result of the efforts of Pandit Madan Mohan Malviya, Dr. Rajendra Prasad, Purushottam Das, Rajagopalachari, MC Raja to end this fast. **Dr. Ambedkar** on behalf of the Dalit class and Pt. **Madan Mohan Malviya** on behalf of the Hindu caste signed this agreement. under this agreement :-

- ♀ Separate electorates for the Depressed Classes were abolished.
- ♀ 18% increase in the number of seats reserved for Depressed Classes in the Central Legislature.
- ♀ The number of seats reserved for the Depressed Classes in the provincial legislatures was increased to 148.
- ♀ Efforts will be made for proper representation and educational and economic development of the Depressed Classes in public services and local bodies.

After the Poona Pact, Gandhiji's entire attention turned towards the upliftment of Dalits. Gandhiji gave the name 'Harijan' to the depressed class.

8) तृतीय गोलमेज सम्मेलन (17 नवंबर 1932 से 24 दिसंबर 1932)

1) **स्थान व समय :-** 17 नवंबर 1932 से 24 दिसंबर 1932 तक लंदन में

2) **इस बार 46 प्रतिनिधि :-**

- ♀ डॉ अम्बेडकर व तेज बहादुर सप्रू (तीनों सम्मेलन)
- ♀ कांग्रेस, जिन्ना व ब्रिटेन की लेबर पार्टी द्वारा बहिष्कार

3) **परिणाम :-**

- ♀ **मार्च 1933 :-** इंग्लैंड की सरकार ने **श्वेत पत्र** प्रकाशित किया
- ♀ **अप्रैल 1933 :-** इंग्लैंड की संसद ने लॉर्ड लिनलिथगो की अध्यक्षता में संयुक्त प्रवर समिति बनाई
- ♀ **11 नवंबर 1934 :-** समिति की रिपोर्ट के आधार पर ब्रिटिश संसद ने भारतीय शासन अधिनियम 1935 पारित किया
- ♀ 1935 के कानून द्वारा भारत में प्रांतीय स्वशासन की स्थापना की गई और कांग्रेस ने चुनावों में भाग लिया



गांधी-अंबेडकर के बीच पूना पैक्ट

अगस्त 1932 में
ब्रिटिश सरकार
ने दलितों को
दो वोट का
अधिकार दिया।

अंग्रेजों के
इस फैसले के
खिलाफ गांधी जी
आमरण अनशन
पर बैठ गए।

24 सितंबर 1932 को
पुणे की यरवदा जेल में
गांधी-अंबेडकर के बीच
इसे खत्म करने के लिए
समझौता हुआ।



8) Third Round Table Conference (17 November 1932 to 24 December 1932)

1) **Place and time :-** In London from 17 November 1932 to 24 December 1932

2) **46 reps this time :-**

♀ Dr. Ambedkar and Tej Bahadur Sapru (all three conferences)

♀ Boycott by Congress, Jinnah and Labor Party of Britain

3) **Result :-**

♀ **March 1933** - The Government of England publishes the **White Paper**

♀ **April 1933** - The Parliament of England formed a joint select committee under the chairmanship of Lord Linlithgow.

♀ **11 November 1934 :-** On the basis of the committee's report, the British Parliament passed the Indian Government Act 1935.

♀ Provincial self-government was established in India by the Act of 1935 and Congress participated in the elections



गांधी-अंबेडकर के बीच पूना पैक्ट

अगस्त 1932 में
ब्रिटिश सरकार
ने दलितों को
दो वोट का
अधिकार दिया।

अंग्रेजों के
इस फैसले के
खिलाफ गांधी जी
आमरण अनशन
पर बैठ गए।

24 सितंबर 1932 को
पुणे की यरवदा जेल में
गांधी-अंबेडकर के बीच
इसे खत्म करने के लिए
समझौता हुआ।



10.15) गांधी जी एवं हरिजन उत्थान

- 1) पूना पैक्ट के पश्चात गांधी जी जेल से रिहा होकर पूर्ण रूप से हरिजनों के उत्थान में संलग्न हो गए
- 2) इस संदर्भ में गांधी जी ने कहा था कि **या तो छुआछूत को जड़ से समाप्त करो या मुझे अपने बीच से हटा दो**
- 3) **सितम्बर, 1932** ई. में गांधीजी ने हरिजन कल्याण के लिए '**अखिल भारतीय छुआछूत विरोधी लीग**' की स्थापना की।
- 4) 1933 में **हरिजन नामक साप्ताहिक पत्र** का प्रकाशन किया
- 5) नवंबर 1933 से अगस्त 1934 तक गांधी जी ने वर्धा से 20000 किलोमीटर लंबी **हरिजन यात्रा प्रारंभ** की
- 6) जनवरी, 1934 ई. में बिहार में आए भूकम्प के बारे में गांधीजी ने कहा "यह सवर्ण हिन्दुओं के पापों का दैवीय दण्ड है।
- 7) ब्रिटिश सरकार ने इन प्रतिक्रियावादी ताकतों को अपना समर्थन दिया यही कारण है कि **1934 में लेजिसलेटिव असेंबली में मंदिर प्रवेश विधेयक पारित** ना हो सका

- **अंबेडकर :-** अछूत, जाति प्रथा की ही देन है। जब तक जाति प्रथा कायम रहेगी अछूत बने रहेंगे।
- **गांधी :-** वर्णाश्रम की जो भी खामियां हो इसमें कोई पाप नहीं है। लेकिन छुआछूत पाप है। छुआछूत जाति प्रथा के कारण नहीं बल्कि उच्च और निम्न के कृत्रिम बंटवारे का प्रतिफल है।

10.15) Gandhiji and Harijan Upliftment

- 1) After the Poona Pact, Gandhi was released from jail and fully engaged in the upliftment of Harijans.
- 2) In this context, Gandhiji had said that either end untouchability from the root or remove me from your midst.
- 3) In September 1932, Gandhiji founded the 'All India Anti-Untouchability League' for the welfare of Harijans.
- 4) Published a weekly paper called Harijan in 1933
- 5) From November 1933 to August 1934, Gandhi started the 20000 km long **Harijan Yatra from Wardha.**
- 6) Regarding the earthquake in Bihar in January 1934, Gandhiji said, "It is a divine punishment for the sins of the upper caste Hindus.
- 7) The British government gave its support to these reactionary forces, which is why the temple entry bill could not be passed in the Legislative Assembly in 1934.

- **Ambedkar :-** Untouchables are the result of caste system. As long as the caste system remains untouchables will remain.
- **Gandhi :-** Whatever the flaws of Varnashram, there is no sin in it. But untouchability is a sin. Untouchability is not due to the caste system but a result of artificial division of high and low.

NOTE

- # गांधीजी ने 1930 में साबरमती आश्रम छोड़ दिया था और प्रतिज्ञा की थी कि स्वराज्य मिलने के पश्चात ही वे साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) में वापस लौटेंगे।
- # 7 नवंबर 1933 को वर्धा से गांधीजी ने अपनी 'हरिजन यात्रा' प्रारंभ की। नवंबर 1933 से जुलाई 1934 तक गांधीजी ने पूरे देश की यात्रा की तथा लगभग 20 हजार किलोमीटर का सफर तय किया।
- # मुख्य उद्देश्य - हर रूप में अशुभ्यता को समाप्त करना।
- # उन्होंने आग्रह किया कि गांवों का भ्रमणकर हरिजनों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उत्थान का कार्य करें।
- # दलितों को 'हरिजन' नाम सर्वप्रथम गांधीजी ने ही दिया था
- # हरिजन उत्थान के इस अभियान में गांधीजी 8 मई व 16 अगस्त 1933 को दो बार लंबे अनशन पर बैठे।
- # अपने हरिजन आंदोलन के दौरान गांधीजी को हर कदम पर सामाजिक प्रतिक्रियावादियों तथा कट्टरपंथियों के विरोध का सामना करना पड़ा।
- # सरकार ने इन प्रतिक्रियावादी तत्वों का भरपूर साथ दिया। अगस्त 1934 में लेजिस्लेटिव एसेंबली में मंदिर प्रवेश विधेयक को गिराकर, सरकार ने इन्हें अनुग्रहित करने का प्रयत्न किया।

NOTE

- ‡ Gandhiji left the Sabarmati Ashram in 1930 and had promised that he would return to the Sabarmati Ashram (Ahmedabad) only after getting Swarajya.
- ‡ Gandhiji started his 'Harijan Yatra' on 7 November 1933 from Wardha. From November 1933 to July 1934, Gandhi traveled all over the country and covered a distance of about 20 thousand kilometres.
- ‡ The main objective is to eliminate untouchability in every form.
- ‡ He urged that by visiting the villages, do the work of social, economic, political and cultural upliftment of the Harijans.
- ‡ The name 'Harijan' was first given by Gandhiji to Dalits.
- ‡ In this campaign for the upliftment of Harijan, Gandhiji sat on a long fast twice on 8 May and 16 August 1933.
- ‡ During his Harijan movement, Gandhiji had to face opposition from social reactionaries and fundamentalists at every step.
- ‡ The government gave full support to these reactionary elements. In August 1934, the government tried to favor them by toppling the Temple Entry Bill in the Legislative Assembly.

10.16) 1937 के प्रांतीय चुनाव

1) परिचय

1) **1930 :-** प्रांतों में उत्तरदाई शासन की स्थापना (साइमन कमीशन की रिपोर्ट)

2) **1930-1932 :-** लंदन में गोलमेज सम्मेलन

3) **1935 :-** भारत शासन अधिनियम



कांग्रेस की सहमति

♀ 1936 का लखनऊ अधिवेशन :- जवाहरलाल नेहरू

♀ 1937 का फैजपुर अधिवेशन :- जवाहरलाल नेहरू


4) **1937 :-** भारत में प्रांतीय चुनाव (11 प्रांतों हेतु)

-: 11 प्रांत :-

- 1) मद्रास
- 2) बिहार
- 3) उड़ीसा
- 4) मध्य प्रांत
- 5) संयुक्त प्रांत
- 6) बम्बई
- 7) बंगाल
- 8) पंजाब
- 9) पश्चिमोत्तर प्रांत
- 10) असम
- 11) सिंध

10.16) 1937 provincial elections

1) Introduction

- 1) **1930 :-** Establishment of responsible government in the provinces (Simon Commission report)
 - 2) **1930-1932 :-** Round Table Conference in London
 - 3) **1935 :-** Government of India Act
- 
Congress Consent
- ♀ 1936 Lucknow session of :- Jawaharlal Nehru
- ♀ 1937 Faizpur session of :- Jawaharlal Nehru
- 4) **1937 :-** Provincial elections in India (for 11 provinces)

-: 11 Province :-

- 1) Madras
- 2) A state in Eastern India
- 3) Orissa
- 4) central province
- 5) United Provinces
- 6) Bombay
- 7) Bengal
- 8) Punjab
- 9) Northwest Province
- 10) Assam
- 11) Sindh

2) परिणाम

कांग्रेस | Congress



- 1) सबसे बड़ी पार्टी
- 2) पांच राज्यों (मध्य प्रांत, संयुक्त प्रांत, बिहार, उड़ीसा और मद्रास) में स्पष्ट बहुमत
- 3) 3 राज्यों (पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत, बंबई और असम) में सबसे बड़ी पार्टी (मिलीजुली सरकार)

4) 8 प्रांतों में सरकार :-

- **संयुक्त प्रांत** - गोविंद बल्लभ पंत
- **मध्य प्रांत** - एन. बी. खरे (बाद में रविशंकर शुक्ल)
- **बिहार** - कृष्ण सिंह

अन्य दल | Other Parties



- 1) डॉक्टर अंबेडकर की पार्टी **“इंडिपेंडेंस लेबर पार्टी”** ने मुंबई में 13 सीटें जीती
- 2) **पंजाब :-** यूनियनिस्ट पार्टी और मुस्लिम लीग (हयात खान)
- 3) **बंगाल :-** कृषक प्रजा पार्टी और मुस्लिम लीग (फजलुल हक)

2) Result

Congress



- 1) Biggest party
- 2) Clear majority in five states (central provinces, united provinces, bihar, orissa and madras)
- 3) Largest party (mixed government) in 3 states (northwest Frontier Province, Bombay and Assam)

4) Government in 8 provinces :-

- **United Provinces** - Govind Ballabh Pant
- **Central Provinces** - N. B. Khare (later Ravi Shankar Shukla)
- **Bihar** - Krishna Singh

Other Parties



- 1) Dr. Ambedkar's party "**Independence Labor Party**" won 13 seats in Mumbai
- 2) **Punjab** :- Unionist Party and Muslim League (Hayat Khan)
- 3) **Bengal** :- Krishak Praja Party and Muslim League (Fazlul Haq)

3) कार्यकाल (1937-39 ई)

1932 के जन सुरक्षा अधिनियम के तहत प्राप्त प्रांतीय सरकारों के सभी आपातकालीन अधिकार रद्द

विभिन्न संगठनों पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं तथा प्रेस पर लगे प्रतिबंध हटा लिए गए

1937 में मुंबई में कपड़ा जांच समिति की नियुक्ति

संयुक्त प्रांत व बिहार में 1939 में काश्तकारी अधिनियम पारित

1939 में बम्बई में औद्योगिक विवाद अधिनियम पारित किया गया

इसके अतिरिक्त नागरिक स्वतंत्रता की बहाली, ग्रामीण उद्योगों के उन्नयन, बुनियादी शिक्षा के विकास, जनजातीय कल्याण, मद्य निषेध संबंधी प्रयास किए गए

3) Tenure (1937-39 b.c.)

```
graph TD; A[3) Tenure (1937-39 b.c.)] --- B[Revoked all emergency powers of provincial governments obtained under the Public Safety Act of 1932.]; A --- C[Restrictions on various organizations, books, magazines and press were removed]; A --- D[Appointment of the Textile Inquiry Committee in Mumbai in 1937]; A --- E[Tenancy Act passed in 1939 in United Provinces and Bihar]; A --- F[The Industrial Disputes Act was passed in Bombay in 1939.]; A --- G[Apart from this, efforts were made for restoration of civil liberties, upgradation of rural industries, development of basic education, tribal welfare, prohibition of alcohol.];
```

Revoked all emergency powers of provincial governments obtained under the Public Safety Act of 1932.

Restrictions on various organizations, books, magazines and press were removed

Appointment of the Textile Inquiry Committee in Mumbai in 1937

Tenancy Act passed in 1939 in United Provinces and Bihar

The Industrial Disputes Act was passed in Bombay in 1939.

Apart from this, efforts were made for restoration of civil liberties, upgradation of rural industries, development of basic education, tribal welfare, prohibition of alcohol.

4) त्यागपत्र (प्रांतीय सरकारों द्वारा)

द्वितीय विश्व युद्ध
का आरंभ सितंबर
1939

लॉर्ड लिनलिथगो
द्वारा भारतीय
विधान मंडलों की
सहमति के बिना
भारत को युद्धरत
राष्ट्र घोषित किया
गया

युद्धोपरांत कांग्रेस
द्वारा स्वतंत्रता की
मांग

वायसराय द्वारा
औपनिवेशिक
स्वराज की बात
की गई

अक्टूबर 1939 में
कांग्रेस
मंत्रीमंडलों ने
त्यागपत्र दे दिया

मुस्लिम लीग
द्वारा 22 दिसंबर
1939 को मुक्ति
दिवस मनाया
गया

4) Resignation (by Provincial Governments)



```
graph TD; A[4) Resignation (by Provincial Governments)] --- B[Beginning of World War II  
September 1939]; A --- C[India was declared a part of world war 2  
by Lord Linlithgow without the consent of the Indian Legislatures]; A --- D[Demand for independence by Congress after war]; A --- E[Viceroy spoke about Colonial Swaraj]; A --- F[Congress cabinets resigned in October 1939]; A --- G[Liberation Day was celebrated by the Muslim League on 22 December 1939.];
```

**Beginning of
World War II
September
1939**

**India was
declared a part
of world war 2
by Lord
Linlithgow
without the
consent of the
Indian
Legislatures**

**Demand for
independence
by Congress
after war**

**Viceroy spoke
about
Colonial Swaraj**

**Congress
cabinets
resigned in
October 1939**

**Liberation Day
was celebrated
by the Muslim
League on 22
December
1939.**

NOTE

द्वितीय विश्व युद्ध



पाकिस्तान की मांग



अगस्त प्रस्ताव



भारत छोड़ो आन्दोलन
(1942)



क्रिप्स मिशन, 1942



व्यक्तिगत सत्याग्रह

NOTE

Second world war



Pakistan's demand



August offer



**Quit india movement
(1942)**



Cripps mission, 1942



**Individual
satyagraha**

10.17) द्वितीय विश्व युद्ध तथा भारत

- 1) 1 सितंबर 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध का आरंभ
- 2) भारतीय की सलाह के बिना लॉर्ड लिनलिथगो ने भारत को युद्धरत राष्ट्र घोषित किया
- 3) कांग्रेस मंत्रिमंडल द्वारा युद्ध उपरांत स्वतंत्रता व केंद्र में अंतरिम सरकार के गठन की मांग
- 4) वायसराय लिनलिथगो द्वारा मांगों की उपेक्षा
- 5) अक्टूबर 1939 में 8 प्रांतों से कांग्रेस मंत्रिमंडल का त्यागपत्र
- 6) मुस्लिम लीग द्वारा मुक्ति दिवस तथा धन्यवाद दिवस का आयोजन
- 7) कांग्रेस ने बिहार के रामगढ़ में मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता में आयोजित अधिवेशन में निम्न मांग –
 - ♀ ब्रिटिश सरकार से सहयोग करने के बदले केंद्र में अंतरिम राष्ट्रीय सरकार के गठन का प्रस्ताव रखा
- 8) वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने कांग्रेस की अंतरिम राष्ट्रीय सरकार की मांग को अस्वीकार करते हुए एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसे अगस्त प्रस्ताव की संज्ञा दी गयी

Allies	Leaders
Great Britain	Winston Churchill, prime minister
France	Charles de Gaulle, leader of French not under German control
Soviet Union	Joseph Stalin, communist dictator
United States	Franklin D. Roosevelt, President

Axis Powers	Leaders
Germany	Adolf Hitler, Nazi dictator
Italy	Benito Mussolini, fascist dictator
Japan	Hideki Tojo, army general and prime minister; Hirohito, emperor

10.17) World War II and India

- 1) World War II started on 1 September 1939 and Lord Linlithgow declared India as part of world war 2 without Indian legislature consent
- 2) Demand for independence after war by Congress cabinet and formation of interim government at the center
- 3) Neglect of demands by Viceroy Linlithgow
- 4) Resignation of Congress cabinet from 8 provinces in October 1939
- 5) Liberation Day and Thanksgiving Day organized by Muslim League
- 6) The Congress made the following demand in the session held under the chairmanship of Maulana Abul Kalam in Ramgarh, Bihar –
 - ♀ Proposed the formation of an interim national government at the center in lieu of cooperation with the British government
- 7) The Viceroy Lord Linlithgow submitted a resolution rejecting the Congress's demand for an interim national government, which was called the August offer.

Allies	Leaders
Great Britain	Winston Churchill, prime minister
France	Charles de Gaulle, leader of French not under German control
Soviet Union	Joseph Stalin, communist dictator
United States	Franklin D. Roosevelt, President

Axis Powers	Leaders
Germany	Adolf Hitler, Nazi dictator
Italy	Benito Mussolini, fascist dictator
Japan	Hideki Tojo, army general and prime minister; Hirohito, emperor

Axis

Italy

- Mussolini's Fascist Party believed in supreme power of the state
- Cooperated with Germany from 1936 onward



Germany

- Hitler's Nazi Party believed in all-powerful state, territorial expansion, and ethnic purity
- Invaded Poland in 1939, France in 1940, and the USSR in 1941



Japan

- Military leaders pushed for territorial expansion
- Attacked Manchuria in 1931
- Invaded China in 1937
- Attacked Pearl Harbor in 1941



USSR

- Communists, led by harsh dictator Joseph Stalin, created industrial power
- Signed non-aggression pact with Germany in 1939
- Received U.S. aid; eventually fought with Allies to defeat Germany



Allies

United States

- Passed Neutrality Acts in 1935, 1937, and 1939
- Gave lend-lease aid to Britain, China, and the USSR
- Declared war on Japan in 1941



Great Britain

- Tried to appease Hitler by allowing territorial growth
- Declared war on Germany in 1939
- Resisted German attack in 1940
- Received U.S. aid through lend-lease program and cash-and-carry provision



France

- Along with Great Britain, tried to appease Hitler
- Declared war on Germany in 1939 after Poland was invaded
- Occupied by Nazis in 1940



10.18) अगस्त प्रस्ताव (8अगस्त 1940)

वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने 8 अगस्त 1940 को द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कांग्रेस से सहयोग प्राप्त करने के लिए उसके समक्ष प्रस्ताव रखा, जिसे अगस्त प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है :-

- 1) युद्ध के बाद एक प्रतिनिधि मूलक संविधान निर्मात्री संस्था का गठन किया जाएगा
- 2) वायसराय की कार्यकारिणी परिषद में भारतियों की संख्या बढ़ा दी जाएगी
- 3) एक युद्ध सलाहकार परिषद गठित की जाएगी
- 4) भारत का शासन किसी ऐसे समुदाय को नहीं सौंपा जाएगा, जिसका विरोध भारत का कोई शक्तिशाली और प्रभावशाली वर्ग कर रहा हो

अगस्त प्रस्ताव को कांग्रेस सहित मुस्लिम लीग ने भी तुरन्त अस्वीकृत कर दिया। जवाहरलाल नेहरू नगर से प्रस्ताव के विषय में कहा कि "जिस डोमिनियन स्टेट की स्थिति पर यह प्रस्ताव आधारित है वह दरवाजे में जड़ी जंग लगी कील की तरह है" जबकि मुस्लिम लीग विभाजन से कम और कुछ भी नहीं चाहती थी

10.18) August Offer (August 8, 1940)

The Viceroy Lord Linlithgow made a proposal to the Congress on 8 August 1940 to seek cooperation from the Congress during the Second World War, which is known as the August offer. :-

- 1) A representative constitution-making body will be formed after the war.
- 2) The number of Indians in the Viceroy's Executive Council will be increased
- 3) A War Advisory Council will be set up
- 4) The rule of India will not be handed over to any such community, which is being opposed by any powerful and influential section of India.

The August offer was immediately rejected by the Muslim League including the Congress. Jawaharlal Nehru said about the proposal to Nagar that "the position of the Dominion State idea was as dead as doornail where as muslim league didi not want anything less than partition of india.

10.19) व्यक्तिगत सत्याग्रह/दिल्ली चलो आंदोलन (17 अक्टूबर 1940)

1) महात्मा गांधी द्वारा पवनार आश्रम (महाराष्ट्र) से 1940 में प्रस्तावित नैतिक व अहिंसक विरोध का कार्यक्रम

2) कारण :-

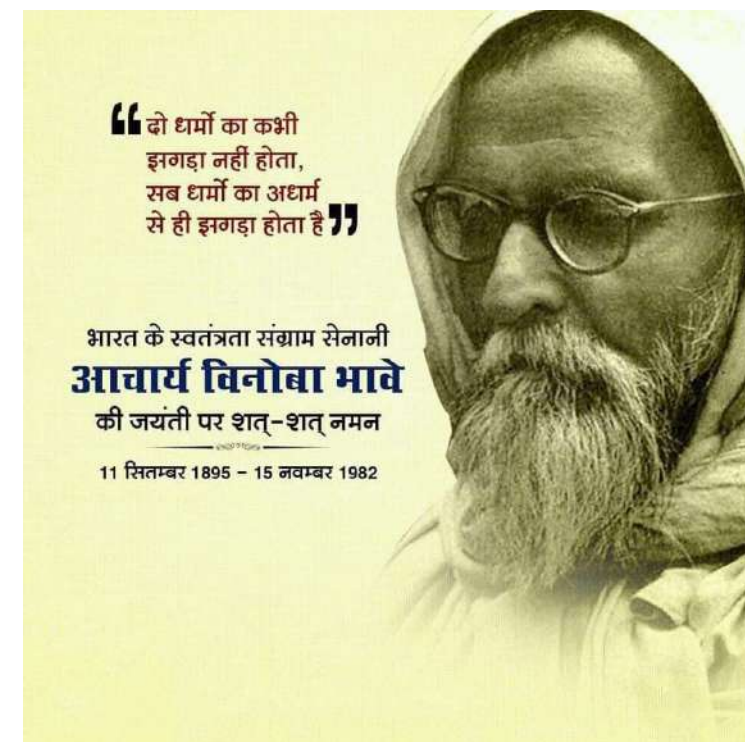
- ♀ अगस्त प्रस्ताव का विरोध करना
- ♀ ब्रिटिश द्वारा भारत को युद्धरत देश घोषित करना

3) उद्देश्य व कार्यप्रणाली :-

- ♀ महात्मा गांधी द्वारा चुना हुआ सत्याग्रह पूर्व निर्धारित स्थान पर भाषण देकर अपनी गिरफ्तारी देता था
- ♀ भारतीयों की युद्ध के प्रति असहमति का प्रचार
- ♀ दिल्ली तक जन जागरूकता यात्रा

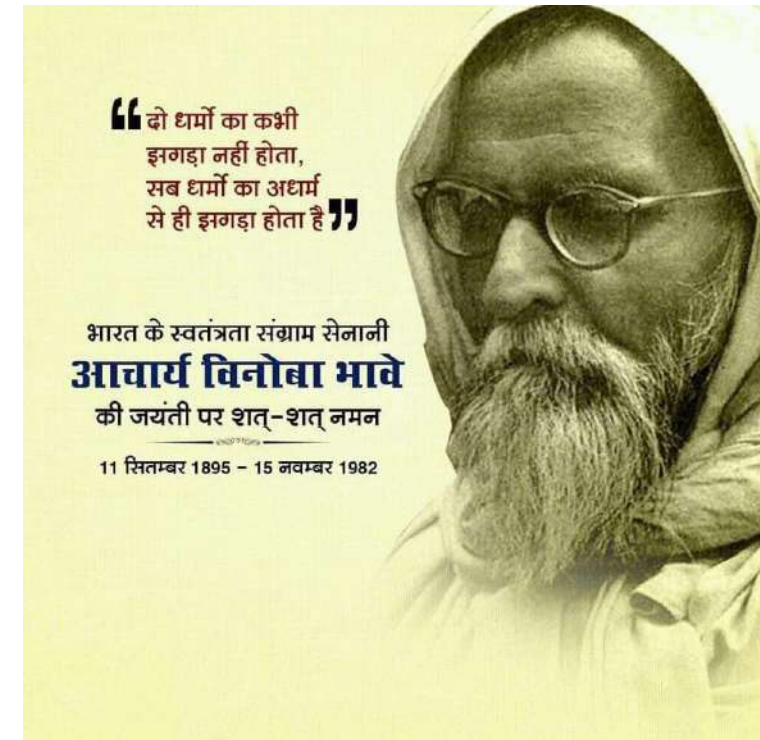
4) पहले सत्याग्रही विनोबा भावे, दूसरे सत्याग्रही जवाहरलाल नेहरू तथा तीसरे सत्याग्रही ब्रह्मदत्त थे

5) मई, 1941 तक लगभग 25000 सत्याग्रहियों को सरकार के द्वारा गिरफ्तार किया जा चुका था



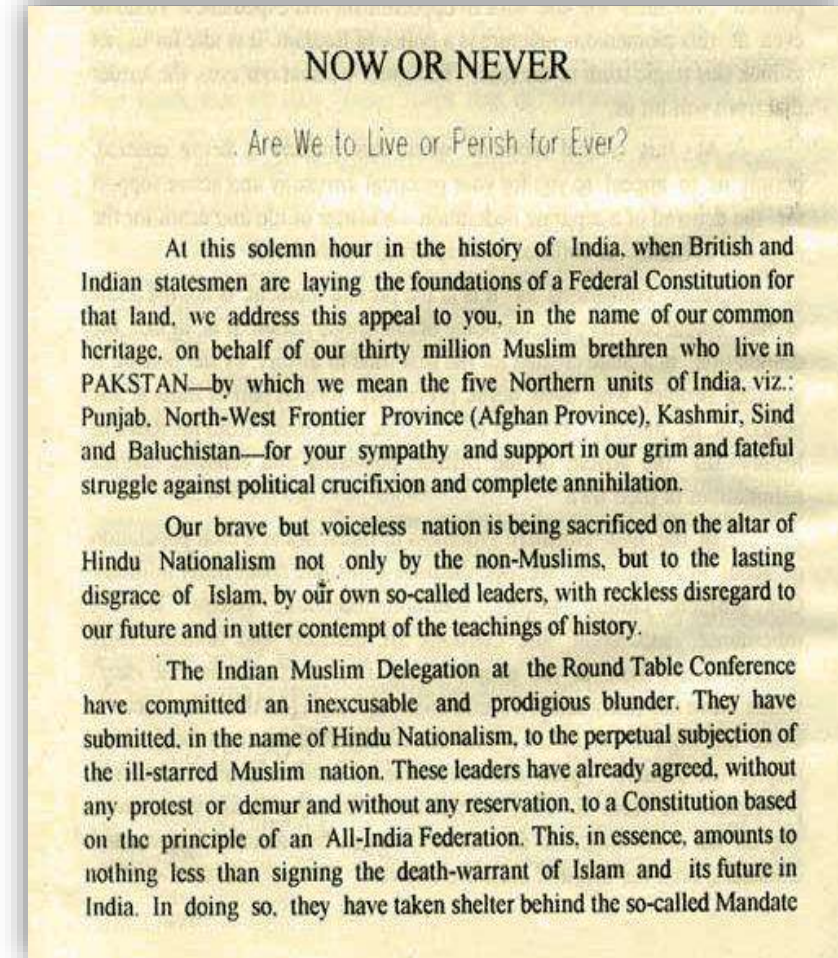
10.19) Individual Satyagraha/Delhi Chalo Movement (17 October 1940)

- 1) The program of moral and non-violent protest proposed by Mahatma Gandhi from Pawanar Ashram (Maharashtra) in 1940
- 2) **Cause :-**
 - ♀ Opposed august resolution
 - ♀ Declaration of India as a warring country by the British
- 3) **Objectives and Functions :-**
 - ♀ The Satyagraha chosen by Mahatma Gandhi gave his arrest by giving a speech at a predetermined place.
 - ♀ Propagation of Indians' dissent to war
 - ♀ Public Awareness Tour to Delhi
- 4) The first Satyagrahi was Vinoba Bhave, the second Satyagrahi Jawaharlal Nehru and the third Satyagrahi Brahmabhatt.
- 5) By May 1941, about 25000 satyagrahis had been arrested by the government.



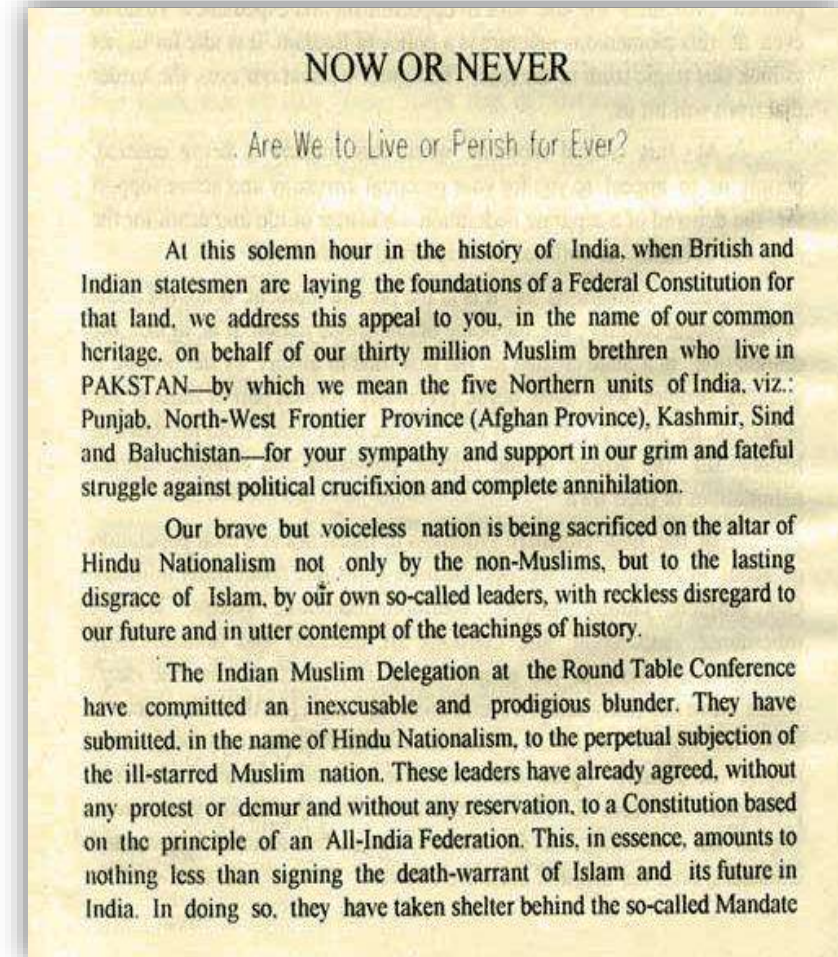
10.20) पाकिस्तान की मांग (23 मार्च 1940)

- 1) मुहम्मद अली जिन्ना की अध्यक्षता में 23 मार्च, 1940 को लाहौर में सम्पन्न मुस्लिम लीग के अधिवेशन में पाकिस्तान की औपचारिक मांग
 - प्रस्ताव का प्रारूप :- हयात खान
 - प्रस्ताव की प्रस्तुति :- फजलुल हक
- 2) 23 मार्च 1943 को मुस्लिम लीग द्वारा **पाकिस्तान दिवस** मनाया गया था
- 3) **पाकिस्तान** शब्द को सर्वप्रथम **कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के छात्र चौधरी रहमत** अली ने 1933 में गढ़ा था
- 4) मुसलमानों के लिए पृथक राष्ट्र का विचार 1930 में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में मुहम्मद इकबाल ने रखा था। हालांकि मुसलमानों के लिए प्रथम राष्ट्र की **संकल्पना** सर सैयद अहमद खान ने की थी



10.20) Demand for Pakistan (23 March 1940)

- 1) The formal demand of Pakistan in the session of the Muslim League held in Lahore on 23 March 1940 under the chairmanship of Muhammad Ali Jinnah
 - Format of Proposal :- Hayat Khan
 - Presentation of Motion :- Fazlul Haque
- 2) **Pakistan Day** was celebrated by the Muslim League on 23 March 1943
- 3) The term **Pakistan** was first coined by **Cambridge University student Chaudhry Rahmat Ali** in 1933
- 4) The idea of a separate nation for Muslims was put forward by Muhammad Iqbal at the Allahabad session of the Muslim League in 1930. Although the concept of first nation for Muslims was done by Sir Syed Ahmed Khan.



10.21) क्रिप्स प्रस्ताव (मार्च 1942)

30 मार्च को स्टैफोर्ड क्रिप्स की अध्यक्षता वाली समिति ने द्वितीय विश्व युद्ध में भारतीयों के समर्थन प्राप्ति हेतु निम्न प्रस्ताव रखे :-

- 1) युद्धोपरांत डोमिनियन स्टेट्स, भारतीय संघ की स्थापना स्थापना व ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल से अलग होने की स्वतंत्रता
- 2) संविधान-निर्मात्री परिषद का गठन(ब्रिटिश भारत+देशी रियासतों के प्रतिनिधि
- 3) नवीन संविधान को स्वीकृत या अस्वीकृत करने की स्वतंत्रता प्रांतों को होगी
- 4) रक्षा मंत्रालय ब्रिटिश सरकार के पास रहेगा

कांग्रेस ने प्रांतीय आत्मनिर्णय के अधिकार, मुस्लिम लीग ने पृथक पाकिस्तान की मांग के आधार पर इसे अस्वीकार किया महात्मा गांधी ने क्रिप्स मिशन को **पोस्ट डेटेड चेक** कहा जबकि जवाहरलाल नेहरू ने **डूबते हुए बैंक का चेक** कहा



10.21) Cripps Proposal (March 1942)

On 30 March, the committee headed by Stafford Cripps made the following proposals for the support of Indians in World War II :-

- 1) Dominion status after the war, establishment of the Indian Union and independence from the British Commonwealth
- 2) Constitution-making council formed (British India + representatives of the princely states)
- 3) The provinces will have the freedom to accept or reject the new constitution.
- 4) The Defense Ministry will remain with the British Government.

Congress rejected it on the grounds of the right of provincial self-determination, Muslim League demanded a separate Pakistan Mahatma Gandhi called Cripps Mission a **post-dated check** while Jawaharlal Nehru called a **sinking bank check**



10.22) भारत छोड़ो आन्दोलन

सामाजिक आधार

04

प्रारंभ व प्रसार

03

उद्देश्य व कार्यक्रम

02

पृष्ठभूमि व कारण

01

आंदोलन के चरण

05

आन्दोलन का पतन

06

आन्दोलन का
मूल्यांकन/समीक्षा/महत्व

07

आंदोलन से सम्बंधित मुद्दे

08



10.22) Quit India Movement

Social base

04

Stages of movement

05

Launch and spread

03

Collapse of the movement

06

Objectives and programs

02

Evaluation/review/importance of movement

07

Background and reason

01

Movement related issues

08



1) पृष्ठभूमि व कारण

8 अगस्त 1942 को **बम्बई के गोवालिया टैंक मैदान** से गांधी जी द्वारा प्रारंभ आन्दोलन जिसका अनुमोदन **कांग्रेस के वर्धा अधिवेशन** में किया गया था। **भारत छोड़ो** का नारा **यूसुफ मेहर अली** ने दिया। भारत छोड़ो आंदोलन या अगस्त क्रांति के निम्न **कारण** थे :-

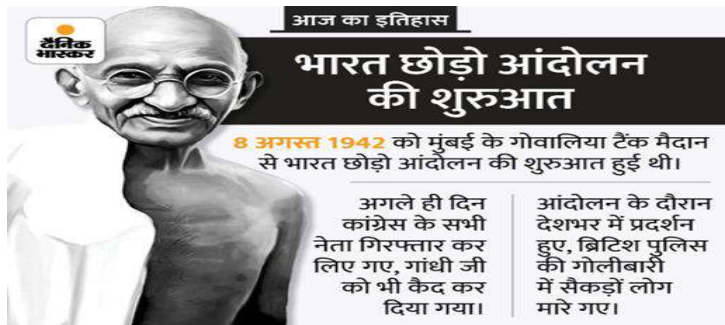
- 1) 1 सितंबर 1939 को प्रारंभ हुए द्वितीय विश्वयुद्ध में बिना भारतीय नेताओं की सहमति के भारत को युद्धरत राष्ट्र घोषित करना
- 2) मार्च 1942 में भारत आए क्रिप्स मिशन की असफलता
- 3) युद्ध के कारण उपजी महंगाई, बेरोज़गारी, आवश्यक वस्तुओं का अभाव
- 4) जापान द्वारा ब्रिटेन की लगातार पराजय के कारण भारतीयों के ऊपर जापानियों के नियंत्रण का खतरा
- 5) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार द्वारा शांतिपूर्ण राजनीतिक गतिविधियों को प्रतिबंधित करना
- 6) सविनय अवज्ञा आंदोलन के पश्चात् व्यापक स्तर पर नवीन संघर्ष हेतु पर्याप्त ऊर्जा व उत्साह का संचार



1) Background and reasons

On 8 August 1942, the movement started by Gandhiji **from Gwalia Tank Maidan in Bombay**, **which was approved in the Wardha session of the Congress**. **The slogan of Quit India was given by Yusuf Meher Ali**. The following were reasons of Quit India Movement or August Revolution :-

- 1) Declaring India as a warring nation without the consent of the Indian leaders in the Second World War that started on 1 September 1939.
- 2) Failure of Cripps Mission in March 1942
- 3) Inflation, unemployment, lack of essential commodities due to war.
- 4) The threat of Japanese control over the Indians due to the continued defeat of Britain by Japan
- 5) Prohibition of peaceful political activities by the British Government during World War II
- 6) After the civil disobedience movement, sufficient energy and enthusiasm was communicated for a new struggle on a large scale.



2) उद्देश्य व कार्यक्रम

भारत छोड़ो आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन को समाप्त करके पूर्ण स्वराज की प्राप्ति था जिस हेतु गांधी ने 8 अगस्त 1942 को मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता में बम्बई में आयोजित कांग्रेस बैठक में निम्न कार्यक्रमों का प्रस्ताव रखा :-

- 1) सरकारी कर्मचारी नौकरी ना छोड़ें लेकिन कांग्रेस के प्रति निष्ठा की घोषणा कर दें
- 2) देसी रियासतों के राजा महाराजा भारतीय जनता की प्रभुसत्ता को स्वीकार कर लें एवं रियासतों में रहने वाली जनता स्वयं को भारतीय राज्य का अंग घोषित कर दें
- 3) काश्तकारों से कहा गया कि यदि ज़मींदार सरकार का साथ दें, तो वे कर अदा न करें और यदि ज़मींदार सरकार विरोधी हो, तो पारस्परिक सहमति के आधार पर तय किया
- 4) गया लगान अदा करते रहें।
- 5) किसानों को निर्देश दिया गया कि वे मालगुज़ारी देने से इनकार कर दें।
- 6) छात्रों से कहा गया कि वे पढ़ाई तभी छोड़ें, जब वे आजादी प्राप्त होने तक इस निर्णय पर अडिग रह सकें।
- 7) सैनिक सेना से त्यागपत्र नहीं दें, लेकिन अपने सहयोगियों एवं भारतीयों पर गोली न चलाने का निश्चय करें।

2) Objectives and Programs

The main objective of Quit India Movement was the attainment of Purna Swaraj by ending British rule, for which Gandhi proposed the following programs in the Congress meeting held in Bombay on 8 August 1942 under the chairmanship of Maulana Abul Kalam :-

- 1) **Government servants** : do not resign your job but proclaim loyalty to the INC.
- 2) **Soldiers** : be with the army but refrain from firing on compatriots.
- 3) **Peasants** : pay the agreed-upon rent if the landlords/Zamindars are anti-government; if they are pro-government, do not pay the rent.
- 4) **Students** : can leave studies if they are confident enough.
- 5) **Princes** : support the people and accept the sovereignty of them.
- 6) **People of the princely states** : support the ruler only if he is anti-government; declare themselves as part of the Indian nation.

Timeline

- ‡ **1939** : द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत
- ‡ **1 सितंबर 1939** : लॉर्ड लिनलिथगो ने बिना भारतीय नेताओं की सहमति से भारत को युद्धरत राष्ट्र घोषित किया
- ‡ **30 अक्टूबर 1939** : 8 प्रांतों में कांग्रेस मंत्रिमंडल ने इस्तीफा दिया
- ‡ **8 अगस्त 1940** : अगस्त प्रस्ताव की असफलता
- ‡ **7 दिसंबर 1941** : जापान ने पर्ल हार्वर पर हमला किया (अंग्रेजों भारत को जापान के लिए मत छोड़ो बल्कि भारत को भारतीयों के लिए छोड़ जाओ : महात्मा गांधी) (अमेरिका राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूजवेल्ट तथा चीनी राष्ट्रपति चियांग काई का ब्रिटेन पर दबाव)
- ‡ **मार्च 1942** : क्रिप्स मिशन का भारत आगमन परंतु विफल
- ‡ **14 जुलाई 1942** : कांग्रेस के वर्धा अधिवेशन में भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव रखा गया (महात्मा गांधी ने कहा कि अगर कांग्रेस ने संघर्ष का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तो मैं देश की बालू से कांग्रेस से भी बड़ा आंदोलन खड़ा कर दूंगा)
- ‡ **1 अगस्त 1942** : तिलक दिवस
- ‡ **8 अगस्त 1942** : मौलाना अबुल कलाम की अध्यक्षता में मुंबई के ऐतिहासिक ग्वालीया टैंक के मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस की एक बैठक हुई जिसमें पुनः भारत छोड़ो आंदोलन के प्रस्ताव को मान्यता दी गई
- ‡ **9 अगस्त 1942** : ब्रिटेन की सरकार ने ऑपरेशन जीरो आवर के तहत सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार किया
- ‡ इसके बाद राम मनोहर लोहिया अरुणा आसफ अली उषा मेहता आदि ने भूमिगत तरीके से आंदोलन चलाया।
- ‡ बलिया सातारा जैसी जगहों पर सरकारों का गठन
- ‡ **10 फरवरी 1943** : महात्मा गांधी द्वारा 21 दिन के उपवास की घोषणा
- ‡ **मई 1944** : गांधी जी को रिहा किया (गांधी जी की रिहाई से पूर्व ही उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी और उनके सचिव महादेव देसाई की मृत्यु हो गई)

Timeline

- ‡ **1939** : Beginning of World War II
- ‡ **1 september 1939** : Lord Linlithgow declared India a warring nation without the consent of the Indian leaders
- ‡ **30 october 1939** : Congress resigned in the 8 provinces
- ‡ **8 august 1940** : failure of august proposal
- ‡ **7 december 1941** : Japan attacked Pearl Harbor (British don't leave India for Japan but leave India for Indians: Mahatma Gandhi) (Pressure of US President Franklin Roosevelt and Chinese President Chiang Kai on Britain)
- ‡ **March 1942** : Cripps Mission arrives in India but fails
- ‡ **14 july 1942** : Quit India movement was proposed in Wardha session of Congress (Mahatma Gandhi said that if Congress does not accept the resolution of struggle, then I will create a bigger movement than Congress with the sand of the country)
- ‡ **1 august 1942** : Tilak day
- ‡ **8 august 1942** : Under the chairmanship of Maulana Abul Kalam, a meeting of the All India Congress was held in the grounds of the historic Gwalia Tank in Mumbai in which the proposal of Quit India Movement was again recognized.
- ‡ **9 august 1942** : The British government arrested all the big leaders under Operation Zero Hour.
- ‡ After this, Ram Manohar Lohia, Aruna Asaf Ali, Usha Mehta etc. started underground movement.
- ‡ Formation of governments in places like Ballia Satara
- ‡ **10 February 1943** : 21 days fast announced by Mahatma Gandhi
- ‡ **May 1944** : Gandhiji released (his wife Kasturba Gandhi and his secretary Mahadev Desai died before Gandhiji's release)

3) सामाजिक आधार

- 1) महिला
- 2) छात्र
- 3) किसान व छोटे जमींदार
- 4) मुसलमान (सीमित)
- 5) उद्योगपति
- 6) ग्रामीण जन
- 7) ट्रेन चालक

निम्न द्वारा आंदोलन की आलोचना :-

- 1) साम्यवादी दल, मुस्लिम लीग, हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आदि
- 2) **आलोचक** - भीमराव अंबेडकर (पागलपन भरा कार्य), तेज बहादुर सप्रू(अविचारित व असामयिक)

3) Social base

- 1) Woman
- 2) Student
- 3) Farmers and small landowners
- 4) Muslims (limited)
- 5) Industrialist
- 6) Rural people
- 7) Train driver

Criticism of the movement by :-

- 1) Communist Party, Muslim League, Hindu Mahasabha, Rashtriya Swayamsevak Sangh etc.
- 2) Critic-** Bhimrao Ambedkar (insanity act), Tej Bahadur Sapru (irreconcilable and untimely)

4) आन्दोलन का प्रसार

आरंभ

भूमिगत गतिविधियां

जनविद्रोह

समानांतर सरकारें

4.1) आंदोलन का आरंभ व ऑपरेशन जीरो ऑवर :-

- ♀ 8 अगस्त 1942 को आंदोलन की घोषणा
- ♀ 9 अगस्त 1942 को देश के ऑपरेशन जीरो ऑवर के तहत सभी बड़े नेताओं की गिरफ्तारी
- ♀ कांग्रेस को देश द्रोही संस्था घोषित करना

4.2) भूमिगत आन्दोलन :-

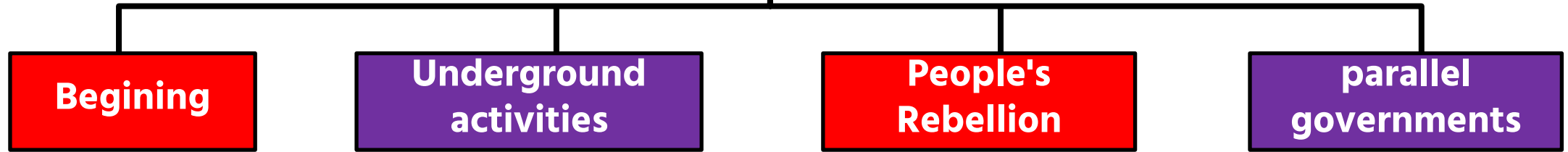
- ♀ बड़े नेताओं की गिरफ्तारी के बाद का चरण
- ♀ **नेतृत्वकर्ता :-** राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण, अरुणा आसफ अली, उषा मेहता, बीजू पटनायक, छोटू भाई पुराणिक, अच्युत पटवर्धन, सुचेता कृपलानी, RP गोयनका आदि

- ♀ **मुख्य कार्य :-** बम्बई तथा नासिक में गुप्त रेडियो स्टेशनों की स्थापना (संचालक- उषा मेहता व लोहिया)
- ♀ कुछ आंदोलनकारियों ने क्रांतिकारी साधनों का प्रयोग भी किया

4.3) जन आन्दोलन :-

- ♀ सरकारी भवनों पर तिरंगा फहराना
- ♀ पुलिस के विरुद्ध
- ♀ गिरफ्तारी देना व सरकारी संपत्ति को नुकसान
- ♀ अहमदाबाद(भारत का स्तालिनग्राद), बम्बई आदि में विशाल मजदूर हड़तालें

4) The spread of the movement



4.1) Movement Started and Operation Zero Hour :-

- ♀ Declaration of movement on 8 August 1942
- ♀ Arrest of all the big leaders of the country under Operation Zero Hour on 9 August 1942
- ♀ Declaring Congress an anti-national organization

4.2) Underground movement :-

- ♀ The phase after the arrest of big leaders
- ♀ **Leader :-** Ram Manohar Lohia, Jai Prakash Narayan, Aruna Asaf Ali, Usha Mehta, Biju Patnaik, Chhotu Bhai Puranik, Achyut Patwardhan, Sucheta Kriplani, RP Goenka etc.

- ♀ **Main work :-** Establishment of secret radio stations in Bombay and Nashik (Operators – Usha Mehta and Lohia)
- ♀ Some agitators also used revolutionary means

4.3) Mass movement :-

- ♀ Hoisting the tricolor on government buildings
- ♀ Against the police
- ♀ Arrest and damage to government property
- ♀ Huge labor strikes in Ahmedabad (Stalingrad of India), Bombay etc.

आंदोलन के दौरान गिरफ्तार नेता

नेता	जेल
महात्मा गाँधी, सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गाँधी, भूला भाई देसाई	आगा खाँ पैलेस
जवाहरलाल नेहरू	अल्मोड़ा जेल
डॉ. राजेंद्र प्रसाद	बाँकीपुर जेल
मौलाना अबुल कलाम आजाद	बाँकुड़ा जेल
जय प्रकाश नारायण	हजारीबाग
कांग्रेस कार्यकारिणी के अन्य सदस्य	अहमदनगर दुर्ग

Leader arrested during agitation

Leader	Jail
Mahatma Gandhi, Sarojini Naidu, Kasturba Gandhi, Bhula Bhai Desai	Aga Khan Palace
Jawaharlal Nehru	Almora Jail
Dr. Rajendra Prasad	Bankipur Jail
Maulana Abul Kalam Azad	Bankura jail
Jai Prakash Narayan	Hazaribagh
Other members of the Congress Working Committee	Ahmednagar Fort

4.4) समानांतर सरकारों की स्थापना :-

- ♀ **बलिया (UP)** - यहां चीतु पांडे के नेतृत्व में पहली समानांतर सरकार स्थापित हुई
- ♀ **तामलुक (बंगाल)** - यहां सतीश सरकार के नेतृत्व में जातीय सरकार की स्थापना हुई। यहां 73 वर्षीय किसान विधवा मातंगिनी हाजरा को गोली लग जाने के बाद भी राष्ट्रीय झंडे को ऊंचा रखा था
- ♀ **सतारा (महाराष्ट्र)** - यहां बी आई चव्हाण के नेतृत्व में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना हुई। यह सरकार सबसे दीर्घ जीवी रही
- ♀ **अहमदाबाद** - आजाद सरकार
- ♀ उड़ीसा के तलचर में भी

5) आंदोलन की समाप्ति

1) भारत छोड़ो आन्दोलन की समाप्ति के कारण :-

- ♀ ब्रिटिश सरकार की अत्यंत कठोरतापूर्ण दमन नीति
 - ♀ गांधी समेत लगभग 1 लाख लोगों की गिरफ्तारी
 - ♀ लाठीचार्ज, गोलीबारी, शारीरिक यातनाएं
 - ♀ शहरों पर सैन्य नियंत्रण
- 2) प्रेस व समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध
 - 3) गांवों पर जुर्माना
 - 4) मुस्लिम लीग जैसी पार्टियों का असहयोग
 - 5) आंदोलन का हिंसात्मक स्वरूप
 - 6) केंद्रीय नेतृत्व का अभाव

4.4) Establishment of Parallel Governments :-:-

- ♀ **Baliya (UP)** - Here the first parallel government was established under the leadership of Chitu Pandey.
- ♀ **Tamluk (Bengal)** - Here the caste government was established under the leadership of Satish Sarkar. Here the 73-year-old farmer widow Matangini Hazra had kept the national flag high even after she was shot.
- ♀ **Satara (Maharashtra)** - Here the national government was established under the leadership of BI Chavan. This government was the longest living
- ♀ **Ahmedabad** - Free government
- ♀ Also in Orissa's Talcher

5) Closing of movement

1) Reasons for the end of Quit India Movement :-

- ♀ British government's extremely harsh repression policy
 - ♀ Arrest of about 1 lakh people including Gandhi
 - ♀ lathi charge, firing, physical torture
 - ♀ Military control of cities
- 2) Strict restrictions on press and newspapers
 - 3) Fine on villages
 - 4) Non-cooperation of parties like Muslim League
 - 5) Violent nature of the movement
 - 6) lack of central leadership

6) Gandhiji's fast (10 February 1943)

1) Blaming the British movement on Gandhiji



2) 21 days fast in February 1943 for a fair investigation



3) Churchill :- जब हम दुनिया में हर जगह जीत रहे हैं, तो ऐसे समय एक कम्बख्त बुढ़े के समक्ष कैसे झुक सकते हैं, जो सदियों से हमारा दुश्मन रहा है



4) Sir Modi, N. Ale. Sarkar and Ane resign from the Viceroy's Council



5) 6 May 1944 :- Gandhiji released



6) End of the movement

6) गांधी जी का उपवास (10 फरवरी 1943)

1) अंग्रेजों के आंदोलन का दोषारोपण गांधी जी पर



2) निष्पक्ष जांच हेतु फरवरी 1943 में 21 दिन का उपवास



3) चर्चिल :- जब हम दुनिया में हर जगह जीत रहे हैं, तो ऐसे समय एक कमबख्त बुढ़े के समक्ष कैसे झुक सकते हैं, जो सदियों से हमारा दुश्मन रहा है



4) सर मोदी, एन. एल. सरकार और अणे का वायसराय काउंसिल से इस्तीफा



5) 6 मई 1944 :- गांधीजी रिहा



6) आंदोलन की समाप्ति

7) आन्दोलन का महत्व

- 1) भविष्य के नेताओं जैसे राममनोहर लोहिया, JP नारायण आदि का उदय
- 2) महिलाओं की भागीदारी
- 3) राष्ट्रवाद की भावना का प्रसार
- 4) भारतीय जन आक्रोश की पूर्णतः अभिव्यक्ति
- 5) भारतीय स्वाधीनता के पक्ष में वैश्विक जनमत का निर्माण

इस प्रकार भारत छोड़ो आंदोलन राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का अंतिम चरण था इस आन्दोलन के पश्चात भारत की आजादी लगभग सुनिश्चित थी, प्रश्न केवल यह रह गया था कि सत्ता का हस्तांतरण किस तरीके से हो? तथा स्वतंत्रता के उपरांत सरकार का स्वरूप क्या हो?

8) आंदोलन से जुड़े अन्य मुद्दे

क्या आंदोलन स्वतः स्फूर्त था ?

गांधीवादी आंदोलनों के अंतर्गत नेतृत्वकर्ताओं के द्वारा कार्यक्रम की रूपरेखा निर्धारित कर दी जाती थी, जिसका क्रियान्वयन स्थानीय नेताओं, कार्यकर्ताओं एवं आम जनमानस के द्वारा किया जाता था। किंतु भारत छोड़ो आंदोलन, पूर्व के आंदोलनों से इस संदर्भ में भिन्नता रखता था।

- 1) भारत छोड़ो आंदोलन के पूर्व ही राष्ट्र के प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था।
- 2) इसका प्रभाव यह पड़ा कि आम जनमानस ने आंदोलन की बागडोर अपने हाथों में ले ली। लेकिन फिर भी जनता द्वारा की गई कार्यवाही की स्वीकृति नेतृत्व द्वारा पूर्व में ही प्रदान कर दी गई थी।

7) Significance of the Movement

- 1) Rise of future leaders like Ram Manohar Lohia, JP Narayan etc.
- 2) Women's participation
- 3) Spread of nationalism
- 4) Full expression of Indian public anger
- 5) Building global public opinion in favor of Indian independence

Thus the Quit India movement was the last phase of the national freedom struggle. After this movement, India's independence was almost certain, the only question was that in what way the transfer of power should be done? And what was the form of government after independence?

8) Other issues related to the movement

Was the movement spontaneous?

Under Gandhian movements, the program was determined by the leaders, which was implemented by the local leaders, workers and the general public. But the Quit India Movement differed in this respect from the earlier movements.

- 1) The prominent leaders of the nation were arrested even before the Quit India Movement.
- 2) Its effect was that the general public took the reins of the movement in their own hands. But still, the acceptance of the action taken by the public was already given by the leadership.

3) दरअसल, 8 अगस्त, 1942 को कांग्रेस द्वारा पारित प्रस्तावों में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि 'एक ऐसा समय आ सकता है, जब निर्देश जारी करना सम्भव न हो सके। ऐसे समय में प्रत्येक स्त्री और पुरुष, जो आंदोलन में भाग ले रहे हों, को स्वयं ही फैसला करते हुए आंदोलन को गति प्रदान करनी होगी।

इस प्रकार स्पष्ट है कि **कांग्रेस नेतृत्व ने जनता को स्वतः स्फूर्त होने का निर्देश** आंदोलन आरम्भ होने से पूर्व ही दे दिया था। हालाँकि देश के मुख्य नेताओं के गिरफ्तार हो जाने के पश्चात् जनता की गतिविधियाँ स्वतः स्फूर्त थी, लेकिन कांग्रेस विचारधारा, संगठन एवं राजनीति के स्तर पर लम्बे समय से संघर्ष की तैयारी कर रही थी एवं गांधी सहित अन्य नेताओं को भी अब इस बात का स्पष्ट आभास हो चुका था कि जनमानस स्वयं आंदोलन को नेतृत्व प्रदान करते हुए व्यापक संघर्ष शुरू करने में सक्षम है।

- 3) In fact, in the resolutions passed by the Congress on August 8, 1942, it was clearly stated that 'a time may come when it may not be possible to issue directions'. At such a time, every woman and man, who are participating in the movement, will have to decide for themselves and give momentum to the movement.

It is thus clear that the Congress leadership had instructed the people to be spontaneous even before the movement started. Although the activities of the people were spontaneous after the arrest of the main leaders of the country, but the Congress was preparing for a long-time struggle at the level of ideology, organization and politics and other leaders including Gandhi are now clearly aware of this. It was enough that the people themselves were capable of launching a massive struggle by providing leadership to the movement.

आंदोलन के दौरान हिंसक गतिविधियाँ :-

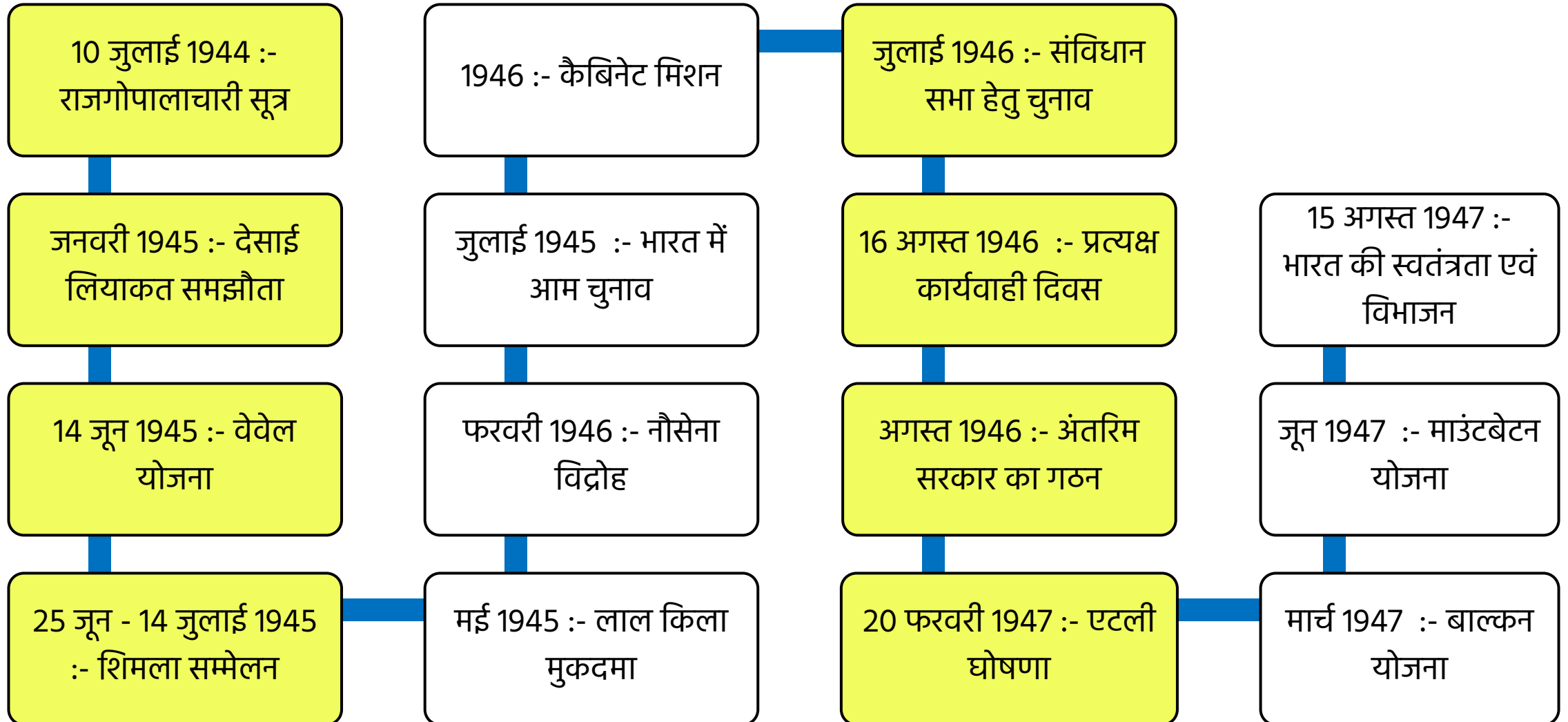
- ♀ भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान हुई हिंसक घटनाओं ने कांग्रेस की अहिंसक रणनीति से भिन्नता प्रदर्शित की। इस संदर्भ में जिन सत्याग्रहियों ने आंदोलन के दौरान हिंसा का प्रयोग किया, उनके अनुसार यह परिस्थितियों की मांग थी।
- ♀ इस हिंसक रणनीति के समर्थक सत्याग्रहियों ने यह स्पष्ट किया कि टेलीग्राफ या टेलीफोन के तारों को काटना, पुलों को उड़ा देना या रेल की पटरियों को उखाड़ फेंकना तब तक अनुचित नहीं है, जब तक कि इससे किसी के जीवन को खतरा न हो।
- ♀ ध्यातव्य है कि 1942 में गांधीजी ने स्वयं हिंसा की निंदा करने से इनकार कर दिया था। इस संदर्भ में 5 अगस्त को गांधीजी ने अपने सम्बोधन में था कि "मैं आपसे अपनी अहिंसा की मांग नहीं कर रहा। आप तय करें कि आपको इस संघर्ष में क्या करना है?"
- ♀ गांधी के द्वारा हिंसा का विरोध न करने के संदर्भ में फ्रांसिस हचिंस का कहना था कि "हिंसा पर गांधीजी की ज्यादा आपत्ति इसलिये थी क्योंकि इससे जन भागीदारी में कमी आती थी, लेकिन 1942 में ऐसा नहीं हुआ था। "

Violent activities during the movement :-

- ♀ The violent incidents during the Quit India Movement marked a difference from the non-violent strategy of the Congress. In this context, according to the Satyagrahis who used violence during the movement, it was the demand of the circumstances.
- ♀ The proponents of this violent strategy made it clear that it is not unreasonable to cut telegraph or telephone wires, blow up bridges or uproot railway tracks, as long as it does not endanger one's life.
- ♀ It is noteworthy that in 1942, Gandhiji himself refused to condemn the violence. In this context, Gandhiji in his address on 5th August said that "I am not demanding my non-violence from you. You decide what you have to do in this struggle?"
- ♀ Regarding Gandhi's non-opposition to violence, Francis Hutchins said that "Gandhiji's objection to violence was more because it reduced public participation, but this did not happen in 1942."

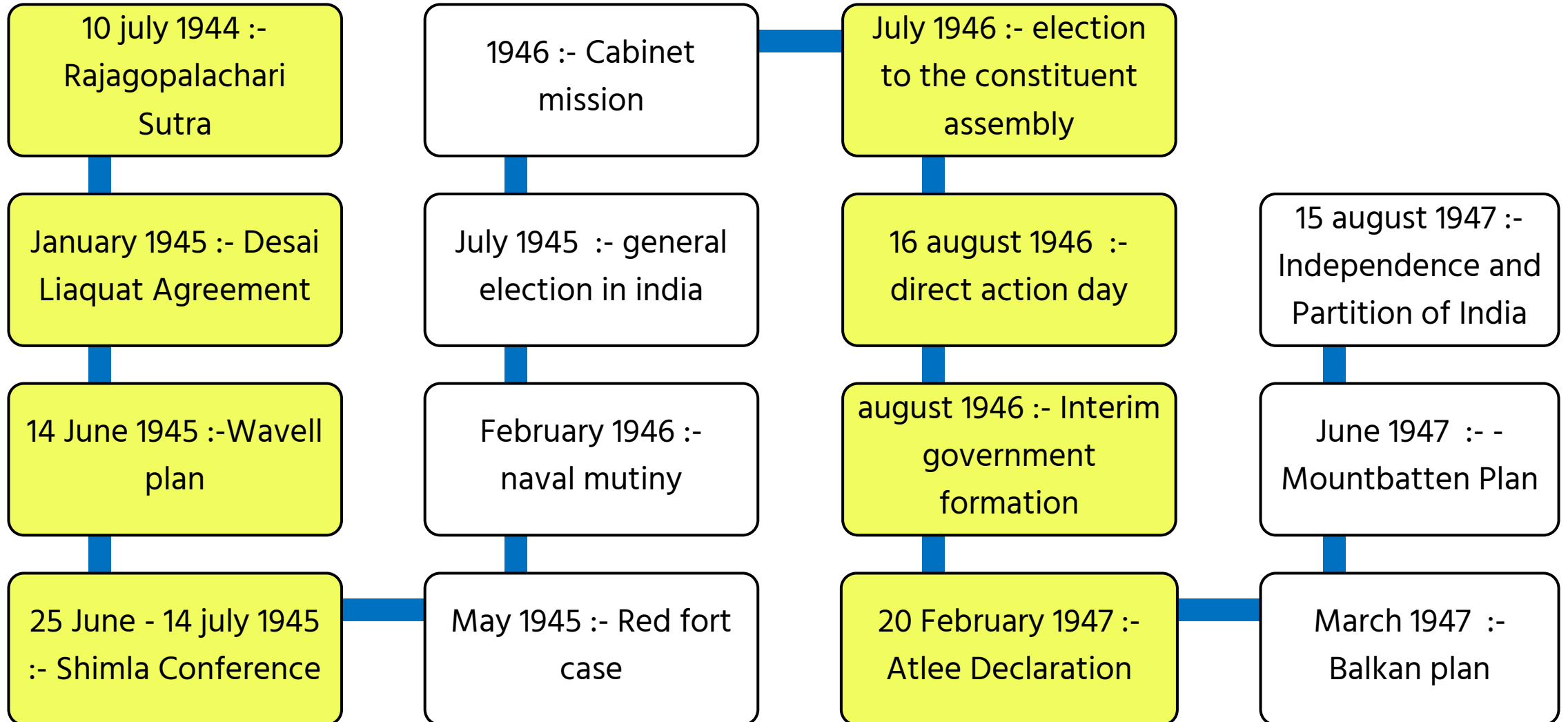
अध्याय – 11 || Chapter - 11

1942 से 1947 के बीच का भारत || India from 1942 to 1947



Chapter - 11

India from 1942 to 1947



11.1) राजगोपालाचारी सूत्र (10 जुलाई 1944)

10 जुलाई, 1944 ई. को राजगोपालाचारी ने कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग के मध्य समझौते हेतु योजना प्रस्तुत की, जिसे राजगोपालाचारी योजना या फार्मूला के नाम से जाना जाता है। इस योजना के अनुसार :-

- 1) मुस्लिम लीग भारतीय स्वतंत्रता का समर्थन करें तथा अस्थायी सरकार के गठन में कांग्रेस के साथ सहयोगी की भूमिका निभाए।
- 2) द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति पर भारत के उत्तर-पश्चिम व पूर्वी भागों में मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में वयस्क मताधिकार के आधार पर भारत के विच्छेद के प्रश्न पर निर्णय किया जाए।
- 3) देश के विभाजन की स्थिति में आवश्यक विषयों, प्रतिरक्षा, वाणिज्य, संचार तथा आवागमन आदि के सम्बन्ध में दोनों के मध्य कोई संयुक्त समझौता हो सकता है।
- 4) उपर्युक्त शर्तें तभी मानी जाएंगी, जब ब्रिटेन भारत को पूर्णरूप से स्वतंत्रता प्रदान करे।

गांधीजी ने जिन्ना को कायदे आजम (महान नेता) कहा था। सरोजनी नायडू ने जिन्ना को हिन्दू मुस्लिम एकता का दूत कहा था। जिन्ना की मांग थी कि कांग्रेस स्पष्टतः द्विराष्ट्र सिद्धान्त को स्वीकार कर ले तथा उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में केवल मुस्लिम लोगों को ही मत देने का अधिकार मिले न कि पूर्ण जनसंख्या

11.1) Rajagopalachari Sutra (10 July 1944)

On July 10, 1944, AD, Rajagopalachari presented a plan for a settlement between the Congress and the Muslim League, which is known as the Rajagopalachari plan or formula. according to this plan :-

- 1) The Muslim League should support Indian independence and play an ally with the Congress in the formation of the Provisional Government.
- 2) At the end of World War II, the question of partition of India should be decided on the basis of adult franchise in Muslim-majority areas in the North-West and Eastern parts of India.
- 3) In the event of the partition of the country, there can be a joint agreement between the two in respect of essential matters, defence, commerce, communication and transport etc.
- 4) The above conditions will be considered only when Britain gives complete independence to India.

Gandhiji called Jinnah as Quaid-e-Azam (Great Leader). Sarojini Naidu called Jinnah the messenger of Hindu Muslim unity. Jinnah's demand was that the Congress should clearly accept the two-nation theory and in the north-eastern and north-western regions, only the Muslim people should get the right to vote and not the entire population.

11.2) देसाई लियाकत समझौता (जनवरी 1945)

जनवरी, 1945 में केन्द्र में अन्तरिम सरकार के गठन से संबंधित कांग्रेस के नेता भूलाभाई देसाई तथा मुस्लिम लीग के नेता लियाकत अली ने निम्नलिखित प्रस्ताव तैयार किया :-

- ♀ अन्तरिम सरकार में कांग्रेस तथा मुस्लिम लीग दोनों केन्द्रीय विधानमण्डल से अपने समान संख्या में सदस्यों को मनोनीत करेंगे।
- ♀ अन्तरिम सरकार में अल्पसंख्यकों तथा अनुसूचित जाति का प्रतिनिधित्व होगा।

इस प्रस्ताव के द्वारा कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग के मध्य कोई सहमति होने की बात तो दूर नहीं, दोनों के मध्य मतभेद और गहरे हो गए।

11.3) वेवेल योजना (14 जून 1945)

भारत के संवैधानिक गतिरोध को दूर करने के उद्देश्य से तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने 14 जून, 1945 ई. को निम्नलिखित प्रस्तुत कि :-

- ♀ गवर्नर जनरल की कार्यकारणी परिषद् में गवर्नर जनरल तथा कमांडर इन चीफ को छोड़कर सभी सदस्य भारतीय होंगे।
- ♀ कार्यकारिणी परिषद् में मुसलमान सदस्यों की संख्या, सवर्ण हिन्दुओं के बराबर होगी।
- ♀ कार्यकारिणी परिषद् एक अन्तरिम सरकार के समान होगी।
- ♀ गवर्नर जनरल बिना कारण निषेधाधिकार का प्रयोग नहीं करेगा।
- ♀ युद्ध समाप्ति के बाद भारतीय स्वयं ही अपना संविधान बनाएंगे।
- ♀ कांग्रेस के नेता रिहा किए जाएंगे तथा शीघ्र ही शिमला में एक सम्मेलन बुलाया जाएगा।

11.2) Desai Liaquat Pact (January 1945)

In January 1945, Congress leader Bhulabhai Desai and Muslim League leader Liaquat Ali prepared the following proposal regarding the formation of the Interim Government at the Center :-

- ♀ In the interim government, both the Congress and the Muslim League will nominate their equal number of members from the Central Legislature.
- ♀ Minorities and Scheduled Castes will be represented in the interim government.

By this resolution, between the Congress and the Muslim League, the differences between the two deepened.

11.3) Wavell Plan (14 June 1945)

With the aim of removing the constitutional deadlock of India, the then Viceroy Lord Wavell presented the following on June 14, 1945. :-

- ♀ In the Executive Council of the Governor General, all the members except the Governor General and the Commander-in-Chief shall be Indians.
- ♀ The number of Muslim members in the Executive Council will be equal to that of the upper caste Hindus.
- ♀ The Executive Council will be like an interim government.
- ♀ The Governor General shall not exercise any prohibition without reason.
- ♀ After the end of the war, Indians themselves will make their own constitution.
- ♀ Congress leaders will be released, and a conference will be called in Shimla soon.

इस योजना पर विचार-विमर्श करने के लिए 25 जून, 1945 ई. को शिमला में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें 21 भारतीय राजनीतिक नेताओं ने भाग लिया। कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में मौलाना अबुल कलाम आजाद और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि के रूप में मुहम्मद अली जिन्ना ने इस सम्मेलन में भाग लिया।

इस सम्मेलन में मुहम्मद अली जिन्ना ने प्रस्ताव रखा कि वायसराय की कार्यकारिणी के सभी मुस्लिम सदस्यों को मुस्लिम लीग से ही लिया जाए क्योंकि यही एकमात्र संस्था है जो भारतीय मुसलमानों का प्रतिनिधित्व करती है। कांग्रेस सहित कई राजनीतिक पार्टियों ने इसका विरोध किया, परिणामस्वरूप यह सम्मेलन असफल हो गया।

A conference was organized in Shimla on June 25, 1945 to discuss this plan. It was attended by 21 Indian political leaders. Maulana Abul Kalam Azad as the representative of the Congress and Muhammad Ali Jinnah as the representative of the Muslim League participated in this conference.

In this conference, Muhammad Ali Jinnah proposed that all Muslim members of the Viceroy's executive body be drawn from the Muslim League as it is the only body representing Indian Muslims. Many political parties, including the Congress, opposed it, as a result the convention was unsuccessful.

11.4) भारत में आम चुनाव (दिसंबर 1945)

- 1) जुलाई 1945 में इंग्लैंड में चुनाव हुए जिसमें लेबर पार्टी को बहुमत प्राप्त हुआ
 - ♀ अब चर्चिल की जगह एटली प्रधानमंत्री बने
- 2) एटली ने सर्वप्रथम भारत में प्रांतीय और केंद्रीय विधान सभाओं के लिए चुनाव करवाने की घोषणा की
- 3) **1940 में चुनाव परिणाम :-** 1583 सीटों में
 - ♀ 923 कांग्रेसी
 - ♀ 405 लीग
- 4) **केंद्रीय विधानसभा में 102 सीटों में :-**
 - ♀ कांग्रेस को - 59
 - ♀ लीग को - 30

- ♀ अकाली दल को- 02
 - ♀ स्वतंत्र दल - 03
 - ♀ यूरोपियन - 08
- 6) 11 प्रांतों में 8 (बंबई, मद्रास, संयुक्त प्रांत, बिहार, उड़ीसा, असम, मध्य प्रांत, उत्तर पश्चिमी प्रांत) कांग्रेस सरकार बनी
 - 7) बंगाल और सिंध में लीग की सरकार बनी
 - 8) पंजाब :- यूनियनिस्ट दल

11.4) General Elections in India (December 1945)

1) Elections were held in England in July 1945 in which the Labor Party won a majority

♀ Now Atlee becomes Prime Minister instead of Churchill

2) Attlee announced the conduct of elections for the provincial and central legislative assemblies in India

3) Election results in 1940 :- In 1583 seats

♀ 923 Congress

♀ 405 Muslim league

4) 102 seats in the Central Assembly :-

♀ Congress - 59

♀ Muslim league - 30

♀ Akali Dal- 02

♀ Independent Party - 03

♀ European - 08

6) Congress government was formed in 8 provinces (Bombay, Madras, United Provinces, Bihar, Orissa, Assam, Central Provinces, Northwestern Provinces)

7) League government formed in Bengal and Sindh

8) Punjab :- Unionist Party

11.5) आजाद हिंद फौज (INA)

1) सुभाष चंद्र बोस :-

♀ जन्म -

- सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था।
- उनकी माता का नाम प्रभावती दत्त बोस
- पिता का नाम जानकीनाथ बोस था।
- उनकी जयंती 23 जनवरी को '**पराक्रम दिवस**' के रूप में मनाई जाती है।

♀ शिक्षा और प्रारंभिक जीवन -

- वर्ष 1919 में उन्होंने भारतीय सिविल सेवा (ICS) की परीक्षा पास की थी। बाद में बोस ने सिविल सेवा से त्यागपत्र दे दिया।
- आध्यात्मिक गुरु - विवेकानंद
- राजनीतिक गुरु - चित्तरंजन दास
- 1921 में बोस ने चित्तरंजन दास द्वारा प्रकाशित समाचार पत्र 'फॉरवर्ड' के संपादन का कार्यभार संभाला और बाद में अपना खुद का समाचार पत्र 'स्वराज' शुरू किया।



11.5) Azad Hind Fauj (INA)

1) Subhash Chandra Bose :-

♀ Birth -

- Subhas Chandra Bose was born on January 23, 1897 in Cuttack city of Orissa.
- His mother's name is Prabhavati Dutt Bose.
- Father's name was Jankinath Bose.
- His birth anniversary is celebrated on 23 January as '**Parakram Diwas**'.



♀ Education and Early Life -

- In the year 1919, he passed the Indian Civil Services (ICS) examination. Later Bose resigned from the civil service.
- Spiritual Guru - Vivekananda
- Political Guru - Chittaranjan Das
- In 1921, Bose took over the editing of the newspaper 'Forward' published by Chittaranjan Das and later started his own newspaper 'Swaraj'.



कॉंग्रेस के साथ संबंध -

- उन्होंने बिना शर्त स्वराज अर्थात् स्वतंत्रता का समर्थन किया
- मोतीलाल नेहरू रिपोर्ट का विरोध किया जिसमें भारत के लिये डोमिनियन के दर्जे की बात कही गई थी।
- 1930 के नमक सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया
- 1931 में सविनय अवज्ञा आंदोलन के निलंबन तथा गांधी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर का विरोध किया।
- 1930 के दशक में जवाहरलाल नेहरू और एम.एन. राँय के साथ कॉंग्रेस की वाम राजनीति में संलग्न रहे।
- 1938 में बोस ने हरिपुरा में कॉंग्रेस के अध्यक्ष के चुनाव में जीत हासिल की।
- 1939 में पुनः त्रिपुरी में उन्होंने गांधी के उम्मीदवार पट्टाभि सीतारमैया के खिलाफ अध्यक्ष का चुनाव जीता।
- गांधी के साथ वैचारिक मतभेदों के कारण बोस ने इस्तीफा दे दिया और कॉंग्रेस छोड़ दी।
- उन्होंने एक नई पार्टी 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। इसका उद्देश्य अपने गृह राज्य बंगाल में राजनीतिक वामपंथ को मज़बूत करना था।



मृत्यु - वर्ष 1945 में ताइवान में विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई थी। हालाँकि उनकी मृत्यु के संबंध में अभी भी अस्पष्टता है।



Relationship with Congress -

- He supported Swaraj unconditionally.
- Opposed the Motilal Nehru Report, which talked about Dominion status for India.
- Actively participated in the Salt Satyagraha of 1930
- In 1931, he opposed the suspension of the Civil Disobedience Movement and the signing of the Gandhi-Irwin Pact.
- In the 1930s Jawaharlal Nehru and M.N. Roy, he was involved in the left politics of the Congress.
- In 1938, Bose won the election of Congress President at Haripura.
- Again in 1939 in Tripuri, he won the election of the President against Gandhi's candidate Pattabhi Sitaramayya.
- Due to ideological differences with Gandhi, Bose resigned and left the Congress.
- He founded a new party 'Forward Bloc'. Its aim was to strengthen the political left in its home state of Bengal.



Death - He died in a plane crash in Taiwan in 1945. However, there is still ambiguity regarding his death.

2) आजाद हिंद फौज - सामान्य परिचय :-

- ♀ **विचार** - मोहन सिंह (मलाया)
- ♀ **स्थापना** - मार्च 1942(मेजर फुजीहारा के सहयोग से रासबिहारी बोस द्वारा)
- ♀ **मुख्यालय** - सिंगापुर
- ♀ **जुलाई 1943** - सुभाष चंद्र बोस INA प्रमुख बने
- ♀ **लड़ाकू ब्रिगेड** - पुरुष ब्रिगेड (नेहरू, गांधी व सुभाष बिग्रेड) तथा रानी लक्ष्मीबाई के नाम से महिला ब्रिगेड
- ♀ **नारा** - जय हिंद, दिल्ली चलो, तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा

3) मुख्य कार्य :-

- ♀ **21 अक्टूबर 1943** - सुभाष चंद्र बोस ने सिंगापुर में आजाद हिंद सरकार(अरजी हुकूमत ए आजाद हिंद) का गठन
 - **प्रधानमंत्री व युद्ध मंत्री** - सुभाषचंद्र बोस

- **मुख्यालय** - रंगून
- **कैप्टन लक्ष्मी सहगल** - महिला विंग प्रमुख
- 21 अक्टूबर 2018 को आजाद हिंद फौज की 75 वीं वर्षगांठ (लाल किला)
- 9 देशों द्वारा मान्यता
- ♀ INA ने मित्र राष्ट्रों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की
- ♀ **जापान ने अंडमान निकोबार द्वीप INA को सौंपा** -
 - **8 नवंबर 1943** - नेताजी ने शहीद व राजस्व द्वीप नाम रखा
 - **2018** - प्रधानमंत्री श्री मोदी ने नेता जी द्वारा अंडमान निकोबार में तिरंगा फहराने की 75वीं वर्षगांठ पर तीनों द्वीपों के नाम बदले -
 1. **नील** - शहीद द्वीप
 2. **हैवलॉक** - स्वराज द्वीप
 3. **रॉस** - नेताजी सुभाष चंद्र बोस द्वीप

2) **Azad Hind Fauj - General Introduction :-**

- ♀ **Thought** - Mohan Singh (Malaya)
- ♀ **Establishment** - March 1942 (by Rash Behari Bose in association with Major Fujihara)
- ♀ **Headquarter** - Singapore
- ♀ **July 1943** - Subhash Chandra Bose becomes INA chief
- ♀ **Combat brigade** - Men's Brigade (Nehru, Gandhi and Subhash Brigades) and Women's Brigade in the name of Rani Laxmibai
- ♀ **Moto** - Jai Hind, come to Delhi, Give Me Blood, and I Will Give You Freedom

3) **Major work :-**

- ♀ **21 October 1943** - Subhas Chandra Bose formed the Azad Hind Government (Arji Hukumat e Azad Hind) in Singapore.
 - **Prime Minister and Minister of War** - Subhash Chandra Bose

- **Headquarter** - Rangoon
- **Captain Lakshmi Sehgal** - women's wing chief
- 75th anniversary of Azad Hind Fauj (Red Fort) on 21 October 2018
- Recognition by 9 countries

♀ INA declares war on the Allies

♀ **Japan handed over Andaman and Nicobar Islands to INA -**

- **8 November 1943** - Netaji named Shaheed and Revenue Island
- **2018** - Prime Minister Shri Modi changed the names of the three islands on the 75th anniversary of the unfurling of the tricolor in Andaman and Nicobar by Netaji -
 1. **Neel** - Shaheed Island
 2. **Havelock** - Swaraj Island
 3. **Ross** - Netaji Subhash Chandra Bose Island

- ♀ 6 जुलाई 1944 को रेडियो प्रसारण पर नेताजी ने गांधीजी को राष्ट्रपिता कह कर संबोधित किया
- ♀ अराकान पहाड़ियों पर ब्रिटिश सेना को हराया तथा कोहिमा पर अधिकार किया
- ♀ शाह नवाज़ के नेतृत्व में आज़ाद हिंद फौज ने जापानियों के साथ मिलकर भारत की पूर्वी सीमा एवं बर्मा में युद्ध लड़ा, किंतु द्वितीय विश्वयुद्ध में जापान को मिली पराजय ने आज़ाद हिंद फौज को भी परास्त कर दिया। 1945 ई. में आज़ाद हिंद फौज के अधिकारियों और सैनिकों को अंग्रेज़ों ने गिरफ्तार कर लिया।

यद्यपि आज़ाद हिंद फौज अपने उद्देश्य को प्राप्त न कर सकी तथा अपने प्रयत्नों में असफल रही, किंतु इस फौज ने राजनीतिक और मानसिक रूप से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। सम्भवतः अंग्रेज़ों के शीघ्र भारत छोड़ने का एक कारण यह भी था।

- ♀ On 6 July 1944, on a radio broadcast, Netaji addressed Gandhiji as the Father of the Nation.
- ♀ Defeated the British army on the Arakan hills and captured Kohima
- ♀ Under the leadership of Shah Nawaz, Azad Hind Fauj fought wars with the Japanese in the eastern border of India and Burma, but the defeat of Japan in World War II also defeated the Azad Hind Fauj. In 1945 AD, the officers and soldiers of Azad Hind Fauj were arrested by the British.

Although the Azad Hind Fauj could not achieve its objective and failed in its efforts, but this army made a very important contribution in the Indian freedom struggle politically and mentally. Perhaps this was also one of the reasons for the early departure of the British from India.

11.6) लाल किला मुकदमा (नवंबर 1945)

- 1) आजाद हिन्द फौज के गिरफ्तार सैनिकों एवं अधिकारियों पर अंग्रेज सरकार ने दिल्ली के लाल किले में नवम्बर, 1945 मुकदमा चलाया
- 2) इस मुकदमे के मुख्य अभियुक्त तीन अधिकारी मेजर शहनवाज खाँ, कर्नल प्रेम सेहगल और कर्नल गुरु दयालसिंह ढिल्लो राजद्रोह का आरोप लगाया गया
- 3) इनके समर्थन में न केवल कांग्रेस, बल्कि मुस्लिम लीग, अकाली दल, कम्युनिस्ट पार्टी आदि ने भी मुकदमे की सुनवाई का विरोध किया।
- 4) आजाद हिन्द फौज के बचाव के लिए कांग्रेस ने भूलाभाई देसाई के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज बचाव समिति का गठन किया, जिसमें तेजबहादुर सप्रू, कैलाशनाथ काटजू, अरुणा आसफ अली, जवाहरलाल नेहरू तथा जिन्ना प्रमुख वकील थे
- 4) फौजी अदालत द्वारा इन तीनों को फांसी की सजा सुनाई गई तथा एक अन्य सैनिक अधिकारी कैप्टल रशीद को 7 वर्ष की सजा दी गई।
- 5) इस निर्णय के खिलाफ पूरे देश में **“लाल किले को तोड़ दो, आजाद हिन्द फौज को छोड़ दो”** के नारे लगाए गए।
- 6) विवश होकर तत्कालीन वायसराय लॉर्ड वेवेल ने अपने विशेषाधिकार का प्रयोग कर इनकी मृत्युदण्ड की सजा को माफ कर दिया
- 7) इस आन्दोलन की व्यापकता इतनी अधिक थी कि ब्रिटिश राज के परम्परागत समर्थक माने जाने वाले सरकारी कर्मचारी एवं सशस्त्र सेनाओं के लोग भी सरकार के विरुद्ध हो गए।

11.6) Red Fort Trial (November 1945)

- 1) The British Government tried the arrested soldiers and officers of the Azad Hind Fauj in the Red Fort of Delhi in November 1945.
- 2) The main accused in this trial were three officers Major Shahnawaz Khan, Colonel Prem Sehgal and Colonel Guru Dayal Singh Dhillon charged with treason.
- 3) In their support, not only the Congress, but also the Muslim League, Akali Dal, Communist Party etc. opposed the trial.
- 4) For the defense of the Azad Hind Fauj, the Congress formed the Azad Hind Fauj Rescue Committee under the leadership of Bhulabhai Desai, in which Tej Bahadur Sapru, Kailashnath Katju, Aruna Asaf Ali, Jawaharlal Nehru and Jinnah were prominent lawyers.
- 4) All three were sentenced to death by the military court and another military officer, Capt. Rashid, was given seven years' imprisonment.
- 5) Against this decision, slogans of **"Destroy the Red Fort, leave the Azad Hind Fauj"** were raised all over the country.
- 6) Being compelled, the then Viceroy Lord Wavell, using his privilege, waived his death sentence.
- 7) The extent of this movement was so much that the government employees and the people of the armed forces, who were traditional supporters of the British Raj, also turned against the government.

11.7) शाही भारतीय नौसेना विद्रोह, 18 फरवरी 1946

- 1) 18 फरवरी 1946 को बम्बई में एच एम आई एस तलवार नामक जहाज के लगभग 1100 नौसैनिकों ने भारतीयों नौसैनिकों के साथ भोजन एवं वेतन से सम्बंधित दुर्व्यवहार, नस्लवादी भेदभाव एवं अपमानजनक व्यवहार के कारण विद्रोह किया
- 2) अंग्रेजों ने इस संदर्भ में कहा था कि **भिखारियों को चुनने का अधिकार नहीं होता**
- 3) **प्रसार :-** कराची, मद्रास, कलकत्ता सहित देशभर के सभी
- 4) विद्रोहियों ने जहाजों से ब्रिटिश झंडों को उतार कर कांग्रेस मुस्लिम लीग और कम्युनिस्ट पार्टी के झंडों को फहरा दिया
- 5) नौसेना के कर्मचारियों को संगठित करने का काम **एमएस खान** के नेतृत्व में गठित **नौसेना केंद्रीय हड़ताल** समिति ने किया
- 6) 23 फरवरी 1946 को सरदार पटेल और जिन्ना के दबाव में आकर विद्रोहियों ने आत्मसमर्पण कर दिया जिसके पश्चात इन विद्रोहियों ने कहा था कि हम भारत के सामने समर्पण कर रहे हैं ब्रिटेन के सामने नहीं

11.7) Royal Indian Navy Mutiny, 18 February 1946

- 1) On 18 February 1946, about 1100 sailors of the ship HMIS Talwar revolted in Bombay due to food and salary related misbehavior, racist discrimination and degrading treatment of Indian marines.
- 2) The British had said in this **context that beggars do not have the right to choose.**
- 3) **Spread :-** All over the country including Karachi, Madras, Calcutta
- 4) The rebels unloaded the British flags from the ships and hoisted the flags of the Congress Muslim League and the Communist Party
- 5) **Naval Central Strike Committee** constituted under the leadership of **MS Khan** did the work of organizing the Navy personnel
- 6) On 23 February 1946, the rebels surrendered under the pressure of Sardar Patel and Jinnah, after which these rebels said that we are surrendering to India and not to Britain.

11.8) कैबिनेट मिशन मार्च 1946

- 1) ब्रिटेन के प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने नौसेना विद्रोह के लिए एक दिन बाद 19 फरवरी 1946 को ब्रिटिश संसद के हाउस ऑफ कॉमन्स में कैबिनेट मिशन को भारत भेजने की घोषणा की, जिसके बाद 24 मार्च 1946 को मिशन भारत पहुंचा। कैबिनेट मिशन के सदस्यों में सर स्टेफोर्ड क्रिप्स(व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष), एवी एलेक्जेंडर(फर्स्ट लॉर्ड ऑफ द एडमिरलिटी) एवं पेथिक लॉरेंस(भारत सचिव) सम्मिलित थे
- 2) कैबिनेट मिशन के प्रमुख प्रावधान इस प्रकार हैं-

- ♀ ब्रिटिश भारत के प्रांतों एवं देशी रियासतों को सम्मिलित करते हुए भारत में एक अखिल भारतीय संघ की स्थापना की जाएगी।
- ♀ विदेश, संचार एवं रक्षा सम्बंधी मामले केंद्र सरकार के अधीन रखे जाएंगे।
- ♀ संघीय विषयों के अतिरिक्त अन्य सभी विषयों पर कानून बनाने की शक्ति एवं अवशिष्ट शक्तियाँ प्रांतों को प्रदान की जाएंगी।
- ♀ प्रांतीय विधानसभाओं और देशी रियासतों के प्रतिनिधियों को मिलाकर, अप्रत्यक्ष निर्वाचन के माध्यम से एक संविधान निर्मात्री सभा का गठन किया जाएगा।
- ♀ संविधान सभा में प्रत्येक प्रांत से 'लगभग 10 लाख की आबादी पर एक प्रतिनिधि' के अनुपात में सीटों का आवंटन किया जाएगा।

कैबिनेट मिशन ने जुलाई 1946 में संविधान सभा के चुनाव संपन्न करवाए जिसमें कांग्रेस को बहुमत प्राप्त हुआ इसके पश्चात 14 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग ने जिन्ना के नेतृत्व में प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाया इसके पश्चात बंगाल में सांप्रदायिक दंगे प्रारंभ हो गए

11.8) Cabinet Mission March 1946

- 1) British Prime Minister Clement Attlee announced the sending of the Cabinet Mission to India in the House of Commons of the British Parliament on 19 February 1946, a day later for a naval mutiny, after which the mission reached India on 24 March 1946. The members of the Cabinet Mission included Sir Stafford Cripps (Chairman of the Board of Trade), AV Alexander (First Lord of the Admiralty) and Pethick-Lawrence (Secretary of India).
- 2) The main provisions of the Cabinet Mission are as follows -
 - ♀ An All-India Federation would be established in India, including the provinces and princely states of British India.
 - ♀ The matters related to foreign, communication and defense will be kept under the central government.
 - ♀ The power and residuary powers to make laws on all subjects other than federal subjects would be given to the provinces.
 - ♀ A Constituent Assembly will be formed through indirect election, consisting of the provincial assemblies and the representatives of the princely states.
 - ♀ The seats in the Constituent Assembly will be allocated from each province in the proportion of 'one representative for a population of about 10 lakhs'

The Cabinet Mission conducted the Constituent Assembly elections in July 1946, in which the Congress got a majority, after which the Muslim League celebrated Direct Action Day on 14 August 1946 under the leadership of Jinnah, after which communal riots started in Bengal.

11.9) प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (16 अगस्त 1946)

- 1) 16 अगस्त 1946 को मुस्लिम लीग द्वारा घोषित
- 2) संविधान सभा निर्वाचन में कांग्रेस को बहुमत मिला
- 3) **परिणाम :-** बंगाल व बिहार में साम्प्रदायिक दंगे
- 4) गांधी जी ने शांति स्थापना हेतु नोआखाली का दौरा किया
- 5) माउंटबेटन ने गांधी जी को **"वन मैन बाउंड्री फोर्स कहा"**

11.10) अंतरिम सरकार का गठन (सितंबर 1946)

- 1) 24 अगस्त, 1946 को जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में भारत की प्रथम अंतरिम सरकार की घोषणा की गई, जिसका गठन 2 सितम्बर 1946 को 12 सदस्यों के साथ किया गया
- 2) वायसराय को परिषद का अध्यक्ष एवं नेहरू जी को परिषद का उपाध्यक्ष बनाया गया :- जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, राजेंद्र प्रसाद, अरुणा आसफ अली, राजगोपालाचारी, शरतचंद्र बोस, जॉन मथाई, बलदेव सिंह, शफात अहमद खाँ, जगजीवनराम, सैयद अली ज़हीर और सी.एच. भाभा।
- 3) लॉर्ड वेवेल की मध्यस्थता के परिणामस्वरूप 26 अक्टूबर, 1946 को मुस्लिम लीग के पाँच प्रतिनिधि भी अंतरिम सरकार में सम्मिलित हो गए :- लियाकत अली खाँ, आई.आई. चुंदरीगर, जोगेंद्रनाथ मंडल, गजनफर अली खाँ एवं अब्दुर रब निश्तर
- 4) मुस्लिम लीग का अंतरिम सरकार में सम्मिलित होने का उद्देश्य पाकिस्तान के रूप में पृथक राष्ट्र की मांग
- 5) **अंतरिम सरकार :-** कांग्रेस के 6, मुस्लिम लीग के 5 तथा ईसाई, पारसी एवं सिख वर्ग से एक-एक सदस्य सम्मिलित थे

11.9) Direct Action Day (16 August 1946)

- 1) Announced by the Muslim League on 16 August 1946
- 2) Congress got majority in Constituent Assembly election
- 3) **Result :-** Communal riots in Bengal and Bihar
- 4) Gandhiji visited Noakhali to establish peace
- 5) Mountbatten called Gandhi a **"One Man Boundary Force"**.

11.10) Formation of Interim Government (September 1946)

- 1) On 24 August 1946, the first Interim Government of India was announced under the chairmanship of Jawaharlal Nehru, which was formed on 2 September 1946 with 12 members.
- 2) Viceroy was made the President of the Council and Nehru ji was made the Vice President of the Council :- Jawaharlal Nehru, Sardar Patel, Rajendra Prasad, Aruna Asaf Ali, Rajagopalachari, Sarat Chandra Bose, John Mathai, Baldev Singh, Shafat Ahmed Khan, Jagjivan Ram, Syed Ali Zaheer and CH Bhabha.
- 3) As a result of the mediation of Lord Wavell, on 26 October 1946, five representatives of the Muslim League also joined the Interim Government :- Liaquat Ali Khan, I.I. Chundrigar, Jogendranath Mandal, Ghazanfar Ali Khan and Abdur Rab Nishtar
- 4) The aim of the Muslim League to join the interim government was the demand for a separate state in the form of Pakistan.
- 5) **Interim Government :-** 6 members of Congress, 5 from Muslim League and one member each from Christian, Parsi and Sikh sections.

अंतरिम सरकार के मंत्री

सदस्य	विभाग
जवाहर लाल नेहरू	कार्यकारी परिषद के उपाध्यक्ष, विदेश एवं राष्ट्रमण्डल सम्बंधित मामले
सरदार वल्लभ भाई पटेल	गृह, सूचना एवं प्रसारण विभाग
बलदेव सिंह	रक्षा विभाग
डॉ जॉन मथाई	उद्योग व आपूर्ति विभाग
सी राजगोपालाचारी	शिक्षा विभाग
सी एच भाभा	निर्माण, खनन एवं ऊर्जा विभाग
डॉ राजेंद्र प्रसाद	कृषि एवं खाद्य विभाग
जगजीवन राम	श्रम विभाग
आसफ अली	रेलवे विभाग

लियाकत अली खान(मु लीग)

वित्त विभाग

आई आई चुंदरीगर(मु लीग)

वाणिज्य विभाग

गजनफर अली खान(मु लीग)

स्वास्थ्य विभाग

जोगेंद्रनाथ मंडल(मु लीग)

विधि विभाग

अब्दुर रब नशतर(मु लीग)

संचार विभाग

11.11) एटली की घोषणा (20 फरवरी 1947)

- 1) 20 फरवरी 1947 को ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लिमेंट एटली ने हाउस ऑफ कॉमंस में ऐतिहासिक घोषणा करते हुए कहा कि अंग्रेज जून 1948 के पहले ही उत्तरदाई लोगों को सत्ता हस्तांतरित करने के पश्चात भारत छोड़ देंगे
- 2) अंतिम ब्रिटिश वायसराय और गवर्नर जनरल के रूप में लॉर्ड माउंटबेटन 22 मार्च 1947 को भारत आए और आते ही उन्होंने सत्ता हस्तांतरण के लिए कार्यवाही करना प्रारंभ कर दिया

Minister of the Interim Government	
Member	Department
Jawaharlal Nehru	Vice-Chairman of the Executive Council, Foreign Affairs and Commonwealth Related Matters
Sardar Vallabhbhai Patel	Home, Information and Broadcasting Department
Baldev Singh	Department of defense
Dr. John Mathai	Industries and Supplies Department
C Rajagopalachari	Department of education
C.H. Bhabha	Department of Construction, Mining and Energy
Dr. Rajendra Prasad	Department of Agriculture and Food
Jagjivan Ram	Labour department
Asaf Ali	Railway department

Liaquat Ali Khan (Mu League)	finance department
I I Chundrigar (Mu League)	department of commerce
Ghazanfar Ali Khan (Mu League)	health department
Jogendranath Mandal (Mu League)	law department
Abdur Rab Nashtar (Mu League)	communication department

11.11) Attlee's Declaration (20 February 1947)

- On 20 February 1947, British Prime Minister Clement Attlee made a historic announcement in the House of Commons that the British would leave India after transferring power to the responsible people before June 1948.
- Lord Mountbatten came to India as the last British Viceroy and Governor General on 22 March 1947 and as soon as he arrived, he started taking action for the transfer of power.

11.12) बाल्कन योजना

- 1) वर्ष 1947 में मार्च से मई के बीच माउंटबेटन ने वैकल्पिक योजना तैयार की इसे बाल्कन योजना के नाम से भी जाना जाता है
- 2) इस योजना में यह प्रावधान था कि सत्ता का हस्तांतरण पृथक-पृथक प्रांतों को किया जाए,
- 3) बंगाल एवं पंजाब को यह विकल्प दिया जाए कि वे अपने बंटवारे के लिए जनमत संग्रह का सहारा ले सकते हैं
- 4) देशी रियासतों के साथ विभिन्न समूहों को यह छूट होगी कि वे भारत में सम्मिलित होना चाहते हैं या पाकिस्तान में या फिर अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखना चाहते हैं



11.12) Balkan plan

- 1) In the year 1947, between March and May, Mountbatten prepared an alternate plan, it is also known as the Balkan plan.
- 2) There was a provision in this plan that the transfer of power should be done to different provinces,
- 3) Bengal and Punjab should be given the option that they can resort to plebiscite for their partition.
- 4) Along with the princely states, different groups will have the freedom whether they want to join India or Pakistan or want to maintain their independent existence.



11.13) माउंटबेटन योजना (3 जून 1947)

माउंटबेटन 3 जून 1947 को माउंटबेटन द्वारा प्रस्तुत योजना को **3 जून योजना व डिकी बर्ड योजना** के नाम से भी जाना जाता है :-

- ♀ भारत को भारत और पाकिस्तान में विभाजित किया जायेगा
- ♀ बंगाल और पंजाब का विभाजन किया जायेगा और उत्तर पूर्वी सीमा प्रान्त और असम के सिलहट जिले में जनमत संग्रह कराया जायेगा
- ♀ पाकिस्तान के लिए संविधान निर्माण हेतु एक पृथक संविधान सभा का गठन किया जायेगा।
- ♀ रियासतों को यह छूट होगी कि वे या तो पाकिस्तान या भारत में सम्मिलित हो जाये या फिर खुद को स्वतंत्र घोषित कर दें।
- ♀ भारत और पाकिस्तान को सत्ता हस्तांतरण के लिए 15 अगस्त 1947 का दिन नियत किया गया।

ब्रिटिश सरकार ने भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 को जुलाई 1947 में पारित कर दिया। इसमें ही वे प्रमुख प्रावधान शामिल थे जिन्हें माउंटबेटन योजना द्वारा आगे बढ़ाया गया था। अतः हम कह सकते हैं कि माउंटबेटन योजना का मुख्य उद्देश्य भारत का विभाजन और सत्ता का त्वरित हस्तांतरण था।

11.13) Mountbatten Plan (3 June 1947)

Mountbatten Plan presented by Mountbatten on **3 June 1947** is also known as 3 June plan and **Dickie Bird plan** :-

- ♀ India will be divided into India and Pakistan
- ♀ Bengal and Punjab will be partitioned, and referendum will be held in Northeastern Frontier Province and Sylhet district of Assam
- ♀ A separate Constituent Assembly will be formed for the constitution of Pakistan.
- ♀ The princely states would be free to either join Pakistan or India or declare themselves independent.
- ♀ 15 August 1947 was fixed as the day for the transfer of power to India and Pakistan.

The British Government passed the Indian Independence Act, 1947 in July 1947. It contained the major provisions that were carried forward by the Mountbatten Plan. So we can say that the main objective of Mountbatten plan was the partition of India and the speedy transfer of power.

क्या भारत विभाजन को रोका जा सकता था?

- 1) भारत में विभाजन को एक 'महान दुर्घटना' माना जाता है। इसे अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति तथा मुस्लिम लीग की साम्प्रदायिकता तथा पार्थक्य के आदर्श का एक स्वाभाविक चरण माना जाता है। अंग्रेजों एवं लीग की नीतियों ने एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य किया तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को विभाजन स्वीकार करने पर बाध्य कर दिया। कुछ भारतीय लेखक विभाजन के लिये कुछ सीमा तक कांग्रेस के नेताओं को भी दोषी ठहराते हैं। उनका तर्क है कि यदि ये नेता पर्याप्त सूझ-बूझ तथा हिम्मत दिखाते तो मातृभूमि का बंटवारा रुक सकता था।
- 2) वहीं, पाकिस्तान में इस विभाजन को पूर्णतया तर्कसंगत तथा अनिवार्य माना जाता है। वे कभी स्वीकार नहीं करते कि स्वतंत्रता संग्राम में 'मुस्लिम राष्ट्रवाद' भी उपस्थित था। यह केवल भारतीय इतिहास में ही निहित है। अंग्रेज इतिहासकार और लेखक भी विभाजन की अनिवार्यता या टाले जा सकने के संदर्भ में एकमत नहीं हैं।
- 3) पंडित नेहरू के अनुसार मुसलमानों में साम्प्रदायिकता का कारण उनमें मध्यवर्ग के उभरने में देरी का होना था, जिसके कारण लीग ने मुस्लिम जनता में भय की भावना भर दी। 'इस्लाम खतरे में है।' - इस नारे ने सभी मुसलमानों को एक झण्डे तले इकट्ठा कर मुहम्मद अली जिन्नाह को एक राजनीतिक मसीहा के रूप में स्थापित कर दिया। मुहम्मद अली जिन्नाह ने भी तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का पूरा लाभ उठाया और अंत में 'कायद-ए-आज़म' कहलाये।
- 4) भारतीय हिंदू संगठनों जैसे हिंदू महासभा आदि की भूलों और गलत कार्यों ने भी साम्प्रदायिकता एवं पृथक्तावाद को बढ़ावा दिया। ऐसी परिस्थितियों में विभाजन एक अनिवार्यता बन गया था। फिर भी, यदि जिन्नाह और कांग्रेस के प्रमुख नेताओं ने सूझबूझ दिखाई होती तो यह विभाजन एक त्रासदी/दुर्घटना न कहलाकर महज़ एक सहज तरीके से हुआ 'विभाजन' हो सकता था।

Could the partition of India have been prevented?

- 1) Partition in India is considered a 'great accident'. It is considered a natural phase of the British 'divide and rule' policy and the ideal of communalism and segregation of the Muslim League. The policies of the British and the League worked in tandem and forced the Indian National Congress to accept partition. Some Indian writers even blame the Congress leaders to some extent for the partition. They argue that if these leaders had shown enough intelligence and courage, the division of the motherland could have been stopped.
- 2) At the same time, in Pakistan this partition is considered completely rational and inevitable. They never accept that 'Muslim nationalism' was also present in the freedom struggle. It is rooted only in Indian history. British historians and writers are also not unanimous about the necessity or avoidance of partition.
- 3) According to Pandit Nehru, the reason for the communalism among the Muslims was the delay in the emergence of the middle class among them, due to which the League instilled a sense of fear among the Muslim masses. 'Islam is in danger' - this slogan established Muhammad Ali Jinnah as a political messiah by gathering all Muslims under one flag. Muhammad Ali Jinnah also took full advantage of the then political situation and eventually came to be known as 'Quaid-e-Azam'.
- 4) The mistakes and wrongdoings of Indian Hindu organizations like Hindu Mahasabha etc. also promoted communalism and separatism. Partition had become an imperative in such circumstances. Nevertheless, if Jinnah and the Congress leaders had shown prudence, this split could have been a 'partition' and not just a tragedy/accident.

11.14) भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947

18 जुलाई 1947 को भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम ब्रिटिश संसद द्वारा पारित किया गया। इस अधिनियम की प्रमुख धाराएं निम्न थी -

- ♀ भारतीय उपमहाद्वीप को भारतीय संघ तथा पाकिस्तान में बांटा जाएगा।
- ♀ पाकिस्तान के प्रदेश में सिंध, ब्रिटिश बलूचिस्तान, उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रान्त, पश्चिमी पंजाब तथा पूर्वी बंगाल सम्मिलित होंगे। इसमें अंतिम दो प्रान्तों की सुनिश्चित सीमाओं का निर्धारण एक सीमा आयोग, जनमत तथा निर्वाचन द्वारा किया जाएगा।
- ♀ प्रत्येक राज्य के लिए एक-एक गवर्नर-जनरल होगा, जो महामहिम द्वारा नियुक्ति किया जाएगा
- ♀ यदि दोनों राज्य चाहें तो वही व्यक्ति इन दोनों राज्यों का गवर्नर-जनरल रह सकता है।
- ♀ भारत तथा पाकिस्तान के विधानमण्डलों को कुछ विषयों पर कानून निर्माण का पूर्ण अधिकार दिया गया।
- ♀ 15 अगस्त 1947 ई. के बाद भारत तथा पाकिस्तान पर अंग्रेजी संसद के क्षेत्राधिकार की समाप्ति
- ♀ पाकिस्तान के प्रथम गवर्नर जनरल मुहम्मद अली जिन्ना बने, किन्तु भारत के लिए माउंटबेटन को ही साग्रह गवर्नर- जनरल बने रहने को कहा गया।

11.14) Indian Independence Act 1947

The Indian Independence Act was passed by the British Parliament on 18 July 1947. The main sections of this act were as follows -

- ♀ The Indian subcontinent will be divided into the Indian Union and Pakistan.
- ♀ The territory of Pakistan would include Sindh, British Balochistan, North-West Frontier Province, West Punjab and East Bengal. In this, the definite boundaries of the last two provinces will be determined by a boundary commission, referendum and election.
- ♀ There shall be a Governor-General for each State, to be appointed by His Excellency
- ♀ If both the states so desire, the same person can remain the Governor-General of both these states.
- ♀ The legislatures of India and Pakistan were given full power to make laws on certain subjects.
- ♀ Abolition of the jurisdiction of the English Parliament over India and Pakistan after 15 August 1947.
- ♀ Muhammad Ali Jinnah became the first Governor-General of Pakistan, but Mountbatten was asked to remain the Sagraha Governor-General for India.

NOTE

- # संविधान सभा के चुनाव के पश्चात् भारत में आंतरिक संकट की स्थिति व्याप्त थी, साम्प्रदायिक दंगों के मध्य ब्रिटिश सरकार के लिए भारत की समस्या जटिल होती जा रही थी। ब्रिटिश प्रधानमंत्री क्लीमेंट एटली ने 20 फरवरी, 1947 ई. को हाउस ऑफ कॉमन्स में यह घोषणा की कि जून, 1948 ई. तक भारत को स्वतंत्रता प्रदान कर दी जाएगी।
- # एटली ने विभाजन की समस्या के समाधान के लिए लॉर्ड माउंटबेटन को गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्त किया। मार्च, 1947 ई. को माउंटबेटन गवर्नर जनरल बनकर भारत आए। भारत में उन्होंने पं. जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, जिन्ना, मौलाना आजाद, जे. बी. कृपलानी, कृष्ण मेनन, लियाकत अली, गांधीजी आदि से बातचीत की
- # माउंटबेटन इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि भारतीय समस्या का एकमात्र समाधान देश का विभाजन और पाकिस्तान की स्थापना है। माउंटबेटन ने सबसे पहले सरदार पटेल को देश के बंटवारे के पक्ष में किया। इसके बाद जवाहरलाल नेहरू को बंटवारे के पक्ष में किया। गांधीजी ने इस दौरान कहा था कि "विभाजन मेरी लाश पर होगा।"
- # विभाजन की योजना के सम्बन्ध में एक सुनिश्चित एवं दूर्हितापूर्ण रणनीति का अभाव था। साथ ही योजना में यह भी नहीं बताया गया था कि विभाजन उपरान्त उत्पन्न समस्याओं का समाधान कैसे किया जाएगा।

NOTE

- ‡ After the election of the Constituent Assembly, there was a situation of internal crisis in India, in the midst of communal riots, the problem of India was getting complicated for the British Government. British Prime Minister Clement Attlee announced in the House of Commons on 20 February 1947 that India would be granted independence by June 1948.
- ‡ Attlee appointed Lord Mountbatten as the Governor General to solve the problem of partition. In March 1947, Mountbatten came to India as the Governor General. In India, he served Pandit Jawaharlal Nehru, Vallabhbhai Patel, Jinnah, Maulana Azad, J. B. Interacted with Kripalani, Krishna Menon, Liaquat Ali, Gandhiji etc.
- ‡ Mountbatten came to the conclusion that the only solution to the Indian problem was the partition of the country and the establishment of Pakistan. Mountbatten was the first to support Sardar Patel for the partition of the country. After this Jawaharlal Nehru was in favor of partition. Gandhiji had said during this time that "Partition will be on my corpse."
- ‡ There was a lack of a definite and foresighted strategy with regard to the plan of partition. Also, the plan did not specify how the problems arising after partition would be resolved.

- # सीमा आयोग (रेडक्लिफ की अध्यक्षता में) की घोषणा करने में अनावश्यक देरी की गई। हालाँकि इस सम्बन्ध निर्णय 12 अगस्त, 1947 ई. को ही लिया जा चुका था लेकिन माउंटबेटन ने इसे 15 अगस्त, 1947 ई. को ही सार्वजनिक करने का निर्णय लिया। इसके पीछे उनकी यह सोच थी कि इससे सरकार किसी भी प्रकार की विपरीत घटना होने पर जिम्मेदारी बच जाएगी।
- # इस प्रकार, ब्रिटिश सरकार की स्वयं के हितों को सुरक्षित रखने की स्वार्थपूर्ण नीति ने भारतीय उपमहाद्वीप को अस्त-व्यस्त कर दिया जिसके कारण भीषण नरसंहार हुआ तथा किसी को भी इसके लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया गया।

- ‡ There was unnecessary delay in announcing the Boundary Commission (headed by Radcliffe). Although the decision in this regard had been taken on August 12, 1947, but Mountbatten decided to make it public only on August 15, 1947. His thinking behind this was that this would save the government responsibility in case of any adverse incident.
- ‡ Thus, the selfish policy of the British Government to safeguard its own interests disturbed the Indian subcontinent leading to a horrific massacre and no one was held responsible for it.